नं० ५४८६ — घ

पंचदशी भाषायम।

तृप्तिदीपव्याख्या

पत्राणि २०१

वेदान्तशास्त्रम।

सम्पूर्णम।

२१

81

नं० ५४७६-घ
पंचदशी (भाषायाम)
तृप्तिदीप व्याख्या (वेदान्तशास्त्रम)
पत्राणि २०१ (सम्पूर्णम)

१२६

5476
200+1

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्री.
पं.द.
१

ॐ श्रीगणेशायनमः ॐ श्रीभारतीतीर्थअ
नेविद्यारण्यइनदोऊमुनीश्वरोंकोनमस्का
रकरकेप्रत्यक्तत्वविवेककेपदोंकीदीप
काकरीतीहै आरंभकरणेकीहैइछाजिस
कीऐसाजोहैग्रंथतिसकेनिर्विघ्नपरिसमा
प्तिअरुदृढिताकेप्राप्तहोणेकेनिमित्तशि
ष्टाचारनेसर्वशेरनेप्राप्तइष्टदेवताउसताई
नमस्कारलक्षणमंगलाचरणआपकरकी
याशिष्योंकीशिक्षाकेनिमित्तमूलकारश्लो
ककरबंधनकरताहै अर्थतेविषयअरु
प्रयोजनसूचनकरताहै मूल नमस्कारहै
श्रीशंकरानंदगुरुकोपादरूपअंबुजन्मता
ई कैसाहै सहितविलासकेजोहैमहामोह
रूपग्राह तिसकाग्रासकरणाहै एककर्म
जिसका टीका शंसारविषैजोकरै सोकहिये
शंकर सकलजगतआनंदकरणवालापर
मात्माजाणना यहीआनंदकरताहै ऐसेश्रु
तिकेकहणेतेआनंदशब्दकरनिरतिशयप्रे
मकाआस्पदहोणेकरपरमानंदस्वरूपप्रत्य

गात्मास्समरूपा शंकरजोहोवेइहश्रानेंद ।
सोकहियेशंकरानेंदश्रमगश्रभिन्नपरमा।
त्मासोईहयागुरू परिपक्कमलानुहरकरणे
वालीशक्तिकेपातनकरजोइनकेपरतत्वावि
षेमनटीनाकरश्राचार्यमूर्तिविषेस्थितहो।
ताहोयाइतिश्रागमकेकथनतेश्रीमानजोइ
हसेकरानेंदगुरुसोकहियेश्रीशंकरानेंदगु
रुइसग्रंथेकरश्रीगुरुकोश्रणिमादिकऐश्व
र्यकरसंपन्नस्तवनकरा यद्वा श्रीकहियेवि
भूतितिससहितशंस्तवनुकरे सोकहियेश्री
शंकरधनकेदानेकापरायणहै इतिश्रुति ।
तेइतिकथनकरश्रीगुरुकोभक्तकेइष्टसे।
पादनविषेसमर्थास्तवनहोतीहै तिसगुरु
केपादहीयोहैं श्रेष्ठजन्मवरणकमलतिस
नाईनमस्कारहै कैसाचरणकमलहै वि
लासजोहैकार्याविगतिससहितवर्तमानहो
वे सोकहियेसविलास एवंविधकाजोहै ।
महामोहकहिये मलाज्ञानसोइभया गा
हमकरादिवत सवशाप्रामकोश्रनीवइः।

श्री॰ रवकाहैतत्सोतेने तिसकाजोत्रासहै त्रसननि॰
पं द॰ वर्तनसोईहै एकअखंडकर्मआपारजिसका ।
२ तिसचरणकमलनाईनमस्कारहै ईहांकर
ग्रहस्थानेंद इनदोनोपदोकेसमानाधिकरण॰
करजीवब्रह्मकीएकतालक्षणविषयसूचन
की याजीवकोभ्रमाब्रह्मरूपताकरअपरिछि
न्नस्वरूपाविभावलक्षणप्रयोजनभीसूचन
करा सविलासद्वैतआदिकसंपूर्णअनर्थो
कीनिवृत्तलक्षणप्रयोजनसूचनेहीकथ
नकीयाहै उत्थानका इहांनीअवांतरप्रयोज
नकथनपूर्वकग्रंथकेआरंभकरणेकीप्रतिज्ञा
करताहैमूलकार मूल तिसकेपादअंबुरु॰
होकीद्वंद्वकीसेवाकरनिर्मलचित्तहुयाजि॰
नका तिनकेसुखबोधवास्तेतत्त्वका विवेक
अर्थविधानकरीताहै १ टीका तिसगुरुकेपा
दकीहै अंबुरुहकमलतिनकेद्वंद्वकीजोहैसे
वालतिनमस्कारआदिलक्षणतिसकरनि॰
मलहै रागादिरहितहै चित्त अंतःकरणजि॰
नकातिनकेविनाशननतत्त्वज्ञानदेउत्पादन

वासते अखंडजो सच्चिदानंद है महावाक्यक-
रलषीता है इतिवक्ष्यमाणकरकथनकरण
योतन्त्र है तिसका विवेक करिये आरोपित
पंचकोशादिलक्षणजगतने विवेचनकरी-
ता है अथ्यानका जीवब्रह्मकीएकतालक्षण
विषयकी संभावनानिमित्तजीवको सम्पत्ता
नादिरूपतादेदिषावणकीइच्छाकरता हुया
मूलकारआदिविषेश्रमेदप्रतिपादनकर-
ज्ञानकीनित्यतासिद्धकरताहै मूल शब्दस्प
र्शादिजेविषयहै ते विचित्रताते जागरणविषे-
भिन्नभिन्न है तिसतेभिन्नजो तिनकी संवित
है एकरूपहोणेतेनहीभिन्न ३ टीका इंद्रि-
याकरविषयकालभणजागरितहै इति ३
मूलजाग्रवस्थाविशेषविषैविषयजेहै संवि
तका विषयभूत शब्दस्पर्शआदिआकाश
दिकागुणहोकरप्रसिद्ध है तिनकाआसरा
होकरआकाशआदिकप्रसिद्ध है विचित्र
नातेपरस्पर गौअश्वादिवतविलक्षणताना
लमिलणेतेपरस्परभिन्नहै तिसतेभिन्न-
बुद्धिकरविवेचितशब्दादिकोकी संवितक

श्री॰
पं॰द॰
३

हियेज्ञानएकरूपतेगगनइवनहीभिन्न इस
विषेयिहस्वरूपमानहैविवादकाअवकाशनयामें
वितहै साक्षभावकभेदशून्यहै उपाधितेवि
ज्ञानभेदआभासणतेगगनवतग्राहकी सेवि
तस्पर्शसेवितत्तेनहीभिन्नसेवितहूणतेस्प
र्शसेवितकीन्याई एकसेवितकागगनकी॰
न्याईसोपाधिकभेदकरअपिभिन्नव्यवहार
कीउपपत्तिविषेवास्तवभेदकल्पनाविषेगौ
रववाधकज्ञाणना ३ उत्थानका उक्तन्या
यतुस्वप्नविषेभीमूलकारकहनाहै मूल
तैसेस्वप्नविषेसंवितनहीभिन्नस्वप्नविषेनही
स्थिरजागरविषेस्थिरहै इसकारणतेजाग
रस्वप्नकाभेदहै तिनदोनोंविषेसंवितएक
रूपहैसानहीभिन्न ४ जैसेजागरविषेविवि
क्तानेविषयाकाभेदहै एकरूपतेसंवित
काअभेदहै तैसेजागरतिनसंस्कारतेउत्पन्न॰
भया जोस्वप्नप्रत्यक्षहितविषयकेसोकहिये
स्वप्नइतिउक्तलक्षणस्वप्नविषेअपिविषया
हीभिन्नहै नहीसंवितभिन्न नत्र जैकरस्व
प्नअरजागरकीएकाकारताहै विषयअर

तिनकी संवित के भेद अभेद करता ने यहि स्व
प्न है अरु यहि जाग्रत है इहु व्यवहार किस नि
मित्त है उत्तर स्वप्न विषे परिदृश्यमान वस्तु जा
तन ही स्थिर प्रतीति मात्र शरीर होणे ते जाग्र
र विषे परिदृश्यमान वस्तु जात स्थिर है काला
न्तर विषे अपि देखणे के योग्य होने ते ताते स्थि
र अरु अस्थिर विषय लक्षण विलक्षण ते जा
ग्रत स्वप्न का भेद है नतु स्वप्न अरु जाग्रत का ते
करि भेद हुया ताते तिनकी संवित का अपि भेद
होवे उत्तर जिस कारण ते जाग्रत अरु स्वप्न
की संवित एकरूप है तिस कारण ते संवित
का भेद नहीं उत्थानिका इस प्रकार अवस्था
त्रय विषे ज्ञान की एकता सिद्ध करके अब
सुषुप्ति काल के अपि ज्ञान की तिसके साथ ए
कता साधन निमित्त सुषुप्तकि बीच आदि वि
षे ज्ञान सिद्ध करता है ४ मूलकार सुषुप्ति
ते उत्थित पुरुष को जो सुषुप्ति के अज्ञान का
बोध है सो स्मृति है सा स्मृति अनुभव पूर्वक
है तिस सुषुप्ति विषे अज्ञान अनुभव कीया है

श्री॰
पं॰ द॰
४

ऐसेजाणनेयोग्यहै ५ टीका स्वप्नमितेउठाजो
पुरुषहै तिसकेस्वप्नमिकालकेअज्ञानकाबो॰
धकहियेज्ञानहै मैंऐसासोयाजोनहीकछुजा
नताभया सास्मृतिहीहै अनुभवनही अनुभ॰
वकाकारण जोइंद्रियोंकासंयोग तिसकाअ
भावहोणेते प्रश्न इतिकहणेतेक्यासिद्धहुया
तिसविषे उत्तर अनुभवकीयाहैविषयजिस॰
का सास्मृतिअनुभवपूर्वकालोकविषेदेषती
है जैसेगंगादेषीहोइहोतीहै पीछेगंगाकी॰
स्मृतिभीहोतीहै ननु तिसतेभीक्यासिद्धहुया
उत्तर तिसकारणतेस्वप्नमिकाअज्ञानस्वप्नमि
विषेअनुभवकीयाहै ऐसेजाननयोग्यहै इस
विषेअनुमानहै स्वप्नमिविषेनहिकछुजान॰
तभया इतिज्ञानजोहै सोअनुभवपूर्वकहै ।
स्मृतिहोनेते सामेरीमाताहैइसस्मृतिकीन्या
ई ५ उत्थानका तिसअनुभवकासविषय॰
अज्ञानतेभेदअरुज्ञानांतरतेअभेदयोंश्लोक॰
करमूलकारकहताहै मूल सोबोधविषय
तेभिन्नहैनहीबोधतेभिन्नसर्वकेबोधकीन्या

है इसरीतिकरस्थानतीनबीचएकात्मसेवि
तहैतिसीकीन्याईदिनोंतरबीच १ मास
अरुशाहूअरुयुगअरुकल्पइनसभनगत
हुयोंबीचअरुआगम्योंबीचसेवितयापका
है मानउटेहोतेहैनअस्तहोतीहै एषासं·
वितस्वयंप्रभाहै टीका सोबोधकहियेह
भूमिकेअज्ञानकाअउभवसोविषयजोहै
अज्ञान तिसतेभिन्नहोणेहुयोगएहै बोध·
होनेतेघटकीबोधकेन्याई अज्ञानकाफ
लितकथनकरनाहुयाउक्तयुक्तिअपरस्था
नविषेभीपीडनकरताहै मूलकाअर्थटी
कामैस्थानतीनबीचअपिएकदिनवर्तिजा
ग्रतेआदिलेकरस्थानतीनबीचसेवित·
एकहीहै सर्वजोवाकाहै सोसहितनिर्ण
यकेहै इतियुक्तिनेतिसीकीन्याईदिनोंत
रबीचअपिसेवितएकहै १ जैसेएकबीच
अरअरुवस्थातीनबीचअपिज्ञानकाअभेद
है इसप्रकारअन्यादिनविषेअनेकप्रकार
करविनीतहुयेअरुआगामिदोबीचमास·
नोहैआदिकहै अहंजोप्रभावादिकहै पु·

श्री॰ पे॰ ह॰ ५

5

गत्नोकृतनादिकहै कल्पनोब्रह्मादिकहै
इनसभवीचज्ञानकाअभेदहीहै उत्थान
का संवितकेएकताकथनवीचफलक॰
हताहै मूलकाग्रंथटीकामे जिसकारण
तेसंवितएकाहै इसीकारणतेनहीउत्पत्ति
होती अरनहीनाशहोती साक्षीकेविना
उत्पत्तिअरनाशकीअसिद्धितेमाणणीउ॰
त्पत्तिअरविनाशकोजिससंवितकरग्रह॰
णकरणेकीअसमर्थीतेअरइसहीसंवित
का अभावतेहूभावहै नत इससेंसंवित
केअभावस्वीकारकरग्राहककाअभावहो
वेते जिसकेअपिअभावविषेजगतदोषआ
वताहै उतर एवांसंवितस्वयंप्रभाहै इस॰
मेअनुमानहै संवितस्वयंप्रकाशहोणेतू
योगहै किसीकेज्ञानकीविषयनहोनया
इया साक्षातहोणेतेव्यतिरेकवीचघट॰
कीन्याईविशेषणअसिद्धहेतः नहीसंवि
तकोआपकरवेद्यहयाहोया कर्तेकर्म
विरोधआवताहै परवेद्यविषेअनवस्था॰
आवतीहै इसकारणतेस्वप्रकाशहोकर

भासमानापासेंनहै तिसकोसर्वकाप्रका
शकहोनेतेनहीजगतांध्यप्रसंगआवता॰
इहभावहै १ नत्रहोवेसंविलकोनित्यत्व
अरप्रकाशत्वतिसनेक्यासिद्धहूया उत्तर
मूल इयंसंवितआत्मापरानंदहै परप्रेम॰
काआस्पदजिसकारणतेंहै मैननहोताभ
या किंतु मैहोताभया इहप्रेमआत्मावि॰
षेदेखीताहै ८ टीका इसमेइहअनुमानहै
इयंसंवितआत्माहोणेतेंध्येयहै तिसहो
याजेयाख्यप्रकाशहोनेते जोइसप्रकार॰
नहीसोप्रेमनहीहोता जैसेघटहै आत्माको
नित्यसंवितरूपप्रसादनकरसत्यत्वअपिसा
ध्याजाताहै नित्यतेभिन्नसत्यत्वकाअभा
वहोलेनेनित्यत्वअरसत्यत्वजिसकोहै सो
ईनित्यत्वअरसत्यत्वहैइति वाचस्पतिमिश्र
करकथनतेइहभावहै आत्माकीआनंदरू
पतासिद्धकरताहै मूलकार परानंदइति ।
टीका परजोआनंदहोवे सोकहिएपरानं
द निरतिशयसुखरूपहै तिसमेहेतुकह
ताहै जिसकारणतेंपरमप्रेमकाआस्पदक

श्री॰
पं॰द॰
९

6

हियेविषयहै तिसकारणतेइयेसेवितपराने॰
दहै इसवीचअनुमानहै आत्मापरमानंदरूप
है परप्रेमकाआस्पदहोनेतेजोपरमानंदरूप
नहीहोता सोपरप्रेमकाआस्पदअपिनहीहो॰
ता जैसेघटहैनहीतैसेइहघटपरप्रेमकाआ॰
स्पदनहीहोता नहीतिसकारणतेपरमानं
दरूपअपिनहीहोता नतु आत्माकीचधिक॰
कारहैमेरेतांईइसद्वेषकोआत्माविषेलभ्यमा
नहोनेतै परप्रेमकाआस्पदहोणाअसिद्धहै
जैसेआत्मापरप्रेमकाआस्पदहै उत्तर तिस
द्वेषकोदुःखसंबंधनिमित्तकहोनेकर अन्य
थासिद्धहोनेतेप्रेमकोआत्माबीचअनुभव॰
सिद्धहोनेतेमतकहु प्रेमपरिहरणकरता
हैमूलकार मानसूवइति टीका तिसकार
णतेआत्माबीचवैसेननहोताभया अनुकीअ
सत्यताकदाचितअपिनहोतीभये किंतु॰
सदासत्वहीअनुकाहोताभया इसप्रेमको
आत्माबीचदेखीताहै सभनेअनुभवकरीता
है इसीकारणतेअसिद्धनहीहै ८ उत्थान
का नतु मतहोवेस्वरूपकीअसिद्धिः प्रेम॰

कोपरत्वविद्यमानकेअभावतेविशेषणअसि
द्धिहेतकीहोवे उत्तरमूलकारकहिताहै ।
मूल सोप्रेमआत्मनिमित्तअन्यहीवेहैनहीअ
न्यनिमित्तआत्माहीवेइसीकारणतेपरमप्रेम॰
है तिसपरमानंदताहीआत्माकोहै ९ टीका
अन्यकहियेआपतेभिन्नपुत्रादिकतिनविषे॰
जोप्रेमहै सोआत्मनिमित्तहै तिस्कोआत्म॰
शेषत्वनिमित्तहैनहिस्वाभाविकपवेआत्माही
वविद्यमानजोप्रेमहै अन्यअर्थनही आत्मा॰
तेअन्यशेषत्वनिमित्तनहीहोता किंतु आत्म
निमित्तकहीहै इसीकारणतेनिरुपाधिकहो
नेतेसोप्रेमपरमकहिये निरतिशयहै निर
तिशयप्रेमकाआस्पदहोणेकरआत्माकोनि
रतिशयसुखरूपत्वसिद्धहूया १० उत्थानका
समस्त्रीकोंकरअतिपाटनकीथाजोअर्थ ति
सन्नूसैंनेपकरदिखावताहै मूलकार मूल
इसप्रकारमननविनपरानंदआत्माहैयुक्तिक
रतिसीप्रकारपरंब्रमलिनवेदोनोंकीएकता
वेदांतोहीयउपदेशकरीतीहै टीका शाहस्य
पेणादिइत्यादिकरनानकीनित्यतासाधकर॰

श्री. तिसीकोइयंआत्माइतिआदिकरआत्माकोसत
पं.द. चिद्रूपत्वसिद्धकीयापरानंदइतिआदिकरपर
१ मानंदरूपत्वसमर्थनकीया इसीकारणतेआ
त्मामहावाकावीचत्वंपदार्थसच्चिदानंदरूपसि
द्धहूया तत्र उक्तलक्षणआत्माकोशुक्तिकर
णविषे उपनिषदोंकोनिर्विषयहोनेकरअ
प्रामाण्यप्रसंगआवताहै उत्तर सच्चिदानंदरू
पपरंब्रह्मतत्पदार्थहै तत्पदार्थकीअरुत्वंप.
दार्थकीएकताअरुअखंडउपक्रमतावेदांतोंवी
चउपदेशकरीहै इसीकारणतेउपनिषदोंको
अप्रामाण्यप्रसंगनआया १ उत्थानका आ
त्माकीपरमानंदरूपतावीचआक्षेपकरताहै ।
मूलकार अभानविषेपरमप्रेमनचाहियेभा
नविषेविषयाकीइछानचाहिये इसीकार.
णतेभानकेहोयाअपिहूआत्माकीपरमानं
दताअभाताहै १ टीका तत्रपरमानंदरूप.
त्वभासताहैयानहीभासता जेकहियेभास
तानहीं तापरप्रेमकहिये निरतिशयप्रेमरू.
आत्मावीचनचाहिये स्नेहकोविषयकीसंदर
ताकेज्ञानजन्यहोणेते जेकहियेभासताहै ।

विषयकहिये सुखका साधन उष्णमालाआ
दिकवीचअतेनजन्मसुखवीचइक्षानचा·
हिये फलकीप्राप्तिहोयासाधनकीइक्षान
हीवणनी नित्यनिरतिशयसुखआनंदके·
लाभहोया लक्षणकजोहै साधनाकेअधीन
विषयाकासुख तिसविषेइक्षाअजोगहै ·
तिसकारणतेआनंदरूपताआत्माकोनउ
पन्नहोई उत्थानका प्रकारांतरकासंभव·
होणेतेमनकह इतिपरिहारकरताहै सि·
द्धांतीजिसकारणतेभानअरुअभानदोनवे·
नोपरस्परविरोधहै इसीकारणतेआत्माकी
इहपरमानंदताभासतयाहोयाअपि अभा
नाकहियेप्रतीतनहीहोती १२ नउपकको
एकवारभासनाअरनभासणानहीबण
ता उत्तर किंनवर्णनाइष्टकाविषयनही
अथवाअक्रमरहितहै आदिकोसकानहीब
णनी इहसिद्धांतीकहिताहै मूल ग्रंथेबो
केसमस्तविषेपठनकरता जोकिसीकाउ
चहै इसकापठनकरणा जैसेभासताअ·
पिहै प्रतिबंधकवअभानहै १२ टीका ·

श्री·
पं·द·
८
8

अर्थात्जोहैवेदपाठीतिनकाजोसमूह तिसके
मध्यवीचस्थितजोहैकिसीब्राह्मणकापुत्रतिस
केपठनकाजोशब्दहै जैसेबाहिरस्थितपिताको
समानतेभासमाणअपिहै जोगुरुकीपुत्रका
अपिबीचशब्दहै परंतु इहमेरेपुत्रकाशब्दहै
इसविशेषतेभाननहीहोता तैसेआनंदअपि
भानअपिअभानहै उत्थानका द्वितीयप्रति·
कहिताहै समानतेभानकाविशेषकरनभान
होणाप्रतिबंधकरवणताहै कौनसाप्रतिबं·
धहै जिसकरभानअभानहै इतिकहितासल
कार १२ मूल अलीअनभातीइतिव्यवहारेज्ञो
यजोवत्त तिसवीचअलीअनभातीविहारव्य
हूरकरके विरुद्धविहारकाउत्थानिकवणाप्र
तिबंधकरीताहै १२ टीका अलीकहियेवि·
द्यमानहै भातीकहियेभासिताहै इसप्रकार
विहारहैजोयोग्यवत्तहैतिसविषेहोणा अन
भासनारूपविहारदूरकरकेविरुद्धजोहै
विहारणाहोणा अर्थनाभासणा तिसविहार
काजोनिमित्तहै सोप्रतिबंधकहीताहै १२ ·
उत्थानका कहूयाहैलक्षणाजिसका ऐसाजो

है प्रतिबंध प्रतिसका जो कारण है दृष्टांत अरु दा-
र्ष्टांतक विषे क्रमकर कहिता है मूलकार मूल
प्रत्यके शब्दश्रवण की व बहुत याग्य साध्य पठनकर
ण प्रतिबंधका कारण है अरु ईश्वर अनादिकाल
की अविद्या ही आमोह को व्यापक कारण है १४ ।
टीका प्रत्यका शब्दश्रवण रूप दृष्टांत विषे तिस
प्रतिबंधका है न कहीये कारण बहुत योग्य साध्य
पठन है अरु ईश्वर दार्ष्टांत विषे आमोह कहिये
विपरीत ज्ञान तिनका व्यापक कारण अनादि
कहीये उत्पत्ति ते रहित अविद्या प्रतिबंधका हे-
तु है १४ अज्ञान का अरु प्रतिबंध का हेतु कहा
यो है अविद्या तिसके प्रतिपादन करणे कूं ति-
सका मूल रूप प्रकृति कूं प्रतिपादन करता है
मूलकार मूल चिदानंदमय जो है ब्रह्म तिस-
के प्रतिबिंब साथ समलिता यो है तमोरजोस-
तोगुण प्रकृति सा दोय प्रकार है १५ टीका जो
चिदानंद रूप ब्रह्म है तिसके प्रतिबिंब साथ यु-
क्त तमो रजो सत्व गुणा की साम्यावस्था यो है ।
सा प्रकृति है सा दोय प्रकार की है १५ अज्ञान का
सहित हेतु के प्रकार कहिता है मूलकार ॥

श्री.
पं. द.
८

9

सत्वकीशुद्धिअरुअशुद्धिकरमायाअरुअविद्या.
कहतीहै मायावीवजोविंवहैतिसप्रकृतिकूवश
करसर्वज्ञईश्वरहूयाहै १६ टीका सत्वकीशुद्धि
कहियेगुणोंनकरअतिरस्कृतपनहोना अशुद्धिक
हियेगुणोंनकरकरतिरस्कृतहोना इनदोनोंकरमा
याअरुअविद्यामानतीयाहै शुद्धसत्वप्रधानामा
याकहेतेहै मलिनसत्वप्रधानाअविद्याहै ऽ.
स्यानका जिसनिमित्तमायाअरुअविद्याकाभे
दकरयाहै सोअवकहतेहै मायाविषेजोविवहै
विदात्मा सोतिसमायाकूआपनेअधीनकरकेव
नेमानहूया सर्वज्ञईश्वरहै १६ सत्व अविद्याके
वशवर्तीजोहै सोजीवहै सोअविद्याहीविचित्र
है प्राज्ञनामजीवकाकारणशरीर
वालाहै १७ टीका अविद्याकेवशअभिमान.
[illegible]विद्यावीचप्रतिविंवहोकरवशवर्तीकहिये
जोहैचिदात्मा सोजीवहै सोअविद्याकेअधीन
नेअर्थातेअशुद्धिहेसत्वअधिक सोअविद्याहीविचित्रता
कारहैतातिर्यकश्रादिमेंटकरभावतेअनेकप्र
है जैसेसंज्ञानादेहश्रीकानामबहुतप्रकारहो.
जीलानिकामीनीहै

जैसे शरीरजीवनते आत्माशक्तिकरभिन्नकरव्या
ख्यापरंब्रह्मही विद्यमानहोताहै इसरीतिक
रउत्तरग्रंथविषेशरीरजीवनतेभिन्नजाणिया ।
जोजीवहै तिसकोअस्थूलकहेहैं तिसविषे।
कोउसूक्ष्मकोनसेवहजीवशरीरहै तत्वनत।
शरीरकीउपाधिवालाजोजीवहै तिसकाकी
रूपहै इसइच्छाकेरूप्याहौया सर्वक्रमकरक
हिताहै मूलकारअर्थ अविद्याकारणशरीर
है स्थूलसूक्ष्मशरीरकाकारणरूपहै प्रकृती
कीअवस्थाविशेषहोणेतेकारणउपचारतेहै
तत्वज्ञानतेजिसकानाशहोवे सोकहियेश।
रीर तिसविषेअभिमानवालातादात्म्यअध्या
सकरअहंकहिये सोअहंसअभिमानयुतजी
वप्राज्ञनामहै अविनाशीरूपासत्यअनुभव
रूपाजिसकी सोअहंसोपरनहीजोहोवेसोक
हियेप्राज्ञ इहप्राज्ञकाअर्थहै १९. उत्पाद
क्रमकरप्राज्ञजोहैसूक्ष्मशरीरअवनतउपा।
धिकजीवउनदोनोंकोउत्पादनकरणकी
इच्छाकरतनकारणजोहैआकाशादिक
रूपीतिमनूकहिताहै मूलकार मूल तम।

है प्रधानजिसविषे ऐसेजोहैप्रकृती तिसतेजी
वोंकेभोगनिमित्तईश्वरकीआज्ञाकरआकाश
वायुतेजजलपृथिवीऐसेभीभूतउत्पत्तिहोतेभ
ये १८ टीका आज्ञादिकजीवोंकेभोगनिमित्त
कहिये सुखदुःखकेसाक्षात्कारकीसिद्धिकेअ
र्थतमोगुणप्रधानजिसविषेऐसीजोहैउपादा॰
नरूपाप्रकृतीतिससकाशते ईश्वरजोहै ईश
नशक्तियुक्तजगतकाअधिष्ठानतिसकीआ॰
ज्ञाकहीये इच्छापूर्वकरचनकीइच्छानिमित्तका
वरणरूपतिसकरआकाशआदिकपृथिवीपर्यंत
भूतउत्पन्नहूये १८ उत्थानका भूतसृष्टिकथ॰
नकरकेभौतिकसृष्टिकेकथनकरणकीइच्छा
करताहूया मूलकारआदिविषेज्ञानइंद्रियों॰
कीसृष्टिकहिताहै मूल आकाशआदिकोंकेस
त्वगुणकेपंचअंशोंकरक्रमते
श्रोत्रत्वकअक्षिरसनाघ्राणइसनामवालेज्ञानइंद्रियपंच
नहूये १९ टीका आकाशादिकोंकेसत्वरू॰
पभागजोहैउपादानरूपतिनकरसत्वगुण
यउत्पन्नभयेक्रमते एकएककरज्ञानइंद्रि
एकइंद्रियउत्पन्नभया जैसेआकाशकेसत्वअंशतेएक
आकाशकेसत्वभा

गनेश्रोत्रभया वायुकेसत्वभागनेत्वकभया
तेजकेसत्वभागनेअक्षिभया जलकेसत्वभा-
गनेरसनाभया पृथिवीकेसत्वभागनेघ्राण-
हूया इसक्रमकरउत्पन्नभये ११ उत्यानका
सत्वांशाकेएकएकअसाधारणकार्यान्तूकह
कर सर्वकासाधारणकार्यकहितामूलकार
मूल आकाशादिकेसर्वसत्वांशोकरअंतःक
रणउत्पन्नभया सोहूमिदेभेदकरदोप्रकारका
हैमनजोहैविमर्शरूपहै बुद्धिजोहैनिश्चयात्मि
काहै १ टीका आकाशादिसत्वांशसर्वेकर
अंतःकरणजोहै मनबुद्धीकाउपादान इस
रूपउत्पन्नहूया तिसकाअवांतरभेदकहिता
है सोअंतःकरणहूमिदेभेदकरदोप्रकारका
है हूतिकाभेददिखावताहै मनजोहैविमर्श
कहियेसंशयजनतरूपहै निश्चयात्मिकाक-
हियेनिश्चयकरणेवालीहूमिबुद्धिहै १ ३
ग्यानका क्रमसमाप्तभयाजोंकेअंशहैएकएक
प्रतिअसाधारणकार्यान्तूकहिताहैमूलका-
र मूल आकाशादिवजोगुणकेअंशपंचा-
करकमनेकर्मेंद्रियजोहैवाकपाणिपादपा

श्री० गुदउपस्थएसभीउत्पन्नभयेहैं २१ टीका तिन्ह
पं०द० आकाशादिकोंदेपंजेपंचअंशहैं रजोकेभाग
११ उपादानरूपतिनकरवाकआदिकक्रमतेआ
काशकेरजअंशतेवाकउत्पन्नभयी वायुके
रजअंशतेहस्तउत्पन्नभया तेजकेरजअंशते
पादउत्पन्नभया जलकेरजअंशतेपायुउत्प
न्नभया पृथिवीकेरजअंशतेउपस्थउत्पन्नभ-
या इतिक्रमकरकर्मेंद्रियउत्पन्नभये २१ उत्था
नका आकाशादिरजोकेअंशकापकसाधा
रणकारणकहिताहैमूलकार मूल आका
शादिसर्वरजअंशकरप्राणउत्पन्नभया तिसी
केभेदतेसोप्राणपंचप्रकारहै प्राणअपान-
समानउदानव्यानइतिपंचहैं २२ टीका का
रणरूपआकाशादिरजोकेसर्वअंशतेप्राण
हुया तिसकाअवांतरभेदप्राणआदिहै ते
भेदअपिप्राणशब्दकहीतेहैं २२ उत्थानका
जिसनिमित्तआकाशादिरूपप्राणपर्यंत-
सृष्टीकहीहै सोअबकहिताहैमूलकार
मूल ज्ञानइंद्रियपंचकर्मइंद्रियपंचप्राणपं
चमनबुद्धिइनसप्तदशोंकरसूक्ष्मशरीर-

कहीताहै सोईलिंगशरीरहै २२ टीका ज्ञानइं
द्रिय श्रोत्रत्वकचक्षुजिह्वाघ्राणइतिपंच वाक
पाणिपादपायुउइतिकर्मेंद्रियपंच पंचप्राणअ
पानसमानउदानव्यानइतिपंच मनसंशयात्म
क बुद्धिनिश्चयात्मक इहसप्तदशकरसूक्ष्मश
रीरहै इसीकेसंज्ञावेदांतोविषेलिंगशरीरकहते
हैं २३ उत्थानका इसप्रकारसूक्ष्मशरीरकहक
रतिसकेअभिमानतालमिलीहोइ प्राज्ञअरई·
श्वरकोअपरअवस्थाकहताहैमूलकार मूल
प्राज्ञजोहैलिंगदेहविषेअभिमानकरतेजससमा·
वरूपामहोताहै ईश्वरहिरण्यगर्भभावरूपाम·
होताहै तिनदोनोकोव्यष्टिअसमष्टिताहै २४
टीका प्राज्ञजोहैमलनसत्वप्रधानअविद्योपा·
धिकजीवसो तिसलिंगशरीरविषेतादात्म्याभि
मानकरतेजसनामरूपामहोताहै ईश्वरजोहै
शुद्धसत्वप्रधानमायोपाधिकतिसशरीरविषे·
अभिमानकरहिरण्यगर्भसंज्ञारूपामहोताहै
प्रश्न तैजसअरहिरण्यगर्भकोलिंगशरीरदे·
अभिमानसमानहैयाहोया तिनदोनोकाप्र
स्परभेदकिसनिमित्तहै उत्तर जिसकारणते·

श्री· पं·द· १२

तैजसअरुहिरण्यगर्भकोव्यष्टित्वअरुसमष्टित्व·
है इसकारणतेतिनकाभेदहै २४ उत्थानका
ईश्वरकेसमष्टिरूपविषे जीवोंकेव्यष्टिरूपवि·
षेकारणकहितेहैं मूलकार मूल लिंगोपाधि
कसर्वजीवोंकेएकत्वज्ञानतेईश्वरसमष्टीहै
एकत्वज्ञानकेअभावतेजीवव्यष्टिकरकहीतेहै
२५ टीका ईश्वरजोहैहिरण्यगर्भसर्वलिंगउपा
धिकजीवजेहै तैजसतिनकेज्ञानतेसाथएक
त्वज्ञानतेसमष्टिरूपहै ईश्वरतेअन्यजेहैजीव
तिनकोसर्वसाथएकत्वज्ञानकेअभावकरव्य
ष्टिसंज्ञाकहीतेहै २५ उत्थानका इसप्रकार
लिंगशरीरअरुतउपाधिकतैजसअरुहिरण्य
गर्भनिरूपणकरस्थूलशरीरादिउत्पत्तिकेलि·
एनिमित्तपंचीकरणनिरूपणकरताहैमूल
कार मूल जीवोंकेभोगकेनिमित्तपुनाभो
ग्यअरुभोगायतनकेजन्मनिमित्तआकाशा·
दिएकएकप्रतिभगवानपंचीकरणकरता·
है २६ टीका भगवानजोहैसर्वऐश्वर्यधर्म·
यशश्रीज्ञानवैराग्यइनषट्ऐश्वर्यादिगुणधरक
रसंपन्नपरमेश्वरपुनाप्रज्ञाजीवोंकेभोगके·

निमित्तभोगपकहीये अन्नपानादिकभोगा॰
यतनकहीये जरायुजादिचारप्रकारदेश
रीरइनदोनोकीउत्पतिनिमित्तआकाशादि॰
कंपंचभूतात्रएकेएकअंशनिपंचीकरणकह
ताहै २१ उत्थानिका कैसेएकएककोपंचा
त्मताहै सोकहिताहैमूलकार मूल दोय
कारकरकेएकएकभूतनांपंचनाकेप्रथम॰
अर्धनुचार[illegible]करणस्वाबातेइतरद्विती
यअंशवीचयोजनतेपंचपंचतेहोतेहैं २२
टीका आकाशादिकएकएकप्रतिदोदोवि
भागकरने भूनाभूनाप्रथमभागनुचारवि
भागकरणा आपनेइतरजेहै चारभाग ति॰
नकाजेद्वितीयस्थूलभागहै तिनकेसाथ
प्रथमप्रथमभागकेअंशाव[illegible]चारमध्यवी
चएकएकजोड़ने तेहेआकाशादिकएक॰
एकपंचपंचहोजातेहै २३ उत्थानिका इसी
प्रकारपंचीकरणकहिकेतिनें[illegible]सेंकरउ
पाधिकार्यवर्गदिखावताहै मूल पंचीकृत
भूतोंकरब्रह्मांडहूया ब्रह्मांडवीचचतुर्दश
लोकहूये लोकोवीचअन्नहूये अन्नशरीर

श्री·
पं·द·
१३
13

हूये हिरण्यगर्भ इस स्थूल शरीर विषे वैश्वानर हू
या ॥ टीका ॥ उपादान कारण रूप जो है पंची
कृत भूत तिन कर ब्रह्मांड उत्पन्न भया तिस ब्र
ह्मांड बीच उपर वर्तमान भूमि आदि सप्त लोक ।
अरु भूमी ते अधः स्थित अतलादि सप्त पाताल हूये
तिन भुवनों बीच तिन्ह तिन्ह प्राणीयों कर भोज्य
ते अन्न अरु तिन तिन लोक विषे उचित शरीर ति
न्ह पंचीकृत भूतों कर ईश्व[illegible]नाकर उत्पन्न
भये इस प्रकार स्थूल शरीरों की उत्पत्ती कही है
तिन्ह स्थूल शरीरों विषे अभिमान वाला हिरण्य
गर्भ समष्टी रूप वैश्वानर संज्ञक होता है ॥ मू
ल ॥ तैजस जे है विश्वरूपता अरु प्राप्त होते हैं ते·
देव तिर्यग नर आदि रूप है ॥ टीका ॥ एक एक स्थू
ल देह के अभिमानवाले व्यष्टी रूप जे तैजस हैं ति
न्ह की विश्व संज्ञा होती विश्व नाम जीव देव तिर्य
ग नर आदि रूप है ॥ उत्थानका ॥ अरु जे विश्व सं
ज्ञाकूं प्राप्त होये जीव हैं तिन्ह को तत्त्वज्ञान ते·
रहित होने कर संसार की प्राप्ती सहित दृष्टांत
देकर श्लोक करके कहिता है मूलकार ॥ मू·
न ते देवादिक जो हैं बहिरमुखदर्शी हैं प्रत्य·

कर्तव्यतोंच[illegible]लिहिनहै २४ कर्त्तेहैकर्मभोग
निमित्तकौंयेकर्मेनूभोगतेहै नदीविषेकी॰
टेंकीन्याईआवर्तेहैआवर्तोंतरनूणीघ्रतानैं
जातेहूयेजन्मतेजन्मांतरसुखलवनहीलभते ।
टीका तेदेवादिकवायशरीरादेषतेहै वरी
प्रत्यगात्मानूदेषते विहारसुखमेंइंद्रियारा॰
मकराभया स्वयंप्रतिमकारणतेहै वहिर
प्रवत्तानूदेषतेहैजाही ऐसेप्रत्यात्मानूहृत्स्थ
तिरूपिकहितेहै नतु तार्किकआदिदेहते
भिन्नआत्मानूजाणतेहै तब यद्यपितेजाण
तेहै तथापि फलसिद्धतत्वनूनहीजाणते
इसअभिप्रायनूआश्रयलेकरकहाहै प्रत्यक
तत्वबोधतेरहितेहै २५ टीका इसीकारण॰
तेभोगकहिये स्वर्गादिकेप्रत्ययनिमित्त॰
मनुष्यादिशरीरोंनूआश्रयलेकरबलवंततरशा
रीरउचितजेकर्महै तिन्हानूकर्त्तेहै कीयेहू
येकर्मोकेफलनूदेवादिशरीरोंकरभोगतेहै
एवंवर्तमानहूयेजैसेजीवनदीप्रवाहरूपतिन॰
कीटेंकीन्याईआवर्तेहै आवर्तोंतरनूणीघ्र॰
ताकरजातेहूये जैसेसुखलवनहीलभते ३॰

श्री· पं·द· १४

14

सीप्रकारजन्मतेजन्मांतरोंमें [illegible]नरी·
प्राप्तहोते अज्ञानका इसप्रकारसंसारकी
प्राप्तिकहकरसंसारकीनिवृत्तीकेउपाय·
नूँदिखावनताहूया दृष्टांतद्वारिविवेककहिता
हैमूलकार मूल सतकर्मकेफलतेतेकीट
कल्याणतिथिकरनिकासेहूये ३१ मूल प्रा
मरहोकरनीरकेतटकीछायायानूँजैसेरस्तावसे
उत्कविश्रामनूँप्राप्तहोतीहै तैसेसतवरूपी·
गुरुकेउपदेशनूँप्राप्तहोकर ३२ मूल पंच·
कोशकेविवेककरपरमजोमोक्षरूपसुख·
है तिसनूँप्राप्तहोतीहै टीका सतकर्मकरि
येपूर्वकालविषेजोपुण्यकीयाहै तिसकेफ
लतेदयालुकिसीपुरुषकरनदीप्रवाहसे
बाहरनिकसेहूये नदीकेकनारेपरजोवृक्ष
है तिसकीछायानूँप्राप्तहोकरपरमसुखी·
हूयेहोये जैसेविश्रामनूँप्राप्तहोजातेहैं इसी
प्रकारपूर्वलेपुण्यकेफलदेवशते प्रमक
शुभित्रवस्थाकेसात्वानवालाजोआचार्यहै
गुरुतिसकाउपदेशकरीये तत्वमस्यादिवा
क्यार्थज्ञानदासाधनजोहै श्रवणतिसनूँसे

धारनकरकेअन्नमयतेआदिलेकरजेपंच-
कोशहैं तिन्हकेविवेककरणेकरमैमोतत्वरूप
ह्लावरूपापनहोतेहैं प्रश्न कौनसेअन्नमय
आदिकोशहैं इसप्रश्नविषेउत्तरकहितेहैं
मूलकार मूल अन्नहैप्राणहैमनहैबुद्धीहै
आनंदहै इहपंचकोशहैं ३३ टीका प्रथमअ-
न्नमयहै दूसरापाणमयहै तीसरामनोम
यहै चतुर्थविज्ञानमयहै पंचमआनंदम
यहै इसप्रकारपंचकोशहैं ३३ उत्थानका
अन्नादिकोंदेकोशशब्दकथनविषेकारण
कहितेहैं मूलकार मूल तिन्हकोशोंकर
आवरयाहूया स्वात्माभूलकरकेहूतीव्र
प्राप्तहोताहै पंचीकरनभूतोंतेउत्पन्नहूया
जोस्थूलदेहहै सोअन्नमयकोशहै ३४ ।
टीका तिन्हकोशोंकरआवरयाहूयास्वरू
पभूतआत्मास्वस्वरूपकेभुलावनेकरज
न्ममरणरूपसंसारबन्धप्राप्तहोताहै जैसेको
शाकारकमीकोआवरककरोकरकेकोशाको
हेततकोशहै तैसेअन्नमयादिजोहैआत्मा
कीअच्छादनाटाआवरककहोणेकरक

श्री॰ पं॰द॰ १५

15

तेशाकाकारणहोणेतेकोशशब्दकरकरि
नीहै उत्थानका अबतिन्हपंचकोशांकेस्व
रूपनोंक्रमकरकहिताहैमूलकार मूल
दोनोंकोंकदपंचीकृतभूतोंनेउत्पन्नभयाजो
हैस्थूलदेहहैसोअन्नमयकरकहीताहै ३४
मूल लिंगशरीरविषेराजसजोहैप्राणादि
कअरुकर्मेंद्रियाइनदशसहितप्राणमय॰
कोशहैसात्विकजोहैज्ञानेंद्रियातिन्हस॰
हितजोमनहै सोमनोमयकोशहै ३५ ।
मूल तिन्हज्ञानेंद्रियसहितजोबुद्धीहैनि॰
श्चयात्मिकासोविज्ञानमयकोशहै कार॰
णशरीरविषेजोमलिनसत्वहै सोदाहिह
नीसहितसोआनंदमयहै अर्थश्लोकका
अर्थसुगमहै ३४ टीका लिंगशरीरवि॰
षेवर्तमानजोरजोगुणकाकार्यरूपहै
प्राणअपानादिकवायुपंच अरुवागादिक
र्मेंद्रियपंच इनदशसहितजोप्राणहैसो
प्राणमयकोशहै अरुसत्वगुणकाका॰
र्यरूपजोहैज्ञानेंद्रियहै तिन्हसहितजोम
नहै सोमनोमयकोशहै ३५ टीका ता

नेंद्रियसहितबुद्धिजोनिश्चयात्मिकासतोग
णकाकार्यरूपहै सोविज्ञानमयकोशहै ।
कारणरूपाजाअविद्याहै तिसमैप्रियमोद
प्रमोदइष्टदर्शनमैप्रियहुती लाभमैमोद
हुती भोगमैप्रमोदहुती तिन्हसहितजोम
लिनसत्वहैआनंदमयकोशहै ३। तत्र स्थू
लशरीरादिकाकोंअन्नमयशब्दकरहोनया
होया सोइहपुरुषअन्नरसमयहै इतितैत्ति
रीयउपनिषदवीचआरंभकरतिसइसअन्न
रसमयात अन्यअंतरआत्माप्राणमयहै ।
प्राणमयतेअन्यअंतरआत्मामनोमयहै इ
तिआदिकैतैत्तिरीयविषेश्रवणकरणेतेआ
त्माकोअन्नमयादिशब्दकरकेसेकहीताहै
उत्थानका देहाकोअन्नमयादिविकारहो
णेकरअन्नमयादिशब्दकरकथनहै नाही
आत्माकोअन्नमयादिशब्दकरकथनना ।
आत्माकोअन्नमयादिकथनना तिसतिस
कोशसाथतादात्म्यअभिमानकरकहेता
है इहप्रकारसूत्रकारकहिताहै मूल
तिसतिसकोशाकीतादात्म्यतातेततनको

श्री॰
पं॰द॰
१९
16

शमयआत्माहोताहै अन्वयवितिरेककरपंच॰
कोशाकेविवेककरे ३१ मूल स्वात्मानंपंचको
शतेभिन्नकरकेपरंब्रह्महोताहै अर्थ टीका
आत्माजोहैसोयगात्मातिसतिसकोआसाथना
दात्मअभिमानकेनतेनकोशमयहोताहै व्य
वहारकालविषेअन्नमयआदिकोशप्रधान
होनेते अन्नमयशरीरकरकहीताहै अन्न के
मेइसप्रकारसेआत्माकोअन्नभावहोताहै उ
त्यानका अन्वयव्यतिरे[illegible]होतेजेआगेक॰
हेगेतिनकरपंचकोशअन्न[illegible]दिकोंतेवडी
करआत्माकोभिन्नकरणेकरविदानंदस्वरूप
त्नतिसेकरकेपरंब्रह्मरूपप्रामहोताहै अर्थ॰
नेब्रसहीहोताहै उत्थानका अवतारणक
देनेअन्वयअवविनरेकहैं तिनदोनोंनहिथा
वनाहैमूलकार मूल स्थूलदेहकाअभाव॰
हैजिसविषेसीजोस्वप्नअवस्थाहै तिस
विषेआत्माकोजोभानहै ३५ मूल सोअन्व
यहै अर्थतिसआत्माकेभानहैभानहोयाहो॰
या स्थूलदेहकानभासणाविनरेकहै लिंग
देहकाअभानहोयाहोया लिंगदेहकाजो॰

प्रभान है सो वितिरेक है टीका स्वपन अवस्था
विषे स्थूल देह जो अन्नमय कोश है तिसके अ-
प्रतीति होया होया आत्मा का जो भान है स्वप-
न का साक्षी होकर जो स्फुरण है सो आत्मा का
अन्वय है तिसी स्वप्न अवस्था विषे आत्मा के स्फु-
रण होया होया स्थूल देह का जो न प्रतीति हो-
णा सो स्थूल देह का वितिरेक है इस प्रकार
विषे अन्वय अरु वितिरेक शब्द का अर्थ इसी अ-
वस्था ह्ली कही दीनी है उथान का इस प्रकार
स्थूल देह के अनात्मत्व के कथन वाले अन्वय
वितिरेक दिखाकर अब लिंग देह की अनात्म-
ता के दिखावणे वाले अन्वय वितिरेक है ति-
न दोनों को दिखावता है टीका सुषुप्ती अवस्था
विषे लिंग देह के अभान होया होया सुषुप्ती
का साक्षी होकर आत्मा का जो स्फुरण है सो
आत्मा का अन्वय है इस आत्मा के भान होया
होया लिंग देह का जो अभान है सो लिंग दे-
ह का वितिरेक है नत्र पंचकोश के विचार का
आरंभ कीया है तिसमें इहां लिंग देह का वि-
चार करणे प्रसंग दोष आवता है उथान

श्री. का प्राणमयआदिकोश[illegible]तिसलिंगशरीर
पं.द. विषेआजातेहै इसकारणतेअपसंगदोषना
१२ हीआवता इसअभिप्रायमूलेकरमूलकार
17 कहिताहै मूल तिसलिंगशरीरदेविचारते
विचारेजातेहै प्राणमयमनोमयविज्ञानम
यएतीनकोशतेप्राणमयआदिकोश तिसलि
गशरीरविषे उत्पन्नहोअवस्थादेभेदमात्रते।
भिन्नवर्णनकरतेहै ध. टीका तिसलिंगश
रीरदेविचारतेप्राणमयमनोमयविज्ञानम
य[illegible]है तिनकोएसेजोपंचकोशहै तेआ
त्मातेभिन्नकीयेजातेहै अत्र किसकारण।
ते सोकहिताहै उत्थानका तिसकारणतेप्रा
णमयादि तिसलिंगशरीरविषेगुणजोहै।
सत्वगुण अवरजोगुणतिनकीअवस्थाकेभे
दमात्रतेगुणकेप्रधानभावकरस्थितिविशे
षतेभिन्नकीयेहै अर्थातभेदकरकरकथन
करेहै ध. उत्थानका अवआनदमयकोश
करकथनकीइच्छातिसकी एसाजोकार
णशरीरहै तिसकेविचारकेउपायकहिता
हैमूलकार मूल सप्तमीकेअवतीतिहोया

होयासमाधिविषेआत्माकीअसीतिकरिये ।
जोस्फुरणहै सोआत्माकास्वरूपहै आत्माके
स्फुरणहोयाहोयासत्त्वगुणीकानस्फुरणहोना
सोसत्त्वगुणीकाविक्षेपकहै ४। टीका कहीये
गालक्षण जिसकाश्रेसीजोसमाधीअवस्था·
है तिसविषेसत्त्वगुणीशाहूकारकहीताजेहै ·
कारणएहहै अज्ञानतिसहैनस्फुरणहोतया
हैयाआत्माकोजोभानहै सोआत्माकास्वरूप
है आत्माकेस्फुरणहोयाहोयासत्त्वगुणीजोहै
कारणशरीर अज्ञानतिसकानस्फुरणहोना
सोअज्ञानकाविक्षेपकहै इसविषेदृष्टांतमा·
नहै अन्यगअग्रमाअन्नमयआदिकोंतेभिन्नहै
तिअन्नमयआदिकाटेपरस्परभिन्नभिन्नहो
याहोया अपिआपअभिन्नरूपहोणेजोअन
भिन्नहोयाहोयाविषेअपिनभिन्नहोवे सोति
न्हतेभिन्नहोताहै जैसेवृक्षांतेसूत्रहै अथवा
जैसेसूगादिकयामीतेगानजातीहै इसप्र·
कारअन्वयविवेककरपंचकोशांतेविवा
रयाजोआत्माहै तिसकोब्रह्मकीआमीहोते
है इहकथनकीयाहै ४। अज्ञानकातिस·

श्री· पं·ट· १८ 18

वार्नीकेप्रतिपादनकरणवाली श्रुतिहमारेत्रगु·
रुयश्रेतरआत्माहै इतिआदिकाजिसमेंजाने·
सुइश्रवअमृतइसपदैनाजोकठवल्लीकीश्रु·
तीहैतिसग्रंथद्वारापाठकरताहैमूलकार
मूल जिसप्रकारसेजानेनीलायकिकरनि·
कामलेवी नातेसीआत्मायुक्तीकरनिकास·
याहूयाशरीरचिह्ननेपरेब्रह्मसीहोताहै धर
टीका जिसप्रकारसेजातिकजोलक्षणविशेषहै
तिसके गर्भविशेषस्थितिजोकोमललक्षणहै ति·
सरतिससंज्ञाकेप्राप्तिलेपचयुक्तीकरहरक
रकेतिकामलेइनाहै इसीप्रकारआत्माअपि·
अन्वयविनेरकयुक्तीकरप्रदेशकशरीरलीनते
धीरजेहै ब्रह्मचर्यादिसाधनसंपन्नतिरूक
रभिन्नजनवकीया नरवेसोआत्मापरब्रह्महोता
है सच्चिदानंदरूपलक्षणहोनेकासमानहो
लेने धर नर इतनेग्रंथकरफलसहितनर
ज्ञानकानिरूपणकरतेउत्तरग्रंथकाआरं
मनहींचाहीता उत्तर उत्तरग्रंथकेआरंभके
सिद्धीवालेपूर्वसंगकथनसंबंधक उत्तरगु·
प्रकातात्पर्यकहिताहैमूलकार मूल ॥

परमात्माकीअरुजीवात्माकीएकताइस·
प्रकारश्रुतीकरकहीहै तत्वमसीआदिमहा
वाकोकरभागत्यागलक्षणाकरलषीतीहै ४३
टीका इसउक्तप्रकारसुंकहीये तत्पदार्थप
रमात्मा अपरकहीयेत्वंपदार्थजीवतिनदो·
नोकीएकताकहिये अभिन्नताश्रुतीकरसम
तात्पर्यनरूपउपायकरकेश्रुतीकारकरीहोहै ।
तत्वमसीआदिवाकोंकरविरुद्धअंशकेपरित्या
गकरकेलक्षणावृत्तिकरजानेजीहै ४४ उत्था
नका तत्वमसिवाक्यकेअर्थकाजोज्ञानहै ।
तत्पदअरुत्वंपदइनदोनोंकोअर्थज्ञानपूर्वक
होतीहै तिसकारणतेप्रथमतत्पदकाअर्थक
हिताहैमूलकार मूल तामसीमायानलेक
रयोजगतकाउपादानहै शुद्धसत्वामायान
लेकरजोनिमित्तकारणहै सोब्रह्मतत्पदकर
कहीताहैश्रुतीकर ४४ उत्थानका त्वंपद·
कावाच्यार्थकहिताहैमूलकार मूल जिसम
मेवीचमलिनसत्वजोअविद्याहैकामकर्मो·
दिकरहोषित तिसतनूपरंब्रह्मग्रहणकरिता
है तिसमेविषेत्वंपदकरकहीताहै ४५ ।

श्री·
पं·द·
१९

19

टीका सोईश्वर जिस अवस्था विषे थोरे से सतो
गुण अरु तमोगुण साथ मिलने कर मलन सतो
प्रधान है अर इसी कारणते कामकर्मादिक र
हषित है तिस अविद्या शबल कर कथन होई है ये
मायान उपाधि कर स्वीकार करता है तत्वंप
द कर कहीता है ४५ उथ्यानका इस प्रकार त
त्पद का अर्थ अर त्वंपद का अर्थ कहि के वाक्य के
अर्थन कहिता है मूलकार मूल तैसे प्रकार के
मायान त्याग कर परस्पर विरोध वालीन अखं·
ड सच्चिदानंद महावाक्य कर लषीता है ४६ ·
टीका तम प्रधान अर विशुद्ध सत्व प्रधान अर
मलन प्रधान इस प्रकार तीन प्रकार के भेद वा·
ली जो माया है इसी ते परस्पर विरोध वाली है
तिस माया न त्याग कर अखंड जो है सर्व भेद रहि·
त सच्चिदानंद परब्रह्म सो महावाक्य कर लषी·
ता है ४६ उथ्यानका तत् इस प्रकार लक्षणा·
हति कर वाक्य का अर्थ कहोटे हाहै मूले सोयि
हदेवदत्त है इति शास्त्रि वाकों बीच विरोध ते तत्
शह देश शह इन दोनो भागों के त्याग कर एक·
ग्रामराजे से लषीता है ४७ टीका सोयिहदेव

हत्तहैइत्यादिवाक्योंवीचजिसदेशमेंअरुजिस
कालमेंदेवदत्ता जिसकानामततदेश अरुतत
कालहै एततदेशअरुएततकालकहीये वर्त
मानदेशकालहै जोसन्मुखदेवदत्तकादर्शन
जिससमेमेंहोताहै ततशब्दअरुएततशब्दक
हीये भूतदेशअरुवर्तमानदेशयेदोनोंकेस·
हैविरुद्धहैभूतमे वर्तमाननहीहोता वर्तमा·
नमेंभूतनहीहोता इसविरोधतेदोनोंकात्या
गकरणा एकआसराजोहैदेवदत्तकास्वरूप
जैसीलषीताहै ४७ उत्थानका इसप्रकारदृ·
ष्टांतकहकरदार्ष्टांतककहताहैमूलका
र मूल इसीप्रकारईश्वरअरुजीवइनदोनों
कीउपाधीजेहैमायाअरुअविद्यातिन्हदोनों
कोत्यागकरकेएकअखंडसच्चिदानंदपरब्र·
म्हीलषीताहै ४८ टीका इसप्रकारसोइ·
हदेवदत्तहै इतिआदिवाक्यकीन्याई ईश्वर
अरुजीवकीउपाधीरूपजेहैमाया अरुअवि·
द्याजेसर्वकहीयेंथीया तिन्हदोनोंकेत्याग
केसर्वभेदरहितजोहैसच्चिदानंदपरब्रह्म·
सोईमहावाक्यकरलषीताहै ४८ नतुमहा

श्री· वाकजन्यसविकल्पलखीताहै केनिर्विकल्पलखी
पं·च· ताहै प्रथमपत्तमेंवादीदोषकहिताहैमूलमे।
२· मूल जेकरसविकल्पलखीताहैतबलत्तकोग्रव
२० स्फताहोवे टीका सविकल्पकहियेनामजाती
आदिकेसहितजोहोवे तिसकोजेकरमहावाक
केअर्थद्वाराजाणीताहै तबलत्तणकोग्रवस्य
ताकहीये मिथ्यात्वग्रावताहै द्वितीयपत्तमेदोष·
मूलमेकहिताहैवादी मूल निर्विकल्पकोलत्त·
होणानेदेषाहैनहीवनताहै ४५ टीका नामजा
तीआदिकरवहितजोहोवे सोहूयानिर्विकल्प
तिसकोलत्तखलाकिसीनेकिसीजगामेनाहीदे
षी अरवणाईहूयीवणतीअपितुहीनिर्विक·
ल्पभावकेहूरनेहोणेते ४५ इहपूर्वपत्तउत्तरहैसो·
सेमतकहू ऐसेकहिकेअबसिद्धांतीविकल्प·
पूर्वकदोषकहिताहैमूलमे मूल हेवादीतेरा
जोविकल्पहै निर्विकल्पनूंविषयकरताहै के
सविकल्पनूंविषयकरताहै टीका हेवादीस·
विकल्पकोलखीताहै केनिर्विकल्पकोलखी
ता इहजोतेनेविकल्पकीयाहै सोविकल्प·
निर्विकल्पनूंविषयकरताहै केसविकल्पनूं

विषयकरताहै मूल आदिपदनदीवतेरेकर
लेकाव्याघातआवताहै इसमेंमेंअनवस्थाआ
त्माश्रयआदिदोषआवताहै ५ टीका आदि
कहियेप्रथमपक्षमेंतोमात्रेकथनकाव्याघात
आवताहै निर्विकल्पविषेविकल्पकाअभाव
होणेते इसतेपक्षमेंअनवस्थाआदिदोषआव
तेहै तिनकोकहिताहै टीकाकारजेकरकहे
सविकल्पकाविकल्पहै इसवीचप्रश्नहै विक
ल्पसहितजोहोवे सोकहियेसविकल्प ईहां
सविकल्पशब्दकरअरुविकल्पशब्दकरएकही
विकल्पहै केहेंहै जेकरतुमकहेएकहै तो
आत्माश्रयदोषआवताहै किसरीतकर
आवताहै सोकहतेहै सविकल्पपदविशेष
हुया विकल्पपदविशेषणहुया कैसासवि
कल्पहै विकल्पसहितहै इसरीतिकरआपही
आसराहुया अरुआपहीवरतनवालाहोया
इहआत्माश्रयदोषहै जैसेआपहीरथहोवे
अरुआपहीचढनेवाला इहअसंभवहै जेकर
कहेदोहै एकसविकल्पहुया एकविकल्प
हुया सविकल्पकाविशेषणरूपजोविकल्प

श्री॰
पं॰द॰
२१
4

है सविकल्पहीहै केइनदोनोंसेकोउअन्यहै जे
कवरहभीसविकल्पहै ताअन्योन्याश्रय॰
दोषआवताहै कैसेसोकहत हैसविकल्पवि॰
नाविकल्पनहोनाहूया विकल्पविनासविक
ल्पनहोणाहूया इसरीतिकरअन्योन्याश्र
यदोषआवताहै वृक्षबीजकीन्याई द्वितीयप॰
क्षविषेधर्मीकाविशेषणरूपजोविकल्पहै स
विकल्पहै केइनतीनोंसेभिन्नहै जेकरकहेस॰
विकल्पहै तांचक्रकारूपदोषआवताहै कैसे
सोकहत सविकल्पतेविकल्पतातेविकल्पात
वते पुनासविकल्पपुनाविकल्पपुनाविकल्पो
नव इसरीतिकरचक्रकारूपदोषहै जेकरइन
तीनोंसेअन्यकहै ताअनवस्थादोषआवताहै
कैसेसोकहत चतुर्थकापंचमकारणचाहीये
पंचमकाषष्टचाहीये इसरीतिकरअनवस्था
दोषहोताहै ५॰ अख्यानका नहीकेवलहैहा
रीदूषणप्रपंच सर्वस्थानमेइसविधविकल्प
पूर्वकरदूषणआवताहै सोमलकारकहिता॰
है मल यहदूषणगुणक्रियाजातिद्रव्यसं॰
वंधपर्यंतवस्तुवीचसमहै तिसकरसर्वगुण

दिकस्वरूपविषेसीवर्नतेहै ५१ टीका इसवि॰
कल्पकरहूषणकहाजोहैसोगुणक्रियाजाति
इत्यसंबंधअनंपंचवस्तुवीचसमहै तैसेही
कहितेहै गुणजोहैनिर्गुणविषेरहिताहै के
गुणवालीवीचरहिताहै क्रियाअपिक्रियार
हितविषेहै केक्रियावालेविषेहै आदिविष
याचातदोषआवताहै इसतेपत्तविषेआत्म
अयआदिदोषआवताहै इसप्रकारसंबंधत्या
नतेसेविचारलेणा नत जेकरइहअसमउत्त
रहूया नासमउत्तरकोनहै उत्तर तेसेविक
ल्पकोप्रसंगनहीतेकरसर्वगुणादिकवस्तु॰
स्वरूपविषेवर्नतेहै इहअभिप्रायहै ५१ नत
होवेइसीप्रकारप्रसंगमेंकाकालआईउत्त
र ल विकल्पअवविकल्पकेअभावसाथस॰
शीनहीजिसका ऐसीजोआत्मावस्तुहै तिस
विषेविकल्पनत्वअकलत्वत्वअसंबंधादि
कपसभीकल्पितहै ५२ टीका विकल्पअर
विकल्पकेअभावसाथस्पर्शारहितपरआ॰
त्मवस्तुहै तिसवीचविकल्पतेहै विकल्पि
तत्वकहीये सविकल्पकाविकल्पहै केनि

श्री॰ विकल्पकाविकल्पहै इसपूर्वोक्तकरविषयकर
पं॰ट॰ णलक्षणकरज्ञानहोनालक्षणहै संयोगादिसे
२१ वेद्यहै आदिशब्दकरइच्छादिकलेने गुणका॰
आश्रयद्रव्यहै कर्मतेभिन्नभिन्नहोयाहोया जा
तिमात्रकाआश्रयजोहै सोनित्यगुणहै नित्य॰
अरूपकअरअनेकोविषैरहनवालीजातिहै से
योगविभागदाअसमवायीकारणकर्महै सो
ईक्रियाहैपरभीपरमात्मवस्तुवीचकल्पितहै
कैसापरमात्माहै विकल्पअरविकल्पकेअभा
वसाथस्पर्शीजिसकानहीहै ५२ प्रश्न इतनेग्रं
थकरक्यासिद्धहुआउत्तर मूल इसप्रकारवा
क्योंकरवाक्योंकाअर्थअनुसंधानकरणजोहै
सोश्रवणहै टीका जगतकाजोउपादानहै॰
इतिआदिग्रंथकारकहाजोप्रकारहै तिसप्र॰
कारकरतत्वमस्यादिवाक्योंकरतिन्हावाक्यों
काजोअर्थहै जीवब्रह्मकीएकतालक्षण॰
तिसकाजोअनुसंधानहै सोश्रवणहै मूल
युक्तीकरसंभावितत्वकाजोअनुसंधान॰
है सोमननहै टीका शब्दस्पर्शादिजेहैते
वेद्यहैइतिआदिकरपरआत्माकाअरअपर॰

आत्माकागुरुकीकरकथनकराजोनलहै तिसका
जोचिंतनहै सोमननहै ५३ उथानका श्रवनिदि
ध्यासनकहिताहै मूलकार मूल श्रवणश्रुतमन
नइनदोनोकरनिरासंशयअर्थविषेस्थापनकीया
जोचितनहै तिसकाजोएकतानहै सोनिदिध्यास
नहै ५४ टीका तिन्हदोनोश्रवणअरमननकर
हरहोगयाहैसंशयतिसते ऐसाजोसंशयरहित
अर्थहै तिसविषेस्थापनकीयाजोचितहै तिसवि
तकोएकाग्रहतीदेखवाहरवालाहोएण इहनिदिध्या
सनहै ५४ उथानका तिसनिदिध्यासनकीपरि
पाकदशारूपसमाधीनकहिताहैमूलकार ।
मूल ध्याताअरध्यानइनदोनोकोत्यागकरक्रम
नेएकध्येयरूपविषयकरणवालानिवातदीपकी
न्याई जोचितहै सोसमाधीकहिताहै ५५ टीका
निदिध्यासनविषेध्याताध्यानध्येयएतीनभासते
है जबचितअभ्यासदेवशाकरध्याताध्यानइन
दोनोंकूक्रमतेत्यागकरएकध्येयरूपविषयकर
णेवालाहोताहै तबसमाधीकहिताहै तिसवि
षेदृष्टांत वायुरहितदेशविषेजैसेदीपनिश्चल
होताहै तिसकीन्याईचितकीस्थिरताकानाम

श्री·
पं·द·
२३
23

समाधीहै ॥५५ ननु समाधीविषेवृत्तीयाकानल·
क्षणतेयेयकापकविषयकरण कैसावणेगा उ
त्थानका वृत्तीकेहोणेकोअनुमानकरजाननेते·
मतकहुयेमेमलकारकहितांहै मल समाधी·
विषेवृत्तीयांआत्माकेविषयकरणवालीयांअला
नअपिहै तोभीसमांधीनेउठाजोअकर्षहै तिसकोहू
टीका आत्माहैविषयजिन्हां वृत्तीयांदातावृत्तीया
समाधीकालविषेअज्ञाताअपिहै ॥८॥ ।
प्रकर्षहै तिसकोउत्पन्नहुयाजोस्मरणपताकाल
मेसमाधीमेरहा इसरूपस्मरणतेअनुमानकरीती
याहै जोस्मरणकरताहै सोअनुभवकीयाहुया
होताहै पश्चात्मिलोकमेप्रसिद्धहै ॥८॥ ननु समा
धीकालविषेवृत्तीकाउत्पादकजोप्रयत्नहै तिस
केअभावतेकैसवृत्तीकीअनुवृत्तीकरीतीहै अन
रयद्यपि तिसकालप्रयत्नकाअभावहै तोभीअ·
दृष्टहैसहायिकजिसका ऐसाजोहैप्रथमप्रयत्न
तिसतेवृत्तीयाकीअनुवृत्तीहोतीहै इहमलका
रकहिताहै मल अदृष्टअरवारवारसमाधीके·
अभ्यासकरहुया संस्कारइनदोनोकीसहायता

नालमिलाहूया जोप्रथमप्रयत्नहै तिसतेह-
मीयाकीअनुवृत्तीजाणनी ५७ टीका ध्येयको
एकविषयकरणेवालेयाजोहमीयाहै तिन
कीप्रवाहरूपकरअनुगतीसमाधीतेपूर्वका
लीनजोहै अहंहअनुक्तकुशलकर्मनामवाले
विशेषअरजोअनाअनासमाधीहैअभ्यासक
रउत्पन्नहोयाजोभावनानामजेसंस्कारपदे
जेसहायिककारणहै लिङ्गसहितवर्तमान-
जोप्रथमप्रयत्नहै तिसतेहमीयाकेअनुगती
होतेहै ५७ नउ २२समाधीपूर्वाचार्याकरन
हीनिरूपणकरीदेषी उत्तर सर्वकेगुरुजोहै
श्रीपुरुषोत्तमश्रीकृष्णदेवजी तिन्होंकरनि-
रूपणकरणेतेअनेमतकउ२२कहताहै ।
मूल उत्थानका जैसेदीवानिवातदेशाविषे-
स्थितहूयाहूयानिश्चलहै इतिआदिस्लोकों
करअनेकप्रकारसेअर्थनभगवानअर्जुन
ताईनिरूपणकरताभया ५८ टीका जैसेदी
वावायुरहितदेशाविषेनहिचलितासोईउप
माकहीहै इतिआदिस्लोकोंकरअनेकप्रका
रकरजोभगवानजानपेश्वर्यादिसंपन्नहै ।

श्री॰ सोइसीनिर्विकल्पसमाधिरूपअर्थइसश्लोकसेंशि॰
पं॰ द॰ क्षाईनिरूपणकरनाभया ५८ उत्थानका इ
२४ ससमाधीकाफलकहिताहै मूलकार मूल
24 अनादिकालकेसंसारविषयकेजेकीयेजेकर्म
कोटहै इससमाधीकरलयरूपप्राप्तहोतेहैं अख
डधर्मवर्षताहै ५९ टीका इसअनादिकालके
संसारबीचसंपादनकीयेजेकर्मकोटहै अर्थात
पुण्यपापोंकेकोट अर्थतेअपरितकर्मपुण्यपा॰
पजेतेहै तेसभइससमाधीरूपधर्ममेकरलीनहो
जातेहै अर्थतेनष्टहोजातेहैं आत्माकेदेखीया
होयाकर्मक्षयहोजातेहैं ज्ञानअग्निसर्वकर्मोन्न
भस्मकरतीहै इतिश्रुतीअरस्मृतीकेकहणेवे॰
शुद्धधर्मजोहै अज्ञानसहितअविद्याकानिवर्त
कतत्वकेसाक्षात्कारकासाधनरूपसोवर्धताहै
तिसमेकीप्रमाणहै सोमूलकारकहिताहै ५९
मूल धर्ममेघइससमाधीकूंकहितेहैं योगवि॰
तेसजिसकारणतेएससमाधीधर्मामृतकीसह
स्रधारावर्षतीहै १॰ टीका अतिशयकरयोग
केजाणनेसोप्रवीन ब्रह्मसाक्षात्कारवालेइस
निर्विकल्पसमाधीरूपधर्ममेघकहितेहैं जिस

कारणतें इह समाधीयर्मेलक्षणश्रवणकीया
धासहस्रबंधनीहै लक्षणपकशानयत्नकाहै
इतिश्रुतीतेंइसीकारणतेंधर्ममेघकहितेहै
अध्यानका श्रवसमाधीकापरमप्रयोजनक
हिताहैमूलकार मूल इससमाधीकरवा।
मनाजालसंपूर्णेंदेनाशहोयाहोयाउपण
पहपकर्मसंचयदासहितमूलदेनाशहोग।
ताहैजव ॥ मूल तवपरोक्षज्ञानदेभास
याहोयातत्वमस्यादिवाक्यप्रतिबंधतेरहि।
तहूयाहूयाहूलविषेआमलीदेन्याईअपरो
क्षज्ञानउत्पत्तिकरताहै ॥ टीका समाधी
करवासनाजालजोहै अहंकारअरुममकार
कर्तृत्वादिकाअभिमानदाहेतभूतज्ञानवि
रुद्धसंस्कारकासमूह तिससंपूर्णेंदेलेहोया
होया उपणपापरूपजेपकेठहोपेहोयेहै ति
न्हकासहितमूलदेनाशहोयातव ॥ टीका
तववाक्यजोहै तत्वमस्यादिकमेअरुवासना
रूपदोनोप्रतिबंधतेरहितहूयाहूया मूवप
रोक्षताकरप्रकाशितजोतत्वहै तिसकेहोते
याहोतेयाहस्तविषेआमलीदेन्याई अपरोक्ष

श्री. नाकरनत्वकेप्रकाशनमेसमर्थजोबोधज्ञान
पं.द. है तिसनूंउत्पत्तिकरताहै १२ उत्थानका अव
२५ परोक्षज्ञानकाफलकहिताहै मूल परोक्षजो
२५ है ब्रह्मकाविज्ञानमहावाक्यजन्यगुरुपूर्वकसो
परोक्षज्ञानबुद्धीपूर्वकीयेहूये पापसंपूर्णनूंद
ग्धकरताहै अग्निकीन्याई १३ टीका गुरुशब
देलभयाजोतत्वमस्यादिवाक्यातेउत्पन्नहूया
परोक्षब्रह्मविज्ञानहै सोज्ञानपूर्वककीयेहूये
सर्वपापनूंअग्नीकीन्याईदग्धकरताहै १३ उ.
त्थानका अपरोक्षज्ञानदाफलकहिताहै मूल
कार मूल ज्ञानजोहैतत्वमस्यादिवाक्यजन्य.
गुरुशब्दद्वारालभ्याहूया संसारकाकारण.
जोअज्ञानरूपअंधकारहै तिसनूंमध्याह्नका.
सूर्यहै १४ टीका संशयविपर्ययतेरहितआत्मा
काजोअपरोक्षज्ञानहै सोसंसारकाकारणजो
अज्ञानरूपअंधकारहै तिसनूंमध्याह्नकाल.
कासूर्यहै जैसेमध्याह्नकालविषेअंधकारन
हीहोता तैसेअपरोक्षज्ञानदेउदेहोयाहोया
अज्ञाननहीहोता १४ उत्थानका ग्रंथकेअ.
भ्यासकाफलकहिताहैमूलकार मूल ॥

इसप्रकारतत्वकेविवेककूंकरकेविधिवतम
नन्तसमाधानकरकेसंसारबंधनेरहितहूया
हूया परमपदकूंप्राप्तहोताहैनरथोडेकाल
वीच ॥१५॥ इतिश्रीमदद्वितीयब्रह्मज्ञाननिरूपं
डितश्रीरघुवंदविरचितायांपंचदशीमूलभा
षायांप्रथमकतत्वविवेकः समाप्तः ॥
नरजोमनुष्यहैकथनकीयेहूयेप्रकारकरब्र
ह्मात्माकीएकतालक्षणजोतत्वकाविवेकहै
पंचकोशनेविचारणा तिसकूंकरकेतिसत॰
त्वविवेशास्त्रउक्तप्रकारकरमनकूंस्थिरकर
केअपरोक्षज्ञानकरसर्वसंसारबंधनेछुटकरहू
याहूयानिरतिशयपरमपदकूंथोडेकालबी
चप्राप्तहोजाताहै अर्थतेसम्यज्ञानप्राप्तेंदेहः
पवस्महीहोताहै ॥१५॥ इतिश्रीमदद्वितीयब्रह्म
ज्ञाननिरूपंडितश्रीरघुवंदविरचितायांपंचद
शीमूलभाषायांप्रथमकतत्वविवेकः समाप्तः

गेसतमतहीहैसोप्रपंचजगतआगेहोताभया
कैसासतहैएककैहैनिश्चयकरअद्वितीयहै

श्री. पं. द. २९

26

ब्रह्मइतिश्रुतीकरजगतकीउत्पतीपूर्वजगतका।
कारणसतरूपअद्वितीयब्रह्मकह्याहै तिसब्रह्म
कोवागमनकाअविषयहोवेकरकेजानने।
समर्थनहींहोवीता तोतेतिसकार्यहोकरति
सकोउपाधीरूपजोभूतपंचकहै तिसकेविवेक
द्वारातिसब्रह्मकेजाणनेनिमित्तभूतपंचकदेवि
वेककेजाणनेकीप्रतिज्ञाकरताहै मूलकार
मूल मतश्रुहै नश्रुतीमेजोकह्याहै सोपंचभूत
केविवेककेजाननेसमर्थहोवीताहै तिसका
रणतेपंचभूतोंकाविवेककरीताहै १ उत्थानका
इसग्रंथदेआदिविषेआकाशआदिभूतोंकागुणों
केभेदजाननेनिमित्त तिनकेगुणकहिताहै मू
लकार मूल शब्दस्पर्शरूपरसगंधापभूतोंकेगु
णहै सगमः नत्र एकगुणकथाइहसत्वेसमभानाटे
है केएकएकपकएकेकाएकगुणहै उत्तर पद्दो
मायत्नलेकरमूलकारकहिताहै इसअभि।
शमेएकगुणहै वायुमेदोगुणहै मूल आका
गुणहै जलमेचारगुणहै तेजमेतीन।
उत्थानका तिसीप्रकारोंन पृथिवीमेपंचगुणहै २
रचप्रकटकरकहि।

ताहैमूलमे मूल आकाशमैशब्दगुणहै सो
प्रतिध्वनीरूपहै वायुमैशब्दस्पर्शहै सीसीशब्द
है अउलशीतस्पर्शहै अग्नीमैशब्दस्पर्शरूपप्र
तीनगुणहै अग्नीमैबडबडशब्दहै उस्नस्पर्शहै
भास्वररूपहै जलमैशब्दस्पर्शरूपरसएचारगु
णहै जलमैबुलबुलशब्दहै शीतस्पर्शहै अ
भास्वररूपहै मधुररसहै ४ इसश्लोककाअर्थ
सुगमहै इसकेअर्थकीविशेषतामूलमैहीदे
ईहै उत्थानका भूमिविषेशब्दनेआदिलेकर
गुणहै तिन्हाह्नकाहिनाहैमूलमे मूल भूमीमै
शब्दस्पर्शरूपरसगंधएपंचगुणहै भूमीमैक
डकडशब्दहै कठनस्पर्शहै नीलादिकअनेकप्र
कारकारूपहै मधुरादिकषट्प्रकारकारसहै ५
मूल सुरभीअसुरभीएदोगंधहै इसप्रका
रआकाशादिकोकेगुणोंकाप्रकारविचार
कीयेहै ९ टीका नीलशुक्लपीतलोहितहरित
कपिशचित्रअनेकरूपहै मधुरआम्लल
वणकटुककषायतीक्ष्ण इसभेदसेषट्प्रका
रकारसहै ५ टीका सुरभीअसुरभीगंधकाना
महै अउसुरभीमाठीगंधकानामहै इसप्रका
रगुणोंकाविचारकीयाहै उत्थानका इसप्र

पं.व. कारआकाशादिकागुणतेभेदकहिके अवतिन्ह
२. काकार्यद्वाराभेदजाननेनिमित्ततिनकेकार्जेजेहै
१३ ज्ञानेंद्रिय तिनकोकथनकरताहैमूलमे ॥
मूल श्रोत्रत्वकचक्षुजिह्वाघ्राणएज्ञानइंद्रियपं
चहै। टीका शब्दकेसुननेवालाश्रोत्रहै स्पर्श
ग्रहणकरणवालात्वकहै रूपदेषणवालाचक्षु
है रसग्रहणकरनेवालीजिह्वाहै सुगंधदुर्गं-
धकेग्रहणकरनवालाघ्राणहै। उत्थानका।
अवतिनइंद्रियोंकेस्थान प्रगटउनकेव्यवहार इन
सभनूदिषावताहैमूलमे मूल कर्णआदिगोल
केमेज्ञानइंद्रियरहितेहै अरशब्दादिकेग्रहणक
रणवालेहै टीका कानकीघोडमेश्रोत्ररहिताहै
सर्वशरीरमेत्वकरहिताहै नेत्रगोलकमेचक्षुहै
कृष्णतादेअग्रवर्तमानहै जिह्वाकेअग्रभागमे
रसनारहतीहै नासाकेअग्रभागमेघ्राणहै श्रो-
त्रकाशब्दग्रहणकरावणाविहारहै त्वककास्प
र्शग्रहणकरावणाविहारहै चक्षुकारूपग्रहण
करावणा जिह्वाकारसग्रहणकरावणाविहा
रहै घ्राणकासुगंधअरदुर्गंधपग्रहणकरावणा
विहारहै अथ इंद्रियकेहोणेमेकीप्रमानहै।
उत्तर कार्यविहनद्वाराअनुमानप्रमाणहै सो।

मूलमेंकहिताहै मूल त्वचमनानेकार्यद्वाराअनु
मानकाविषयहै बहिरंगत्वयावना इहइंद्रियका
स्वभावहै टीका इसमेंअनुमानहै उपलभणसा
धनद्वाराउत्पन्नहोताहै क्रियाहोनेतेछेदनक्रिया
कीन्याई जैसेछेदनक्रियाकुठाडेरूपसाधनद्वारा
होतीहै तैसेउपलभणावस्तुरूपसाधनद्वाराहो·
ताहै इसप्रकारसमादिलभणजानलेणा अपंची
कृतभूतोंकाकार्यहोनेकरलखयानहीजाता तो
तेसूक्ष्महोया तोइंद्रियोंकेहोनेमेंअनुमानहीप्र·
माणहै इनकास्वभावबहिरंगत्वहै किसीसेंभेवि
धेकरणाकोअंतरविषयग्रहणानादिखावताहै ।
मूल किसीसेंमेंकानकोंअंगुलीकरठापयाहै·
याअंतरशब्दसुणीताहै जलकेपानतीव अन्नके
भक्षणतीव प्राणवायुसेंअफजठरायीमें अंतरस्प
र्शग्रहणकरीताहै ८ नेत्रकेमेंटनेमेंअंतरकाल·
मग्रहणकरीताहै डकारमेंरसअनुगंधपदोग्र
हणकरीतेहै इसरीतिकरइंद्रियोंकोंअंतरविष·
योंकाग्रहणहोताहै । टीका कटीककानको
अंगुलीआदिकरठापयाहोया प्राणवायुतीव ।
अफजठराग्नीतीव विद्यमानजोअंदरशब्दहै सो·

श्री॰ श्रवणद्वाराश्रवणकरीताहै जलकेपीवणेवीचअ
पं॰च॰ न्नकेभक्षणकरणेवीच अंदरकेस्पर्शअपिप्रकटहो
८॰ तेहै ८ नेत्रोंकेमीटनेकीनयाहोया अंदरकाननम॰
२८ लभीताहै डिकारकेआयाहोयारसअंदरयग्रहण
28 करीताहै इसप्रकारइंद्रियांकोविषयांकाग्रहणहै
अर्थात इंद्रियांद्वाराविषयांकाग्रहणहोताहै ४
मूल वचनआदानगमनविसर्गआनंदणपंचक
मेंइंद्रियांकेकर्मप्रसिद्धहै टीका वचनबोलनाआ
दानग्रहणकरणागमनटरणाविसर्गमलकात्या
गकरना आनंदसुखभोगना पंचप्रसिद्धक्रिया
है नत्र कृषीआदिक्रियाअपिहै कैसेपंचक्रियाप्र
सिद्धहै उत्तरमूलमें मूल कृषीवाणिज्यसेवाइति
आदिकसर्वीणांचोकेअंतरआजातेहै १॰ टीका
कृषीखेतीकरणीवाणिज्यव्यापारकरणा सेवाट
हलकरणी इतिआदिसभीणांचोवीचआजातेहै
तातेपंचहीप्रसिद्धहै १॰ प्रश्न इनक्रियांकेजनक
इंद्रियांकोनसीयाहै उत्थानमूल वाक्पाणिपा
दपायुउपस्थइणंचकर्मेंइंद्रियांचक्रियाकाकार
णहै टीका वाककहियेवाणी पाणीहस्तहै पा
दचरणहै पायुगुदाहै उपस्थलिंगहैपंचकर्मे॰

इंद्रियवचनादिकक्रियाकाजनकहै अर्थात्
तिनक्रियाकीउत्पत्तीवागआदिककरहोतीहै
इसमेअपिशब्दमानहै वचनआदिकरणपूर्वहै
क्रियाहोनेतेकेदनक्रियाकीन्याई इसप्रकार
कार्यरूपचिहनद्वारा अनुमानदेषणेयोगहै
तिसकर्मेंद्रियपंचकेस्थानकहिताहैमूलमे ।
मूल श्रवणआदिकगोलकमेरहिताहैकर्मेंद्रि
यपंचक ॥ टीका श्रवणगोलकमेवागइंद्रिय
रहिताहै करगोलकमेपाणिइंद्रियहै चरण
गोलकेमेपादहै गुदागोलकेमेपायूरहिताहै
लिंगछिद्रमेलिंगइंद्रियहै इसप्रकारसर्वकर्म
इंद्रियआपणेआपनेस्थानमेरहितेहै ॥ उस्थान
का अवकहैजेदशइंद्रियहै तिनकाप्रेरकजो
करस्थितजोहैमन तिसकीरूपअरुतिसका
स्थाणकहिताहैमूलमे मूल मनजोहैदशइं
द्रियोंकाप्रेरकहै अरुहृदयकमलरूपछिद्रमे
स्थितहै इसनाम उत्थानका तिसइंद्रियोंको
अतइंद्रियमहितनिमित्तकेकहिताहैमूलका
र मूल सोमनअंतःकरणहैविनाइंद्रीयोंते
बाह्यविषयाविषेनस्वतंत्रहोनेते ॥ इसनाम ।

श्री॰
पं॰ २
२९

29

उत्तर दशांइंद्रियोंकामनप्रेरकहै इसवार्त्ताकू।
प्रगटकरताहैमूलमें मूल इंद्रियांअर्पिनकर
कीयेजेविषयहैं तिनगुणोंकरविकारनूप्राप्त
होताहैमन जिसकारणते १९ टीका इंद्रीयोंक
रअर्पणकीयेजेविषयहैं तिनविषेइष्टअनिष्टकोहै
इष्टमानताहै वस्तुउत्तमाधमकाविचारकरणेवा।
लामनहै मूल मनकोगुणदोषकेविचारकर
णेवालाकिसीतिकरवाहीनाहै उत्तर आत्मा
कोअमानताहोनेकरअर्थज्ञानकासाधारणहो।
णेकरबलआदिकोंकोग्रहणत्यागविषेग्रहण।
करणेतेगुणदोषकेग्रहणकरणेवालामनही
वाहीनाहै मननेअर्थकोउचरनानाही उत्था
नका मनकोअर्थवाक्यप्रकाममआदिग्रने।
कारहतीहैहोनेकेदशोंजानिमिलसमाधिवाला
होणहिहावताहै इसमनकेसत्वरजतमगुण
है जिसकारणतेतिनगुणोंकरविकारकूप्रा।
मदोताहै १२ उत्थानका गुणोंकरजिसप्रका
रविकारनूंप्रापतहोताहैसोकहिताहैमूलमें
मूल वैरागताातिकेरार्थनाशमिआदिकसम
गणतेउत्पन्नहोतेहैं कामक्रोधलोभइत्यादि

करजोगुणतेउत्पन्नहोतेहै १४ आलसभ्रांतितेआदिभा
दिविकारतमोगुणतेउत्पन्नहोतेहै पंडेढश्लोकम
गमहै इसवास्तेइसकाअर्थनहीकीया वैराग्या
दिकेकार्यतूसिवकरदिखावताहैमूलमे ॥
मूल सत्वगुणकीकार्यातेपुण्यकीउत्पत्तिहोता
है रजोगुणकीकार्यातेपापकीउत्पत्तिहोतीहै ॥
तमोगुणकीकार्यांकरहोवेनहीहोते विवथा
आवलाकाशावाउणाहोताहै उत्थानका इनस
भकोबुद्धीविषेस्थितहोनेतेअन्तःकरणसभहै
तिनकेस्वामीवकहिताहैमूलमे मूल अहंप
रमपालाकर्ताहै सेयेलोकविषेअधिष्ठितहै ॥
टीका सेहारतिअहंमप्पयहै तिसवालाकर्ताहै
अर्थतेप्रभुहै लोकविषेभीजोकार्यकरणेवाला
है सोप्रभुहै ऐसेरूपदेशाकदीताहै ॥ उत्थानका
इसप्रका [illegible] स्थितीकरकर सर्वतिस
कोऐसेतिसजाननेकीउपायतूकहिताहैमूलमें
मूल शब्दादिरूपशब्दादिविषेभूतकार्यतासिमि
द्धहै तैसेइंद्रियांविषेअधिष्ठाताप्रवर्तकीक
रनिर्णयकरताहै १७ टीका स्पर्शजोशब्दस्पर्श
दिकरूपांसंततसहितजेघटादिवस्तुहै तिन

श्री. पं.द. ३.

30

विषेभूतकार्यताप्रसिद्धजाणीताहै प्रश्न इंद्रियो.
वीचकैसेभूतकार्यताकानिश्चयहै उत्तर श्रोत्र.
श्रवणकीकरइंद्रीयोंवीचभूतकार्यतानिश्चेकारी
तीहै हैसोआपअन्नमयइहमनहै प्राणोमयइहप्रा
णहै तेजोमयीइहवागहैइतिश्रुत्यादिप्रमाणतेइंद्री.
योंकोभूतकार्यताकहिताहै प्रश्नइहश्रुतमात्र.
है विवादकाआश्रयवानेश्रोत्रादिकहै तेभूतोंका
कार्यहोणेमेंप्रमाणइह भूतोंकेअन्वयअरुव्यतिरे.
ककेअनुविधायीहोणे तेजोजिसकीअन्वयवि
तरेककाअनुविधायीहै सोतिसकाकार्यहोताहै
जैसेघटमृत्तकाकेअन्वयवितरेककाअनुविधा
यीहै सोमृत्तकाकार्यहोताहै तैसेइहइंद्रिय
है तिसकारणतेइंद्रीयांभूतांकाकार्यहै हेसो
[illegible]लक्षणइहप्रकरणहै इहपादिको
[illegible]उपनिषदकीश्रुती[illegible]
वेकदाअनुविधायीश्रवणकीया[illegible]व्यतिरेक
ईअन्वयवीचश्रुतिप्रमाणोकोमाहै [illegible]सीकीआ
इसप्रकारभूतअरुभौतिककाउत्पत्ति[illegible]नका
दिखाकरइहदानी हैसोआप इहसर्वप्रपंचहोता
भयाहैआदिश्रुतिनीयब्रह्म[illegible]प्रतिपादनक.

वर्णेवाली इह श्रुती है तिसका इहां प्रकर्ण है
तिस श्रुतीके अर्थ करणकौ इछाकरता हूया
प्रथम तिस वाक्यमें स्थित जो इह देशशब्द है तिस
के अर्थनुं कहिता है मूलसे ॥ मूल एकादशोइ
दीयोकरयत किंचित जो जगत है एको कर अ
देशशब्दकर अपि सो इह देशशब्दकर कहीता है ॥ १८
टीका अनन्त सत्त्र मान अप्रमान शब्द अर्थापा
तिस अनुपलब्धि इन प्रमाणौं कर जिसे ना कहु
जेगजानीता है सो संपूर्ण श्रुतीमे स्थिति इहदेश
शब्दकर कहीता है ॥ १८ उथानका इस प्रकार
इह देशशब्दके अर्थनुं कहकर इदानीं श्रुतीनुं अर्थ
द्वारा मूलसे कहिता है ॥ मूल इदं सर्वं अग्र
नरुणीते एक एव अग्रे [illegible] होता भया ।
नाम अरु रूप नाहीं होता भया इस प्रकार ब्राह्मणी
का वचन है ॥ १९ टीका ब्राह्मणकी सैना नने जो
वेदके सैकडी ब्राह्मणी उद्दालक तिसका वच
न कौं [illegible] न ग्राम है ॥ १९ उथानका प [illegible] वग्र क्रप
हूया उथानीं [illegible] नकर मन वह द्वी वे स्वगत अ
हि सट तिनकौ वेवरणौं निमिंत लोककौ वस
गन ग्राहि में इतो अग्राहि में विभावना है ॥

श्री.
पं.द.
३१
31

[illegible] तत्त्वका पञ्चभूतात्मक[illegible]नीकर[illegible]णभेद
है इनके पांच [illegible] [illegible]टहै
इनके [illegible] पांच का होना [illegible] जैसे है २
[illegible] आत्मा [illegible] वीच नाना प्रकार [illegible] नाना
[illegible] भेद है जैसे [illegible] लोक वीच इनमे
[illegible] आदि होना है [illegible]
[illegible] जानाजाता है जैसे [illegible]
[illegible] [illegible] है [illegible]
[illegible] [illegible] है [illegible]
[illegible] [illegible] है निश्चय [illegible]
वीच भेद तीनवी [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] की केवी
लकार [illegible] [illegible] बलकबना है [illegible]
वीशेका [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] होता है एक
ने १४ लोका जैसे [illegible] [illegible]
प्रवि [illegible] है [illegible] है जैसे [illegible]
की [illegible] [illegible] का
रिक भेद की शंका एक [illegible] [illegible]
नपदें निश्चय वाले यों का [illegible] इनका
[illegible] निवारण

नाममें है इस सें स्वरूप मात्रकै है मन वस्तु सजाती॰
यभेद नेरहित होनेते ये मैं है उपाधी विना न भे
द वनता काभः मणें ते साकाश की न्याई इस प्र
मान कर मनस्वजातीय भेद का प्रभाव सिद्ध हूया २४
प्रश्न होवे न विजातीय ते भेद उत्तर मन वस्तु
ते स्वभाव सत्य मन है तिस को प्रसत्य होने कर
तिस की प्रतियोगिता का असंभव है तिस द्वारा भे
द कहणा प्रति नहीं बनि ता सो कहिता है स
ल कार मूल मै मन विजातीय प्रमन सो वि
जातीय भिन्न कुछ न ही है मे जा प्री जा है ह॰
सी कारण ते प्रमन की प्रतियोगिता नहीं ता॰
ते कि स कारण ते विजातीय ते भेद होवे २५
टीका वासदेमायादिवस्तु का प्रभाव होने
ते विजातीय भेद नहीं होता २५ उपासन का
फल संयुक्त वाक्य कहिता है मूलकार मूल
एक एवप्र हितीय मनसिद्ध हूया टीका एक
एव कहिदे निश्चय कर अद्वितीय मन सिद्ध॰
हूया उपासन का अवस्था को कहणे ता प्रा
यकार मन श्रेष्ठ मके हृढ कारण नूतव्यंध नाक
हिता है मूलकार मूल इनके ई वादी माक

श्री.
पं.ट.
३३

33

लहयेहूये इहूवर्णनकरतेहै जगतकेपूर्वइदे
जगतब्रमतरीहोनाभया ४४ सूत्रमे ४४ उत्था
नका टारहोनमेजोइनकरतेहैमूलकार ।
मूल तैसेइसकीबुद्धीभ्रखंडकारकारसहूपन
करप्रचारनेरहितहोइहोइ इसवस्तुवीचलिव
रणेतेरहितहोइहोइ इसनिर्विकल्पवस्तुमे भ
यब्रुप्रामहोतीहै ४७ उत्थानका कथनकीये।
भ्रथवीवभ्राचार्यकाप्रमाणदिखावतेहैमूल।
कार मूल गौडाचार्यजी निर्विकल्पसमाधी।
वीचभ्रनुभवीनेहै साकारब्रह्मनिष्ठावाले।
तिनकोभ्रत्यन्तभयकथनेकरनेभये ४८ सू।
त्रमहै ४८ प्रश्न किसवाकाकरभयकथनक
रतेभये उत्थानका निरूकारवाक्यपठनकर
ताहैमूलकार मूल भ्रस्पर्शयोगनामकरके
हहैसर्वयोगीयोंकरडुर्दर्शहै टीका जोइह
भ्रस्पर्शयोगहै निर्विकल्पसमाधीसो सर्वयो
गीजेहै साकारब्रह्मनिष्ठतिनकरडसमाप्यहै
भ्रर्थतेदुःखेकरप्राप्तहोताहै उत्थानका ।
इसमेदुःखीहोतेहैमूलमे मूल जिसका
वणतेयोगीको[illegible]प्राप्तहोतेहै भ्रभयवीचभ

यटपंगीहै २८ टीका जिसकाबणनेयोगीजेहै ।
पूर्वोक्तहै तरपंगीनेयभयजोभयनेरहितसमाधी
तिसकीवभयकेहेतनूकल्पतेहूये इसयोगते
भयनूपामहोतेहै जैसेइजाउंमेंवालकडरतेहै
व्याख्यानका श्रीशंकराचार्यनेअपिइसेकथन
कीयाहै सोमूलमेमूलकारकहिताहै ॥
मूल भगवत्पूज्यपादजेहैशंकराचार्यजी इ
नकरकीयालर्कवालयामाध्यमानूरमश्र्वितम
नसात्मावीवधंतेहै भमकारभूलेहूयेहै इस
प्रकारकहतेभये सूतमेंहैइसश्लोकदाग्रथे ३०
व्याख्यानका तिनकावार्तिकपठनाहैमूलका
२. मूल अनादरकरकेअनिदायतविनाते इ
हजोअज्ञानीबोइहै तेविषयनाशनूपामहोते
भये सबभाजनहै एकनेचनिरायसदाहरखीका
तकरनेभये जोनेमहात्मासविषयभजानीहै ३।
व्याख्यानका अमहादन्नविकल्पकरकेहूषण
देताहैमूलमै मूल देवादीनमनोकहिता।
हैस्वल्पहोताभया जोतेकछूअल्पकोमनका
संबंधहै तैसदाअमनताहै अलकोदोवेनहीं
वनते तेरैकरणेका[illegible]होवेते ३२ ।

श्री॰ टीका हेवादीतमजोकहिताहे पूर्वकालसून्य॰
पं॰ द॰ हीहोनाहोया इनिवाकयकरमनाजानिकासंबं
३४ धकहिताहे केमनकल्पनाकहिताहे इसरीति
इसविकल्पकाअर्थहे सोदोवेमनाकासंबंधअ॰
रुमनकल्पनासून्यकोनहीवणनेमेआवते तेरे॰
करुणेकाव्याघातहोणेते ३२ उत्थानका व्या
हतत्वनोहृष्टांतपूर्वककहतेकरतेहैमूलमे ।
मूल सूर्यनमकरमिलाहोयाहे अथवासूर्य॰
नमरूपहे इरदोनोनहीवणने तेसेमनअर॰
सून्यकाविरोधहोनेतेसून्यहोनाभया हेवादी
पतमकैसोकहिताहे ३३ टीका जैसेसूर्यअर
नमकाविरोधहे जैसेसून्यअरुमनकाविरोधहे ३३
प्रश्न नउ तेरेमनमेअपिआकाशादिकाटा॰
निर्विकल्पब्रह्ममेहोना व्याघातदोषआवता
हे उत्तर मूलमेमूलकारकहिताहे मूल आ
काशादिकादेनामरूपमायाकरब्रह्ममेकल्पि
तहे टीका जैसेअग्निकामेरजितभ्रमकरक॰
ल्पितहे तेसेमायाकरमनब्रह्मेहे आकाशादि
कादेनामरूपकल्पितहे वास्तवतेनहीहे ।
प्रश्न नउ सून्यतेअपिनामरूपमनवस्तुवीच

कल्पित होवे उत्तर ऐसे कहनेवाले बौद्ध का
आपना सिद्धांत हर होजावेगा इस अभिप्राय
मूलेकार मूलकार कहिता है मूल हेवादी शू
न्यकेनाम रूप कल्पित हुये तौ तम विरकाल
जीवे अथ टीका हेवादी शून्यकेनाम रूप मा
धाकर जेकर कल्पित हूये ता हमारा मत आ
न धाम भया तमारे बौद्ध का मत हर भया तो
तेतम विरकार कालजीवो जिसने ऐसी का
तो कही है अथ प्रश्न नत शून्यके न्याई सत
के अपि नाम रूप कल्पित होवे इह अंगी का
र कीइ चाहीता है तेरे मत मे वासन नाम रू
प का अभाव होनेते इह शंका मूल मे कहि
ता है मूलकार मूल जैसे शून्य के नाम रूप
होवे कल्पित है तैसे सत के अपि नाम रूप दो
नो कल्पित है उत्तर हेवादी तेरा मोइ इह पक्ष
है विकल्प नही सहार सकता तो ते इह अयु
क्त है इस अभिप्राय कर मूलकार परिहार क
रता है मूल जेकर सत के नाम रूप कल्पित
है त व कहु किस मे कल्पित है टीका सत के
नाम रूप सत मे कल्पित है के अथवा असत

श्री· पं·ट· ३५
35

नभमे केशयवाजगतमे वोअश्वकाजगतमे ने·
करकरहेमनमे तैसेहु अमकेनामरूपप्रना·
मेकल्पीतेहै तैसेहि फिकामेवतिनकेनामरू
पकल्पीतेहै प्राणवीचप्राणकेनामरूपनकी·
कल्पीतेहै तोतेमनकीनामरूपटीकल्पनामन·
मेअजोगहै तेकरकहेअमनमेकल्पितहै।
तोहेन निरात्मकअमनकोअधिष्ठानवनाव
नाअजोगहै आश्रोकेहुगकीन्याई जेकवजग
नमेकल्पितहै तेसेहु मनतेउत्पन्नहुआजोज
गतहै तिसकोमनकेनामरूपकाअधिष्ठान·
होनाअजोगहै हेवादीइसप्रकारनेरापहकि
सीविकल्पत्रनहीसहूसकता तोतेमनकेना
मरूपकल्पितहै पहजोतेरापहहै सोनही·
वनता अअ मनहोवेअधिष्ठान इनदोनोंकी
कल्पनाकिउनाहोवे उत्तरकहितेहै मूलमे
मूलकार मूल अधिष्ठानतेविनाअमकि·
सीस्थानमेनहीदेखेता ३५ टीका रज्जुआदि
टी अधिष्ठानवीचहीसर्पादिकल्पनारूपभ्रमदे
बीताहै रज्जुआदिरूपअधिष्ठानतेविनाअम·
कहीनहीहोता इहप्रसिद्धहैलोकमे ३५ ।

प्रश्न नउ अमतहीहोनाभया इसस्थानमै जै
सेव्याघातदोषकरह्याहै तैसेसतही हैधौम्य
इदंजगतअमेहोनाभया इसस्थानमैभीदोष
है ऐसेसंकाकरताहै मूलमै मूल सतहोना
भयाइहांशाहअर्थकाभेदलेपताहैतआवताहै
अतेअभेदलैयेतोपुनरुक्तिदोषआवताहै ३८
टीका सतहोनाभया इहांसतशाहहोनाभया
इहअर्थहै इनदोनोकाआपसमैभेदहै केअ
भेदहै जेकहोभेदहै तोअद्वैतकीहानिताआ
ई एकसतशाहअरइहसतासतशाहकाअर्थ
इहदोसिद्धहोतेहै अर्थजेकरकहोअभेदहै
तोपुनरुक्तिदोषआनप्राप्तहुयाकैसे सोकह
सतअरहोनाभयाएकहीहोएतोहोनाभया
किउकहणाथा इसरीतिसतहोनाभया इ
हकहणानहीबनता उत्थानका इससेपर
मूलेकरसंकादोपरिहरकरताहैमूलमै
मूल सतकउपेसे [illegible] कुमैतसदैवेएते ३९
टीका सतशाखीतअर्थइकवोसतहोनाभ
या इहांअभेदहीहै ऐसेउनकमीलोकमैव
डनस्थानमैदेखीताहै तोतपिरदोषनाहुया

श्री. अध्यानका लोकलीखरमपकालकेशास्त्रोंलीव
पं.च. नताक्षिकाश्रभावकहादेषीनाहै सोकहिनाहै.
३१ मलमे मल [illegible] कहनाहै कहते.
येमन्त्रकहिनाहैयावलेयोगान्यावनाहै टीका
30 इत्यत्र [illegible] नहीं है मीनीहै ग्रन्थकोउर
सकोदोषनहीकहिना तातेइहग्रन्थ [illegible] दोष
नहीहोना ग्रन्थ तोवेलोकमेइहप्रसिद्धना क्रु
तीमेकायाग्रन्था उनमनमेकहिनाहै ३८
मल इत्यादिकसवाग्रन्थमिलेनहोऐसानिहोना.
भया मनइहकथनहै टीका [illegible] लीन
लेकरजोउक्तहै तिसप्रतिइहवचनहै नत्र
श्रद्धितीयवस्तुनीखनकालकाभावहोने
अथेहोनाभया इहकहणावहीवनता उनव
सनवस्तुवीचकालकेअभावहोयाहोया श्रा
गेहोनाभया इहकथनकालकासन्मान्य.
किताहूयाजोकियाहै तिसप्रतिहैतिसकरत्र
हैनवस्तुवीच [illegible] ३५ [illegible] नहीवयनी ३८
मायामहै [illegible] मर्यादिकनकहिनाहै मलमे
मल [illegible] भाषाकरहोना
हे अद्वैतभाषाकरइस्त्रउत्तरकोईनहीवनना ३९

टीका ववहारदशालीरूपसउज्जलवचनताहै पर
मार्थतेश्रद्वैततत्वहीहै ४ उत्थानका परमा
र्थतेहैतनकेश्रभावतीवस्तुहीकीप्रमाणकरि
ताहैमलसे मल विमलहै गंभीरहै नतेनहै
नलमहै श्रामहै ग्रनाद्यहै प्रगटहै तातहै
किंचितहै श्रविद्यीहै ५ टीका निर्मलताम
लनेतेरहितहै गंभीरकहिये श्रपनेतत्वमे
यकरणेकूसमर्थनहीहोवीता नतेनकहीय
तेजत्वकाश्रधिकरणनही तत्वनामश्रावर्ण
तेरहितहै श्रामकाश्रर्थ सर्वमेपूर्णहै ग्रनाद्य
है श्रर्थतेकहनेकूसमर्थनहीहोवेताप्रपक
टकहिये दश्यश्रादिकनविषयनहीकीयाज्ञा
ता मलहै श्रर्थहृदकेसम्पतेनहीमहै इसीका
रणतेकिंचितहै इदंताकारकहणेकूनहीस
मर्थहोवे तातैतनकीनिश्चयकीश्रवधीहोकर
स्थितहै ५ ननु जन्म जन्मवालाहोणेकार
पृथिवीश्रादिश्रनिलकीप्रगमताहोवे निम
जोश्राकाशाधारे तिनश्रर्थउरवहेतेश्रंगीका
रकरीताहै इतयदे हेतेरतत्वकालहैमूलते
मूल तत पृथिवीश्रादिकनतमतहोवे पर

श्री·
पं·द·
३१

37

मात्रपर्यंत तिनकानाशहोतेतेश्राकाससम·
स्येहै इहतस्यारीवडीमेकेसेश्राछदहोयाहै धर
स्यामहै धर उत्तर अनंतकेश्राश्रयकवशोका
हतकरनाहैमतलबमे मत्ल अनंतजगतवेरहित
है अकाशातिहजैसे वेरवडीनश्राससेहुया।
अनाकाशनेरतेरहितहै वैसेतेरीवडीनकि
नहीहैश्रासे होना धर टीका अनंतजन्मरहि
तश्राकाशहैजैसे वैसेमनश्राकाशरहितहै धर
अन्य हस्तीकाश्रभावनहीवणना श्रेसेमतलबमेक
हिनाहै मत्ल जगतरहितश्राकाशदेखाहै उन
व दर्शनश्रसिद्धहैमतलबमेकहिनाहै मत्ल प·
काशश्रवन[illegible]केविनाकहांदेखीनाहै किंव·
तेरीपतनमेनही[illegible]श्राकाशनिश्चयकरके
धर टीका प्रकाशश्रम[illegible]हरदोनोनजरश्रा·
हरेहै श्राकाशहलतिनहीश्रावता तोतेश्राका
शकेदर्शनकाश्रभावसिद्धहुया धर नत्र द·
र्शनकाश्रभाव[illegible]सभीचमीसमानहै ।
[illegible]कोसर्वकेश्रनुभवकरसिद्धहोवेते
श्रेसमतनकहु सोमतलबमेकहिनाहै मत्ल सत
वस्तजोश्राइहै सोनसीधिनीवीचश्रसालेश्र·

उभवकरीनीहै नत तलीभावकीवसमरहीहै
हसलेकीप्रतीतिकाप्रभावहोनेते उत्तर मूल।
कीभीप्रतीतिकाप्रभाव[illegible]नेहीव।
नना सेसहलमेकहियाहै मल तलीखिनी।
वीवस्तवनही मूलवृत्तीकाप्रभावहोनेते ध्य
टीकाप्रगामहै ध्य उत्थानका नव तत्ववृत्ती।
काप्रभावतेमतभीनहीबणता ऐसेसहलमे।
कहियाहै मल प्रमस्मनवृत्तीप्रपितलीखिति
वीचैहैनाही उत्तर मतकोस्वप्रकाशहोणेते।
मतकीवृत्तीकाप्रभावहोनातेपनाही इसप्र
कानहस्वकवनाहै सहलमे मल मतहोवेमत
कीवृत्तीलिसकोस्वप्रकाशहोनेते टीका।
वृत्तीकानजिसकाप्रकाशहोताहै सोअवप्रका
शहोनाहै सोमतस्वयंप्रकाशहै उत्थानका
नव मतकेविषयककल्पीयालीवृत्तीवनेते।
प्रभावहुया नेकेसेमतस्वयंप्रकाशहोणेत।
मसर्थहोतीहै उत्थानकाधंनहीहोवैहै मल
मतनेरहितसदे टीका प्राकिकागगका।
मर्वमात्रपोवाने[illegible]ह्याकेतवव[illegible]लगामहै ध्य
पसप्रकावर्णवतेरहितसाक्षीकोतलीखि

श्री· पं·२· ३८ नीलीच भानदिलाकर सुवर्णं नके [illegible]कार·
हष्टिपर्वभीसतवस्तुलैहे [illegible]हे [illegible]सोमाहे
सैसेहव [illegible] मतदीवचलतांते
रहितजैसे साचीमाऊलतांतेरहितहे जैसेमा
याहेसवलवेरहितहयाहया साचीमाऊलतां·
तेरहित जैसेसतनेरहितआत्मासिद्धहे जैसे·
हष्टितेपूर्वमायालोविनासिद्धहोताहे ४९ प्र·
श्न मायाकाकीलक्षणहैसो [illegible]कहिताहे
सल तत्वनेरहितहैकार्यद्वाराजानीनीहे सत
वस्तुकीशक्तीमायाहै टीका जगत्काकार·
णरूपसतवस्तुतेभिन्नतत्वनेरहितहै सका
शक्तिकार्यद्वाराजाणेलीहे इससतवस्तुकीश
क्ती· माका शक्ति[illegible]उत्पत्तिकरणवाली मा·
याकहीलीहै अपानका वस्तुस्वरूपतेभिन्न
शक्तिकेहोवेसेहष्टांत[illegible]मेंकहिताहै ॥
सल अग्निकीशक्तिकान्याई टीका जैसेअग्नि
शक्तिस्वरूप[illegible]
रानाम[illegible]कोसर्वकेप्रत्यक्षादिकार्यलिंगद्वा
है जैसेसतवस्तुका [illegible] सामर्थ्यताशक्ति
कार्यद्वाराजानना अतिरेकउपवकरहढक

कहीजो मायाहै सर्वनेति स्वरूपनहींनहीक
हैते प्राणोके संगीमाई ५१ अत्र शास्त्री अधिक
तावीच जीवनेके भी अधिकता है गीती है ॥
सशास्त्रीकोभी पृथक जीवनत्व है ऐसे शाका
कवता है मूल शास्त्रीकी अधिक वीकरीवना
है ऐसे कवकरे निसविषे हुद्धि अरवणतालीचा
किनहीं किंत शक्तिकाका अवछ रूपीता
दि है ऐसे [illegible]ता ५२ टीका शक्तिजीवता
वर्धन विषेका[illegible]नहीं किंत [illegible]काका
ऐतु उद्व विषे [illegible]ता है ऐसे [illegible]शा तक
वीचलाक्लेण ५२ ऐसे मन होवे शास्त्रिक
व सात्द्वितीयत्व मनको शास्त्रसे उत्तर्यता सूदि
तीव प्रभाव होता है इति टीका उत्तर [illegible]किके
कार्यको निरकाल मे [illegible] होणे ते कार्य स
स्वरूप द्वितीय प्रभाव नहीं है [illegible] सूल सर्व
देखा विचार शक्तिमात्र का [illegible]ना ए पृथक ता
टीकरी [illegible] शक्तिका तेन नहीं है द्वितीय
लक्षणका है ५३ टीका शक्तिका कार्य पंर
नविषे सर्पादिकी न्याई वालवत होणे ते
द्वितीयलक्षणताकि सी प्रकार [illegible] बणनी ५३

श्री॰
पं॰द॰
४॰

नेत्र मनकी शक्ति मनलिंगमे सर्वदेशमे रहती है
केएकदेशमे नेकर सर्वदेशमे है आत्माकी कर
शमे होने योग्य जो द्रव्य है तिसका अभाव श
सगहूआ वा होवे नेकर एकदेशी है नोनि
वेत्र वकादि विषय श्रवण है उत्तर मादृष्ट नेत्र
मीका तनही करण इसते पत्नीमे उनरका हि
ना है मूलमे मूल सा शक्ति नेत्रकी सर्वदेश
रहती नही किंत एकदेशमे रहती है उत्थान
का एकदेश रहनीमे दृष्टांत कहिता है मूल
घटकी शक्ति नैसे भूमी विषे वीकनी शिखे मे रह
ती है ५४ उत्थानका शक्तिके एकदेश रहण
मे प्रमाण कहता है मूल इस ब्रह्मका एकदेश
हम सर्व भूत है तीन पाद ब्रह्म पर स्थित है इसब
का माया को एकदेशमे रहना श्रुति कहती
है ५५ [illegible] ५५ उत्थानका नहि केवल श्रु
तीही कहती किंत स्मृति भी कहती है मूल ॥
मूल एकदेश [illegible] सर्व जगत इस एकदेशकिर मे
स्थित हूआ हैं [illegible] इस प्रकार [illegible] गीता है
गतकी एकदेशता कहता भया ५६ [illegible]
मे उत्थानका प्रवर्तन वाले के स्वरूप है मे

नेमेप्रमाणकहिनाहै मूल सोईश्वरभूमी:
नूमवैभेरनेआपकेरदशांगुलपरिमित:
सोहृदयाकाशहै तिसनुस्थितहोनाभया
विकारनुआवनेकरस्थितहै इसप्रकारश्रु
तिग्रहणप्रकारकारकहनेहै प्र॰ हमारे प्र॰
उत्थानका प्रश्न तिंरशमेविरोधआवेगाउ
सकाकीउत्तरहै उत्तर बालकोनिवेशग्रहण
करणेतेनहीविरोधआवता इसआभिप्राय
नूलेकरश्रुतिकाअभिप्रायकहिनाहै प्र॰
मूल निःशंकमेंप्रथमप्रमाणकरकेसंपूर्णवी
चेहै केश्रेशावीचहै ऐसेपूछनवालेकोउसकी
भाषाकरउत्तरदेनेहै श्रुतिश्रोताकेहितकी
इच्छावाली प्र॰ हमारे प्र॰ उत्थानका जि
सवासेमायाकथनकरीहै सोअबकहना
है मूल सतदलनूआमेलेकरशाकिमत:
विधिविकारनकल्पतीहै टीका नानाप्रकार
देनेहैविकारकार्यतिस्रानुकल्पनाकरतीहै
उत्थानका तिसमेदृष्टांतकहिनाहै मूल
रेनानाप्रकारदेभितिमेजेसेहै टीका ला:
लपीलाकालाइत्यादिरंगजेसेभितमेकल्पि

श्री॰ पं॰ ट॰ ४१

41

नहोतेहैं तैसेकल्पितविकारहैं ।।५।। उत्थानका
ईहाआदिकाविकारकहतेहैं मूल आदिविका॰
रआकाशहै सोपुलाररूपवालाहै आकाशहै
इसप्रकारसमनलआकाशविशेषमात्रहै १॰ स
गमे १॰ जिसतेक्याभिडरूपा सोकहितेहैं ।
मूल एकस्वभाववालासमननहै आकाशदो
स्वभाववालाहै मनमेपुलाउरवी आकाश॰
मेदोवेमिलतेहैं ।।६।। टीका हैनाएकरूपस्वभा
वआकाशमेहै हेनकपुलाउपदोस्वभावआ॰
काशमेहै मनकपुलेउपाउरवी तिन स॰
स्वभावएकहै आकाशमेदोऊहै इसतेदोस्व॰
भावहै ।।६।। उत्थानका मनकाएकस्वभाव॰
आकाशकेदोस्वभाव प्रकारांतरकरप्रतिपा
दनकरतेहैं मूल अथवाप्रतियुनआकाश
काशुणहैतरी इसमनवीचआकाशमेसन
अरमाहृदेगुणहै जिसतेसमनएकहै आकाश
दोगुणवालाहै ।।७।। टीका प्रतियुनआकाश॰
काशुणहै इदप्रतिपादनकीताहै शब्दरूप
नमनवस्तुमेनहीदेखीता अबआकाशमेस
नशब्दवेदोऊलभीतेहैं जिसकारणतेसमन

एकस्वभाव है आकाश दो स्वभाव है १२ उथ्यानका
न अरु आकाश को मल अस्तु का कार्य हो यो हो या आ
काश की समा है इस प्रकार मन को आकाश की
धर्मता कि प्रकार प्राणे ध्वनी कि हो ने है उत्तर मल मे
मल जो शक्ति आकाश रूप कल्पिती है सो शक्ति म
न अरु आकाश लो भिन्न रूप कल्पना करके यो ध
र्मी भाव विपर्यय करके कल्पती है १४ टीका
जो माया मन वस्तु बीच आकाश रूप कल्पती है ।
सो माया प्रथम मन अरु आकाश को अभेद ना क
रती है पीछे ते धर्म धर्मी भाव रूप विपरीतता क
र कल्पती है इस प्रकार प्राणे आकाश के समता है ।
सो भाव होता है १४ उथ्यानका प्रश्न माया ने वि
परीतता कैसे करी है उत्तर मन वो मे मल मन आ
काश भाव रूप मतो वा है अरु आकाश की समता
है इस प्रकार अलौकिक धर्मता किंक प्राप्त हो
ते है माया को निरूपण है १५ टीका वर्तन ।
न विचार कीन याम न का जैसे घट रूप रूप प्राप्त हो
ते है तैसे मन को प्रभाव रूप मतो माया इस प्रका
र मल वस्तु को आकाश रूप प्राप्त होवे अलौकि
क मालीन्य मन वाल को के मध्य बीच ना किं कवि

श्री.
पं.द.
४२
42

प्रतीतिनाकरआकाशकोघ्रमीमनरूपदृश्यमेसत्य
वाजानिजानतेहैं नत्तुअनखण्यप्रतीतिनहीवनती
उत्तर मायाकोविपरीतिदर्शनकाहेतुवनताहै
१४ अध्यासका मायाकोविपरीतिप्रतीतिकाहेतु
त्वलौकिकयुक्तिदिखाकरस्पष्टकरताहै मूल.
जोजैसेवर्तमानहोताहै सोवैसेभासताहै प्रमाणे
नैत्रयथाभासणभ्रमकारभासताहै इहयुक्ति
सर्वलोकप्रसिद्धहै १५ टीका जोयुक्तिकारिजि
सप्रकारशुक्तिकादिरूपकरवर्तमानहै तिसयु
क्तिकोशुक्त्यादिरूपकरप्रमाणोकरताहै शुक्त्या
दिनादिरूपभासणभ्रमकरभीसताहै इहयु
क्तिसर्वलोकोमेप्रसिद्धहै १५ अध्यासका इस
कारद्दर्शनकरविपरीतदर्शनकाभानदिखाक
रअंतनवीतिरूपकेकाउपकहिताहैतलमे
मूल इसप्रकारअनिकेविचारतेप्रथमजोजे
मैंकरभासतीहै सोविचारकरविचारविपर्य
यहोजातीहै जिसकारणतेजैसीआकाशकी
विलवनाकरे १६ टीका इसउक्तप्रकारकरउ
क्तिकेअर्थविचारतेप्रकजोवस्तुब्रह्मअंतन
करगगनादिरूपकरवर्तताहै सोअक्तिकेअर्थ

विचारकरणसंनादिभावरूपज्ञानकरमन्व-
रूपब्रह्मही होताहै तिसकारणतैज्ञानिवि-
चारवस्तुकी यथार्थताका दर्शनहोवेहै सोआ-
काशविचारलेवो चाहतवतेकाशून्यहीअमकर
हीहै १६ अध्यानका विचारस्वरूपहृदिभावना
है स्थूलआकाशब्रह्मसत्ताभिन्नहै शब्दभेदतेस्र
नवुद्धिभेदतै वायुआदिवीचस्ततव्यापकहै।
अतआकाशनही इहभेदबुद्धिहै १७ टीका।
आकाशभिन्नहै सत्ताभिन्नहै आकाशअवसत
त्ताकोआपसमेअपर्यायहोवेते सत्ताजोहै
सोवायुआदिकनोमेदेषीताहै कैसे सो हतु लाहै
वाहहै तेजइतिप्रकारवहै नाहतसत्तदेषीता
है सर्वभूतोमेआकाशनही ऐसेभासता।
ऐसाजोज्ञानहै सोभेदबुद्धिहै १७ अध्यानका
इसप्रकारसततसरआकाशकाभेदसिद्धका-
रकेआकाससकीसत्ताहै इहजोआंतिकरप्रती
तिहोता जोप्रपंचभीभावतिनकेविचारक-
रविपर्ययत्रदृढभावनाहैसत्तामे सत सत्तव
स्तुकोअधिकहृदिवेतेसत्तयभीहै आका
शकोयमभावहै बुद्धिकरसतकोभिन्नकी-

श्री॰ पं॰ द॰ ४३

तथाहैघटाकाशआकाशकाकीआत्माहै टीका
रूपरसादिकीवीचव्यापकजैसेद्रव्यहै तैसेवाय्वा
दिकीवीचव्यापकजोसत्तहै तिसकोधर्मीभावहै।
जैसेरसादिकतेभिन्नजोरूपहै तिसकोधर्मभावहै
तैसेवाय्वादिकतेभिन्नजोआकाशहै तिसकोध-
र्मभावहै ननु घटतेभिन्नजोहैरूपतिसकोजैसे
वास्तवताहै तैसेसत्ततेभिन्नजोआकाशहै ति
सकोभीभिन्नताहोवे उत्तर सत्ततेभिन्नआका-
शकोइवनिरूपणहोनेते आकाशकावास्तव-
भेदनहींवणता ॥१८॥ उत्थानका उक्तिरूपत्वअ
सिद्धहै ऐसेशंकाकरताहै मूलमे मूल घटाद
इसकाआत्माहै जेकरऐसेकहैतांसत्ततेभिन्नहो
तेतेअसत्तआकाशहूया जेकरकहैसत्ततेभिन्न
असत्तनहीं तांतेतेकहनेकाव्याघातआवता
है ॥१९॥ टीका जोअसत्ततेभिन्नहै सोसत्तकैसेहै
अर्थतेअसत्तनहींहै तांतेएहीव्याघातदोषहै स
त्ततेभिन्नकोअसत्तकहणा ॥१९॥ उत्थानका प्रश्न
जेकरअसत्तहैतोभाननचाहिये उत्तर लक्ष-
विलक्षणहोणेते नहीविरोधआवता ऐसेक
हिताहैमूलमे मूल जेकरकहैभासताहै भा

सनामसामायिककोग्रहणहै उत्थानका अ
विरोधरहितावणकीइच्छाकरताहूया मि-
थ्यावस्तुकालक्षणसहितदृष्टांतकेकहिता
है मूलमै सूत्र जोअसतभासमानहै सोमि
थ्याहै स्वमविषेहाथीआदिकीन्याई १ टीका
जोवस्तुस्वरूपकरअविद्यमानभीभासता
है सोस्वमकेहाथीकीन्याईमिथ्याहै तोते
साथाकरवस्तुकाभासनाविरोधनहीआ
वता १ उत्थानका नजुनियमकरएक-
ठेलभीनेजेरोहै उनकाभेदनहीदेखीता ३
तबमूलमै सूत्र जातिअवयवकाटेहीअ
वटेहूकाउणअवद्ध्यकाजैसेभेदहै तैसेआ
काशअसत्वकाभीभेदहै इसमैकीअवंय
है ३१ टीका जातिकहिये घटमैघटत्वप-
टमैपटत्व जैसेघटत्वअरपटत्वएकठेलभी
तेहै अरइनकाभेदन्यायमतमैप्रसिद्धहै ।
जैसेदेहीजीव अरदेहइनकाभेदहै जैसेगु-
णरूपआदि अरद्रव्यपृथिवीआदिइनका
भेदहै तैसेआकाशअरअसतकाभेदहै इस
मैअवर्यताकछुनाही ३१ उत्थानकाप्रश्न

श्री.
पं.द.
४४

भेदयद्यपिजाणीताहै तोभीनिश्चितनहीहोता
उत्तरमूलमें मूल जाणयाहोयाभेदजेकरने
देविघ्नहुतनहीहोता तातकहोपकारता
केअभावतेतेदेचित्तमेनिश्चयनहोताकेसंश
यतेजिद्दकद्द १२ टीका निश्चयकेअभाव
वीचदोकारणहै एकपकारताकाअभाव
हुसरासंशय इनदोनोमैजेदेकाकौनसानि
मकरनेदेकानिश्चयनहीहोता १२ उथान
का जेकरकहेपकारताकेअभावते भेदको
निश्चयनहीहोतातो इसकाउत्तरमूलमेक
हितेहै मूल श्रवनहोध्यानते टीका पका
रताकेअभाववीचध्यानकहीये निश्चय
नेतेसाबधानमनवालाहो उथानका जे
करकहे संशयतेनिश्चयनहीहोता तिस
काउत्तरमूलमेकहे मूल संशयवीचप्रमा
णअरयुक्तिकरविचारकरणतेतेदेकोनि
श्चयहोजावेगा १३ इथामे उथानका नि
मनेक्यासिद्धहोवेगा मूलमेकहितेहै १४
मूल ध्यानतेश्रवमानतेअरयुक्तितेश्राका.

शश्रसतकाभेदनिश्चयहूया तवआका·
[illegible]शकीसमपनही असतवस्तुविइवाली·
नही इहसिद्धहूया ४१ टीका एवंजिसका
लक्षणकहयाहै सोध्यानहै आकाशअस·
सतदोवेभिन्नहै शब्दभेदते अरुवुद्धिभेदते
इहमानहै सतवस्तुकोअधिकवृत्तीहोणे
तेधर्मीभावहै इत्यादियुक्तिहै इनध्यानादि
करआकाशअसतकाभेदजबचितविषे·
स्थितहूया तवआकाशकवीसमपनही ·
किंतु सदामिथ्याहीभासताहै असतव·
स्तुकेदवालीकदाचितनहीहोती इहसि·
द्धहूया १४ उत्थानका आकाशअसतके
विचारकाफलकहिताहै मूलमे मूल ज्ञानी
कोआकाशसदातत्वतेरहितभासताहै अते
सतवस्तुकेदकालतेरहितभासतीहै १५ टीका
वास्तवतेआकाशकातत्वकछुनही ऐसेज्ञा
नीकोभासताहै सतवस्तुदेकालतेरहितप्रका
शतीहै इहफलसिद्धहोताहै १५ उत्थानका
प्रश्न आकाशकीमिथ्याअरसतवस्तुकीवा
स्तवता इनदोनोन्चिंतनकरणेवालेको।

श्री. कासिद्धहोताहै उत्तरमूलमेकहितेहै मूल
पं.द. वासनाहृद्धहोयाहोयाआकाशकी[illegible]
४५ कहणवालाजोसत्मात्रबोधनेरहितहै तिस
नूंदेखकरज्ञानीआश्चर्यहोताहै ३१ टीका ज्ञा
नीजोहै आकाशअरसत्वकेतत्वकेजानन.
वाला आकाशकीसत्यताकेकहनवालेर
आदिइरहितजोसतवस्तु तिसकेबोधनेर.
हितहोएनूंदेखकरविस्मयरूपआनंदहोताहै ३१
उत्थानका कहीजोयुक्तिहै सोअपरश्लोकभी
कथनकरताहैमूलमे मूल इसप्रकारआका
शकीमिथ्या अरसतकीसत्यता जिसरीतिक
रजाणेहै तिसीयुक्तिकरवायुआदिकेसतव
स्तुकोभिन्नजानलेणा ॥ टीका ॥ उत्थान
का नउ आकाशकार्यजोवायुहै तिसकाअ
कारणरूपजोसतवस्तुहै तिसकेसाथतादा
त्म्यअनीतिकाअयोगहोनेतेसतकाविवेच.
नेअरकलेरहितेहै उत्तर मात्रासेवैधर्म्यकाअ
भावभीहै परंत परंपरासंबंधहै ऐसेमूल
मेकहताहै मूल सतवस्तुवीचएकदेश
मेमायास्थितहै तिसमायावीचएकदेशमे.

आकाशहै तिसआकाशवीचएकदेशमें
वायुकल्पितहै १८ टीका इसप्रकारसत
वस्तुवीचकल्पितसंबंध मायाकामाया
वीच आकाशकाआकाशवीच वायुका इ
सप्रीतिकरपरंपरासंबंधहै तांतेसतवस्तु
केविवेचनवीचपरंपरासंबंधप्रेरकहै १८
उत्थानका इसप्रकारसतअरवायुकासं
बंधदिखाकरतिनदोनोंकाधर्मभेदहता
नतिभिन्नवायुवेजमनीयमानजेधर्महै ।
तिन्हांनूंकहिनाहै मूलमें मूल हकाउण
स्पर्शगमनवेगएवायुकेधर्महै उत्थानका
इसप्रकारवायुकेआपणेधर्मकहकेका
रणतेआमजेधर्महै तिन्हांनूंकहिनाहैमू
लमें मूल सतमायाआकाशइनतीनोंके
तीनधर्मभीवायुमेंहै स्वगम उत्थानका ।
केहेतेधर्महै सोमूलमेंकहिनाहै मूल ।
वायुहैग्रमेंहैताहसतकाधर्मवायुमेंसथ
मश्ररसतनेवायुकोभिन्नकीतयाहोया ।
नवरहितहोणामायाधर्मवायुमेंहमवाहै
शहकाहोणावायुमें आकाशकाधर्मनी

श्री· पे·ट· ४१

46

मराहै प्र· टीका इसप्रकारतीनधर्मवायु
मेकारणनेआयेहूयेहै प्र· उत्थानका न
उ आकाशकेविचारणप्रकरणकीचवा·
हुआदि[illegible]पकमतहै नहीआकाशइह
नोभेदकहीहै इसस्थानमेवायुआदिमेआ
काशकीप्रवृत्तिनिवारणकरीहै इहां·
आकाशकीप्रवृत्तिनिवारणकरीहै ई
हांआकाशप्रवृत्तिकहीतीहै तातेएवंउ
नवविरोधहूया ऐसेशंकाकरतीहैमलमे
मल मनकीप्रवृत्तीसर्वमेहै आकाशके
नही इहपूर्वतमनेकथनकीयाहै अवआ
काशकीनही इहपूर्वतमनेकथनकीया
है अवकोआकाशकीप्रवृत्तिकहतेहो ।
तोकैसेतमारेवचनकाव्याघातनही प्र·
टीका पूर्वआकाशकावायुआदिविषयने
नाइरकीयाहै अवंइहांवर्तनाकहतेहो
तोतेतमारेवचनकाव्याघातकैसेनहीये
ता प्र· उत्थानका उत्तर पूर्वअवआकाश
लक्षणस्वरूपकाप्रवर्तनानिवारणकी·
याहै अवधर्मकाप्रवर्तनाकहीताहै ।

नहीस्वरूपकाअवर्तना तातेअध्यानदो·
षनहीआवता अैसेपरहरणकरनाहैमूल·
कार मूल छिद्रकाअवर्तनानही हैसू·
वेकथनकीयाहै अवशब्दका[illegible]ना·
कथनकीयाहै तातेवचनकाअध्यानकेभ
आवनाहै ॥ टीका ॥ बाह्यआदिछिद्रकेवर
तनेकाअभावपूर्वप्रतिपादनकीयाहै अरु
ईहांशब्दकावर्तनाप्रतिपादनकीयाहै ताते
अध्यानदोषनहीहोता ॥ अध्यानकाअप
वादकोमनअध्यानेभिन्नहोणेते अमनलक्षण
मायामयत्वजेकथनकरीताहै ताअध्यानस्व·
रूपमायातेभिन्नहोणेते अमायामयत्वभी
किउनाहोवे अैसेमनलेमेकहिताहै मूलका
र मूल ॥ मनवस्तुतेभिन्नहोणा अमनत्व·
है जेकरअैसेहै तब अध्यानमायाकेविषमहो
णेते अमायामयताभीकैसेनहोवे ॥ उत्तर
मे ॥ अध्यानका अमायामयत्वमेप्रवे·
कनही किंतु निरतत्वरूपनषेदकीयाहै सो
निरतत्वरूप मायामेभीमेहै तेसेबाह्यआदि·
मेभीहै ताते मायामयत्वकीहानीनही ॥ वे·

श्री.
पं.द.
५१

47

सेउत्तरदेताहै मूल निरतत्वरूपतामायात्वका
प्रेरकहै सोनिरतत्वरूपताशक्तीवीचअरका
र्यवीचवर्तताहै शक्तीअरकार्यकेमेहै अथकअ
रअ[illegible]नवालेहै ५४ सूगमे ५४ उत्थान
का नत्र शक्तिअरकार्यजेदोनोहै तिनमेनिर
तत्वरूपताकेसमानहोयाहोया अकअरअ
थकलत्ताणभेदकिसकारणतेहै इतिशंकाहै
उत्तर तिसकाविचारकरणा इसप्रकरणमेउ
क्तनही इसप्रकारउत्तरकहितेहैमूलमे ।
मूल सतअसतविवेककाप्रकरणहोनेते ति
सकाविचारकरनावनताहै असतकाअवांत
रभेदहोवे तिसकीविलक्षणकरकीसिद्धहो
ताहै ५५ टीका असतजोहैमाया अरमाया
काकार्यरूप तिसकाअवांतरभेदअकअरअ
कलरूपहै सतअसतकाविवेककरणाजोगहै
तिसकीविचारसाध्यकीप्रयोजनहै अर्थतेक
क्तप्रयोजननहीसिद्धहोना ५५ उत्थानका
फलसंयुक्तकहितेहैमूलमे वाद्यमेसतअश
अस्हहै शेषअंशनिरतत्वहै सोगीतरूपहै ।
सोवाद्यमिथ्याहै जैसेआकाशइसप्रकारवाद्य

कीमिथ्यात्वनाइचिरकालहृदैमैवसाकरण॰
वनन्नत्यागे ८१ टीका वायुमैसतत्रशहै सो॰
वस्यरूपहै शेषजोअंशहै निरतत्वादि सोवा
युकास्वरूपहै सोवायुनिरतत्वहोनेतेही आ
काशकीन्याईअसत्पहै इसप्रकारवायुकीमि
थ्यात्वनाचिरकारचितमैवसाकारवायुसत्वहै
सत्पहै जिहरबुद्धीत्यागदेवे ८१ उथ्यानका वा
युमैकहाजोविचारहै सोतिनमैभीकहितेहै॰
मूलमै मूल चिंतवनाकरैतेजनभीइसीप्रका
रजोतेजवायुतेअल्पवर्तीहै उथ्यानका तत
सतत्वमैएकदेशमैमायास्थितहै मायाके
एकदेशमैआकाशइत्यादिकरकथनकीया
जोमनअधिकभावहै सोलोकमैनहीकही
कहीदेषीता इतिशंका उत्तरमूलमैकहिता॰
है मूल वसोडकैअवरणोवीवनूनअधिक
भावविचारणा ८२ उथ्यानका वायुकेकि
तनेअंशकरतेजमूनहै सोमूलमैकहितेहै
मूल वायुतेदशाहिमैतेजन्पन आयुमैकलि॰
तहै अर्थतेवासत्वनही हिगामै उथ्यानका॰
नव इहजोमनअधिकभावनहीआपणेअ॰

श्री·
पं·ट·
४८

48

एकरहीकथनकीया सूत्रमे ८८ उत्थानका
अर्थकाश्वरूपकहितेहैंमूलमे मूल अग्नि·
लहै अंबप्रकाशरूपहै कारणकेधर्मइच्छाभी
है अग्निहै इहमनकाधर्महै निश्चलहै चित्त
मायाकाअर्थहै शब्दवालीहै तिहआकाश·
काधर्महै स्पर्शवालीहै तिहवायुकाधर्महै ·
१७ सूत्रमे उत्थानका इसप्रकारअग्निबीव ·
कारणकेधर्मकाअनुवर्त्तनकीप्रसिद्धीपूर्वक
आपणाधर्मकहितेहैंमूलमे मूल सतमाया
काशवायुइनकेअंशोंकाशुभ्रजोअग्निहै ति
सकाआपणागुणरूपहै सूत्रमे उत्थानका
इसप्रकारसविशेषणअग्निस्वरूपप्रतिपा
दनकरकेअबमनबलत्वेनअग्निन्वीतिइकहि·
ताहैमूलमे मूल सप्तदीपवतनेसर्वजोअन्य·
है सोमिथ्याहै ऐसेउडिकरविचारकरो ९·
टीका तिहमलकेमध्यवीचमनवलत्वेजोअ
न्यधर्मजानतेहै सोमिथ्याहै ऐसेउडिकरमिश्र·
करो ९· उत्थानका इसप्रकारअग्निकीमि·
थ्यात्वकेनिश्चयतेअनंतरजलोकीमि·
थ्यात्वनिश्चयकरे ऐसेमूलमेकहितेहैं ९· ·

स्थूल सत्वस्तुतेभिन्नअग्निहै ऐसेविचारकीत
याहोया अतेअग्निकेमिथ्यात्वकेनिश्चयकीत·
याहोया तिसपीछेजलदशामेअग्निनेअल्पहै।
अरअग्निमेकल्पितहैवास्तवनहीं इसप्रकारवि
लक्षणाकरे ११ सर्गमे ११ उत्थानका जलवि·
षेभीकारणकेधर्मअरआपणेधर्मदिखावताहै
स्थूलमे स्थूल जलहै तत्वतेसूक्ष्महै शब्दवालाहै
स्पर्शवालाहै रूपवालाहै ऐसप्रकारणकेध
र्महै आपनापकरसगुणहै १२ सर्गमे उत्थान
का विवेकअरध्यानकरजलकीमिथ्यात्वतानि
श्चयकरकेसोमिथ्याहै ऐसेदृढविषेवसाया·
होया तिसतेअनंतरजलतेदृशाविषेपृथिवी·
स्थूनहै अतेजलमेकल्पितहै वास्तवनहीं इह
विलक्षणाकरे १३ सर्गमे उत्थानका पृथिवी
केमिथ्यात्वविलक्षणानिमित्तकारणकेधर्म
अरआपनाधर्मविभागकरकेकहिताहैस्थूलमे
स्थूल पृथिवीहै तत्वतेसूक्ष्महै शब्दवालीहै स्प
र्शवालीहै रूपवालीहै रसवालीहै इसरीत·
करकारणकेगुणोंकरमिलीहोईहै आपना
गंधगुणहै तिन्नसभतेमनाभिन्नसमकरणी

श्री. स्लोक ४४ उत्थानका तिनसभनेसत्तासाधन्.
पं.२. भिन्नसमरूपोमेफलकहिताहैसत्लमे सत्ल
५१ सत्ताकोभिन्नकीनयाहोया पृथिवीमिथ्यावा
कीसिद्धहोतीहै पृथिवीलेदृशाहिसेत्सनपृथि.
५९ वीमैवस्याहै ४५ टीका स्लोकरचेहृयेजेवसा
उहै तिन्हनेसत्नकोभिन्नकरणनिमित्तब्रह्मांड.
कीस्थितिकाप्रकारदिखायाहै ४५ उत्थानका.
तिन्होंविधिसत्नकेविवेचनमेफलकहिताहैसत्ल
मे सत्ल ब्रह्मांडकेमध्यवीचचतुर्दशभुवनस्थित
है प्रभुवनेवीचनिसनिमभुवनमे जैसीजैसी.
देखवनतीहै तिसतिसदेहकेधारणवालेप्राणी
वसतहै ४६ स्लोक ब्रह्मांडअवलोकअरदेहहृ
नसभनेसत्नवस्तुकोभिन्नकीनयाहोयाहोया
नहूयेनहृयेब्रह्मांडादिकपदेभासे स्वमपदार्थ
कीन्याई तिनकेवानमेकीविगडताहै अर्थके.
कछुनहीविगडता स्वमकेपदार्थकेहोनया
प्रवनाहोनयाविगाडनहीहोनाजैसे ४७ सत्ग
म उत्थानका तिनकेभानमेकीविगाडहैइति
उक्तअर्थनस्पष्टकरनाहैसत्लकार सत्ल मृत
प्रभौतिकप्रदमायाइनकेप्रमस्पताकोअर्थ.

ननिश्चयकीनयाहोया सतवस्तुअहैतेतौ
इहतउडीकवीविपर्य्यनहीआमहोतो ५०
टीका श्रुतआकाशादिकभौतिकब्रह्मा-
दिक मायाइनसभकेकारणरूपहै इनके
विवेकध्यानकरमिथ्यात्वताविनमैहरनि
श्चयकीनयासतवस्तकोअहैतउडिकटी
भीहरवनहीहोती ५० उत्थानका नतुपृथि
वीआदिकेअसतवीवज्ञानीकेविहारकाने
पआवेगा उत्थानका पृथिवीआदिकोमि-
थ्यात्वताविवेककरनिश्चयकीनयाहोया
पृथिवीआदिकेस्वरूपकानअभावहोएतेत
नहीविहारलोपहोता ऐसेकहितेहैसतमे
तल सतअहैतनतेभिन्नहैतजोभूमीआदिहै
तिसहैतविषे तिसतिसअर्थक्रियालोकमै
जैसेदेखीहै तैसेहै ५१ उत्थानका नतु सभ
केअहैतरूपहोयाहोयासांख्यआदिकवक
थनकीयाहोया जोभेदहैइसकाकिंउअभा
वकरनेहो उत्तर विहारकभेदको ऐसाय
हरणकीयाहै तोतउसकाअभावनहुया ।
सोसूत्रमैकहितेहै सूत्र सांख्यकाणाद

श्री. वैदश्रादिकोनेजगतकाभेदजैसेजैसेदेखीता
पं.ट. है अनेकयत्नीकरहोवेजैसेजैसे सगम ९.
५. उत्थानका नत्र सत्यकाभेदप्रमाणकरसि
द्धहै तिसकीअविद्याकरणीयोगनही उत्त
50 रखलमे मल शोकानेरहितहोकरअनया
दीयोने जैसेमतअहैतनकोअविद्याकरीनीहै
तैसेहैतनकीअविद्याकरणवालेहम तिनको
कौनसाहोवहै १ टीका जैसेअमकादीयो.
नेसांख्यादिकोनेशंकानेरहितहोकरस्फूर्ति
शदिकरसिद्धभीमतअहैतहै तिसकीअवि
द्याकरीनाहै तैसेस्फूर्तिरूपअनुभवरूनके
श्रमेवहोकरतिनकेअनादरकरणेकरस.
सांकोकोहानताहै अर्थनेकोइहानतानही
उत्थानका नत्र तिरप्रजोजनदेहैतनकाअवि
द्याकरणी उत्तर जीवन्मुक्तिप्रयोजनदेहेसो.
णेनेश्रेमामतकहे इहमूलमेकहिताहै ।
मल हैतनकीअविद्याकरस्थितिहोई तोश्र.
हैतमेवडीस्थिरहोतीहै यदिश्रहैतबीचड.
द्विस्थिरहोइ तबजीवन्मुक्तइहरूपसबकही
नाहै २ सगमे उत्थानका केवलजीवन्मु.

कोहीप्रयोजननहीं किंतु विदेहमुक्तीभीप्रयो
जनहै इसअभिप्रायसेंलेकरगीताकावाक्यक
हिताहैमूलमें मूल एषाब्राह्मीस्थितिहै हेपार्थ
एसेंब्रह्मसेंहोकरनहींमोहसेंब्रह्महोताहैस्थि.
तहोकरइसमेंअंतकालवीचभीब्रह्मनिर्वाण
ब्रह्महोताहै १ हमारे व्याख्यानका अंतका
लशब्दकरवर्तमानदेहकीपातकहीताहै ·
इससेकाकेहेतुकरणाहिलअर्थकहिताहैमू
लमें मूल अद्वैतसत्तमेंअस्मिप्याहैतमेंजाए
पवलापकत्वभावदेखणाहोताहै जिसकाअं
तकालतिनदेहोंकीभेदबुद्धीनहींकोईशेष ४
टीका मत्तहृप अद्वैतवीचअनंतरूपद्वैतवीच
जोअन्योन्यअध्यासलक्षणएकत्वहोताहै ति
सभ्रमरूपकाअंतकालनामतिनदेहोंअद्वै.
तअद्वैतकोसम्यग्अनंतरूपकरजोभेदबुद्धी
है सोईअंतकालहै नहीवर्तमानदेहकापात
इसअर्थहै ४ व्याख्यानका अबलोकप्रसिद्धअ
र्थलीकारकरणकरभीनहींहोसकता ·
इसअभिप्रायसेंलेकरमूलमेंकहिताहै मू
ल अथवाअंतकालप्राणकावियोगहोवेम.

श्री॰ सिद्धांतेतिसकालवीचभीज्ञानगई होईकाफे
पं॰ ८ रआगमनहीहोता सूत्रम ५ अज्ञानका क॰
५१ थनकीयेग्रंथेनस्पष्टकरताहैसूत्रकार ।
सूत्र रोगरहितवैद्यहुयारोगीहुयाहुया पृथि
वीमेलेटताहुया मूर्छितहोयाहोयाज्ञानीप्रा
णायमारो ओतितिसनसर्वप्रकारनहीहो
ता १ सूत्रम उत्थानका नत्रप्राणकेवियो॰
गकालवीचमूर्छाआदिज्ञानकेनाशहोयाहो
याओतिहोवे उत्तर ज्ञानकेनाशकीअभाव॰
वीचदृष्टांतकहिताहैसूत्रमें सूत्र दिनदिन॰
वीचक्रमसूत्रमिवीचपठीहुईविद्याविस्मृति
होतीभीहै परहमरेदिनमेनपठ्याहुया न॰
हीहोंजाता तैसेब्रह्मविद्याकाभीनाशनहीहो
ता टीका जैसेदिनदिनमेपठनकरीताजोवे
दहै सूत्रमआदिग्रवस्थावीचविस्मरनहोताभीहै
तोभीइहवेदनहीपठाहुया ऐसेहमरेदिनमे
नहीकहिता तैसेमरनकालभीतत्त्वचितवणे
काअभावभीहै तोभीज्ञानकानाशनहीहो॰
ता २ अज्ञानका ज्ञानटेनाशदेअभावरूप
तिपादनकरताहैसूत्रमें सूत्र प्रमाणकर

उत्पत्तिहोईहोईविद्याप्रबलप्रमाणतेविनाज
हीनाशहोती वेदांततेंपरेकोईप्रबलप्रमाण
नहीदेषीना ८ उत्थानका कथनकीयेग्रंथ
नेसमाप्तकरिताहैमूलमे मूल तिसकारणते
वेदांतकरसिद्धहूयाजोमतत्रहै+सोअंतकाल नहै +
वीचभीबाधाकोनहीप्राप्तहोता तातेभ्रांतविवे
कतेमुक्तिसंशयनहोई ॥ मूलमे ॥ इतिश्रीमद्
द्वितीयब्रह्मज्ञाननिष्ठपंडितश्रीमीरवेदविरचि
तायांपंचदशीमूलभाषायांपंचविवेकःसमा
प्तः

उत्थानका तैत्तरीयउपनिषत्कातात्पर्यरूपजो
हैपंचकोशविवेकनामप्रकरणहै तिसनूंआ
रंभकरताहूया आचार्यआदिवीचश्रोताकी
प्रवृत्तिकीसिद्धीवास्तेसहितप्रयोजनजोअभि
धेयहै तिसनूंसूचनकरताहूया श्रवणेकर
णकीइच्छाजिसग्रंथकीहैतिसकीप्रतिज्ञाक
रताहैमूलमे मूल गुहायांविस्थितंजोब्रह्महै
सोपंचकोशकेविवेकतेजाणनेकूसमर्थहो

श्री. दीताहै तांतेपंचकोशपंचककाविचारकरीता
पं.द. है १ टीका जोज्ञाननाहैस्थितहूयेतूतहांदीव
५२ परमव्योमदीचइसश्रुतिकरगुहाविषेस्थितहो
नेकरकथनकीयाजोब्रह्महै सोतूहांशाहकर
52 कथनकीये जेअन्नमयादिपंचकोशतिनकेवि
वेककरजाणनेनूंसमर्थहोदीताहै जिसकार
णतेतिसकारणते तिन्हांकोशांकेपंचकनूंवि
शेषकरअन्तरात्माकेसकाशतेभिन्नकरदिखा
दीताहै उत्थानका ननु कौनसीसोगुफाहै
जिसमैंस्थितहोयाहूयाब्रह्मपंचकेविचारकर
जाणीताहै उत्तर श्रुतीकरगुहाशाहकरकथि
तजोअर्थहै तिसनूंकहिताहैमूलमै मूल ।
देहतेअंतरप्राणहै प्राणतेअंतरमनहै तिसते
कर्ताअंतरहै कर्तातेभोक्ताअंतरहै यहीपरंपरा
गुहाहै २ टीका देहअन्नमयतेप्राणमयअंतर
है प्राणकहियेप्राणमय तिसतेमनोमयअंतर
रहै मनोमयतेकर्ताविज्ञानमयअंतरहै विज्ञा
नमयतेभोक्ताआनंदमयअंतरहै सोजिहअन्न
मयतेलेकरआनंदमयपर्यंतपरंपरातूहांशाह
करकहतीहै २ उत्थानका अबअन्नमयका

स्थूलरूपअन्नमयकोअनात्मादिखावताहै
मूलमे मूल पितानेभोजनकीयाजोअन्नहै
तिसतेउत्पन्नहूयाजोवीर्यहै तिसतेउत्पत्तिहो
ताहै अरुअन्नकरवधताहै सोदेहअन्नमयहै
सोआत्मानहीपूर्वकालविषे अरुउत्तरकाल
वीचतिसकाअभावहोनेते ३ टीका पितामा
ताकरभक्षणकीयाजोजोचावलआदिकअन्न
तिसतेउत्पन्नभयाजोवीर्यहै तिसतेजोदेहउ
त्पन्नभया उत्पत्तिअनंतरक्षीरआदिअन्नकर
वर्धताहै सोदेहअन्नमयकोशहै अर्थतेअन्न
काविकारहै सोआत्मानहीहोता प्रश्न किस
कारणतेआत्मानहीहोता उत्थानका जन्मते
पूर्वअरुमरणेउपरंत तिसदेहकाअभावहोने
ते इसमेअनुमानहै विवादकरअध्यासितदे
हआत्मानहीहोता कार्यहोनेतेघटकीन्याई
३ उत्थानकाप्रश्नहोवेकार्यआत्माइसमेक्या
दोषहै उत्तरमूलमे मूल पूर्वजन्मवीचदेह
कोअसतहोनेतेजन्मकेदेनेवालेकर्मकारण
वालेकाअभावहोनेजन्मनु किसप्रकारसेपा
दनकरे भावीजन्ममेजेकरअसतहूया तोभ

श्री·
पं·ट·
५३

53

तिनकर्मकोनभोगे टीका इसदेहरूपआत्मा।
कोपूर्वजन्ममेंअसत्तहोनेतेइसजन्मकेदेणेवा।
लेकर्मकाअसंभवहोयाहोया इसदेहकाजेक
रजन्मअंगीकारकरीयेतो नकीयेकर्मकाआ
गमप्रसंगआवताहै जैसेभाविजन्मवीचइसदे
हरूपआत्माकोअसत्यहोणेते इहांकीयेहूये
जेपुण्यपापथे तिनकीअभावप्रसंगआया।
फलभोगनेवालेकाअभावहोनेते इहकीये।
हूयेकानाशप्रसंगआयानकीये काआउणा।
अवकीये कानाशरूपप्रसंगहोनेतेआत्माका
देहनही अन्नमयकोशकास्वरूप अवअन्नमय
कोशकोअन्नआत्मनादिखाया अवअन्नमयको
शकास्वरूपअन्नआत्मरूपदिखाया अवप्राण
मयकोशकोअन्नकहतेहै मूल जोसमष्टहो
विष्टप्राणहै अववलकेदेवनहाराहै इंद्रियोंकाप
वर्तकहै ऐसाजोवायुहै तिसकाप्राणमयको
शकहतेहै सोप्राणमयआत्मानही चेतनस्वभा
वनेजोरहितहै इसकारणतेआत्मानही अर्थ
जोवायुदेहइहविषेप्राणहै पाटनेलेकरअग्रम।
लकपर्यंतव्यापतहै अवअन्नभोजनजलपानदा

शरीरइंद्रियोंकेवलदेताहै अरुसाथहीवक्त्र
आदिकइंद्रियोंकाप्रेरकहै सोवायुप्राणमय
कोशकेरूपकहीवायुप्राणअपानादिकस
ताकोपाइकरदशप्रकारकाकहीताहै सो
भीआत्मानही काहेतेजोनाडुसकोअपणाता
नेहै अरुनाअरुरोकोजानताहै ताँतेजडुहै ।
इहहै आत्मानहीअनात्माहै अरुमनकासरु
पकहतेहै १ मूल जोदेहविषेअहंकारताहै
अरुदेहकेसंबंधीयोपुत्रादिकोमेदिरादिकोवि
षेअहंकर्ताहै अरुकामादिकजोअनेकवास
नाहै तिनकरयुक्तहै तांतेमनोमयभीआत्मा
नहीं अर्थ देहविषेजोअहंभावहै देहकरिके
करहोरभीजोइंद्रियहै प्राणादिकअनात्मअ
गहै तिनविषेजोअहंकर्ताहै जोमयदेहहीं
हों मैस्थूलकृशहो देवताहो हनताहो खा
ताहों पानकरताहो इत्यादिकजोअंगावि
षेअहंभावकरकेचेष्टाकरताहै अरुदेहको
जोसंबंधीहै स्त्रीपुत्रादिक अरुघर अरुअस्था
दिक तिनविषेजोममताकरताहै जोजाणता
है जोइहमेरेहै अरुकामक्रोधादिकजोहति

श्री. पं.द. ५४

54

है कामक्रोधलोभमोहअहंकारादिकजोवर्त
ताहै तिनकरजोदुखहोताहै सोमनहै अरश्री
रमाणा इसमनकीहेतातइसप्रकारभीकही
है सोकहतेहै सोहेतु प्रमाणविपर्ययविक
ल्पनिद्रास्मृत इहपंचमनकीहुताहै प्रमाण
इसकोकहतेहै जोयथार्थहै सोतीनप्रकार
है एकप्रत्यक्षहै एकअनुमानहै तृपहै एक
शब्दरूपहै प्रत्यक्षइसकोकहतेहै जोअंतःक
रणकेवृत्तानेत्रद्वारानिकलकरघटादिपदा
र्थसाथजायमिलतीहै प्रथमइसकासमान
न्यज्ञानहोताहै जोकिंचित्करूपहै पीछेतोइस
काविशेषज्ञानहोताहै इसकाज्ञाननामरूप
जिवकात्याकार्यकारणरूपजानना इसवि
शेषज्ञानहै सोप्रत्यक्षप्रमाणहै इसीप्रकार
होरभीइंद्रियोंकेविषयोंकेरूपकोजोजेपाका
त्पोज्ञानहै सोप्रत्यक्षप्रमाणहै अरधूमद्वारा
जोअग्निकोजाणना इसकानामअनुमान
अरसतवादीकाजोवचनहै गुरुईश्वरशास्त्र
कासोभीप्रमाणरूपहै इहमानप्रकारकाप्र
माणहै अरकईशास्त्रकारोंनेइसीप्रमाणको

इसप्रकारकरकेकह्याहै उपमानभीजैसेगो
भीहोताहै औरजोपदार्थउसहीकेतुल्यदेष
करजोजानना सोउपमानहै अर्थापत्ति
जोइहदेवदत्त सोमजबूतहै सोयोदिनमोटाहै
परदिनमेंनहींखाता तबउसकीअर्थापत्तीद्वारा
जाणाजाताहै जोइहरात्रकोभोजनकरता
होवेगा अरुइहलेजकजोइसवस्तुविषयत्व-
वसताहै सोकिसीदेखानहीं केउअनुमान
नहीं परपरंपराकरचलावताहै सोइहोटी
पकअर्थापत्तिकनैदेखकरलेआयेहै तातेजा
नेताहै अरुइसलेजकअप्रमाणविषेइहजगत
जाननी जैसेउणब्राह्मणत्वजीवेसुपशूद्रादि
ककीजातिकानिश्चेवलाआवताहै जोइह
ब्राह्मणक्षिकणेहै अरुलरिखोटिकजाता
है अरुतवीजोहेखेत्राकसुरसेठककउआ-
दिक अरुवैश्यकाजव अरुनागपालआदि-
कजाता अरुशूद्रमालीआदिकजैसेइहजो
जाताहै सोकिसीशास्त्रविषेनहींलिखे को
उअप्रमाणइनकानहीं किसीमतपकष-
कावचननहींउपमाननहीं पापरकरव

श्री. लाश्रावनाहै तोतेइहभीप्रमाणहै सोप्रमानका
पं.द. श्रंगभूतहै उसकानामप्रमाणवितहै पकड़ी
५५ काघट्प्रकारकाभेदहै श्रवएकविपर्ययवृत्ति
है विपर्ययउसकोकहतेहै जोमिथ्याज्ञानहो
55 वे जैसेजेवड़ीविषेसर्पकीबुद्धिसिपीविषेरूपेकी
बुद्धि इसतेलेकरजोपर्ययज्ञानहै सोविपर्यय
वृत्तिकहतेहै श्रवएकविकल्पवृत्तिहै जैसेक
हीयेइहजीवड़ीहैकेसर्पहै इहस्याणहैकेपु
रुषहै संशयरूपजिसकोकहतेहै श्रवएक
निद्रावृत्तिहै निद्रावृत्तिउसकोकहतेहै जोजा
ग्रतस्वप्नकेजोश्रभावकरणेहारीबुद्धिहै सत
केश्राछादनकरणेहारीतमोगुणहै सोईहै।
श्राश्रयश्रालंबनविषेजिसकाशोकहीइह।
निद्रावृत्ति श्रवजोकिससेभेदलाहै पदार्थउ।
सकोकालांतरविषेस्मरणकरनाविचमे उ।
जोहै सोइकहियेमन कामक्रोधादिकभीइ
नहीवृत्तिकेमध्यविषेहोतीहै इनतेभिन्न
ही तांतेइहजोवृत्तीहै सोश्रनेकरूपहै सदा
एकजैसीनहीरहती श्रैसेवृत्तिकरजोजगत

है अरुअहंतादेहआदिकोविषे अहंममता॰
देहकेसंबंधीयोविषे इसकानाममनोमय॰
कोशहै सोआत्मानही काहेतेजोकामादि॰
कवृत्तिमनहै अरुअनियतस्वभावहै अरुप॰
कजैसानहीरहताहै विकारीहै देहवतहै
तातेअनात्माहै अबइसकेअनंतरकहताश
ब्दकरवाच्यजोहै विज्ञानमयकोशहै तिस॰
कास्वरूपभीकहतेहै चितछायाकरजग॰
तजोबुद्धिहै सोजबसुषुप्तिहोतीहै तबतिस
विषेबुद्धीलीनहोजातीहै कर्त्तारूपहोक
रजोजाग्रतविषेस्थितहोतेहै तिसकानाम॰
विज्ञानमयकोशहै सोआत्मानही टीका॰
जोविक्षेपकरयुक्तजोबुद्धिहै सोजबचितछा
याकरयुक्तहोतीहै अर्थ इहजोचिदाभास
करअरुयुक्तजोबुद्धिहै सोसुषुप्तिकालवि॰
षेलीनहोजातीहै अरुजबजाग्रतकालहो॰
ताहै तबनखतेलेकरशिखापर्यंतव्यापजा
तीहै अहंभावकरअरुकर्त्तारूपकरस्फुर॰
लपडीहोतीहै सोविज्ञानमयकोशाकहिता
है सोभीआत्मानही विलक्षारिअवसताका

श्री.
पं.ट.
५६
56

इनहै अर्थ यहजोसुषुप्तिआदिकोंविषेली
नहोजातीहै तातेएकरसनाहोई यटादिवत
तातेआत्मानही अनात्मरूपहै नउ मनअ
उहि इहतोअंतःकरणरूपहै इनविषेअवि
शेषतांहै विशेषकछुनहीतम मनोमयअ
रविज्ञानमयकाभेदकैसेकहतेहो उत्तर
वेदांतीकरतनअरकरणत्वभावतेइनका
भेदहै इसप्रकारकरभेदहै इनकातातेमनो
मयअरविज्ञानमयकाभेदवर्णनकरीहै सोई
अरकहतेहै मूल कर्तृत्वअरकरणत्वभाव
करअंतरइंद्रियोंइहविकारकोप्राप्तहोतीहै
विज्ञानअरमनइहअंतर्बोधभावकरपरस्पर
वर्ततेहै टीका अंतरइंद्रियजोहै अंतःकरण
सोकर्तारूप अरकारणरूपकर इहविका
रकोप्राप्तहोतेहै अरयहजोप्रकारीजो अंतः
करणइसहै सोकरणरूपकरजोप्राणम
ताहै सोमनोमयकोशहै अरजोकर्तारूपक
रजोप्राणमताहै अंतःकरणइस सोविज्ञा
नमयकोशहै इहअंतरअरबाहरभावकरप
रस्परवर्ततेहै विज्ञानमयअंतररूपहै वि

ज्ञानमयमनोमयभीअपेन्याकरवाहीयेहै तो
नेइहहोहीअनात्मरूपहै अवभोगतारूपक
रकहाजोहै आनंदमयकोश तिसकारूप
अवतिसकोअनात्मरूपदिखावणेकोकहतेहै
बुद्धिकीवृत्तिजोअंतरमुखहोतीहै सोईआनं·
दकेप्रतिबिंबकोग्रहणकरतीहै जवपुण्य·
कर्मकाफलभोगप्राप्तहोताहै तवनिद्रावि·
षेलीनहोजाताहै तिसकोआनंदमयकोश·
कहतेहै सुषुप्तिविषेकारणशरीरकोपावता·
है बुद्धिरूपजोइस्मेहै तिसकीवृत्तिजोविनका
याकरयुक्तहै तिसकानामबुद्धिविज्ञानमय
कोशहै अरजोवृत्तिआनंदकेप्रतिबिंबकर·
युक्तहोतीहै सोआनंदमयकोशहै इहजोपु·
ण्यकर्मोकेफलकालविषेफलभोगकेअव·
सरकालविषेकदाचितजोबुद्धिवृत्तिअंतर·
मुखहोतीहै वाघ्रजाग्रतविषेभीवृत्तिअंतर·
मुखमनोराज्यादिकक्रमसेरहित ऐसेजोबु·
द्धिकीवृत्तिहै सोजवपुण्यकेफलभोगका
लकरकेउदयहोतिआनंदकेप्रतिबिंबकरयु·
क्तहोतीहै आनंदरूपजोआत्माहै तिसकेअ·

श्री· निर्विकल्पकवृत्तिहोतीहै सोईवृत्तिजवउ
पं·द· पभोगकेशांतहोयनिवृत्तहोय उहीनिवृ·
५२ त्तिनिद्रारूपकरलीनहोजातीहै सोवृत्तिआ
नंदमयकोशकरकेकहतीहै तिसकोअव
57 अनात्मरूपकमायतेहैं इहजोआनंदमय·
कोशहै सोकदाचितकतभावतेइहआत्मा
नही अनात्मरूपहै अरजोविवशतरमानंद
है सोआत्मरूपहै सोसदापकरसहै सोइन
कोशानेविलक्षणरूपहै जोप्रथमअन्नमय
कोशहै सोअन्नकाविकारहै अन्नमयवीर्य
रुधिरतेइसकीउत्पत्तिहोतीहै फेरअन्नही·
जोउभयथान्यादिकहै तिनहीकरवृद्धहोता
है अरषट्विकारोकरयुक्तहै तातेआत्मान
ही अरजोइसदेहकोआत्माकहै तोकृतना
शअकृतकीप्रापतदोषहोताहै जेइहदेहरू
पआत्माहोतातोप्रथमतोजन्मकैहैनहीथा
उहकोनकर्महोया जिसजन्मअरहाविहोया
अरमनकेउपरंततोइसकाअभावहोया ।
देहरूपआत्माकाकीयेहोये कर्मभोगविना·
ही उनकर्मोकानाशहूया तातेइहआत्मान

ही तात्पर्य शास्त्रकार का है सो स्थूल देह ते लिं
ग शरीर अरु आत्मा विलक्षण है कर्म जो पु॰
ण्य अरु पाप रूप है सो लिंग शरीर विषे रहते
है उही जन्म अरु सुख दुःख देते है आत्मसत्ता
के आश्रय होकर जैसे लोहा अग्नि के आश्रय
होकर दाह कार्य को करता है तैसे चेतन्य की स
त्ता पायकर अदृष्ट द्वारा जन्मादिक देता है स्थू॰
ल देह जो जड दृष्ट विकार है सो आत्मा नही अरु
प्राणवायु जो है सो जड दृष्ट है इस शब्दकर गुण
करयुक्त है अरु क्रियात्मक है अरु विकारी है ता
ते इह आत्मा नही उह चैतन्य है दृष्टा है निर्गुण
है अक्रिय निर्विकार है अरु मन जो है सो भी आ॰
त्मा नही इह अहंता ममता करयुक्त है अरु का
मादिक इनो करयुक्त है अरु चंचल है विका॰
री है ताते आत्मा नही आत्मा अहंकार ते रहित॰
है अरु असंग है अरु कामादिक गुणों ते विका
रों ते रहित है निर्गुण निर्विकार है अरु अचल
रूप दृष्टा है मन सुख दुःख कर रागद्वेष कर
रंज ही जाता है ताते मनोमय कोश आत्मा न
ही आत्मा इनके विलक्षण है अरु विज्ञानमय

श्री· पं·द· ५८

58

कोशजोकरता अरुविषयआदिककर्मोकरत्र
ताहै अरचित्प्रतिबिंबकोग्रहणकरताहै अर
गुणात्मैहै अरुसुषुप्तिविषेलीनहोजाताहै ।
अरआत्माकानेत्रआदिकधर्मोनेरहितहै अर·
निर्गुणहै अरसदाबिंबरूपहै अरसदाएक·
रूपउसकीहानिवृद्धितीनकालेमकदाचित·
नहीहोता तातेआत्माएकरसहै अरआनंद·
कोशहै सोभीआत्मानही इष्टभोगकारूपहै
अरआनंदप्रतिबिंबकोग्रहणकरताहै अरनि
द्रारूपहोकरलीनभीहोजाताहै पुण्यभोग·
केक्षीणहोयगा अरजडहै दृश्यहै अरकदावि·
नकहोसकेदास्थितनही तातेआत्मानही प·
कहीजोअंतःकरणपदार्थहै सोअहंताममा
ताकामादिकवृत्तिकरयुक्तहोताहै तबउस
कानाममनकहतेहै अरुजिसविषेकर्तृत्व·
आदिकधर्महोवै सोविज्ञानमयहै जोचित·
छायाप्रतिबिंबकोग्रहणकरतीहै अरजो·
आनंदछायाप्रतिबिंबकोग्रहणकर तिसे·
अंतःकरणकेभोगताभोगकानामआनंद·
मयकोशहै सोआत्मानही मेयवनहोयगा ।

अप्रतीन होगया आत्माका कर्तृत्व भोक्तृत्ववि
कारतें रहित है चेतन दृष्टा सदा एकरस अच-
लस्थिर रूप है सो आत्मा है तब स्थूल देहतें-
लेकर निद्रा आनंदमयकोश पर्यंत इन वि
षे आत्मता वना होवे परंतु इनते विलक्षण भी-
तो होरकोउ अनुभव नहीं होता अर्थ तब
विद्यमान जो है आनंदमय आदिक सर्व जो ति
न विषे आत्मभाव का निराकरण आतो निरा
सवाद होजावेगा विना इनातो होवरतो आत्मा
को उद्दृष्ट नहीं आवता ॥ इहसंका जब वादी-
करी तब सिद्धांतीउत्तर देता है स्थूल लिंगादि
क सभ नहीं होते आत्मरूप इहतें सतकहता
है नाशतव कोउ होव होता है परंतु भी इनक
रहनका अभाव होता है तिसका कोन निवार
ण करे ॥ टीका बुद्धिआदिकोंविषे प्रतिबिंब
ताकर स्थित है अरु आद शब्दकर वाचक ति-
नका जो बिंबकारण भी तो आनंदरूप है सो-
आत्मा है सोउह सर्वदा काल सदा निरूपकर
सै है निर्णयकीया जो है आनंद सो आत्मा हो
णे को योग्य है काहेते जो निजरूप है जो आ-

श्री. त्मानहीं सोनित्यभीनहीं अरुचेतनभीनहीं जे
ये.द. सेदेहआदिकप्राणनादिकउत्पतमानहैं तांते
५९ अनित्यजडहैं अनात्माहैं अनईकांतकहैं ।
59 नउ अन्नमयतेलेकरआनंदमयपर्यंतजोको
शहैं तिनकेकहेतोहैंकारण जडतादिक ति
नकरआत्मरूपइनकोनाबना नाहोईआइनको
आत्मभावपरइननेभिचारी पनकटाविना।
शोकहोवेरूपशोकाहै उत्तर अरेआत्मानिजा
नेरूपनित्यभीहै तोभीतिसकेग्रहणहारेको
मनहैं सोक्षणिकस्वरूपहै तिसतेसावडव
भीमानसीक्षणिकरूपहै सोईकहतेहैं ।
मल तिनानंदविषेस्थितहोयारूपहोताहै
अरुनस्थितहोयारूपवहोताहै सोसुखरुखत
णिकहै मनकेक्षणिकस्वभावते तातेमान
सीअसेसुखलेयातेहैं अर्थ यहजोनिजात्माको
जोसुखहै सोसदाएकरसहै अरुमनक्षण।
करूपहै इसतेध्यानादिकरणहाराजोहै उ
नकोतवलगसुखहै जबलगस्थितहोताहै
उतरवेतेरहसुखनहींहोता इसकारणतेउन
कोक्षणिकहै अरुजोजानवानहैं तत्वमात्रा

कारवान। उसकामनसर्वदाउसविषेस्थि-
तरहताहै। तेहमदानेरूपहै। अवदृष्टांत
सिद्धअर्थजोहै सोदृष्टांतिकविषेकहतेहैं
अर्थयहजोडतेहैं। मूल। आकाशविषेभीइ-
सीप्रकारआनंदसत्ताभानविश्वयहै। टीका
पूर्वजैसेआकाशनेरहितनिजात्माविषेसत-
चितआनंदरूपहै तैसेहीसचिदानंदआका-
शविषेभीविश्वयकरजाननेयोग्यहै। सत्ता-
भानतोतत्रैसीकारकरतोहीहै जोआकाश
है। अरुभानहोताहै। अबआकाशरूपइसते
रेतैसीकारतेहमविशेषकरनहीप्रतिपाद-
नकरते अरुआनंदप्रतिपादनकीयाहै जो
तुनयाभानता आकाशविषेप्रतिपादन-
नभेदहोतोरु ज्ञितनाआत्मादिकविषेभीदि-
खावतेहैं। वायुतेलेकरशरीरअन्नपर्यंतत्रै-
सीकारकरणेयोगहै। सोईकहतेहैं। मूल
वायुआदिदेहपर्यंतवस्तुविषे। इसीप्रकार
भावनाकरणीहै जोसतचितआनंदरूप
आत्मधर्महै अस्तिभातिप्रियरूप। टीका।
तिनवायुआदिकाकेजोअसाधारणधर्महै

श्री. पं.द. ६.

60

जो उनही के विषे होवे होर विषे न होवे सो कहै
असाधारण सो दिखावते है मूल मे गति सप्रशोप
हला हर भिन्न भिन्न निर्णे है मूल अरु आकाश अ
साधारण जो अवकाश त्रसम भरो जीवो विषे है एकही
सुभाव कर स्थित अवकाश रूप कर इस प्रकार
से [illegible] करणी है तिस तिस रूप को यथा उ
चित नाम धरते है मूल अनेक प्रकार कर
भिन्न जो है नाम अरु रूप तिन विषे एक सी प्रका
र कर स्थित है सत चित आनंद इस विशेष से वा
दसंशय कि से को नही १५ नत्र नवयतीतसे
नेजो है नाम रूप तिन की कोन गति होई इह शं
का है उत्तर कल्पत ही है तिन की गत सोई क
हते है मूल तिलत्व है नाम रूप दो अवकल्प
तनविषे हेन करे [illegible]
कजो है दो नाम रूप सो अदिकवत् देख ब्रह्म विषे
कल्पते है समुद्र विषे बुद्बुदे तरंग आवर्त फे
नादिक उपजते है स्थित होते है ओर अपने लिं
विकार अपने स्वरूप विषे सदा स्थित है १८।
नउ तिसके कार्य सिद्ध होता एह शंका है उत्तर
मूल इस प्रकार नाम रूप विदा नर स्तुति ब्रह्म वि

धिकल्पनदेखताहै तवआपहीनिश्चयहै जोअ
विद्याकरताहै शनैशनैकरनामरूपकी अ॰
सत्तानकीहटानावाले हैतिनकीअविद्यापूर्वक
नहै अथ इहजैसेअसत्तानकीहटानावाले ।
श्रवणमनन निदिध्यासनकरतेभयेहै जैसेहैत॰
रूपजोनामरूपहै इनकीअविद्यादिकोंमिथ्या
मैदेवविचारणे पहभीकरतेभयेहै सोइकरतेहै
सत जितनीजितनीइनकीअविद्याकरतेहै ।
तितनातितनातत्वकादर्शणहोताहै जितना
जितनातत्वकोदेखताहै तितनातितनादोनों
कोनामरूपकात्यागताहै जैसेजितनाजितना
तपक्षीणहोताहै उतनाप्रकाशअधिकहोता
है जितनाप्रकाशअधिकहोताहै तितनात॰
मनष्टहोताहै जितनापापक्षीणहोताहै तित
नाहृदयकादर्शननिकटहोताहै जितनासूर्य
निकटहोताहै उतनाजगतकानष्टहोणहोता
है इसीप्रकारश्रवणपापकेदृष्टांतवतजानना
श्रवणदोनोकेपुनरपिकदेअभ्यासकाफलक
हतेहै सत जबइसप्रकारदोनोंकापकडाभ्या
सकरतेहै तबकेमिथ्याकाप्रकाशात्मचिंतवत

श्री. कानवविघारूढहोजातीहै विद्याकेहैरस्याका
पं.द. रहस्य सोरूढहोजातीहै उसकीअसमताकरणे.
६१ का उतर देतहीउसकीजेअसमताहोवे तोआ.
नंदमयआदिकाकोकोनजाने अरफेरजमन
व्यवहारकोंकरहोवे देतही होरकीसमताके
ज्ञानविषयनहोताहै अपणीसमताकेज्ञान.
नविषेजायनतेहै तेकहतेहैजेनाजेतकहै ।
सेहां तोइहइच्छापतिहोइ अवजोतेकहोमन
ही जानेतीआसमताकिसजाती जेआत्माकीअ.
समताजानीगई तो[illegible]होइ तो अवजेआ
त्माकीसमताजानीगई तोतिसजानीउहीतोआ
त्माहै तोभीतोअसमतानाहोइ तोतेसमकेज्ञान
नहोत्रात्माज्ञानरूपहै उसकीज्ञानरूपता
होरकोउनही सभविषेउसीकाज्ञानप्रकाश
कहै उरस्वअनुभवरूपहै ज्ञानकाविषयनही
सोईदिखावतेहै दृष्टांतकरके ॥ जैसेमधुरा
दिकपदार्थअपणागुणहोरविषेअर्पणकरते
है अरअपनेविषेहोरगुणकीअपेक्षानहीकर
ते जैसेमधुरादिकपदार्थहैगुडादिक अरआ.
दिशब्दकरअग्न्यादिकभीजानने जैसेगुडादिक

वचनकारिकपदार्थोंविषेअपनेगुणकोअ
पेणकरतेहै उनगुणोंहिकोंकागुणअपनेवि
षेअपेक्षानहीकरते अर्थ यहजोगुडहोवपदा
र्थोंविषेअगुणीमधुरताहैताहै गुडादिकोंको
होवमधुरतादेवनवालाहोवकोंउनसो अपणा
कोंतवकेअभावते पदजेमेगुडहीमधुरतापदे
अपनेविषेउपकारमधुरतादेवालेनहीवाह
ता तैसेआत्माअनुभवज्ञानरूपहै आपनेज्ञा
नप्रकाशकेनिमित्त होवज्ञानकीअपेक्षा
नहीकरता अरताकिसेज्ञानकरजानता
ताहै १५ कहाजोअर्थहै तिसविषेदृष्टांतिका
प्रमाणकरतेहै इहजोप्रकाशहै सोस्वयंज्यो
तिहै सभकेआगेप्रकाशताहै तिसकेप्र
काशकरसभभासतेहै तिसकेपीछेसभ
भासतेहै अरतिसकेप्रकाशकरसभभास
तेहै प्रकाशतहै १६ इसदेहविषेजोप्राण
है सोस्वयंज्योतिहै साक्षोआत्मअनुभवरूपहै
होवसभपदोलाहै अरइहसाक्षात्अंतरपरतेहै
अरसभपदार्थोंकेप्रथमप्रकाशताहै ॥
अर्थ इहजोसोरणहत्तपादिकपीछेभाव

श्री.
पं.ट.
१२

62

तैहै अप्रआत्माआवरणआपप्रथमहीभासता
है जोआवरणप्रथमभासे नवहोवतरूपादिक
कैसेकरभासेहैजानेजावे तोतेसभकीप्रथम
हीप्रकाशतानाहै तोतेप्रथमहीसभकेप्रकाश
ताहै तोतेइहहीस्वयंज्योतिहै होवतउहै ३.
नकाइहप्रकाशकैहै तिसहीकेप्रकाशक
इहहसभभासतेहै उसकेप्रकाशकइहभा
सतेहै अर्थ यहजोतिसकेप्रकाशकइहह.
सभहृदयादिकजगतप्रकाशकोआसहोता
है ऐसाजोस्वयंप्रकाशआत्माहै सोस्वयंज्यो
तिहै १७ आत्माजोअनुभवरूपहै सोज्ञानरू
पहै सर्वकाज्ञाताहै तिसकाज्ञाताहोवकोः
उनही तिरिवैअप्रविविरनवेवतीनहै वे.
वलबोधरूपहै १८ तिसकरसर्वजानताहै
तिसज्ञाताकोकिसकरजाने अर्थ इहजो.
तिससाक्षीचेतनकरआत्मासर्वइहहजान
कोजानताहै तिससाक्षीचेतनकोकिस
नउपदेशकोकरजाने आत्माविज्ञानरू
पहै तिसकोकेसनउइहपूछजाने किसीसात
नानानहीजाना नव सनकरजानानहीं नी

जावैगा उत्तर असाध्यहै अविद्यासाधन·
है जबतबमनज्ञानकारणहोताहै तब·
अज्ञानकोदूरकरआत्माकाबोधहोजाताहै दु
निवारकहै फलव्याप्तिनही वृत्तिव्याप्ति
इसकोकहतेहैं जोनष्टकाबोधहोना फलव्या
प्तिइसकोकहतेहै जोकहीये जोइहबना
है सोइहनहीहोता तातेइसकोहोबकोऊ
नहीजानसकता जोइसकोऊअवजाने न·
वकर्मकरताकाविशेषत्रावैहोवै होवइस
केकर्मेरूपहै अवयवजोविशेषरूपहै अ
रुहताताहुआहै अवयवविशेषहोयजायतो
दृष्टहोयजाय इसकादृष्टाकोऊअवरहोवै
तातेयेभीनहीआत्माविषयप्रकाशहै इससी·
कारणइहज्ञानताहै वेदइसकोनही विष
काकोऊजाता अबविदितअविदितसेअन्यहै
अथ यहजोविदितहैजोअन्यहै सोइहहै जो
ज्ञानकाविषैनही आपदृष्टारूपहै अबअवि
दिततेभीजोअन्यहै अविदितजोहैअज्ञान·
तिसकेआवरणतेरहितहै काहेतेजोसर्व
प्रकाशरूपहै केवलबोधज्ञानरूपहै तत

विदितनेइसबोधका तोअनुभवनहीहोता।
होवबोधरूपआत्माकोनहै उत्तर विदितवि·
शेषणवेदनहीकाहैबोधशिवरूपजेनाहोया
आत्मातोअनुभवकाअभावप्रसंगहोया जे·
अनुभवकाअभावहोया तोजाननेवालेकेभे
अनुभवकाभीअभावप्रसंगहोया जेऐसाहो
तोअवबोधअनुभवरूपअङ्गीकारकरतेयहो
या इसबातेकोउपरामपूर्वककहतेहै वो
धरूपजोआपनाआपहै तिसकाभीअनुभव
जिसकोनहीहोता कालीतिसविषेभीजिस·
कोअसतप्रतीतिहै तिसकोशास्त्रकेसेबोध·
करेउहमजछकेआकारकोधारनाहै अतहै
लोकप्रमाणवतनउ ।।५ टीका जिसअंशेयेम
त्विकेमानातअपणाआपवोधयहरूपआत्माहै
तिसकरवयरपदार्थिकोंकास्फुरणहोताहै जे
करवादनेआदिकोकाजाननकहाताहै तिसवि
नाकोऽवातोभीसिद्धनहीहोती सभकेजान
नहारावाहै देहगेहरूपनहीआदिक तिसवेमेअ
मात्रअनुभवरूपकोजेनहीजानता इसकी
भीजिसकाप्रतीतनहीहोती सोनवसमान।

ब्रह्मतजोमनउच्छहै सोलोहपाषाणवतजडम
उच्छकोशास्त्रकवीबोधनहीकरते श्रवउ·
मकेश्रवितेउसकोलजउकरतेहै जोकहता
हैमैबोधकोनहीजानता सोबोधआत्माश्रउ
भवरूपहै तिसबोधकोमैनहीजानता नही
जानसकता उसज्ञाननेयोगहै परमैउसको
नहीजानसकता ऐसाजोउक्तपक्षहै सोआपने
श्रविकेकहनेकर आपहीलज्जतहोताहै ऐसे
कोउपक्षकहे सोमैश्रविविषैनहवाहैके
नही जैसेइसघाहकेकहनेवालालज्जाको·
पावताहै तैसहीजोकहैमैआत्माश्रउभवको
नहीजाणता २ टीका जैसेकोउकहैमैश्र
विविषैजिह्वाहैकेनही इहसंभाषजैसेलज्जा
केनिमित्तहोताहै सविकोनहीउडिचानता
इहवचनजाणवताहै काहेतेजोजिह्वाविना
इननामात्रभीजोसंभाषणनहीहोताविना·
जिह्वा तोतैसेहीजोकहताहै जोमैबोधको
नहीजानता ब्रह्मबोधज्ञाननेयोगहै परमै
तिसबोधकोनहीजानता इहवचनभीकेव
ललज्जाकेकरणवालाहै काहेतेजोबोधरू

श्री. पं.द. १४

64

पआत्मा विनव्यवहारकेसेहोता अथ इहजो
विनाअनुभवआपसिद्धनहीहोता अरुनाकि
सीउनकलव्यवहारकोउसविनाजानता
है जेउहअनुभवनेआपनाआपहै सोतेआ
पकोभीजानताहै अरुअवरकोभीजानताहै
विनाआत्माअनुभवकोउव्यवहारसिधनही
होता सभव्यवहारकेसिधकरनहाराइहहै
तिसकोतैकहताहै जोमैतिसआत्मबोधको
नहीजानता इहवचनतेरेकोलजाकाकार.
णहै अरुतुजोकाहिताहै जोमैतिसकोनही
जानता इहनहीजानना तेकिसकरजाणा
है सोईआत्माहै सोईअनुभवहै सोईब्रह्महै.
नउ होवरसहीप्रकारबोध तोभीप्रसंगजो
हैब्रह्मबोधका तिसविषेकासिद्धहूया उ
तेव जिसजिसवस्तकाबोधहोताहैलोकवि
षे तिसतिसविषयकेत्यागकरजोबोधमात्र
पीछेरहताहै सोईब्रह्महै इहीजोबुद्धिदृढहै
तिसकानामब्रह्मनिश्चयहै ११ अथ इसजग
तविषेघटादिकजोविषयहै तिनविषेजोके
यतानहै तिसतिसघटादिकविषयहै तिन.

विषेजोवोधज्ञानहै तिसतिसघटादिकविष
यकेत्यागनेकरकै अर्थ इहजोतिसतिसवि
षयकेआकारवृत्तिकेजोवोधमात्रपीछेशेषरह
ताहै सर्वत्रअनस्यूतसफुरणरूपसोईब्रह्महै
अर्थइहजोनामरूपतेरहित असतभातप्रि
यरूपजोहैसोईब्रह्महै अर्थयहजोनामरूप
तेरहित असतभातप्रियरूपजोहै सोईब्र
ह्महै यहीजोनिश्चयहै सोईब्रह्मनिश्चयहै
सोप्राप्तहै घटादिकविषेअपेक्षाकोईहोइ
तिनकाप्रकाशकअनुभवरूपब्रह्महै तिस
कीप्राप्तिहोतीहै तोपंचकोशनकाजोविवेक
है सोनिःप्रयोजनहोया उत्तर वेदांतीकह
तेहै सोप्रमातोचैतन्यरूपहै तिसकेज्ञान
विनसंसारकीनिवृत्तिहोतीनही तिसके
बोधकेनिमित्तपंचकोशोकाविवेकहै तो
तेअब्रवणप्रवाहतेहै इसकाविवेकग्रंथनही
सोईकहतेहै स्थूल पंचकोशोकाजवर्णना
कीया तवमातीबोधपीछेशेषरहताहै
सोईआपनास्वरूपतिसकोअन्यमानतानही
वणती अर्थ इहजोपंचकोशहैअन्नमया

श्री. दिकउनकाजनकत्यागकीया अथ द्रष्टाजोआत्मा
पं.ट. स्वरूपहैसोनकरजनवडेनकाअभिमानत्यागा
१५ अवद्रष्टाजोसाक्षीप्रत्यक्चैतन्यतिसकानव.
65 साक्षीरूपवोधरहेया अवआपनाजोनिजवो
धरूपहै सोईनयहै नउ अन्नमयआदिकजो
कोशहै अन्नमयादिकतिसकेत्यागहोयेपीछे
शून्यहीशेषरहताहोवेगा उत्तर द्रष्टाकोसा
क्षीवोधरूपहै उसकोशून्यतानहीवनती
सोईअवकहतेहैं मूल स्वयंप्रकाशस्वरूप
नेविधिविवाहै तिसकावादीकोनरहेवे
स्वयंप्रकाशस्वरूपकर्तव्यवजोहैआत्मा सोकि
केकेमनविषेअवेदिकमनविषे स्वयंप्र.
कशआत्मासीकोकरतेहै तिसआपनेस्वा
नुभवविषेविषयतजोहैसंशय सोनही
निसकोसंदेहहोवे सोमेंहो केमही तिसका
वादीहोवेकोणहोवे उसकावादीहोवेकोन
ही नउ जोआपकोअसतजाननताहै सोअ.
विवादीहोतीहै सोतोअसाकोईनहीजग

नविषे उत्तर सल आपणीअसतनाकिसकोः
भीनहीकहचली अमर्विनाइसहीतेवेदतिसका
बाधाकरताहै जोअसतवादी है तिसका
टीका अंतकोत्यागकरहोदकिसेहिंसाविषे
भीआपनेअसतनाकिसेकोनहीकहचली अथे
इहजोकोईभीआपनीअसतनाअंगीकारकान
ही काहेतेजोकहचलीजोकिसेकोनही अः
तिभीअसतवादीकोबाधाकरतेहै तउ को
नकहतेहै जोअसतवादीकोबाधाकरतेहै
उत्तर कातिकोअर्थमेयहढदतेहै सल जोः
जानताहैब्रह्मअसतहै सोआपंभीअसतही
होताहै काहेतेआपभीजोब्रह्मरूपहीहै अ
रजोसतरूपकोजानताहै सोसतहीरूपहो
ताहै काहेतेजोब्रह्मआपनाआपहैरूपजोहै
तोतेआत्माकोहष्पभावनही आत्मास्वयंप्र
काशरूपहै तिसकोआपनाआपजानकरः
स्थितहो अबआत्माकीस्वयंप्रकाशतानिमि
तकहनेकोकहतेहै जोउसकोवेदतानही
वेदनाकहीये जोज्ञानकाविषयनहीदृष्टी
नही तउ जेआत्माज्ञानकाविषयनही सो

श्री॰
पं॰ ट॰
११
66

काहरूपहै उसकाजोकहो इसहीउपरउपरग्र
ग्रन्थकरतांहैवाटी सिद्धान्तीकोइहकरूपहै आत्मा
वस्तुका अरुजेइहकर्ताहरूपकहै सोइहयारूप
होया अरुजेअनेकइहकरूपहै सोउहकहानेकी
अर्थ सिद्धान्तीजोतुकहै जोइहकरूपहै आत्मा
वस्तुसोइहयाहोया जोकिसीरूपकरवसिद्धक
होवे जोअैसाहै सोतिसीरूपकरइहयारूप
होवेगा अरुजेकिसीरूपकरअनेकीकारनाक।
सोते जोसतरूपतेरहितनाइहकरूपहै सोउ
इहतनसोया। नातेहेकउजोक्याइहरूपहै आत्मा
वस्तु उतर देवाटीइहजोतुकहताहै जोइह
करूपहै सोसतहै जोअैसेकहनविषेआवता
है जोअैसाहै सोसमइहहै इहकाविषयहै।
अस्ताहैकि टीका अरुआत्मावस्तुकोअैसीअ
नीकारनहीकीया उइसभविकल्पानेवरिनहै
जेतेयाहहै तिनकाप्रतियोगीद्वितायाशाहहै
सोआत्मवस्तुसर्वनामरूपतेरहितहै अर्थे
इहजोइहकअवनाहकाशहोनेरहितआत्मव
स्तुहै नउ इहसोइहकअवनाहकशाहहै इन
तेसोरहितवस्तुहै सोप्रतितामात्रकरनेतासि।

इनहीहोता सोइन्नतेवहितहैसोकहै उप
र देवारीईहकश्रवनाहकशहकोजोअर्थ
है तिसकाजोवाचहै सोकहतेहै उत्तर ते
त्रोकाजोविषयहै सोईहककहीताहै अव
जोपरोक्षहै सोताहककहीताहै अरुजो.
मानीहै सोइंद्रियोंकाविषयनहीं अरुस
येमनातेउसकोपरोक्षजानानहीं अर्थ ईहक
कहतेहै जोप्रत्यक्षसोयाइंद्रियोंकाविषय
अरुनाहककहतेहै जोपरोक्षहोवे जोनेत्रा
दिकोंकाविषयनाहोवे सोआत्माहोनेसा
होतेरहितहै नत्र दोनोंतेरहितनोअइभी
कोईनहीं अबतिसतेभिन्नकोऊवस्तहै.
उत्तर देवारी घटपटादिकहै जोनेत्रा
दिकोंकाविषयहै अरुपरोक्षवस्तुयमेअव
मोदिकहै अरुदृश्यनोआत्माहै सोइंद्रियग
म्यजोज्ञानहै तिनकाविषयनहीं तातेइंदि
यकशाहजाउसकोनहीं अरुइयेसतनाही
करपरोक्षभावनाकाअभावहै तातेनाहक
शहकरनहीकहिजाता अर्थ इहजोसम.
प्रगप्रपणेतेमसेकेजांनआयाहै सम.

श्री॰ काप्रकाशक है सभ इंद्रियां अर सभ इंद्रियों।
पं॰द॰ के विषयों को जानता है अर सभ विषयों को।
६७ अभाव को जानता है उस विना अवहार को
सिद्ध नहीं होता ने लौकिक ना वैदिक ऐ
67
सा जो सभ का प्रकाशक सभ के जानने हारा
अनुभव स्वरूप आत्मा है आप आपति सको
परोक्ष केसे कहीये है परोक्षत्व का अभाव है
उस आत्मा ने नाहक शह भी उस में वनता नहीं
नउ द्वितीय का भी निराकरण करने फलक
रते है उत्तर वेदांती आत्मा अवेद रूप है अव.
अपरोक्ष रूप है इह आत्मा स्वयंप्रकाश रूप है
सतरूप है ज्ञानरूप है इह अर्थ को रूप को ल
क्षणा है सत आत्मा अवेद रूप है अवेद कहि
ये जो इंद्रियजन्य ज्ञान का विषय नहीं सो अ
परोक्ष रूप है होर पदार्थ घटपटादिक जो है
सो परोक्ष है शब्द स्पर्श रूप रस गंध इह पदा
र्थ परोक्ष है इंद्रिय द्वारा प्रत्यक्ष होते है विना
इंद्रियां प्रत्यक्ष होते नही ताते परोक्ष होते अ
र आत्मा अपरोक्ष रूप है इंद्रियां विना ही सि
द्ध है सतरूप है अर्थ इह जो अवेद स्पष्टरूप

है तैसे सदा सिद्ध स्वयं प्रकाश रूप है इस प्रव
मान कर आत्मा को स्वयं प्रकाश ना साधते है
आत्मा स्वयं प्रकाश रूप है स्वयं विवेक ज्ञान·
ने ने रहित है अपरोक्ष रूप है अर्थ इह जो बुद्धि
ज्ञान के कर्म विषे नहीं इसही ते इहां स्वयं प्र·
काश है अपरोक्ष रूप है जैसे वेदन ज्ञान रूप·
होती है अर्थ इह जो जैसे संवेदन जो है बुद्धि·
सो मन इंद्रियों के विषयों को जानती है उस को
इंद्रियों विषे जान नहीं सकते तैसे आत्मा सभ
का जानता है उस के जानने वाला होर कोऊ नही
ने उ महावाक्यों कर इह आत्मा को जानते है
के नहीं जो कहोगे तिन कर इह नही जानी·
ता है तो इह महावाक्य व्यर्थ होई इन का श्रव
ण भी उपदेश भी व्यर्थ होया अब जो कहोगे जो जा
ना जाता है सो कर्म रूप होया जे कर्म रूप हो·
या तो कर्ता के कर्म का विरोध होवेगा उत्तर वे
दांही महावाक्यों कर आत्मा जाना जाता है·
ताते सफल है महावाक्यों का सुनना पढना
कहना अब स्वयं स्वरूप ही कर कहते है स
र्व सिद्ध रूप कर कर्म भिन्न रूप है जैसे सूर्य·

श्री· हीकरतेजोविक्षेपिनहोयकरआकाशसूर्यको
पं·द· देषताहै तैसेहीवुद्धिविषेप्रतिबिंबकोहोकर
१५ चिदाभासहीरूपहोकरअखंडकोदेषताहै प
68 रब्रह्मव्यापकहै फलव्यापकनही ऐसानही
जाताजाता जोइहहैतोआत्मारूपहोकरप्र·
काशताहै जोमैहोअखंडरूपहोइकरप्रका
शताहै तातेकर्मकर्त्ताकाविषयनही तोतेता
त्पर्यइहहैजानताआत्माजोवेदनरूपहै सोहो
रवेदनकीअपेक्षानहीकरता जैसेसूर्यजोजग
तकोप्रकाशकरणको होरप्रकाशकीअपेक्षा
नहीकरता तैसेआत्मादेवस्वयंप्रकाशरूपहै
नत आत्मास्वयंप्रकाशरूपभीसिद्धहोया तो
भीअखलक्षणोकाजोअभावहै तातेब्रह्मरूप
नही इहवादीशंकाकरे तबसिद्धांतीउत्तरदे
ताहै [illegible] वेदादीआत्मासतरूपहै ज्ञानरू·
पहै अनंतरूपहै इहजोलक्षणब्रह्मकेवेदांते·
कहेहै सोसभआत्माविषेपाइतेहै लक्षण अ
छ आत्माकेसतत्वप्रतिपादननिमित्तप्रथम·
सतकालक्षणकहतेहै सतरूपउसकोकहते·
तेहै जोसर्वकालविषेरहे तीनोकालोंविषे·

तिसकावाधानाशनाहोवै सोकहतेहैसत।
अरुजगतकेवाधाकाजोसाक्षीहोवै सोकहे।
सतहै वाधाजोसिद्धहोतानही जोवाधातेशु
न्यहै सोईसतहै जोसतहै सोअवाधारूपहै
अरुजोवाधरूपहै सोमिथ्याहै इहविवेकप
वेआचार्योंकीयाहै अरुजोसाक्षीतसभसकउ।
मिकासाक्षीहै जोप्रमाणअप्रमाणसंशय।
कासाक्षीहै जोबालकजोवनमरनकासाक्षी
है सोईदिनमाससवर्षयुगाकासाक्षीहै सोइ
हितउत्पतिस्थितिप्रलयकासाक्षीहै सोईहै
सोईज्ञानरूपकहीताहै अरुजोदेशकाल।
वस्तुकेपरिछेदतेरहितहोवै सोकहेअनंत
तिसविषेदेशकालवस्तु तीनोकल्पितहो
वे सोकहियेअनंत नैयायिकोंकेमतविषे
आकाशकोभीअनंतकहतेहै अरुदेशकाल
केपरिछेदतेरहितहै वस्तुपरिछेदहै आका
शसभविषेव्यापकहै परआकाशभावरूप
अरुआत्मारूपकरव्यापकहै तातेअनंत
है तउ सोवेसतचितआनंदरूपजगतका।
साकासाक्षी इसकरकेकहनेमातविषे।

कासिद्धहोताहै अतर जगतमूलअज्ञानतदाम
जोआरोपितहै सोसभमिथ्याहै तिनकाबा
धाकामिथ्यात्वबोधसमाधिविषे इनकीअ
विद्यमानताहोताहै अरतिनकासाक्षीभाव
कात्रात्मावर्तमानहोताहै तिसकाबाधान
हीहोता काहेतेजोबाधासाक्षीबिनासिद्धन
हीहोता तइहैकहो जोआत्माकेबाधाजान
नवालाकोउहैवैनहीं जेकहेजोउसकाबा
धाकिसीनहीजाना उसकेजाननवालाहोव
तिसकेबोधकोकिसेनजाना तोउसबाधा
होतानहीं अवजोकहेजोजानताहै उस
काबाधातोउहीआत्माहै जोबाधाकोजान
ताहै तातेभीआत्माकाबाधानाममनहोया
कोतउअसाक्षीबाधाकोनाहोवे अतर
साक्षीकरजोबाधाकाअभीकारनहींकीया
धाहोकरअरजाननवालाअरनाबाधाहोना
है अन्यथा इसमाननाममानेगेतोअतिप्रस
गदोषहोवेगा अनअवस्थाहोतेजावेगी जो
इसबाधाकासाक्षीजेमाननहीं तेअभवि

कारणाश्रित होवे जो करन विषे आवे जो इहां त
करवाये है तांते तो करन वचनातनही कहा
जो है प्रथम सो इहां तक करके स्पष्ट करते हैं ।
स्थूल मूर्ति रूप जो है घटादिक तिन विषे जो
है घटादिक पदार्थ तिन को निःसारित न
कीया न आकाश पीछे शेष रहता है उस
का निषेधन ही होसकता है स्थूलि के निषेध की
ये पीछे अमूर्ति वस्तु रहती है उसका निषेधन
ही होना जो पीछे रहता है सोई वस्तु है ३. प्र
थे मूर्ति जो घटादिक है तिन विषे घटादिक प
दार्थ जो है उनको जब दूर किया न आकाश
जो तिन विषे अमूर्ति रूप है तिसका निषेधन
ही होना तिसही प्रकार अणु ऐसे चिन्तिके तिनको
अमूर्ति रूप है देह इंद्रिय प्राण मन बुद्धि चि
त अहंकार महत तत्व प्रकृति इनका जब नि
राकरण कीया पंचकोशों से फिर अनुभव
भव करते वा तिनके निषेध की ये पीछे जो शेष
रहिता है बाधका साक्षी रूप जूर जो बाध का
साक्षी बोध रूप सो बाधने रहित आत्मा है ११
तब प्रतीति जो होता है सर्व पदार्थ तिनका न

श्री·
पं·द·
७·
70

शेष+

वनिषेधकीया नवपीछेकछभीनहीवहता सो
नमकहनेहो जोपीछेजोशेषवहताहे सोअवस
हिरूपआत्माहै इहनवबादीशंकाकरे नवसि
ढांतीउत्तरदेताहै उत्तर वेबादीतजोकहताहै
जोसर्वकेबाधाहोये पीछेशेषकछनहीवहता
जोनहीवहता सोईवहताहै सोईशेषरूपहै
अर्थ जोतंकहताहैपीछेकछनहीरहता नं·
चलोभीइसबातकेसिद्धनावास्ते सर्वकेबाधा
कोनेःखातांहै जिसकरइहज्ञानहोताहै जोपी
छेकछनहीरहताहै इसज्ञानकाजोसाक्षीहै
सोज्ञानअवशघंशीकारकरणयोग्यहै इस·
कारणतेतमसावशेषावाक्योकाअभिमनआ·
ताहै जोसर्वकीआभावकासाक्षीहै सोईआ·
त्माहैअसहै साक्षीहै अन्यकछेनयहै इसहीअ
भिप्रायकरवणिष्ठावकरतेहैं स्मल जोनिःकिंच
नशब्दकरकेकहीताहै सोईउहब्रसरूपहै अर्थ
नतु निःकिंचनजोकहताहैहै सोअभाववाचक
हैं कैसेतसनिःकिंचनशब्दकरकेवेलनकह
नेहो उत्तर वेवादीवाक्यकासातीअवशधंशी
कारकरणाहै नामजोहेसाह निवविशेषहस्तो

ताहै परमार्थीविषेभेदनही सोईकहतेहै बा
धाकासाक्षीजोप्रत्यकआत्माहै उसविषेनाम
भेदसंज्ञामात्रहै कोउनामकरकहताहै जो
किंचितसाक्षीहै अरुकिसीशब्दकरकहता
है इत्यादिकजोशब्दहै सोपरस्परभेदकेपात्र
होतेहै अरुतात्पर्यशब्दकाइहहै जोनिर्बाध
सोबाधतेरहित बाधाकासाक्षीसच्चिदानंद
रूपआत्माहै सोईविद्यमानहै ॥२॥ अरुकहा
तोहैअर्थसोईस्फालिकरहष्टकरतेहै मूल ॥
सोबाधयोग्यपदार्थहै तिसकास्फूर्तीनेबाधकी
याहै तातेआत्माजोहै सोबाधकाशेषरूपहै
नेतनेतकरजोआत्माशेषरहताहै सोआत्मा
साक्षीनित्यज्ञानरूपहै टीका जोसाक्षीचेतन्य
है सोअबाधरूपहै इसहीतेश्रुतिनेनेतनेतक
रश्रुतिकीबाहतिकरके अर्थ इहजोसाक्षी
सभविषेहै जोअनात्मवस्तुहै सोईबाध
केयोग्यहै तिसकाबाधाकरकेजोपीछेशेष
रहताहै जोसभकाबाधासाक्षीहै सोबाधा ॥
कोअशकाहै तिसकाबाधानहीहोता उसजो
बाधकाशेषहै सोईप्रत्यकचेतनम्प्राविडस ।

श्री· पं·ट· ७१

71

चिदानंदरूपहै नउ ३१ कैसीवाल्लवाचकोयो
गपैहै अरकैसीवल्लवाचकोअशक्यहै दोनोका
रूपकहो इहजववारीअञ्जकीया नवसिद्धोने
दोनोकारूपविभागकरकेकहनेहै इदंरूप·
करनेकाकुभासनाहै सोसमञनामाहै सोसम
भत्यागकेयोगपैहै अरुजोइदंतेरहितरूपहै·
सोरूपतेरहितआत्माहै अथ इदंरूपकरग्रह
णअनुभवहोताहै सोग्रहणनामाहै सोकौन
है देह इंद्रियां प्राण मन बुद्धि चित अहंकार
महतत्वप्रकृतिजोकछुहै अनुभवविषेकर·
याहोया अरअनुभवकाजोविषयहै सोसम·
अनामाहै सोसमभ्यागकरणेकोयोग्यहै अर
जोइदंरूपनहीं अरअहंकारतेरहितहै जो·
अहंप्रत्यकस्फुरणहोताहै जिसविषेइदंवृत्ति
नहीस्फुरने सोत्यागनेकोअशक्यहै जिसका
बाधनहीहोता उरबाधाकासाक्षीहै उहीप्र·
त्यकचेतन्यहै सोईआत्माहै बाधतेरहितहै·
अरअहंकारादिकइसतेरहितहै ३२ नउ हो
याबाधनआत्मकोप्रकृतप्रसंगविषेकासि·
द्धहोया उत्तर सल बहुविषेसतभावसिद्ध·

होया अरुज्ञानरूपसत्यमहीब्रह्मविषेकह्याहै ।
अरुआपअनुभवरूपकरप्रकाशताहै इत्या-
दिकवचनोंकरप्रगटहीकह्याहै अथ टीका
ब्रह्मज्ञानरूपहै सर्वबाधाकाशेकरूप तिसवि
षेसत्यत्वसिद्धकरीहै सोसत्यत्वआत्माविषेसि
द्धहोइहै ननु होवेसत्यत्वब्रह्मविषेपरज्ञान-
त्वकैसेहैब्रह्मविषे उत्तर वेदांतीज्ञानत्वतोस्व
रूपहीब्रह्मविषेप्रतिपादनकीयाहै ज्ञानत्वता
आपहीअनुभवकरसिद्धहोतीहै सोसभनके
जाननहाराहै उसकोजाननहाराकोऊनही
इत्यादिकवचनोंकरपूर्वहीप्रतिपादनकीया
है जोलक्षणब्रह्मविषेप्रतिपादनकीयाहै ।
सोलक्षणआत्माविषेहै उसकहनेकरईश्व
रकालक्षणजानना सत्यज्ञानअनंतअद्वया
नंदरूपआत्माकहनेकरप्रत्यक्चेतन्यजीव
कारूपहै सोईसत्यज्ञानआनंदस्वरूपहै ननु
सत्यत्वअरुज्ञानत्वआत्माविषेसिद्धहोये पर
आनंदस्वभावब्रह्मविषेनहीबनता उत्तर आ-
नंदस्वभावब्रह्मविषेपायतेहै मूल देशकर
आत्माकाछेदनहीसर्वव्यापकरूपहै अरुका

लकरभीश्रुतनहीनित्यत्वरूपके वस्तुतेभीश्रु॰
तनहीं सर्वात्मरूपहै तीनोरूपोंकरआनंदस्वरू
पहैब्रह्म ३५ टीका वेदविषेकह्याहै नित्यहै
विभुहै सर्वगतहै नित्यहै चेतन्योविषेचेतन्य
है इहसर्वब्रह्महीहै इसकरइहप्रतिपादन॰
कीयाहै जोव्यापकत्वअरनित्यत्व अरसर्वा॰
त्मत्व इहश्रुतिकरप्रतिपादनकीयाहै ब्रह्म
त्रिविधपरिच्छेदतेरहितहै अरसर्वकालविषे
जोहै सोकालपरिच्छेदतेरहितहै अथ यहजो
सर्वदेशविषेजोव्यापीहै इसतेदेशकेपरिच्छेद
तेरहितहै अरसर्वकाजोआत्माहै तातेवस्तुके
परिच्छेदतेरहितहै आकाशभीसर्वदेशविषे
है अरकालविषेहै अरवस्तुविषेभीहै व्याप
कपरवास्तवआत्मानहीं आकाशरूपकर॰
व्यापकहै आत्मारूपकरव्यापकनहीं इसते
आकाशकोवस्तुपरिच्छेदहै अरआत्मासर्वदे
शविषेहै सर्वकालविषेसर्ववस्तुकाआत्मा
है तातेतीनोपरिच्छेदोंतेरहितहै इसप्रकार
श्रुत्यनेप्रतिपादनकीयाहै केवलश्रुतिहीं
करनहींकह्या युक्तिकरभीकह्या सोकहते

है सत्त देशअरुकालअरुवस्तुइहतीनोमा
याकरकल्पितहै जिसविषेसोअरुदेशादि
कोंकेपरिछेदतेरहितहै तातेब्रह्मअनंतहै
अनंत ३१ देवादी परिछेदकाजोकारणहै
सोदेशकालवस्तुहै सोमायाकरकल्पितहै
तिसकोभेदपरिछेदादिकरीहोते जैसेगंधर्व
नगरादिकोंकर आकाशकेछेदनहीकर
सकते तैसेही इहदेशकालवस्तुआदिकब्र
ह्मविषेकल्पितहै इसकोपरमार्थकेभेदपरि
छेदकरसकतेनही तातेब्रह्मविषेअनंतता
अत्यंतहोइ तातेसत्यअनंतरूपहैब्रह्म जोब्र
ह्मसत्यआनंदरूपसत्यहै सोआत्माहै इसविषे
संशयकरनानही अरुभीश्रुतिविषेकहाहै
सत्यआत्माहै नरसिंहदेवसोब्रह्महै सोईइहब्र
उभावअन्यकैवेनअयब्रह्मआत्माहै अस्मब्रह्म
आत्माकीअभेदताप्रतिपादनकरीहै तिसब्र
ह्मआत्माकीभीआनंदताप्रसिद्धहोई इहतात्प
र्यहैशास्त्रका ३२ नव जडजोजगतहै सोब्र
ह्मविषेकल्पितहै ब्रह्मविषेपरिछेदकरन।

श्री. हीसकता काहेतेजोजडहैकल्पितमिथ्याहै जै
पं.द. सेसबजगतअनुभवआत्माकोपरिछेदनहीक
९३ रसकता प्रत्यकचैतन्यजोजीवईश्वरहै सोस
73 मरूपहै तिनकरजोपरिछेदनहीकरसकता
प्रत्यकचैतन्यजोजीवईश्वरहै सोसमरूपहै
तिनकरजोपरिछेदहोवितबहनकरपरिछे
दहोयगा तोअनंततावस्तुकोनासिद्धहोई इह
शंकाजववादीकरी तवसिद्धांतीउत्तरदेताहै
उत्तर येतिनकोभीउपाधिकताहै परमार्थत
का तिनकोअभावहै तिसकारणतेतिनका
वस्तुपरिछेदकारणताकाअभावहै जोआप
वस्तुनाहोवत सोपरिछेदवस्तुनकैसेकरस
कै इसहीतात्पर्यकोलोकरकेकहतेहै ।
मूल सतज्ञानअरअनंतरूपजोव्रह्महै सो
ईपरमार्थरूपवस्तुहै तिसविषेजोईश्वरत्व
अरुजीवत्वभावहै सोदोउपाधीयोंकरकल्पि
तहै टीका एकव्रह्मकास्वरूपलक्षणहै एक
व्रह्मकातटस्थलक्षणहै जोसतज्ञानअनंत
रूपहै सोवस्तुपरमार्थरूपहै स्वरूपलक्ष.

णोहै ग्रहतिसब्रह्मकेआश्रयजोमायात्रिगु
णात्मकअथअनतहै सोमायाअविद्यारूप
करकहीताहै तिसमायाअविद्याकरजो
ब्रह्मकोलोकप्रसिद्धईश्वरत्वअरजीवत्वहै
सोविद्यमानजोउपाधिहै तिनकरकलि
तहै कल्पितत्वहीभावकरजडप्रपंचवत
जीवईश्वरकोभीब्रह्मकेपरिच्छेदकत्वका
अभावहै नतु कौनउहदोउपाधिहै उतर
उपाधिदोनोकोनिरूपणकरतेहैक्रमकर
प्रथमईश्वरत्वउपाधिभूतजोसकतहै सो
निरूपणकरतेहै सत्त कोईएकईश्वरीश
क्तिहै सर्ववस्तुकीनियामकअंतर्यामीब्रह्म
विषेकरताहै जोपृथिवीआदिकतत्वोंकेनि
यामकरतीहै आनंदमयलेलेकरब्रह्माउ
पर्यंतसर्ववस्तुनोविषेगूढहै अथ ईश्वरजो
शक्तिहै ईश्वरजोउपाधिरूप ईश्वरसंबंधि
नीकोउपकमकहैहै मतवादरूपोकरन्य
कहीनहीजाती जोऐसीहै किऐसेहै अर
सर्ववस्तुकीनियामकहै अंतर्यामीब्रह्मवि
षेकर्याहै जोपृथ्वीआदिभूतोंकाकारणहै

श्री·
पं·द·
१४
74

अरुनियामकप्रेरककोहै नउ उहसकतककहों·
स्थितेहै अरजोहैसोकोननहीलखती इहश्रो·
कानरकारीकरी तवसिद्धातीउसरहेताहै
अरेवादी आनंदमयकोशतेलेकरअरस्थूल
वहीउपर्यंत सर्ववस्तुविशेषरूपवर्गतीहै इ
सकारणतेनेत्रोंकाविषयहोयकरनहीउ
पलब्धहोतीहै नउ जिहनेसकरजोउपल
भ्यमाननाहोवे अर्थ इहजोप्रत्यक्षनोनिश्च
यकरउपलभ्यमाननाहोवे तोतिसकीअ
सनाहीकेयानाहोवे अर्थ यहजोवहअसत
हीहोवे उत्तर रेवादी जगतकीनियामक
तातिसविनासिद्धनहीहोती तातेअवश्य
मयतिसकाअंगीकारकरनाहै सोईअव
कहतेहै स्थूल पृथिवीआदिकजोइहसतप
दार्थहै तिनविषेतिसतिसकाधर्मईश्वर·
शक्तिनेभिन्नभिन्नकीयाहै जोइनकेधर्म
न्यारेन्यारेनाकरे तवजगतभेदकैसेहोवे
जेपरस्परधर्ममिश्रितहोजावे तवजगत
नाशहोजावे तातेसबोकेधर्मन्यारेन्यारेहै
तातेजगतनिर्वाहहोताहै अर्थ वस्तुजो

है पृथिवी आदिक पदार्थ तिनके जो धर्म कठण
ता द्रवतादिक है सो ईश्वर शक्ति करि भिन्न भि
न्न कीये होवन ना स्थापन कीये होवन तव
तिनके मिश्रित करि अर्थ इह जो इनके धर्म र
क्ष होवने करि जगत नष्ट होजावेगा अनित
अवहार का विघ्न होवेगा तांते इह मर्यादा स्थि
र रहती है सो ईश्वर शक्ति करि ही होते है तउ
जड जो है ईश्वर की शक्ति तिस करि जगत की नि
यामकता न होवनती उत्तर मूल यद्यपि ईश्व-
र शक्ति जड है तो भी तो भी चेतन की छाया करि
जगत जो होती तव चेतन रूप ही होकरि प्रका
शती है जब तिस शक्ति करि युक्त होता है तब
तिस शक्ति उपाधि के संयोग करि ब्रह्म जो गुण
तीत है सो ईश्वर रूपता को प्राप्त होता है ।
अर्थ सो जो शक्ति है जब चेतन की छाया करि यु
क्त होती है अर्थ यह जो चिदाभास जो है चे-
तन का प्रतिबिंब तिस प्रतिबिंब करि युक्त हो
ती है तव चेतन वन होजाती है तिस को नि
यामकता वनती है तउ होवे इसी प्रकार जो
शक्ति नियामक है परम प्रकृत प्रसन विषे ।

श्री. क्यासिद्धहोया उत्तर उह्हीजोशक्तिहै सोईउपा
पं.ट. धिरूपहै तिसमाह्यजवसंयोगमनवंधहोया
७५ तवसमस्तज्ञानअंतरूपजोब्रह्महै सोईईश्वर
भावकोप्राप्तहोताहै तत्र ब्रह्मजोहै सोअसंग
75 रूपहै उसकोसंयोगकैसेहोताहै उत्तर वे
वारी जैसेस्फटिकमणकोजपाकुसुमकेसं
योगकरआरक्तताभासती है तैसेहीब्रह्मवि
षेहै ब्रह्मकोअध्यासकसंयोगहै जैसेकोउ
स्वप्नविषेचक्रवर्तीराजाआपकोमंडलेश्वरा
जाजानतेहै जैसेकोउपवनहै ससंन्यासीप्रा
तनिःसंकल्परूप निर्विकल्पसमाधिविक
ल्पसमाधिविषेस्थितहोवे अरुमनकेफुरणे
करमनोराज्यकरआपकोराजापृथिवीपाल
जाने तैसासमझक तैसेब्रह्ममायाकेसंयोगते
आपकोईश्वरजानताहै तत्र जवब्रह्ममाया
केसंयोगतेआपकोईश्वरजानताहै तवईश्व
रतारूपकरआपकोजानताहै उत्तर जग
तकेउत्पत्तिस्थितिसंहारकाकारणआपको
जानताहै अरुसर्वमन्त्रसर्वेश्वरत्वअरुसंपूर्ण
शक्तिताकरआपकोजानताहै अरुपेसहै.

संपूर्णे धर्मसंपूर्णे यशसंपूर्णे श्रीसंपूर्णे ज्ञा
नसंपूर्णे वैराग्य इनकरसंयुक्तआपकोजान
ताहै अरु ज्ञानशक्तिकरआपकोएकअद्वि
तीयब्रह्मअखंडसच्चिदानंदरूपआपकोजा
नताहै ५. जीवकोउपाधिभूतजोहै पंचको
शसोप्रथमहीकहेहैं तिनकोशोहीकरजी
वत्वभावहोताहै सोईकहतेहै मूल पंच
कोशजोहै उपाधिरूपतिनकरब्रह्महीजीव
रूपताकोप्राप्तहोताहै जैसेपितापितामह
भावकोएकहीपुरुषप्राप्तहोताहै पुत्रपौत्र
ताका ४१ अर्थ पंचजोकोशहै सोईउपाधि
रूपहै तिनकेसंयोगतेतिनकेअध्यासते
सम्यक्ज्ञानअनंतरूपजोब्रह्महै सोईजीवभा
वकोप्राप्तहोताहै अर्थ यहजोजीवव्यवहार
विषयताकोप्राप्तहोताहै नतु एकहीब्रह्म
कोएकहूदोविरुद्धधर्मोंकाजोगएकवारनही
बनता नहीकिसीजागादेखा उत्तर जैसेए
करीपुरुषपुत्रप्रतिपिताहोताहै पौत्रप्र
तिपितामहहोता तिसहीप्रकारएकहीअ
खंडसच्चिदानंदब्रह्मपंचकोशोंकेअध्यासते

श्री॰ जीवकहेताहै अरमायाशक्तिउपाधिद्वाराईश्व
पं॰द॰ रकहीताहै वासवजीवत्वईश्वरत्वब्रह्मको।
७८ कोउनही सोउहदृष्टांतकरकहतेहै मूल
76 पुत्रादिकोंकीअविवक्षाविषेनापितासंज्ञाहै
नापितामहसंज्ञाहै तैसेनाईश्वरताहै नामी
वताहै ब्रह्मविषे शक्तिकोशकीविवक्षाविषे
अर्थे पुत्रवजोहैएकपुत्र पौत्रादिकभेदकर
अनेकसंज्ञाहै अरपुत्रपौत्रइहनिकटतेहो।
हवकीथे तवनापितासंज्ञाहै उसकोनापि
तामहसंज्ञाहै एकपुत्रवहीमात्रहोताहै तै
सेहीकोशशक्तिउपाधिभेदकरजीवसंज्ञाहै
ब्रह्मविषे अरजवइहकोश शक्तिकोशउ॰
पाधिहवकरजवनिरुपाधिअविउसविद्यावे
दहीशेषरहताहै अवकहाजोहैतान तिस
काफलकहतेहै जोइसप्रकारब्रह्मकोजा
नताहै सोब्रह्महीआपहोताहै ब्रह्मकोजन्मा
दिकनहीतातैइसकोभीफेरजन्मादिकन
हीहोता ४४ अरसाधनचतुष्टयसंपन्नजो
पुरुषहै सोएवंकहाजोहैप्रकारतिसकरके
पंचकोशविवेकपूर्वप्रत्यगरूअभिन्नजोब्रह्महै

सत्यज्ञानआनंदसच्चिदानंदरूपतिसकोसाक्षा॰
त्कारकरताहै तबइहब्रह्मरूपहीआपहोताहै
जोइहब्रह्मकोजानताहै जबतबइहपरमब्र॰
ह्महीरूपहोताहै तउ जेब्रह्मवित्तब्रह्महीहोता
है श्रुतिनेकहाहै जोइसकरकासिद्धहोया
होताहै उत्तर अखंडजोसच्चिदानंदहै ब्रह्महै।
सोनाजन्मताहै नमरताहै नावधताहै नाघ
टताहै षट्विकारोंतेरहितहै इसहीकारण
तेविद्यमानहीजोब्रह्महै उसकोभीजन्मादि
कषट्भावविकारनहीहोते तउ जेइहब्रह्म
रूपहीहै तोअैसेआपकोंकोंनहीजानता इ
हतोआपकोजीवपरतेसदुःखीजानताहै।
जिसप्रकारआपकोब्रह्मरूपजानेसोकहो
उत्तर वेदांतीजवसाधनचतुष्टयसंपन्नगुरु
घनेवेदांतकाहूवसुना जोआत्मास्थूलसू॰
क्ष्मकारणशरीरतेविलक्षणहै अवस्थातीन॰
कासाक्षीहै नित्यहै शुद्धहै बोधमतहै पर
मानंदरूपहै इहजवश्रवणकीया तवश्र
वणमननिदिध्यासनकरआपकोअखंड
सच्चिदानंदरूपजानताहै तोतेअजनमयआ

श्री. पं.द. ११

दिककोशोकाजाननहाराहै तिसकरअन्नम
यकोशकास्वरूप अरुइसकीअवस्था अरुज.
न्मतेलेकरविकारजोहैषट् तिनकाजोज्ञाता
है सोआत्मास्वरूपहै जोप्राणीकोरेचककुंभक
पूरकअवस्थाकेजाननहाराहै सोप्राणोंकी
मंदगतिअरुशीघ्रगतिकोजाननहाराहै ति
सकोतूआत्मास्वरूपजान जोदेहविषेअहंका
रकरताहै अरुदेहकोसंबंधीयोंविषेममता.
करताहै अरुइष्टप्राप्तिविषेराग अरुअनिष्ट
प्राप्तिविषेद्वेषवानहोताहै ऐसाजोमनहै ।
तिसमन अरुमनकीजोवृत्तीहै अरुजेममरागा
दिकरूपतिनकाजोसाक्षीहै सोआत्मास्वरूप
है जोविज्ञानमयआपकोकरताजानताहै
अरुनिश्चयकरताहै ऐसाजोविज्ञानमयको
शहै तिसकोजोजानताहै अरुतिसकीक
र्तृत्वआदिकवृत्तिकोजाननहाराहै अरुइस
केलयअरुविक्षेपअवस्थाजोहै सुषुप्तिसम
जाग्रतमनोराज्यरूपजोविक्षेपतिनकोजोजा
नताहै सोआत्मास्वरूपहै जोआनंदमयको.
शकीभोक्तृत्वअवस्थाअरुसुषुप्तिविषेलय

अवस्था अरु इसका स्वरूप जो जानता है सो आ-
त्मावान है ऐसे अनुभव रूप आत्मा के जानने वि
षे तेरेको कायत्न है अरु कासे देह है जे आत्मा
के साक्षात्कार नी होवे तो बाह्य पदार्थों विषे अभि-
मान करदेय अरु अभ्यंतर अहं मम अनात्म रूपक
रदेय अरु जे आत्मा के साक्षात्कार नी होवे बाह्य
नाम रूप को छोड कर रूप जो स्फुरणा ताहे प
दार्थ की तिसको देख अरु अभ्यंतर स्म महति ।
अरु अवस्था का अरु अमन आदिक परमाणो का
जो माना है सो आत्मा अस्ति है अरु जो अंतर
पदेषणा होवे तो बाह्य जेते पदार्थ है सो अपने
निमित्त प्यारे है पुत्रादिक स्वादिक अरु जे अ
भ्यंतर आनंद रूप देखता होवे तब सर्व जो सं
कल्प है इष्ट रूप अथवा अनिष्ट रूप तिसका
त्याग करे जो संकल्प उठे उसका त्याग करे जो
अनात्म रूप हो लि उठे उसका भी त्याग करे अव
अ अनात्म रूप का त्याग करे देही से परा सूक्ष्म आ
त्री से पदार्थ का भी त्याग करे तब समय होता है ।
अनात्म रूप कर त्यागी या तब पीछे जो शेष र
हेगा सो मन वाणी ते परे है सच्चिदानंद परम

श्री.
पं.ट.
३८

ब्रह्महै सर्व [illegible] ओउताको मरनियां रनहा.
संशा[illegible]कामितांनवरहीहै इसविधिध्यानके
बना इहीपरमउतमार्थहै येहता पंचकोश
विवेककीवाणीकउवनअपार दिवानभाववर
नवकरीतर. श्रोतिआनिवधार जोकछुमूल.
बीउडधार कृपाकरोहैनेरजमार जोकछुसू
क्षीनउधार तमाकरोहोमेनउदार मूलअ
धिकहैहैतमपकीउमेरकोधार मूलअधि.
ककीकल्पनाहोतीमनेअपार सर्वशाहमय
ब्रह्महैमेशायदीनोडार मवनमेतनमममाय
कीतनेअपनादास कृपाकरवरदीजोइहोर
साउनपरकास इतिश्रीपरमहंसपरिब्राजका
चार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकि
करेणविरचितायांपंचकोशविवेकंसमाप्त

गेनमोनमोश्रीआत्मारामब्रह्मगुरुदेव दश
नाकेसहवपाईये[illegible]रगयोहंसमपव जैसा.
मसमकीविनतीसुनियेकृपाअपार साम
तमारीनावहोतीनेनोहस
तमार ॥ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः भ[illegible]तीतीर्थ ।
अरुविद्यारण्यमुनीश्वरकोनमस्कारकरके ।
द्वैतविवेककीपददीपिकाकरताहै रामकृ
ष्णाचार्य रामकृष्णजोनामआचार्यहै सो पं
दशीकाटीकाकार सोश्रीमतपंचदशीके
करता भगवानभारतीतीर्थअरुविद्यारण्य
मुनीश्वरकोनमस्कारकरतेहै द्वैतविवेककी
पददीपिकाकर्ताहो श्लो १ ईशजोद्वैततोप्रप
चहैमिथ्यारूपसोभ्रलावताताइसजीवकोभ
तभासताहै तिसकेअसतदिखावनेवाले ।
इसकारणाकरकरकहतेहै द्वैतविवेककी
पददीपिकाकहै जोजैसेदीपकपदार्थलिख
होता तोतमअंधकारदूरहोजाताहै अरुप
दार्थजोभासतेहै तैसेइसदीपिकाकरअवि
द्यारूपअंधकारनष्टहोजावेगा असतरूप
पदार्थज्ञानस्योकारेभासेगा सोपद्वैत
अनादिअनंतजोकहिये सतचितआनंदरू
पकरणइये सात्तीलिख्याहैतजोआइ नमस्का
रश्रवकीजेनाहं रामकृष्णउगावरोकितनो
यहग्रन्थहै अर्थइहजोकरनेकीहैइच्छाजिस

की ऐसाजोद्वैतविवेकरूपग्रंथहै तिसकीनि
विघ्नपरिसमाप्तिवास्तेतत्वकास्मरणरूपजोमं
गलाचरणहै सोकरतेहै अरुइहजोवेदांतका
प्रकरणहै तिसहीकेजोअनुबंधचतुष्टयहै।
अधिकारीविषैसंबंधप्रयोजन सोभिइहबतला
नने अर्थ इहजोप्रथमजोप्रकरणकहैहै सो
ईहसप्रकरणकेभीजानने अवग्रंथकेआरंभे
प्रतिज्ञानकरतेहै। जीवअरुईश्वरकाहीआ
होयाहोयाजोद्वैतहै सोदोप्रकारकाहै सोभेद
मथनिश्चयकरकेजीवबंधनोकोत्यागकरके
अकहोजाताहै। एकद्वैतईश्वरकरयाहै अ
रुएकजीवकरकीयाद्वैतहै ईश्वरकोहैजोका
रणरूपउपाधिहै अरुजीवजोहै सोकार्यउ
पाधिरूपहै तिनोकरकेजगतउत्पतकीयाहै
सोइभिन्नकरकेदिखावतेहै भलाजीईश्वर
किसकोकहते अरुजीवकिसकोकहतेहै।
प्रथमइनकोजानीये तवइनकीकीयेजग
तकाभीज्ञानतुमारीकृपाकरहोजावेगा।
उत्तर वेशिष्यअवंइजोसच्चिदानंदब्रह्महै तिं
सकेआश्रयत्रिगुणात्मकजोअविद्यामायाहै

सो अध्यासित है वास्तव है नहीं किंस इसतें इत
र अध्यासितमात्र है जैसे रत्न जो रक्तलाल अथ
वा माणक जिसको कहते हैं अथवा लसनी·
या जो रत्न है तिसविषे रोकार अकार भास
ते है अरु लालमानक विषे अरु रक्तताश्वेतता
नीलता आदिक लहरा स्फुरण होती है अरु वा
स्तव उस रत्नतें भिन्न वस्तु कछु नहीं अरु भा·
सते है तिसही प्रकार अविद्या परमआत्मविषे
अध्यास है सो अविद्या त्रिगुणात्मक है सात्वि
की राजसी तामसीरूप है तिसके सात्विकरूप
विषे प्रतिबिंब पडा है तिसका नाम ईश्वर है ·
अरु तमरज जिसविषे सब है ऐसा जो अविद्या
का भाग है उसका नाम अविद्या है उसविषे जो
प्रतिबिंब पडा है उसका नाम जीव है अविद्या·
ही का जो सात्विक भाग है तिसका नाम अवि
द्या है जो शुद्ध सात्विकी माया है उपाधिरूप जि
सको ईश्वर कहीता है अरु तामसी उपाधि अवि
द्यारूप है जिसको सो जीव कहीता है ईश्वर के
मायाके अधीन है अरु जीव उसके परतंत्र है
तिसशुद्ध मायाके उपाधिद्वारा ईश्वर सर्वज्ञ

श्री॰ सर्वेश्वर सर्वज्ञ कैहै क्लेश कर्म विपाक वासना
पं॰ट॰ आदिकोकरके न असंगहै जिसेकालविछि
प॰ न्नकोनामस्पर्शकरे सोईश्वरहै क्लेशपांचहै।
80 अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश इह।
पांचक्लेशहै अविद्याकाअर्थ अनित्यअशुचि
अनात्मा इनविषेजोनित्यशुचिसुखआत्मा
बुद्धिहोवे सोअविद्याकहीतीहै अरआत्माके
अरअहंकारकेएककनाहोवनी इसकानामअ
स्मिताहै अररागउसकानामहै जोसुखवि
षेतकेंहोवे अरद्वेषउसकोकहतेहै जोदु
ष्टोंकाधनानालावे तिसविषेउद्विग्नहोव।
ना जोदुःखनाहोवे अरमरणकाभयइस।
कानामअभिनिवेशहै इहपंचक्लेशहै अर।
तीनप्रकारकेकर्महै शुक्लकर्म अशुक्लकर्म
इहतीनप्रकारकेकर्मपुण्यहै पापरूपहै अर
पुण्यपापइहमिलेहोयेहै इहतीनप्रकारक
र्महै अरकर्मोंकाजोफलहै तिसकानामवि
पाकहै सोजातिआयुभोगइहरूपहै जातम
नुष्यादिकआयुजिवनेलेकरदेहपावेपर्यं
तहै अरभोगसुखदुःखरूपहै अरवासना।

जोहै चारप्रकारकहीहै जैशक्तिकजिसको
तीनोकालोविषैनास्पर्शकरै सोईश्वरहै ति·
सकेतीनशरीरहै अव्याकृत हिरण्यगर्भ ·
विराट् इहतीनशरीरहै ईश्वरको सोईश्वरअं
तर्यामीहै तिसहीईश्वरकेइहअंशशास्त्रवतावे·
ब्रह्मा विष्णु शिवरूपहै उत्पत्तिस्थितिसंहार·
काकर्ताहै ऐसाजोअखंडबोधरूप सर्वशक्ति
सर्वेश सर्वगरूपहै तिसकाकीयाहोयाहैत·
हेएक अपरकजीवजोअल्पपरतंत्रषडूर्मि
करयुक्तकार्यउपाधिजोअविद्याहै तिसका·
नामजीवहै एकहैतातिसकाकीयाहोयाहै ·
तिसजीवकेभीतीनशरीरहै एकतिसहैस्थूल
शरीर इहतीनशरीरहै उपाधिजिसकी ऐसा
जोअविद्याआवरणविक्षेपरूपकरयुक्तहै आ
वरणकहै सच्चिदानंदजोअखंडब्रह्महै तिस
काजोअनुभवरूपकरणभानहोवै ऐसेतिसे
एकहै जोमनुष्यदेवताआदिकरूपआपको·
जानना इहविक्षेपहै इनदोषाकोकरजोयु·
क्तअल्पगायपरतंत्रषटकर्मीकरयुक्तजीवहै ·
तिसकरवदिनीयहैतत्पत्तिउपजीहै नत इस

श्री. द्वैतसृष्टिकाविवेककलाकरंतीकीपरीक्षावन
पं.द. निःप्रयोजनहै निःप्रयोजनकहीये निःफल
पा है उत्तर जैसेमनकाहोतावजीवईश्वरकीपरी
क्षासृष्टिकाविवेकविभागकीया तबजीव·
कोत्यागनेयोग्यजोहैतहै सोस्पष्टहोकरभा
सेगा उसकात्यागकरजीवजीवन्मुक्तहोवेगा
नत्र एकवादीकहतेहै जोअदृष्टजोप्रारब्ध·
कर्महै तिसद्वाराजीवजगतकाकारणहै·
कैसेईश्वरजगतकाकारणकहतेहो उत्तर
वेशिष्ठ इष्टपतवद्धलक्षणोकरविशेषको·
प्राप्तहोताहै तोतेहिइष्टपतकेपालनकोया
पनही प्रयोजनकोलेकरईश्वरतोतलउत्पति
सृष्टीकाजोवाकाहै तिसकोग्रन्थनेपढतेहै·
मायाकोत्रैरूपकरजान अरुमहेश्वरकोमायी
जान तिसमायीनेजगतउपजायाहै इष्टहे·
ताश्वेतसोलोवालेकरतेहै मायाजोहैईश्व
र मायाउपाधिकअवछेदचैतन्यसर्वरूप ति
सनेसृष्टिउपजायीहै तिसकोसृष्टिकेउप·
जावनवालाउकहाहै अबतेनरीजोउत्पति
घटहै तिसकाजोवाकाहै सोग्रन्थनेपढतेहै

इहजगतकेपूर्वेआत्माहीरूपआगेथा सोईइच्छा
देखणेकरजगतसृजताहै सोईपरमात्मासंकल्प
करसंपूर्णलोकोंकोसृजताभयाहै इहबहुरचा
वालेजोरिगवेदीहै सोकहतेहै जगतकाआ॰
त्माहीरूपहै इकजगतप्रथमथापक अद्वैतरू
पनहीकछु होरद्वितीयवस्तुभिन्नउसतेहोर॰
इहजोकहा जोसोईदेखताभया संकल्पकर॰
लोकाकोसृजताभया सोइहकहाहै जोएक
जोअद्वैतभूतहै सोईसृष्टिकावणरूपहै आग
वेदकेशाखावालेकहतेहै अवईश्वरकेका
रणभावबिधैतैनरीउपनिषदकहनिकाप्रमा
णलैकरउ[illegible]वावाअर्थतेपडतेहै
आत्माजोअसलहै [illegible]धिक तिसतेप्रथ
मआकाशउपज्याहै तिसआकाशतेवायु॰
अरवायुतेअग्नि अरअग्नितेजल जलतेपृथि
वी अरपृथिवीतेअन्न अन्नोतेहो इसक्रमक
रअसतेसंपूर्णलोकप्रजाउपजीहै १ अबते
त्तरीउपनिषदवालेकहतेहै जोईश्वरजोप
कहै सोविचारताभया जोएकहोसोअने॰
कहोवप्रजारूपकर इहकामनाकरके॰

श्री॰ जगतकोउपजावनाभयाहै आपईश्वरहोयकर
पं॰ट॰ केजगतसंपूर्णकोरच्याहै अर्थ यहजोसतरू
८२ पआनंदरूप चेतनरूपजोब्रह्महै सोईआपनी
82 शक्तिरूपजोमायाहै तिसकोशक्तिरूपकरते
है तिसकोसमष्टिरूपकरतेहै तिसकोप्रका
शरूपकरतेहै जैसेसूर्यकाप्रकाश जैसेच
न्द्रकीउज्वलता जैसेवायुकेस्पर्शशक्ति हिमकी
शीतलता कज्जलकीश्यामता आकाशकीशून्य
ता जैसेब्रह्मकीमायाशक्तिहै तिसमायाकर
उपेतजोहैब्रह्म तिसकोईश्वरकहतेहै तिस
नेआकाशतेलेकरदेहांतपर्यंतजगतउपजा
है जोइसवाक्यकरकहाहै जोबुद्धिआदि
कअंतःकरणावच्छिन्नजोअल्पकआत्माहै ति
ससाथअभिन्नजोब्रह्महै तिसनेआकाशादि
देहपर्यंतजगतउपज्याहै तिसहीब्रह्मकोई
श्रुतिजगतकाकारणरूपलक्षणकरकै ।
तैतिरीशाखावालेकहतेहै ॥ छांदोग्यउप।
निषदविषेभीकहाहै जोब्रह्महीजगतका
कारणहै सोईसमस्तकलिकरतेहै इहजग
तसबंमतहीथा सतरूपथा सृष्टिकेफुरने

तेप्रथमतिसनेइछालेवइतप्रकारजगतउ
पजाहै अपनेइछारूपदेषणतेही तेज अव
पृथिवी अरुजल अउजादिक उपजावताभ
याहै सामवेदवालेइसप्रकारकहतेहै ।
हेसोमइहजगतआगेसद्रूपकेउपजाणतेप
थमसतहीथा सतरूपथा सोईकहीअदैत
सतरूपअखंडसचिदानंदब्रह्मथा उसही
नेजोइछाकरी जोमैएकही अनेकरूपहो
ते ऐसेविचारकरसोईब्रह्मतेजिकोउपजा
वताभया फेरजलपृथिवीइहउपजाये ।
सोइहतीनहीसभभूतोंकाबीजरूपहै अंड
ज अरुजेरज अरुउद्भिजलाण नउ मलाजी
णीवतोसभपांचभूतकहैहै पंचोविनातो
कोउसरीरनही इसीवेदरवहाणतीनकी
काहै होरश्रुतिसाथइसश्रुतिकाविरोधहो
ताहै उत्तर जउपांचोभूतोंकेउत्पतिकह
करदेहोकीउत्पतिकहीहै तिसक्रमकर
केतिसक्रमविषेप्रगटपांचोहीभूतोंकेदे
हकहै अरुतिनोविषेजोईश्वरकाप्रवेशजो
कहाहै सोकेवलचितशक्तिचेतनरूपक

श्री. रकताहै अरजहांजीवपुरुषोंकीउत्पत्तिप्रगट
पं.द. करतीहै अरतीनोंकाकार्यदेहहै तहांइसप्र
८३ कारसमझणा जोतीनोंभूतोंकेकार्यदेहर अ
83 रुईश्वरकाजोप्रवेशकह्याहै सोइसप्रकारहै
जोज्ञानशक्ति अरक्रियाशक्तिकोलेकरहै
तिसज्ञानशक्तिकानामचेतनकलाकरतेहै
अरक्रियाशक्तिरूपप्राणहै प्रवेशभावकर
अविकाशरूपआकाशकोभीजानलेवना
विनाअविकाशरूपआकाशके देहादिक
पदार्थोंका अरज्ञानआदिकतत्वोंकास्थि
तहोवना किसकेआश्रयहोवे तातेसमर्पण
वरूपहीरहाहै अरतीनतत्वोंकामध्य
विषेचौथीभीआजातीहै अरतीनोंइसविधिन
लिखनविषेआईजोतीनोंयत्नपूर्वकउपजती
है अरचौथीसहजयत्नबिनाहोतीहै ताते.
विरुद्धकछूनही इसप्रकारसामवेदीवर्णन
करतेहै १ अबमांडूक्योपनिषदकावर्णन
करतेहै जैसेअग्निनेविस्फुलिंगअनेकउप.
जावतेहै बिनायत्न तैसेहीअक्षरतेनाना
प्रकारकीप्रजाउपजआवतीहै अर्थ यहजो

जैसे प्रजलत अग्नि ते हजारो ही विस्फुलिंग स·
दृश अग्नि रूप यत्न विना उपजावते है तैसे·
अक्षर ब्रह्म रूप जो ब्रह्म है तिसते जड अरु चेतन रू
प प्रजा नाना रूप की उपजावते है हे सौम
इस प्रकार अथर्वण वेद की मुंडक उपनिष
द विषे कहा है अथ इह जो अग्नि ही ते तेजक
ण उपजते है तिस ही के आश्रय जीवजीव·
ते है फेर कारण ही विषे उसकाले जलीन·
हो जाता है तिस ही प्रकार ब्रह्म ही ते जीवों·
की उत्पत्ति है इस ही के आश्रय जीवते है ·
फेर तिस ही विषे लीन हो जाते है इस ही प्र·
कार वृहदारण्य उपनिषद विषे भी कहा·
भावकर प्रकट रूप का [illegible] जो ब्रह्म है ·
तिस ही ते नाम रूपात्मक जगत उपजा है
प्रथम इह जगत अविकृत रूप था अव·
याकृत कहते है जो त्रिगुणात्मक जो मू·
ल प्रकृति है कारणभूत माया अविद्या·
आदिक नामो कर जिसके कहते है ऐसे·
जो माया है ब्रह्म के प्रतिबिंब संयुक्त तिस
समष्टि कारण रूप अज्ञान सुषुप्ति का ना

श्री. सत्रविद्याकृतहै तद्रूपथाजगतप्रथमेत
पं.द. वउहीअनिर्वचनीयरूपजगतप्रगटकीया
८४ ईश्वरने नामरूपोकरविराटादिकोविषे
टेषीताहै तिसहीतेविराटहोया नरपशुगो
(वरअश्वअजावकादेलेलेकरपिपीलिकाप
र्यंतदेहरूपहोया इहबातसमझेयोइसप्र
कारकहाहै १ अर्थटीकारूप इहजगतप्र
थमेनामरूपतेरहितजोअविद्याकृततव
है सोरूपथा अव्याकृतकहै मायाउपाधि
कब्रह्मरूपथा तिसहीअव्याकृतरूपब्रह्म
नेनामरूपोकरकेप्रगटकीया इहइसका
नामहै इहइसकारूपहै प्रथमप्रगटके
जैसेसमुद्रमि [illegible] इसनामसेत
समष्टिविराटहै व्यष्टि नरपशुअश्वगजादि
कहै जैसेइहदेवतापशीवनेलेकरपिपि
लिकापर्यंतइहईश्वरनेरचेहै समष्टिरू
पिरूपकरइहबातसमझेयीशाखावालोंये
नेश्रुतिद्वाराकहाहै अबइसकेअनंतर
जोवरण हैतादिदृष्टकोउपजाइकरजो
ब्रह्मीजीवरूपकरप्रवेशकीयाहै सोअ

वकहतेहै ईश्वरजोब्रह्महै तिसनेजीवरू
पकरदेहविषेपरप्रवेशकरतीभयाहै इस
प्रकारअनेकश्रुतोनेप्रतिपादनकीयाहै
प्राणधारणेतेतिसकानामजीवहोयाहै ।
टीका देहोविषेजोप्रवेशकहा सोदेहोक
हनेकरदेहजातजोहै जेरजअंडजस्वेदज
उद्भिजरूप अरश्रोरभीजोइनतेविलक्षण
देवादिकशरीरहै पंचभूतोके तिनाकेम
ध्यविषे सोसभपंचभूताकेरचेहोयेहैदेह
तिनोविषेईश्वरनेप्रवेशकीयाहै जीवरूप
करप्राणोकेधारणेतेइसकानामजीवः
होयाहै अर्थ इहजोप्राणादिकोकेस्वामी
भावकरप्रेरकरूपकरहोउपस्थितहोयाहै
इसहीतेइसकोप्राणधारीजीवकहतेहै
सोइहरूपकरईश्वरनेदेहविषेप्रवेशके
याहै ननु भलाजीजीवरूपकाहै देवो
करहोयाहै सोकहो उत्तर अधिष्टानरू
पजोचैतन्यहै अरद्वितीयजोलिंगदेहहै
चेतनप्रच्छायाजोलिंगदेहविषेहै तिनके
संघातकानामजीवहै टीका अधिष्टा

श्री· नरूपजोचैतन्यहै अर्थ इहजोलिंगदेहकी
पं·८· कल्पनाकाजोआधारभूतप्रत्यक्चैतन्यहै
८५ तिसकोकूटस्थअंतर्यामीकरकेकहतेहै ए·
कतोबिंबभूत अरुद्वितीयतिसविषेकल्पि·
तजोसमष्टीततोकालिंगदेहहै अरुतती·
यतिसविषेप्रतिबिंबजोचिदाभासहै ति
सतीनोकेमेलापसमूहकानामजीवशब्द
करकेकहताहै ११ नत्र भलाजीईश्वरही·
आपजीवकरप्रवेशकीयाहै तोतिसकोअ
ज्ञानदुःखित्वपरतंत्रइत्यादिकजोविरु
द्धधर्महै सोतिसकोकैसेहोतीहै उत्तर
रेशिष्य महेश्वरहैईश्वरकाईश्वर तिसकी
जोमायाहै सोअनेकशक्तिकरयुक्तहै नि
र्माणशक्तिभीउसीविषेहै अरुमोहशक्ति
भीउसीविषेहै टीका जोईश्वरमायाश·
क्तिकास्वामीहै तिसकानाममहेश्वरक·
हतेहै तिसमहेश्वरकेअधीनीमायाहै सो·
निर्माणशक्तिकरयुक्तहै अर्थ यहजोज·
गतकेउपजावनेकोसमर्थभूतहै तिसही
केविषेमोहनशक्तिभीहै मोहकरणेको

भी समर्थ है वेद विषे और स्थान विषे भी क
ह्या है जो इह माया जड है अरु मोहात्मक रूप
है अर्थ इह जो आवरण विक्षेप रूप इह दो ।
शक्ति माया अरु अविद्या विषे हुइ है विक्षे
प शक्ति कर जाग्रत को उपजावती है अरु आ
वरण शक्ति कर जीवों को मोहती है सोई क
हते है तब इह माया मोह कर शक्ति जीवों को
मोहती है तब इह जीव अपनी सभाव को भ्राम
होता है तब देह विषे मगन होकर सोच कर
ता है १२ टीका इह जो चिदाभास रूप जीव
है तब अपने अधिष्ठान रूप साक्षी चिदानंद को भु
लाय कर शरीर विषे तद्रूप अभिमान को प्रा
प्त होया तब ही माया इस को मोह शक्ति कर
मोह्या अरु इस ही तद्रूप अभिमान का नाम
मोह है जब इस को होया तब इष्ट की प्राप्ति
अरु अनिष्ट की हानि करणा इस को असमर्थ
होता है तब देह अनात्मक रूप के साथ आ
त्म अभिमान कर सोचता है दुःखी होता है ।
दुःखी सुखी इत्यादि अभिमान करता है और
श्रुति विषे भी कहा है जो पकरी देह रूप ह॰

श्री॰ त्तविषेविराजमानदोपंछीहै एकठौरहतेहै
प॰ट॰ अरएकजेमेहैतिनकेमध्यविषेएक तिसदेहरू
८९ रूपवृक्षकाजोफलहै पापपुण्यरूपकर्मक
रचाहोया तिसकोभोगताहै अरदूसराअं
८६ फल+ तर्यामीरूपीपंछीकोनहीखाता इहसाक्षी॰
होकरस्थितहोताहै जोतेकहाजोअपनेअ॰
खंडसच्चिदानंदकोरूपभुलाइकरजोदेहादि
कोविषेआत्मअध्यासकरताहै अविद्याकर
केइसहीतेअनेश्वरहोया मोहकोप्राप्तहोक
रसोचकरताहै इससभसेअपनेईश्वरको॰
इछकही जोअव्याकृततेआकाशादिकत
त्वहोये तिनतेसंसारहोया अद्वैततत्वथा
तिसतेअव्याकृततत्वहोया अव्याकृततत्व॰
उसकोकहतेहै मायाजोआदिकारणभूतहै
प्राकृतरूपउदरजोब्रह्मकेप्रतिबिंबकरयु॰
क्तहोईहै तिसकानामअव्याकृतहै नाम॰
रूपतेरहित अनिर्वचनीयस्वरूपअवस्था ॰
तिसतेमहत्तत्व तिसतेअहंकार सात्विक
राजस तामसरूप तिसतेदेवता इंद्रिय ॰
अरप्राण अरभूतउपजेहै क्रमकरसात्वि

कतेह्वानैंद्रिय अरुदेवता राजसतेकर्मेंद्रि
य अरुप्राण नामसतेआकाशादिकसूत ति·
नोतेविराट्होया तिसकोभेदसमष्टिअरुव्य·
ष्टिरूपदुइहैईश्वरकेतिनविषैजीवरूपहोक
रप्रवेशकरताभया नउ भलाजीवतिसमेंजोक
हतेहोईश्वरसृष्टिकोरचकेतिनविषैजी·
वरूपहोकरप्रवेशकरताभया सोईहवा·
नेनहीवनताकाहतेजोईश्वरजोब्रह्म सो·
तोप्रथमआदिअवस्थाहीविषैव्यापकपूर्ण
है उसकापश्चातप्रवेशवनताहीनही अ
रजेकहेसोसृष्टिउपजाइकरपश्चातप्रवेश
उसकीआहै तोपूर्णअखंडभावखंडनहोता
है अरजोकहोपीछेतेपरवेशनहीकीया
तोश्रुतिसाथविरोधआवतेहैं जोतसम्यक्
तिह्वाराप्रवेशकहाहै इहसंसशयोकोह
रकरो उत्तर वेदातीआगेभीपूर्णहै पीछेभी
प्रवेशहोयाहै सोइउ जैसेसूर्यकाप्रतिवि
वसर्वपृथिवीउपरहोताहै परविनाजला
दिकोउपलक्ष्यविनाप्रतीतनहीहोता ज
बजलादिकउपस्थानविषैडालकरराषा

श्री॰ तोउससमेभासताहै जोउनसूर्यकाप्रतिबिं
पं॰ट॰ बपडाहै इहजैसेआकाशसभघटादिकपदा
८७ र्थोंकेअंतरबाहरपूर्णहै अरुजबजलादिक॰
पदार्थआनप्राप्तहोतेहैं घटादिकोपदार्थोंके
विषेतबआकाशकाप्रवेशउससमेमानीताहै
प्रतिबिंबहोताकरके जैसेसभकाष्ठादिकप
दार्थोंविषेसमानरूपकरअग्निआगेहीव्याप
कहै परमथनादिकक्रियापीछेते कहुन॰
जाननवीवआवताहै जोउणअग्निप्रवेशकी
याहैकाष्ठोंविषे तिसहीप्रकारसमानसता
रूपकरब्रह्मसर्वत्रपूर्णहै उसबिनापदार्थ॰
हीकोउनहीसिद्धहोता सभतेउसहीविषेअ
धिकहै फेरउसबिनाउनकाहोवणकोंक
रहोवे जेवडीबिनासर्पभ्रमकोंकरहोवे
तातेसत्तारूपकरप्रथमहीपूर्णहै अरपश्चा
तजोवेदांविषेप्रवेशकहाहै सोअंतःकर
णकीअपेक्षाकरकेकहाहै जबलगसात्वि
कअंतःकरणदेहविषेनहीआवता तबल
गविशेषरूपआत्माकीप्रतीतिहोतीनही॰
जैसेतुमउनभीप्रत्यक्षदेखलेवोजोउनजो

87

इसमनुष्यादिकदेहअभिमानीजोजीवहै ।
सोइसअपनेमनुष्यदेहसंपूर्णविषेइहजीव
पूर्णहै अरुइसलचरणादिकअंगकोउनही
आपकोजानता अरुनाइहजानइंद्रियनेआ
दिकआपकोजानतेहै नासाणादिकोंविषे
अहंप्रत्ययकीप्रतीतहोतीहै तातेइहजोग
जसतामसरूपहै इनविषेअहंप्रतीतनही
होती अरुअंतःकरणजोसात्विकउज्वलरूप
है तिसहीविषेअहंप्रत्ययस्फुरणहोताहै
जोमैहो तिसकीप्रकारअपसलताप्रथमही
पूर्णहै परभासमानअंतःकरणद्वाराहोता
है अरुअंतःकरणजोदेहविषेआनप्राप्तहो
ताहै तिसविषेतोप्रतिबिंबपडताहै तिसही
द्वाराईश्वरकाजीवरूपकरप्रवेशकहीता।
है नहीईश्वरप्रथमहीपूर्णहै अरुप्रवेश
कीयाहैकाष्ठेविषेतिसहीप्रका १ नउ ।
भलाजी किसमार्गद्वाराईश्वरनेजीवरूप
करप्रवेशकरताहै उत्तर ईश्वरकाजोप्र।
वेशहोयाहै देहविषे सोदशमद्वारमार्ग।
करहोयाहै सिरकेमध्यभागविषेजोको

श्री· ईमलस्थानहै तिसहीस्थानकोब्रह्मरंध्रकह
पं·ट· तेहै तिसहीकोसहस्रदलकमलकास्थानक
८८ हतेहै नत्र भलाजी श्रोरजोपतेस्थानमाथे
श्रोत्रादिक तिनद्वाराकोनाप्रवेशकीया
उत्तर टीकाकरणोकरसिवमार्गद्वाराप्रवेश·
कीयाहै एकलोइहहैजोशरीरकेजोछिद्रहै
श्रवनासिकानेलेकर तिनद्वाराइंद्रियादि·
कोनेप्रवेशकीयाहै पादकेअंगुष्ठद्वाराकर
प्राणवायुनेप्रवेशकीयाहै अवजिह्वामार्ग
द्वारा रसनाअवराकेइंद्रिय अवइसकेदेवता
जोहै अग्नि अववरुण तिनोंनेप्रवेशकीया
है अवनासिकाद्वारा घ्राण इंद्रिय अव अ·
श्विनीकमारोनेप्रवेशकीयाहै इतनेयोंवि
केवत्त इंद्रियअवसूर्यनेप्रवेशकीयाहै अ
वकर्णोकेमार्गद्वारा श्रवणइंद्रिय अवदि
शोनेप्रवेशकीयाहै अवहस्तद्वाराकरइं
द्रिय अवइंद्रदेवनेप्रवेशकीयाहै अवचर
णोद्वारापादइंद्रियअवविस्नदेवतानेप्रवे
शकीयाहै अवउपस्थइंद्रिय अववरुणप्र·
जापतिदेवता लिंगइंद्रियद्वाराइनोप्रवेश

88

कीयाहै अहंकारादिद्वारा पांचइंद्रिय रूप
देवताओंमेंक्रमप्रवेशकीयाहै इसहीप्रकारअ
नेकछिद्रोद्वाराअनेकदेवताइंद्रियोंनेप्रवेश
कीयाहै तोजोराजाहोताहै सभकास्वामी सो
द्वारकाकीयाउपकार आपउपरनहीलेता
इहसभउपरउपकारकरणहाराहै इसही
कारणतेईश्वरनेहोरदेवताइंद्रियकरकी
याजोमार्गहै तिसद्वाराईश्वरनेनहिंप्रवेश
कीयाहै आपहीकरकीया जोसिरविषेछि
द्रहै तिसहीद्वाराप्रवेशकीयाहै अरुतिसी
यइहकारणहै जोप्रतिबिंबजोपडताहै ना
अधोकापडताहै नातिर्यकका उर्धपदार्थ
कापडताहै नाअधकापडताहै नातिर्यक
कापडताहै सोअंतःकरणजोहृदयकम
लहै सोउर्धमुखहै तिसविषेप्रतिबिंबउ
र्धरूपजोईश्वरहै तिसहीकासिरमार्गद्वा
राप्रतिबिंबपडाहै यद्यपि आकाशवतस
भकेअधउर्धतिर्यकहै सर्वत्रव्यापकहै प
रप्रतिबिंबजोआकाशकापडताहै सोउर्ध
मार्गहीकापडताहै तिसकीप्रकारईश्वर

श्री॰
पं॰ट॰
८१

अथउर्थतिर्यकछ्यापनाहै परमतिबिंबउर्धमा
गेंहाराएउनाहै ईश्वरकीसृष्टिअरप्रवेशसभ॰
कहांसेहोएते अरजीवकीसृष्टिकहतेहै नउ
जीवकेसृष्टिविषेप्रमाणकोणहै जिसकरजा
न्याजाएजोजीवभीकारणहैसृष्टिका उत्तर ।
सभवस्तजोअध्यायहै तिसविषेजीवकोकार॰
णकहाहैहेतका नउ भलाजी किसप्रकार॰
नहांवर्णनकीयाहै उत्तर सभअन्यवाचकजो
हैतसृष्टिकेहै तिनकीकटेनउहांप्रतिपादन
कीयाहै सभजोअउ तिनकोज्ञानअउतपक
रपिलाउपजावताहै अर्थ इहजोजीवहै सो
ईश्वरनेअरहरछाराजगतकोउपजावताहै
जगतजोहैजीवसृष्टितिसकेउपजावनअर
पालनकोइहसमर्थहोताहै तांतेइसकोना
मपिताहै नउ भलाजी सभअउइसजीव॰
किसअर्थउपजायेहै सोकहो उत्तर जिसनि
मित्तसभअउउपजेहै सोमुउ एकअउमउ
छ्याकाहै अरदोदेवत्योकेहै अरतीनअउ
जीवकेहै अरएकपशुकाहै देवविषेभीक
हाहै जोएकअउसाधारणमउछ्याकाहै ।

अरुदेवतोंकेहै अ[…]नर्थअरुपशुकाहै
अरुलीनअरुआत्माकेहै अरुकिसकोकह-
तेहै जोकिसकेअदर्शनविषेआवै सोकहैअ-
रु अर्थ इहजोजिसकेसंबोधनविषेआवै-
जोजिसकापुष्टहोवै तिसकासोअर्थहै सो
इकहतेहै सोहलु अस्मादिकजोहै अर्थ
यहजोधात्वादिकजोहै सोइहएकमनुष्यों
काअर्थहै अरुदेवसअरुहंसमासीइहअर्थ-
देवतोंकेहै अरुइयपशुकाहै अरुमनवा
णीप्राणइहआत्माकेअर्थहै इहअर्थसम-
है नतु भलाजीवहैजोहैसम[…]अ सोजग
नहीकेअंतरहै तिसजगतकाजोकर्ता ई
श्वरकह्या तोइनअर्थोकाभीतोईश्वरहैक-
तोइया क्योंतोजीवकोकर्ताक्योंकहतेहो
उत्तर वेशिष्य ईश्वरभीकर्ताहै अरुजीवभी
कर्ताहै तिसकाभेदतूंसुन वेशिष्य ईश्वर
भीकर्ताहै अरुजीवभीकर्ताहै तिसकाभे
दतूंसुन वेशिष्य तिनअर्थोकास्वरूपजोर
चाहै सोईश्वरनेरचाहै अरुभोगनअकार
जोरचाहै इसविषेसोजीवरचाहै यद्यपि

श्री. ईश्वरने यद्यपि विषे प्रकार रचेहैं तथापि जीवनेभी
पं.२. ज्ञानकर्मोंकर इनको उपजायाहै जीवभी इन॰
५. काकारणहीहै ज्ञानकहतेहैं जोकार्याज्ञान॰
ना अरकर्मकहतेहैं विहितअरनिषिद्धरूपको
९० इहकर्मज्ञानहै इनकरजीवउपजावताहै अ
र्थ इहजोइहजीवभीकारणहै नत्र भलाजी
ज्ञानअरकर्मकर जीवकारणकैंसेकरहोताहै
अज्ञानादिकोंका उत्तर देवाही जिसप्रकार इह
ज्ञानकर्मकरकारणहोताहै सोकहते प्रथमजे
हड़ाकर्म इहकरणलागताहै विहितअथवा
निषिद्ध तिसकाजव प्रथमज्ञानहोताहै तब
उसविषेप्रवर्तताहै जैसेजपयज्ञादिकजोक
र्महै प्रथमइनकाज्ञानहोता [illegible]
प्रवर्तताहै जोइहइसप्रयत्नकीविधिहै इहप्रका
रहै इहइसकाहेवताहै इसप्रकारइहदेवता
शुभप्रसन्नहोताहै इहप्रथमज्ञानहै पश्चात्
तिसकर्मविषेप्रवर्तताहै इसहीप्रकारपरस्त्री
काप्रथमज्ञानहोताहै उसकेसंगादिकोंका
पश्चातउसविषेप्रवर्तताहै सोइहजोज्ञानक
र्महै शुभअशुभरूप तिनोंहीकरअज्ञउत्पन्न

होतेहै अर्थ इहलोकशुभअशुभकर्मेहै तिसही
करपायाजोहै देवभी मानुष पश्वादिकशरी
र तिसतिसयोगणजोहै तिनशरीरोकेअन्न सो
प्राप्तहोतेहै देवतोंकेअन्नदर्शअरुपौर्णमासीरू
पहै अर्थ इहजोदर्शअरुपौर्णमासीजोयज्ञहै
सोईदेवतोंकाअन्नरूपहै यद्यपि यज्ञहोरभी
है अनेकतोभी इनदोनोकेमध्यविषेहीसभ
यज्ञआवतेहै दर्शनामअमावस्याका अरुपौ-
र्णमासीपूर्णी इनतिथोकेमध्यविषेसभहीय
ज्ञहोतेहै तातेइनकाहीनामप्रसिद्धहै इनका
हीनामशुभप्रधानकरकहाहै नत इनका-
कारणदेवतारूप केमनुष्यहुये उत्तर कार-
णदेवताजोहै सोईमनुष्यरूपकरहोतामया
है जैसेप्रधानमनुष्यआपनहीकरता हलकी
जादिकोकरउत्पतहोरकरतेहै अरुभोजन-
होरकरतेहै तोउन्हीप्रथमअवस्थाविषेकरता
होताहै पश्चातभोगताहै अपनीप्रारब्धकाम
इच्छाअनिच्छत परेच्छत अनिच्छत इनाभोगताहो
ताहै अर्थ यहजोयज्ञोहीकरदेवतातृप्त
इहोतेहै अरयानादिकमनुष्योकाअन्नहै ।

श्री॰ इनहीकरदरनसमुद्रहोताहै अरपशुकाअरुद॰
पं॰ ट॰ यहै यद्यपि तृणादिकभीभोजनकरतेहै तोभी
९१ उगयद्रपीलीहैउह एकतोतृणादिकोकरउत्प॰
९१ तीउत्पनकरतेहै अरदूसरउगयहीकरतनमसु॰
पुष्टहोतेहै इसहीतेउगयकहाहै अरजैसेयाक॰
देवेकरहोरभीअन्नहै मनुषोंकाभोजन तिस
हीप्रकारउगयादिकहै उगयतृणादिकसभउगय
हीरूपहैसभ अरतुग्यकहनेकरअन्नतरूपहै
प्राणअपानादिकरणहारेहै देवतोकोयज्ञा
दिकअन्नतकेतलहै तरपुष्टकरणहारेहै ।
अरमनुष्योंकायानादिकहै पशुकेतृणादिक
है अरजीवकेमनप्राणवाणीहै तत्र मनका
तोप्राण इहजीवकेअन्नकेसेहै अरकेसेउन॰
करइहतलहोताहै उत्तरवेशिष्य प्रथमतो
फ्रमणहोता मनविषे किसेइहवस्तुकासोम
नहीविषैहोताहै पराशक्तिकेउदरकरकेप्राणोंण
करप्रेरणाहोतीहै फेरवैखरीकरउचारहोता
है तोइहतीनहीअन्नजीवात्माकेहै इनही॰
द्वाराअभअशुभकाकर्ताहोताहै अरइनही॰
द्वाराभोगताहै अवसत जोभोगतानकोंकर

है मनविषेजोइछकीप्रसविषेसुखहोताहै
उसमाथजोजीवकानदामप्रभ्यासहै इसकर
उसकासरवेप्रापनेप्रापविषेजीवात्माकोभा·
सताहै इसहीप्रकारप्राणोंकेभोजनकासुख
प्राणायामोंकेकरणकाहाल प्राणोंकेमले·
स्थानविषेइस्थितहोवणाकर सासेकाह·
लेनविचवरण प्रसवासीकेमलेउचारहोने
करइहजीवात्मालभहोताहै इनहीकरभला
बुराउपजताहै प्रवइनहीकरभोगताहै शुभ
मन प्रशुभमन भले मनप्राण प्रवजेसा
ण भलीवाणी प्रवबुरीवाणी इसनीवजीवा·
त्माकाप्रनहै प्रपनेकर्मोकेप्रनुसार तातेइ
हजीवकेप्रनहैतीन तातेइसकरकयासिद्धहै
या जोइहजोसमप्रकारकाइसन्है सोईश्वर
करकेमीकीयाहै प्रवजीवकरकेमीकीयाहै
ईश्वरजोहै सोजीवकोकर्मोकाफलदेवनहारा गाहै
इसप्रकारजीवोवालेउपजावताहै तेकारण
है प्रवजीवप्रापनेकर्मोद्वाराइनकोउपजाव
ताहै प्रपनेभोगवासते तातेजीवभीकारणहै
लानप्रकर्मकरइहभीउपजावताहै कर्म

श्री. टेसकारहै शुभअशुभ शुभयज्ञादिकहै अ
पं.२. शुभअसिंहादिकरूप अज्ञानकहै यज्ञादिको
१२ कासिवतिजानना असिंहाकोजोकारणोना
ना इनकरजीवजोहैसोदुःख सोआपहीभोग
92 ताहै शुभअशुभयज्ञउपजावताहै ताते जीव
हीकारणहै १८ ननु भलाजीजीवसभअशुभ
कर्महानाइनसभोंकाकारणहोया तोअवभी
उत्तमजीवहोयाचाहिये अत्र तेसे इनकेकर्म
है तेसेहीतूपरस्वभीहै धान्यादिकतोपर-
सिद्धहै मनुष्योंकेअन्न सोत्रणादिकोभीउत्त-
ममध्यमप्रसिद्धहैपशुके अरदेवतोंकेअन्न-
यज्ञादिकहै सोभीप्रसिद्धहै उत्तमअधममध्यम
जीवकेजोअन्नहै मनआदिकसोभीतीनहीप्र
कारकेहै पृथ्वी मन वाक प्राण मानकीहै प
करजसीहै एकलामसीहै ताते इनभीअपने
कर्मोकेअनुसारहै ताते जीवकारणहै अवई
श्वरफलदाताहै कहैजोहैअब सोईश्वरकाका
र्यहै अरुजीवकोभोगरूपहै ताते दोनोंकेस
वेयकर्मजगतस्थितहै एकविषेदोसंबंधका
करहै सो दृष्टांतकरदिखावतेहै जैसेएकही

पिताकारजन्यहै अरुमनोकाभोगएकजोमुहीहै ।
सोपिताकरउपजाईतीहै अरुमनोकाउसकाभो
क्ताहै तिसहीप्रकारइहजगतहै ईश्वरकरउप
जाईताहै अरुजीवइसकाभोक्ताहै नरु मलाजी
ईश्वरअरुजीवकेइहजनविषेकारणसाधनको
नहै तिसकरईश्वरअरुजीवजगतकोरचाहै ।
इतव मायाहनामकईश्वरहै संकल्पसाधन
अरुमनोहनामकजीवहै संकल्पभोगसाधन
है टीका अर्थ ईश्वरजोकारणहै सोसैहलिक
रहै अर्थ इहजोमायाजोअपणीमनकहै तिसक
रजगतउपजावताहै ईश्वरकोजगतउपजाव
णविषेसाधनसंकल्पहीहै अर्थ इहजोसंकल्प
हीमायारूपहै अरुमायाहीसंकल्परूपहै जैसे
मायारूपसंकल्पफुरताहै तैसाहीआगेसिद्धहो
जाताहै अरुजीवमनोवृत्तिरूपहै इसकामान
सीजोसंकल्पहै सोईभोगसाधनहै तोइसका
तात्पर्यकासिद्धहोया सोसुत एकतोइहसि
द्धहोया निश्चयहोयाजोजगत सभमायाअरु
मनकारचाहोयाहै होरसारवस्तुकछुनही
एकतोइहनिश्चयहोया अरुद्वितीयइहजानना

श्री॰ सोईश्वरकाकार्यसमष्टिहै अरुजीवकाकार्यअरुभो
पं॰ ट॰ गऊहीहै जिसकोइसअपनेअहंकारवारवाहै ।
६३ अरुतिससाथइसकीवृत्तिजनकीमिलतेहै उस
हीकाइहकारणहै अरुउहीइसकाभोगहै अरु
92 वस्तुतेमुक्तीहै सोइहदृष्टमायारूपसमभोगहै
अरुवेतनजीवसमकोभोगताहै । नरु मलाजी
ईश्वरकीदृष्टिसेवस्तुरूपहै तिसतेभिन्नतोभो
गकालेकछुनही होवाभिन्नआकारकेणहै ।
ईश्वरकीदृष्टिसेवलता उपर देखाथो ईश्वरक
रविलसोहै मायादिकवस्तु सोवस्तुएकहीहै
अरुभोगोंकीवृद्धिजोअनेकहै तिनकरअनेक
हीरूपस्वस्तुकेभासतेहै एकवस्तुविषेअने
कभोगहोजातेहै एकहीवस्तुविषेअनेकप्र
कारकाउपलभमानहोतेहै उसभोगहीके
प्रकारअनेकप्रकारभासतेहै एकवस्तुविषे
अनेकभोगहोतेहै एकहीवस्तुविषेअनेकप्र
कारउपलभमानहोतेहै उसभोगहीकेप्रका
रअनेकप्रकारभासतेहै नरु मलाजी भोग
ताकाअनेकतातेभोगभीअनेकप्रकारहोवे
सोतोभोक्ता अनेकप्रकारनहीपायीता तोते

अनेकभोगप्रकारभीनही उत्तर भोक्ताअनेक
है तिसतेभोगकारभीअनेकरूपहै सोईअव·
हितावतेहै मूल जैसेएकमणिथीपडीहोई
तिसकोपाथकरलेवनवालाप्रसन्नहोताहै अ·
रुजिसकोलाभनहीहोता तिसकोदुखहोताहै
अरुहोरजोविरक्तपुरुषहै सोतिसकोदेखकर·
प्रसन्नहोताहै नाकोदुःखकरताहै २१ टीका अर्थ
इहहैजैसेएककोमणिहोतीहै तिसकोपाइक
रअर्थीप्रसन्नहोताहै परमप्रसन्नताकोप्राप्त·
होताहै अरुऔरजोएकउसकोजोअलाभहोया
है तिसकोक्रोधहोताहै अरुजोतिसमणिविषे
विरक्तहै तिसकोलाभअरुअलाभविषेनाहर्षहो
ताहै नाक्रोधहोताहै तैसेइहदृष्टांतजोईश्वर·
कीदृष्टिविषेतोमणिएककहीहै परजीवकी·
दृष्टिविषेआकारनेभेदहै प्रियअप्रियअरु
उपेक्षा इहतीनआकारमणिविषेहै जीवदृ
ष्टिविषे अरुईश्वरकीदृष्टिकाजोरूपहै साधा
रणरूपहै मणिविषेप्रियअप्रियअरुउपेक्षा
इहजोप्रकारभेदहै सोजीवदृष्टिविषेहै अरु
इनतीनोविषेजोसाधारणअनुसन्तरूपमणि

श्री॰ पं॰ट॰ ९४ है सोएककहीहै ईश्वरकरचितहै जीवसृष्टाकार॰
उदाहरणतरकरहोरभीस्पष्टकरकेकहतेहैं जे
सेएककहीईश्वरकेसृष्टिविषेहोतीहै तिसविषे॰
किसीकोभार्याप्रतीतिहोतीहै किसीकोनरएण
दामानहोतीहै किसीकोमाताभासतीहै किसी
कोकन्याइसतेलेकरअनेकप्रकारकाउसका
भानहोताहै प्रतियोगीबुद्धीकरयोविदभेदको
प्राप्तहोतीहै नहींकछुस्वरूपतेभेदकोप्राप्तहो॰
तीहै ११ अथ जैसेएककहीईश्वरकीसृष्टिविषे
उत्पनहोईहै पितामाताद्वारातिसकारूपजीव
बुद्धीकरएतेप्रकारकाहोजाताहै उसकाभर्ता
जानताहै जोमेरीस्त्रीहै अरस्वसुरउसकाअ॰
पणीसुषाजानताहै अरएकननदाजानताहै ।
नंदाकहै [illegible]तीकीभगिनी एकजाताजानतीहै
जाताकहैदेवरपत्नी एककन्याजानताहै ।
पितामाताएकपुत्रमाताजानतीहै इसतेलेक
रअनेकप्रकारकीजोप्रतियोगीबुद्धीहै प्रति
योगीबुद्धिभर्तास्वसुरादिकोकीबुद्धीकरपर
स्परभिन्नभिन्नहै कोतिसकरअनेकाकारउ
हभासतीहै तिनतिनकीबुद्धिकोअपेक्ष्याकर

94

ननु भलाजी स्त्रीके ग्रहणकरणहोवेजोज्ञानहै
तिनकरभार्यामनुष्यादिकप्रतीतिहोइहै सोज्ञा
नभेदकोप्राप्तहोइहै इहप्रावतेहै नहीं तिनज्ञा
नोकाविषयभूतस्त्रीकारूपभेदइहभावतेहै
तोतेइहजोतमकहाप्रतियोगदोंकरयोभ
टभेदकोप्राप्तहोतेहै सोअप्रयोगकराहै स्तल
ज्ञानभेदकोप्राप्तहोवे परप्रकारतेभेदकोनही
प्राप्तहोते योघटकाजोवस्तुहै तिसविषेहोरप्रति
शयुतोनहीकछूटेहणेविषेआया जीवकररवि
त उत्तर ज्ञानकीविलक्षणतातेज्ञेयकीविलक्ष
णताकोअभेदताहै तोतेज्ञेयकाभेदभीअंगीका
रकरणकरनेमहै इसहीअभिप्रायकरयग्रकाप्र.
हारकरतेहै एकतोकहताहै होरस्त्रीकोउन.
ही सोअमतहै ऐसादी इहजोमांसमययोघटहै
तिसतेअन्यमनोमयीहै मांसमयी तेअभेदभीहै
तोभीमांसमयीतेभिन्नहै मनोमयी इहजोमांस
मयीहैस्त्री तिसतेभिन्नमनोमयीभीहै ननु ज्ञा
नकेभेदते ज्ञेयकाभीभेदभासताहै ननु अंत्या
रिस्थलविषेमनोमयपदार्थहोवे अवप्रणाम.
स्थलविषेतिसकासद्भावनहीहोता काहेतेजो

श्री· वास्तववस्तुकेसदभावतेतांतेजहांमनोमयपदार्थन·
पं·द· ही तोतेमनोमयकछुनही सोईदिखावतेहै औ
९५ तिविषे स्वप्नविषे मनोराज्यविषे स्मृतिविषे ध्य
स्यानेविषे मनोमयपदार्थहोतेहै तातेजहां·
प्रमाणकर प्रमेयवस्तुकोज्योकात्योजानताहै
तहांमनोमयपदार्थनही अरु जेसिद्धांती भ्रम
विषेभीमनोमयपदार्थहोताहै जहांहैजेवडी
अरुभासतासर्पहै तोसर्वमनोमयहै इसतेले·
करसिपीविषेरूपस्थानविषेरूपत्वभासताहै
अरस्वप्नविषेभीमनोमयपदार्थहीहोकरभास·
ताहै मनोराज्यविषेभीमनोमयपदार्थभासते
है अरस्मृतिविषेभीमनोमयताप्रगटहै ध्येध्या
नेविषेमनोमयहै अरजहांप्रत्यक्षादिकप्रमा
णेकरपदार्थज्योकात्योजाना तोतहांमनोम
यपदार्थनही तहांपदार्थपदार्थस्थितहै तहां
यथार्थपदार्थभासताहै तहांविषयकोसत·
करअंगीकारकरताहै फेरतहांविषयकोम·
नोमयताकोआकरकहतेहै इतर वेवादीइहजो
तेकहताहै प्रमतस्थलविषेविषयकसताकाइह
अंगीकारकरताहै सोपदार्थहै मानजोहैप्र·

सात्तिसकोजबमैयकेसाथयोगपहोताहै तं
बविषयकाआकारभासताहै तहं विषयही
विषयइसकोअपणीबुद्धिद्वाराभासनेलागता
है इसअनिसरूप तत इहजोतसोकहाजेअप
नीबुद्धिकरइसअनिसइसकोभासतेहै सोइहवा
तेअसतहै जोइसहै सोइसहीहै होरजोकह
तेहो जोइसकेमनोमयकाआकारहै सोतम
अपनीमनवाणीकरकलपकरकेकहतेहो उत्तर
वेवादी बाह्यपदार्थभीहै अरमनोमयभीपदार्थ
है सोइ भाष्यअरवार्तिककारोंकरकेकहाहै ।
जैसेलोंबागलिआहोयाताबालोताहै सवावयंत्र ।
जिसविषयद्वाराहोआतदरूपलोंबाहोजाताहै
तैसहीचित जिसपदार्थमिलताहै तैसहीरूपउ
सकाहोजाताहै जैसेमालिआहोयातांबा जिस
केसदृशरूपउसनोंबेकाहोजाताहै सवावयंत्र
केतत्वनिश्चयकरके तैसेहीरूपादिकविषमा
थमिलताहै चित तिसहीकारूपहोजाताहै त
तांबाजोहै सोसवयवपदार्थहै जिसकोअग्निका
संयोगहोताहै सोपत्रकारूपहोजाताहै अरअं
तःकरणजोहै सोसावयवनही निरवयवरूप

श्री॰ है तिसकोतदाकारवनाकेमेंहोवे उत्तर जैसेमणिजनक
पं॰द॰ जोआलोकहै तैसेहीघटाकारबुद्धिहोकरभासते
९१ है सोअंतः[illegible]प्रकारवनाकोप्राप्तहोताहै अर्थ जै
सेमणिजनजोप्रकाशकहैआलोकआतपादिक।
अरुअंतरजोहैप्रकाशपदार्थ तिनकाआकाशआ
कारहोकरआतपादिकभासतेहै तैसेहीसर्वार्थ
जनकसर्वप्रकाशक अंतःकरणसोतदाकार।
होकरभासतेहै अववार्तिककारकावचनकह
तेहै मातातेमानकीउत्पत्तिहोतीहै सोमानमे
यकेसाथसंयोगकोपावताहै तवमानमेयही
कोआकारहोजाताहै इसकेअर्थ मााताजोहैप्र
मातासोचैतन्यहै अधिष्ठानरूपजोहैकूटस्थब्रह्म
सोजोबुद्धिविषेप्रतिबिंबितहोयाहै तिसकानाम
चिदाभासहै इसहीकानामप्रमाताहै अवमानउ
सकोकहतेहै जोचिदाभाससहितजोअंतःकर
णकीवृत्तिहै तिसकीउत्पत्तितिसप्रमातासेतेहो
तेहै अवमेयजोहैघटादिकपदार्थहै जेह्रउपर
माणकरणकेयोग्यहै तिसमेयसाथजवमा
नकासंयोगहोताहै तवमानमेयआकारवन
हीहोजाताहै जैसेमेघकाप्रकारहोताहै तैसेही

प्रकारकीन्याईं आकारप्रमाणकाभी होजाताहै
ग्रंथे। इहजोजैसेपदार्थसाथ [illegible]करणकीइ
तिमिलतेहैं तिसहीकारूपहोकरस्थितहोताहै
नत्र भलाजीहोवै इसहीप्रकारचोविषयका·
रूपहीहोजाताहै अंतःकरणतरभीप्रकाश·
संगतिषेकालाभहया इसकहनकरजोलाभ
होताहै सोकहत इहजोविषयहै घटादिकरूप
सोदोप्रकारकेहै एकउपादानरूप एकमनो·
मयरूप जैसेइहघटजोहष्ट्यावताहै सोदोप्रका
रकाहै एकमृणमयरूप एकमनोमयरूपहै।
नत्र भलाजी जोमृत्तिकारूपघटकीन्याईं मनो
मयघटकातिसमनहीकरग्रहणकरणेकोश
क्तहै अरुहोरग्रहणोतरकाअभावहै तोतेम
नोमयपदार्थप्रसिद्धहोया कोतिसकेग्रहणक
रणहाराहोरकोऊनापायीए सोपदार्थनहीहो
ता उत्तर देवादीसनतेइतरग्रहणोतरकासद्·
भावहै तोतेमनोमयपदार्थहै सोईसमकहते
है जोइसकाग्रहणोतरकासद्भावहै तोतेम·
नोमयपदार्थहै सोईसमकहतेहैं जोइसका
ग्राहकहै मृणमयमानमेयकरसिद्धहोतीहै

श्री· साक्षीकरभासमनोमयहै इसकाअर्थ जैसेघट
पं·८· जोपदार्थहै सोवृत्तिकारूपजोहै सोमानजोप्र·
९७ माणहै तिसमेयकोग्रहणकरतेहै अरमनोम·
97 यपदार्थतिसकाग्रहणकरणहाराप्रकाशकसा
क्षीप्रत्यक्चैतन्यहै उहसाक्षीकरभासताहै तातेम
नोमयभीपदार्थहै नउ भलाजी जैसमनोमयका
प्रकाशकसाक्षीचैतन्यहोया तोबाह्यविषयोंका
तेप्रकाशकनाहोयाकौ उत्तर देवादी प्रमाता
प्रमाण प्रमेय इहतीनहै इनतीनोंकाप्रकाश·
कप्रत्यक्चैतन्यहै परबाह्यजोघटादिकपदार्थ
है तिनकेप्रकाशकरणहारेसूर्यादिकभासतेहै
जिज्ञासीकोइनसूर्यादिकप्रकाशकअरनेत्रादि
कग्राहककरइनकेविक्षेपकरजिज्ञासीकोबाह्यप·
दार्थोंविषेप्रत्यक्चैतन्यजोग्राहकअरप्रकाशक
नहीभासता अरमानसीजोपदार्थहै अरमन
अरवृत्तिहै तिनकाप्रकाशकस्पष्टभासताहै
अरजवाअंतःकरणकासाक्षीप्रकाशकभली
प्रकारइसजाना तबफेरपदार्थबाह्यविषेसा
क्षीस्पष्टभासतेहै विनाअभ्यासनहीभासता ·
तातेकहाहै जोमानसीपदार्थोंकाप्रकाशक·

प्रत्यक्षचेतन्य है अरु वासके अर्थ कप्रमाणादिक
है नत्र भलाजी होवे इसी प्रकार है न होय प्रकार का
है किसको हेय यत्न है किसको हेय यत्न नहीं इह
नहीं जाना जाता उत्तर वेदांती जीव की दृष्टि इह
है अरु तिसही को बंधन का कारण दिखावते है
स्थूल अन्वय अरु व्यतिरेक कारण मनोमय जीव
को बंधनदायक है अर्थ यह जो अन्वय अरु
व्यतिरेक ही अब दिखावते है जिसके मन विषे
सुख दुःखों को भासता है अरु जिसके अमन विषे
देनो की असत्ता होती है अर्थ इसका जीव की
दृष्टि जो मानस प्रपंच है तिसको होय सुख दुः
खों का भी होवणा होता है नाते सुख दुःख देव
नहारे जो है जीव को सो अपने मन के संकल्प
ही है जिस पदार्थ साथ विषय मन इसका मन
ना अरु रमणीकता धारता है तिसही के इष्ट अ
निष्ट की प्राप्ति विषे दुःख सुख कर युक्त होता है
नत्र भलाजी कहते हो अन्वय व्यतिरेक जो त
सो कहे सो मानस परपंच के करे है जो मान
सी प्रपंच के होवन कर सुख दुःख है अरु तिस
के अभाव विषे सुख दुःख का अभाव है सो अ

श्री· न्वयव्यतिरेकवाह्यविषैकोनाहोवै जोवाह्यवस्तुहो
पं·र· वै तौसुखदुःखहोवै अरजेवाह्यपदार्थनाहोवै तौ
९८ सुखदुःखभीनाहोवै अत्र जेवादी वाह्यपदार्थों
98
करसुखदुःखादिकोंका अन्वयव्यतिरेककहेतात
ही सुखदुःखादिकोंका अन्वयनही सोकहतेहै
जैसेवाह्यपदार्थोकेअसनभावनेभीसुखादिको·
विषेनरवधायमानहोताहै अरसमाधिसुषुप्ति
मूर्छादिकोविषेहोयाभी वाह्यपदार्थोकेरहवे
धायमाननहीहोता अर्थइसका नरजोहैमनु·
ष्यादमीवदेहधारीजोहै सोसभतिनकोवाह्य
सुखदुःखदेवणहारेपदार्थहैभीनही तौभीस्व
प्नस्मृतिमनोराज्यादिकोविषेअनुकूलजोहै स्त्री
यादिक अरप्रतिकूलजोहै अग्निव्याघ्रादिक ·
तिनद्वाराजोहैसुखदुःखतिनकरयुक्तहोताहै
अरवाह्यपदार्थसुखदुःखादिदायकहै तौभीउ
नकोनहीभासतेहै ज्ञानीकेसुषुप्तिमूर्छावि·
षेनहीभासता अरयोगीकोसमाधिविषेनही·
भासता तांतेसुखदुःखजोहैमनविषेजीवविषे
है इहिअरवाह्यपदार्थजोहैईश्वरसृष्टिरूपसो
सुखदुःखदायकवंधकनही तांतेवाह्यपदा·

ग्रेहाराम सुखदुःखका अन्वयव्यतिरेककरी
मनोमयजो प्रपंचहै सोई बंधनकाकारणहै
तिसहीको सुखदुःखके अन्वयव्यतिरेक
कारणकहतेहैं सूत्र जैसे किसीकापुत्रदेशां
तरकोगया अरु सुजीवताहै परिकिसे शत्रु
नेकहाजोपुत्रतेरामृतहोयाहै अबतिसनेसु
नानही तोउसनेरुदननहीकरना तोतैसेमनकी
वकोबंधनकाजोकारणहै सो मानसीजगत
है उत्तर भलाजीजो मनोमयजगतबंधनका
कारणहै तोबाह्यअर्थरूपअसर्थहोया जिस
प्रकारबाह्यपदार्थोंकेअन्वयव्यतिरेककर
तोसमभवाह्यपदार्थमिथ्याहोइ तोविज्ञानवा
दीहोवासोकहतेहैं विज्ञानवादकहै इहबा
ह्यरूपअर्थनातेमिथ्याहै नत्र वेसिद्धांतीइह
जोतर्ककहताहै जोमनोमयहीपदार्थसुखदु
खदायकहै इनहीपदार्थपदार्थरूपहोकरभा
सताहै तोवेसिद्धांती जोइहमनोमयपदार्थ
होया तोविज्ञानवादकोयमतासिद्धहोया तो
यजोहै सोकहतेहैं जोबुद्धिहीपरिणामकार
बाह्यप[illegible]अर्थरूपहोकरभासतीहै जोकोय

श्री· मनसिद्धहोया तौबाह्यपदार्थसम्भ्रमनहोवे।
पं·द· उत्तरदेवादी बाह्यपदार्थजिसप्रकारतें भ्रमन
९९ कहताहै सोतिसप्रकारभ्रमननहीं बाह्यप·
99 दार्थभीहोवे सोसतहै तिनद्वाराहृदयविषे
विषयकेप्रकारहोताहै ग्रंथ मानसजोप्रपंच
है सोइसजीवकोसुखदुःखबंधादिकोंकाका
रणहै सोभीतिनकाकारणरूपबाह्यपदार्थ·
है बाह्यद्वाराहीमनशुरतहै सोबाह्यग्रंथजो·
हैपदार्थ तिनकाभीश्रेणीकारकनेमेंहै तो·
तेहित्सानवाह्यपंचमनही वत सोहृदयसंस्का
रसमर्पणकेनिमित्तजेबाह्यपदार्थोंकाअंगी
कारकरतेहै सोइसप्रकारअंगीकारकरो।
सर्वेसत्सोमनःप्रपंचहै सोदोंइकारवरूपहोक
दउतवमानसप्रपंचसंस्कारवाकारणहोत
है तोदेवाह्यग्रंथमछैहै उत्तरदेवादीतेजो
कहताहै तोबाह्यग्रंथअर्थहै सोछदमनही
अर्थइसप्रकारमानहीं जोनिरावरणकारणोंको
समर्थनहींहोता ग्रंथविज्ञानमतकार जो·
विज्ञानवादीहै उहजोबाह्यग्रंथकोतिरस्का·
रूपकरकहताहै सोइसप्रमबहिरवता

होभासतीहै होरकछुनही सोइहग्रमत्म
तोहै जोइसहीप्रकारहोवे तोसमाधिसुख।
सिद्धकोहिकोविषेइसकीवृद्धिजवनीतेवह
नहोजातीहै तोवाहथेजोफेरजगतनाभास
तोतोहमभिविषेसमाधिआदिकोकरतीह
प्रकारहरहोवणानहीहोता तोतेवाहग्रंथ।
भीहै तोतेविज्ञानवादीजोकहतेहै जोविज्ञा
नरूपहीहै जगतसोहमभ्रेमेनहीमानते त
त्तु जेपदार्थवाहहरनहीतो तोइसजीवनमुक
कोभाकरहोवणाहै मुक्तनोतबहोवे जबइस
कोएकअद्वैतब्रह्मही सतभासे तोरद्वितीयता
भासे उत्तरतेवादी जगतजनककालविषे
हरतोनहीकरना प्रत्नाहोताहै इनजीवने
अपनेविषेजेजगतहेतहै सोहरकरनाहै अ
रहंस्वअद्वैतमिथ्याजानताहै इसप्रकारिहस
नहीहरकरनी जबइसकोइसमिथ्याजाना
भासहरासभाकासाक्षात्कारकीप्राप्त
वभुक्तकृतकृत्यहोजाताहै तोतेइसवस्तुकी
हरकोवाधकनहीं नत्तु भलाजी जेप्रयोजन।
नाशपुनःहोया इसवस्तुसिमाधलोप्रयोजन

श्री॰ नसकन श्रेयोकारहीइसकाअधिकारीहोतावो

पं॰८॰ उत्तम देवादी इसकोकहनाहै जोप्रयोजन।

१०० आधीनहैवस्तु सोप्रयोगहै तेनाकरणावल

मानआधीनहै प्रयोगनआधीनवही मानजो

100 हैप्रमाणसेकोनहै प्रत्यक्षकरै एकप्रत्यक्ष

है अनुमानहै शब्दहै उपमानहै अर्थापतिहै

पतेजोकहेप्रत्यक्षउसकोकहतेहै जोअंतःक

रणकीवृतिइंद्रियद्वारानिकलकरवाह्यघटा

दिकोसाथजोमिलतेहै तिसकाजोविषयहै ।

उसकाबाधाफेरनाहोवे विनाचानजिसकाना

मप्रत्यक्षप्रमाणहै अनुमधूमद्वाराअग्निकोजान

नाउसकानामअनुमानहै अप्रसनवादीकाजो

वचनहै उसकानामशब्दहै जिसकोवेदका।

शब्दकहतेहै जोउनकहाहै सोसबकहाहै ।

अरउपमानद्वाराजानना सोउपमानकहते।

है जैसेगवयविषेजोगावनकेगवयाकोजानी।

नाहै अरअर्थापतिकहाहै जोदेवदत्तमोटाहै

परदिनेभोजननहीकरता तिसकानामअर्था

पतिहै अरपरंपराकरजिसकोजानीये सोते

नकहै इनप्रमाणोकरईश्वरहासिद्धहोता।

है नतु भलाजी जेप्रमाणोंकर जगतसिद्ध-
होयातोमत्रहोय्य तोयुक्तसिद्धनाहोई उत्त-
र होजिसप्रकार प्रमाणजगतकीउत्पत्तिक
रतेहैं तिसहीप्रकारजगतकीमिथ्याभीक
हतेहैं तोतेयुक्तसिद्धहोईकौ जगतकाल-
विषेजगतकोप्रमाणसिद्धकरतेहैं नहीजा
नकालविषे तोतेप्रमाणोंकरसिद्धहै जगत
नहीप्रयोजनाधीन ब्रह्मप्रयोजनस्वाधीनजो
है सोईजीवरूपिहै सोईमानसहैतनै है सोई
बंधनकाकारणहै नतु भलाजी जोमानस
हीद्वैतकोबंधनकीकारणनाहोई तोमनो-
निरोधात्मकयोगहै तिसहीकरबंधनरूप
होजावेगा ब्रह्मज्ञानकरजोबंधनकीनिव
र्तनाहै सोविरुद्धहै सोईस्तुलश्लोककरक-
हतेहैं देसिद्धान्ती जेमानसहैतनबंधनकाका-
रणहै तोचित्तवृत्तिकेनिरोधकरकेहीद्वैत
शांतहोजातीहै बंधनरूपतोब्रह्मज्ञानकार
केवणाहै तूंकहु उत्तर देवाटी इहजोजोग-
करद्वैतकीतूंशांतकरतीहै सोतूंकहु जो
द्वैततकालिककरताहै केप्रतिबंधकरहै

श्री॰
पं॰ट॰
९१

101

ताहै सोईस्पाननकालककहै जोद्वैतभ्रमर
हतहोताहैतो माना अबअत्यंतककहै तोब्रह्म॰
ज्ञानविनाअत्यंतकीनिवृत्तहोतीनही दृढवे॰
दांतोकाउमउमहै वेवाटी दृढजोद्वैतकीनिवृ॰
त्तिताहै सोनतकालकसैसीहै जैसेकोउज्येष्ठ
आषाढविषेआतपकरदुःखवंतहोनलागा तो
वृक्षकेतलेजायवैठा जैसेश्रमकोकोउतण॰
विसरामहोताहै जैसेआतपकेदुःखकरवट॰
लोकाकोउविनआतपकादुःखमिटजाता॰
है जैसेसुषुप्तिकालविषेकोउविदुःखलेहो
जाताहै जैसेहीइसयोगीकेसमाधिविषेदुःख
द्वैतभ्रमशांतहोजाताहै सोनत्वकालकहै
जैसेकथादुःखकरजोदुःखीहोआतो जबसो
जनकीयातोउमकालविषेहरहोजाताहै ।
दुःखअत्यंतकनहीहोता अत्यंतकतयाका॰
दुःखनहवहोताहै जबभ्रमततपानकरताहै
तबफेरदुःखतथाकाभासतानही जैसेहीस
माधिजोहैविनवृत्तिनिरोधरूपसो तिसकर
अत्यंतकदुःखनहीहरतातै जबब्रह्मज्ञानहो
ताहै तबअत्यंतकदुःखद्वैतहरवहोताहै जैसे

ग्रस्तपानवालेकोव्यथामिटजातीहै विनाब्रह्म
ज्ञानद्वैतभ्रमसाननहीहोते वेदांतोकाढंढोराहै
वेदकीश्रुतिकहतेहै अर्थ देवजोहैस्वयंप्रका
शअखंडसच्चिदानंदजवतिसकोआत्मारूपकर
जानताहै तवसर्वपापोंसेमुक्तहोताहै शिवको
जवजानताहैआत्मारूपकर तवशांतिकोप्राप्त
होताहै जेचर्मवतआकाशकोवेटलेवेमनुष्य।
जेदेसेअसंभववातीकोकरे तवदेवस्वयंप्रका
शआत्माकोजानेविनादुःखोकाअंतहोजावे।
तोइसकहनेकाप्रसिद्धक्याहोआ जोअवयव्य
व्यतिरेककरद्वैतदुःखकीनिवृत्तिप्रवृत्तिहै
अर्थ यहजोब्रह्मज्ञानकरद्वैतकीनिवृत्तिहोती
है अवविनाब्रह्मज्ञानद्वैतदुःखवंधननहीहोता
है तउ भलाजीवात्मद्वैतनिवारणविनाअद्वैत
ब्रह्मज्ञानकीउदयतानहीहोती इसमेनिश्चय
कीयाहै ततोआत्मद्वैतरूपसोवनानही विना
रूपहोईब्रह्मसाक्षात्कारहोवनानही तातेकार
णहोयाअसंभवहोयाब्रह्मज्ञान उत्तर वेदांती
वात्मद्वैतकेरूपकरणविनाहीइसकोज्ञानहो
ताहै सोसत उ इसद्वैतकोजवमिथ्याजाना तो

श्री. इसकोमिथ्याज्ञाननहींतेअसकद्वैतबोधहोवणा
पं.२. इसकोसम्भमहोताहै सोकहते सूत्र ईश्वरकी
१.२ सृष्टिकेनिवर्तहोईहैविनाजवविचारकरईश्व
10 रसृष्टिकोइसमिथ्याज्ञाना नदअद्वैतबोधहोव
णेकोसम्भमहोताहै इसवास्तेवादीमानताइस
प्रकारकहतेहै सूत्र भलाजी इहजोतुमकहते
हो जोद्वैतकोमिथ्याज्ञाननेकर अद्वैतबोधहो
ताहै सोयोगनहीं द्वैतकेनिवर्तहीहोनेकरअ
द्वैतबोधहोताहै इसनिश्चयवालेवादीकोसिद्धां
तीउत्तरदेताहै सूत्र देखो जैसेद्वैतकेनिवर्त
करअद्वैतज्ञानहोताहैवैसेतोप्रलयविषेद्वैतकी
निवर्तहोजाताहै गुरुशास्त्राचार्यादिकोंकेअभाव
नेविरोधद्वैतकीनिवर्तहोजातीहै गुरुशास्त्र
आदिकोंकेअभावनेविरोधद्वैतकीअभाववि
षेभीअद्वैतबोधकेहोवणेकोसमर्थनहींहोते
ग्रन्थ देखो जैसे द्वैतकेअभावकरअद्वैतबोध
होताहैवैसे तोप्रलयविषेद्वैतकाअभावहोजा
ताहै सुषुप्तिविषेमनकोविषेद्वैतकाअभावहो
जाताहै विरोधीद्वैतकाअभावभीहोताहै अद्वै
तज्ञानकेविरोधभावकेतांभीअभिमतजोहैत.

स्वबोधसोनहीहोता गुरुशास्त्रोंकेअभावते॰
गुरुशास्त्रादिरूपजोज्ञानकासाधनहै तिन॰
केअभावतेअद्वैतज्ञानहोनहीसकता इस॰
हीतेतिसद्वैतकानिवारणअयोगहै तउ भ
लाजी जेद्वैतहोताअद्वैतज्ञानकोंकरहोता
है सोइशंकाकरतीहै वेसिद्धांती ईश्वरसृष्टि
कोजोतंअंगीकारकरताहै सोकहो ईश्वरस
ष्टिसाधकहै किसाध्यहै किअसाधकहै तौ॰
तोनहीबनते जेकहैईश्वरसृष्टिअबाधकहै
अबाधककहैतोतिसकाबाधनाहोवे नाश
नाहोवै सोतुमभीनहीहोता काहेकोजोतुम
कहतेहो विनाद्वैतमिथ्याजानेज्ञानहोताच
ही तवद्वैतकोमिथ्याजाना तवज्ञानउत्पन्न
होताहै इहतुमकहतेहो तिसमिथ्याकोक
स्तौतृणहै जोअबाधकहै अरजोबाधकहो
वैज्ञानकीतदभीनहीबनता जोतुमकहते
होजीवसृष्टिबाधकहै ईश्वरसृष्टिबाधकन
ही अरजेकहोजोसाधकहै तोगुरुशास्त्रादि॰
रूपजोद्वैतहै ज्ञानकासाधनरूप इहभीतो
द्वैतहै अरशास्त्रकाशादिरूपजोद्वैतहै तिनको

श्री. तोइसमहत्वकइसकतेनही तातेकिसीप्रकारकाज्ञा
पं.द. ननहीहोता जबइसद्वैतकाअभावहोवेतबज्ञान
१०३ होताहै नहीतोनहीहोता तातेईश्वरद्वैतभीक
103 छुकार्यसाधकनही उत्तर देवाटी इहजोईश्व
रद्वैतहै सोअबाधकभीहै अरबाधकभीहै अ
पनेकालविषेअबाधकहै अरज्ञानकालविषे
इसकाबाधहोताहै बाधाअर्थ इहजोमिथ्या
होजातीहै नहीस्वरूपतेनष्टहोतीहै जोइसके
स्वरूपकानाशहोवे तिससाथद्वैतकरनायोग
नही अरइसकोबंधनकाकारणभीइसकोस
तातीहै नहीस्वरूपइसका तातेमिथ्याजानक
रझूठीहोवे अरजोतूकहताहै ज्ञानकाबाध
कहै तोनहीज्ञानकासाधकहै वउ द्वैतज्ञा
नकासाधकहोनकेसेहोवे द्वैततोबाधकहै
उत्तर देवाटी एकद्वैतज्ञानकाबाधकहै एक
द्वैतज्ञानकासाधकहै जैसेस्वप्नकीविद्या
वानकहै अरअसत्वअज्ञानअसत्यकरतीहाता
है इसकातमसाजहैयकारकर्तृतहोताहै।
अरदिनसूर्यादिकप्रकाशकहै जैसेनदीहुआ
वणहोताहै तोकालावणहोवताहै तैसेही

गुरुशास्त्रादिकशुभकर्मकारणहोताहैतैसेहैं अवि
विद्याआदिकबंधनकारणहोताहै अरुबाल
करसमकेपदार्थबनेहै सभमिथ्यापरपकना
रकहै एकबाधकहै सोईजीवसृष्टिहैतवि
भागकरदिखावनेहैं मूल जीवसृष्टिदोयप्रका
रकीहै एकशास्त्रीहै एकअशास्त्रीहै नउ
मलाजी तुमजोकहाथाजीवसृष्टिबंधन
काकारणहै सोईदोयप्रकारकीजीवसृष्टिस
दात्यागणीहै बेवादी शास्त्रीजोहैतैसे सोअं
गीकारकरणीहै अरुअशास्त्रीबंधनकाका
रणहै सोत्यागनीहै सोईदिखावनेहैं मूल
शास्त्रीजोहैतैसे सोग्रहणकरणा जबलगत
त्वबोधनहीहोता तबलगबोधपर्यंतहै इनका
ग्रहण जबतत्त्वबोधहोया तबफेरइनकेसा
थप्रयोजनकछुनहीरहता नउ मलाजी
उहदोनहैंशास्त्रीहैतवसउसकास्वरूपहै
सोकहु उसब मूल आत्माजोब्रह्महै तिसका
जोविचारहै सोईशास्त्रीमानसीजगतहै ।
इसकाअर्थ आत्माजोइसकाआपणाआपरु
पहै मूलशरीरहत्नमशरीरकाकारणशरीर

श्री.
पं.२.
१.४

इनतेविलक्षणहै अवस्थात्रयसमष्टिका
साक्षीहै नित्यहै देशकालवस्तुकेपरिच्छेदते
रहितहोवे सोकहै नित्यअसङ्गहै अविद्याअ
रअविद्याकाकार्यजोहै आवरणअरविक्षेपत
तिसतेरहितहै अबाध्यरूपहै बोधकहैज्ञा
नरूपहै इहरूपजोअर्थलक्षणकीया तत्त्वमको
विचारेनुलिंगशरीरजोमैस्थूलशरीरनहीजे स्थू
लशरीरहोता तोकरचरणनेत्रादिकभीआ
पकोजाननेमेजरूरहै सोतोहमनही इहन
हीजाननेवडेहै तातेइहमैनही तेसाआत्मास्थू
लरूपहोता तोइसकेमलमूत्रविषेभास
तेहै तातेइहनही अवजेलिंगशरीरइसका
स्वरूपहोता तोसुषुप्तिविषेभीसंकल्पविक
ल्पकामादिकइहफुरते तातेउहाकोउनही
फुरता तातेलिंगदेहभीआत्मानही अवसु
षुप्तिहीकारणहै इसकारूपहोता तोजा
ग्रतविषेभीउहीरूपरहिता तातेकार
णदेहभीआत्मानही इसप्रकारकानाम
ननहै अवसजातीयअन्यत्वकार आवेइसवि
रानंदस्वरूपकाचिन्तवन अहंविजाती

रूपअनात्माकात्यागकरना इसकानामअनि
दिध्यासनहै इसकानामशास्त्रीमानसीजग
तेहै तत्र भलाजीइहजोतमेकहा जोतव
वोयपर्यंतशास्त्रीहैतकाग्रहणकरै सोइह·
नहींवनता काहेतेजोशास्त्रोंनेतोइसप्रका·
रकहाहै जोजवलगगाडसुषुप्तिहोतीहै ।
जवलगमननहींहोआ तवलगवेदांतविना
कवकेकालअतीतकरै अर्थ यहजोजवल
गजीवताहै तवलगशास्त्रीहैतकात्यागना
करै उत्तरदेतारी जवतत्वोंकाइसजाना त
वइसशास्त्रीहैतकात्यागकरै इहश्रुतिकेअ
र्थहै अर्थ इहजोजवअनात्मकेतत्वजोइसका·
अपनाआपस्वरूपहै जोअत्यन्तसुषुप्तिआ
दिकोंकासाक्षी जवइसकोअखंडसमाधिहोने
दगीहै तवइससाधनकाजानी जोमेडतीहों
तवशास्त्रीजोमानसीहैतनकरीहै तिसकात्या
गकरै तत्र भलाजीइहजोवाकहै जोगाड·
सुषुप्तिपर्यंत आवर्तनविचारै इसवाकाके
कौनतात्पर्य होई उत्तरदेतारी इहजोवाकहै ।
इसकाइहतात्पर्यहै जोकामादिकजोशत्रुहै

श्री· तिनकोअविकाशनाहैवे जैसेरोगीकीउपेक्षाक
पं·ट· रीहोइ उरवंधजातेहैं तैसेहीइह कामादिकहै
१०५ तोतेअल्पमात्रभीनिमेषमात्रभीओसवनाहैहै
105 कामादिकोकोअल्पमात्रकोथाकहा जोपतेपरा
थेअल्पहीहृढहोजातेहैं विषसर्पादिकोकी ।
अरअग्नि अरगर्भ अरबीज अरशत्रु अरकामा
दिकरूप अरमन इह उपेक्षाकीपहुइहोजाते
है तोतेकामादिकोकोअविकाशनाहैवे इह·
तत्वज्ञानकेपूर्वकालविषैमर्यादाहै अरजब·
तत्वज्ञानसाक्षात्कारहोया तवतत्वबोधकेउ
त्तरकालविषैत्यागकरप्रतिपालनकीयाहै ।
इसहीपरश्रुतिकाउदाहरणदेतेहैं स्थूल बु·
द्धिवालेजोजिज्ञासीहै तिसकोब्रह्मपावनेकी
इच्छाहै सोअस्यविद्यावेदांतशास्त्रोंकोपढे अर
वांचावश्रवणमननकरै प्रज्ञानलक्षणरूपआ
त्माकीएकतासाक्षात्कारहोया तवउसका
वनत्यागकरै अर्थ इहजोजीवहै सच्चिदानं
दरूपतिसकोअविद्याउपाधिलगीहै उपाधि
किसकोकहतेहैं जोसमीपविषैस्थितहो
वे अरअपनास्वभावअधिष्ठानविषैअर्पणक

है उसकानामउपाधिहै सोअविद्यारूपजोउ
पाधिहै तिसनेसच्चिदानंदकेआश्रयअखल
होकरअपनास्वभावअर्पणकीयाहै कौन
स्वभावअर्पण अवरिविक्षेपरूप विक्षेपकरआ
त्माकोआपजाननेलागाहै अवरिविक्षेपकर
अरुआवरणकरआत्माकाअनन्तआवरजाता
है तिसकरइहजीवउसीआपकोजानताहै
अरुविषयोंकीतृष्णाकरताहै जबश्रीगुरु
परीक्षकउसकाग्रहणकरकेअविद्याअव
रणविक्षेपरूपकार्यहरकरकेपीछेतेउसका
दीपभीत्यागदेइताहै अवरभीकहतेहै ग्रंथ
काअभ्यासकरकेबुद्धिवानज्ञानकोपावे ज्ञान
विज्ञानयुक्तहोकरफेरसंपूर्णग्रंथोंकाभी
त्यागकरे जैसेधानअर्थीतेउसकोग्रहणक
रकेपलालजोहैतुस तिनकात्यागकरताहै
जैसेधानरेखाइकरतंदुललेलेताहै तिनोंकात्या
गकरताहै तैसेहीविचारकरकेआत्मानंद
कोग्रहणकरकेप्रपंचकात्यागकरता
है औरभीश्रुतिकहतेहै धीरजोब्राह्मणहै
सोअखंडसच्चिदानंदवस्तुकोआत्मरूपकर

श्री· ज्ञानबोधरूपप्रज्ञाकोकरकेश्रेष्ठ इसकोब्र
पं·ट· ह्माकारवृत्तिकरकेफेरशास्त्रविचाररूपवड
१०१ वणरूपजोनहीं वाणीकोविगलापनकरन
106 होताहै औरभीकहतेहैं जिसहीएकदेवकोज्ञा
नकरकेऔरवाणीकात्यागकरै औरकहतेहैं
वाणीकोमनविषेस्थितकरै मनकोबुद्धिविषे
बुद्धिकोआत्माविषेलीनकरै इसहीप्रकार
एकआत्माकोजानकरकेऔरवाणीकात्यागक
रै सोईआत्माकोजानकरश्रवणमननरूपहै
इहशास्त्रीमानसीहैतिनका इसकात्याग·
करै नत्र भलाजी इसकोशास्त्रीहैतिनमें·
कहा सोज्ञानवानइसकात्यागकर[illegible]है ।
सोइहवार्तावनतीनहीं कैसेज्ञानवानदृष्ट
आवतेहैं जोशास्त्रोंकेविचारतेउपदेशकर
ते व्यासवसिष्ठादिक इहकाउद्यमज्ञानवान
हीकेनमाराववचनश्रवणहोया उत्तर वेवा·
ही उहभीज्ञानवानहै [illegible]वहमाराववचनभी·
सत्यहै सोतिसतन [illegible] होयकारकाहै [illegible]·
करूपत्यागहै एकप्रयोजनत्यागहै समा
धिअवस्थाविषेभीस्वरूपकात्यागहै अवि

हे रामजी विषे भी लक्षण त्यागते है श्रेष्ठाचा
र्य अवस्था विषे प्रयोजन का त्याग होता है ।
जीवन्मुक्त पुरुष को प्रयोजन शास्त्रों साथ
कछु नहीं बिना प्रयोजन उसका देह वर्त
ता है जैसे बालक की चेष्टा प्रयोजन बिना
होती है तैसे ज्ञानवान की चेष्टा है जो जना·
गणा करता है जो बिना प्रयोजन सर्व का त्या·
ग करता है अब प्रश्न जो हुआ है सो दो प्र
कार की है एक जीव है एक मंद है सो इक·
मक बक कहते है काम क्रोधादि नीचे है अब प्र
जो ज्यन्मंद है सो दिखाते है नव भलाजी जि
स प्रकार क्षत्री है तत्वबोध के उत्तर काल
विषे त्यागी ने जिस ही प्रकार इच्छी हो जान
के उत्तर काल विषे त्यागीने धोया है ॥
उत्तर देवाची इच्छा जो दोनों है सो इच्छा के प्रथ
मही दन का त्याग करणा है नव भलाजी
प्रथम को त्यागते हो उत्तर देवाची बोध के
सिद्धि निमित्त प्रथ ही रन का त्याग करना
है नव भलाजी इनका त्याग प्रथम न करी
ये काम क्रोधादिकों का उत्तर देवाची इनका सा

श्री·
पं·ट·
१०१

रिकोकाप्रथमत्यागनाकरीयेजोतत्वबोधहो
नानहीकाहैतेजोतत्वबोधकीउत्पत्तिकेसाथ
नेहैतिनमेइनकाजोत्यागकहनाहै प्रथम
साधनचतुष्टयसंपन्नहोवैतत्वबोधकेश्रवण
काअधिकारीहोताहै सोसाधनकहतेहैं ।
वैराग्य अरनित्यअनित्यवस्तुकाविवेक अ
रशमादिकषट्संपत अरमुमुक्षुता इहसा
धनचारप्रकारकेहैं इनकेअवअर्थकहते
हैं प्रथमवैराग्यचारप्रकारकाहै एकयत
मानहै द्वितीयव्यतिरेक तृतीयएकइंद्रिय
चतुर्थवशीकारसंज्ञा यतमानउसकोकह
तेहैं जोविषयभोगोंकोदुखरूपजानकरउ
नसेंत्यागकरणलागा अरशास्त्रसत्संगकरनलागा
अरयत्नविवेदृढ़इच्छाहोई जोइनदुखरूप·
ओगोंनेछूटोदूसयत्नविषेजोलागा इसका
नामयतमानहै अरमनसंयोगकवलेसोय ।
इहविचारहोया जोइहवासनामेरेमानस
होईहै अबइहबरतनीहै तिनकोभीकिसीप्र
कारनष्टकरो इहविनिवेकहै अबव्यतिरेकभा
गवासनाहरहोईहै अबइहदयविषेकउत्र·

(10)

मलीकतबुद्धिहै इसकानाममुमुक्षुकेहियहै अरु·
इसलोक अरुपरलोक किसेविषयकीतृस्ना
नारहै ब्रह्मलोकपर्यंतसोवर्णीकावैराग्य
है अरुनित्यअनित्यकाविवेकदेहतेलेकरस
मप्रपंचमायापर्यंतमिथ्याहै अरुइसकादृष्टा
चेतनसतहै सतवलयत्नवानहोवणा अ·
रुमिथ्याकात्यागकरनेजानाइहविवेकहै
सदाचित्तनेवासनात्यागनीइहसमअरुवाह्य
इंद्रियकानिग्रहकरनाइहदम अरुविहत अरुनि
षिद्धभोगोकात्याग उसकोउपरतिकहतेहै
अरुउस्नादिकशीतसहले इसकानामतिति
क्षाहै अरुअपनेइष्टविधिविचारकाश्रवना
इसकानामसमाधिहै गुरुशास्त्रोविषेउनके
वचनोविषेआस्तिकबुद्धिइहश्रद्धाहै अरुजेसे
कामीस्त्रीकोचाहतेहै जेसेक्षुधाअन्नतृषावंत
जलपियेनयनकोलेसेमुक्तिकीइच्छाहोवे ·
इसकानाममुमुक्षुताहै इहसाधनचतुष्टय
हैजेसाकी इहसाधनजवपक्वहोवे तवश्र·
वणज्ञानहोताहै विनाइनकीहोतानही तोते
कामादिकोकात्यागप्रथमहीकरणाहै तव

श्री. बोधलेइनकाम्यागमोक्षयतानकेकार्यजोमोजो
पं.द. ह्नाहै नउ तत्वबोधतेप्रथमइनकाम्यागहो
१०८ वै प्रथमजबतत्वबोधकाउत्पत्तकालहोया तब
इनकाश्रेणीकार[illegible]वीचे उत्तर देवारी तब.
108
बोधकीउपरंतभीइनकामादिकनमानेजीव
न्मुक्तकेसिद्धवाले इनकामादिकजोक्लेशहै
सोइनबंधनरूपहै जोइनकाउत्पत्तहोया सो
मुक्तबोधकरतेहोवे जोइनकाउत्पन्नहै सोबंधा
है सोमुक्तनहीं नउ ज्ञानी कमजोकरते.
हो जोकामादिकोकोहोयतेजीवन्मुक्तनहीं
होतीतोक्याहोवे एकमइलजोहैरूप इनजन्म
मरणादिकसंसारहै तिसतेजोउद्धिग्नहोया
है तिसको[illegible]दिकोकाजोउपभावकरतब.
हार्दी [illegible]इनमुक्तहै सोईश्रेष्ठहै क्याहैजीव.
न्मुक्तलाभ सत वाहीकाइनजीवन्मुक्तमें.
कोप्रतहोवे तिस[illegible]वेइनकेमोगन्यागानेप
उतेहै नातेइसलोककीप्रभावहीकरमेकृत
हम[illegible]लीलेकोमादिकमोजोकर उनतरे.
वादी देजोमुक्तमानीहै अबइनतत्पता सो
मोमहखोहारामोकक्कवरी इसलोककेमो

गत्यागतेतेतेजीवस्तुफलाकामागकीया प्र
रपरलोकस्वाबरूपकाअंगीकारकीया सोभी
कछुनही उहपरलोकविषयभीअसत्है उ
नकीनिवृत्तभयेते तेतेविषयसुखकाभीत्याग
करणाहै काहेतेजोतेभोगसुखबासेजोअंगी·
कारकीयाहै अरउहभोगभीजोनयभ्रततैसेया
विकदोषाकरजोयुक्तहै अरजन्मभीतेरकोफे
रहोवेगा काहेतेजोतेतेपापकोस्वर्गमाचकर
जोफलमानाथा तेजबलगसंहंतारेहादिको
विषे अरमनमना इसकेसंबंधीजोविषयहै त
बलगहफलफलमानाकहो तबइहभावनष्टहोवै
तबफलफलमहोवै सोतोतेरकोहोनाहै अरंता
मसनातेतफलार्थनही अरंणीमलसर्गकोतै·
फलार्थकाद्वरजाना सोदवअरइत्यालगायदो
षकरयुक्तहै जोइनदोषोकरयुक्तस्वर्गहोया
तबहेयाहोयाबोजेस्वर्गादिकदोषोकरयुक्त
होये तबइनकीआस्थाभीत्यागणीहोइ कैसे·
कैसेहैआस्या जोकामादिकोकादोषोकोउत्प
न्नकरणहारीहै कैसेकामादिकदोषहै सक
लपुरुषार्थकेनाशकरणहारेहै ऐसेजोअस्थे

श्री· नहोअवरूपकामादिकहै सोअवरूपकात्यागनेहै
पं·द· इहकामादिकस्वभावहीपांकरग्रहमहैं फेरयहका
१·४ कामीकोनात्यागकहै नत्रु भलाजी वेतामादि
कोंकीप्राप्तवालेत्रुप्रयत्नग्रनर्थहैनजोकामादि
कहै सोत्यागनेहै फेरइसहेहके भोगवालेइहांके
109 भोगवालेकामादिकोंकेग्रहणविषेकोनदो
षहै ग्रर्थ इहजोकोउदोषनहीग्रहणकरै जब
इहवादीकहा नवसिद्धोनीकहलागा वेवादीन
नविनकेग्रभिमानकरविधिनिषेधकरूपशो
शास्त्रहै तिनकोउल्लंघनकेवतेकामादिकोंकी
ग्रधीनताकरकेवर्तनेलागा तेरेकोयहेग्राच
रणनाग्रासहोई नत्र भलाजी तेरेयहेग्राचर
णसेवनग्रयत्नग्रनर्थग्रनिपातनकायाहै स्वे
श्रवाचार्योनेसोईवचनकहनेहै ग्रहेनतत्वजा
नकहे... इसकायहेग्राचरणहोवे तोग्रा
नग्ररनत्वहतीयोविषेकोनभेदहो याग्रशुवि
भक्षणविषे ग्रर्थ यहजोजिसनेग्रहैनवस्तुन·
स्वग्रात ग्रनिरूपणकायाहैग्राचरणहोया विधि
निषेधकीमर्यादाकोदकरविचरणलागा ग्रं
तसायहीग्रशुचिभक्षणभीहोया इसलवस्या·

नजोकुकरतुहै अननवेताहै तिसविषेकौन
भेदहै। याकुकरभी अमलभोजनकरनेमे।
कोचनहीकरने नेसेनलवेलाभीहोआ तो।
कौनविशेषताहोइ महशाहीहोइकैसा नतु
मलानीइहहोयातोकौनदोषहोयाकाआनि
हतहोइइसको उत्तर होसीहवेकसिद्धांती
कहताहै देवादी तत्वज्ञानकेपथमरेतेको
मनोमात्रलेश्रेकरइ लिखा अवज्ञानकेउ
नरकालविषेसंपूर्णलोकनिंदाकोतुप्राप्तहो
या अर्थ देवादी तत्वज्ञानकेपूर्वतेतेकोकाम
कोयादिकोकरलेशहोया इनतत्वज्ञान।
केउदयहोयेते गछेश्याचरणकरसभलो।
कोकीनिंदाकोमहहताहै इणलक्षेशतेर।
कोहा इहवडाईपेपर्वलेवेकोज्ञानकाउआ
नतु मलाजी क्याइनकानेखहै [illegible] मत
तेजोआपकोतत्ववेताजानताहै इअविद
वानरआदिकोकेतलतताकीआकोतताक।
ताहै सोइहकार्मेपयोग्यहै सर्वेतेवडि
केदोषहै तिनकोत्यागकरदेवनोवतस्य
होवेगा सर्वतेरक्षाम्योकरणहाराजोज्ञान

श्री॰ पं॰ ८॰ ११॰

है तिसकी जैसा वर्णन कीता है सो इक्या है तो अपने
जो कामादिक तिनके त्याग करने को समर्थ होवेगा अरु
मनेश्वरसत्यपनेको निदूर राहादिवत आवरण
ताकर जैसे तिस्या के वाचन द्वारे सकतारिक
है तिनकी नाई निविड आवरण मलकर जब
तूं कामादिक का सत्ती सेपना का त्याग करेगा
तो है तूं मोक्षराज्य के योग्य होवेगा तब भला
जी सर्व अनर्थ का मूल जो कामादिक हैं ति
नका त्याग कैसे कर होवे सो कहो उत्तर देवा
ही इस प्रकार इनका त्याग होता है सो श्रव
उपाय तन देवा सो इन जो दृष्ट अदृष्ट विष
य है शब्द स्पर्श रूप रस गंध जो विषय है अरु का
लस्याइ जो दृष्ट विषय है अरु अदृष्ट विषय जो है
लोक अरु अतिशय कर जो सुख है इनको जो दुः
ख रूप विचारणा जो इस विषय अनर्थ रूप है ॰
तिन्हों का कारण है इनको दोष दृष्टि है सो वैरा
ग्य का कारण है अरु वैराग्य कामादिक त्याग
का कारण सो इहवार्ता प्रसिद्ध है लोक शास्त्र वि
षे तब भलाजी इसके त्याग करना सिद्ध हो॰
या है उत्तर जब इन कामादिको का त्याग क

ऐसा नकहलीरोवैसा नत्र अलानी कामा॰
दिकअनर्थकाकारणहै तेत्यागीके परमतो
शान्तिःप्रयोजननहै इनकीत्यागकीतोअपे॰
क्षानही सोईसेकाकहतेहै सकलअनर्थोका
कारणजोकामादिकहै सोत्यागीके प्रथमतो
राज्यकेत्यागनेविषेकोनहानहै॰ उत्तर य॰
द्यपि ऐसाही सतोराज्यविषेसाक्षात्अनर्थोका॰
कीकारणतानही तोभीपरंपराकरकेअनर्थ
काकारणहै तोतेत्यागनेयोग्यहै सोईकहते
है संपूर्णदोषोंकाकारणबीजरूपरसीहै परं॰
पराकरके इसहीउपरभगवानकाभीवाक्यहै
श्रीभगवानुवाच इसप्रकारविषयाकोप्रथम
ध्यावताहै तिसतेअनंतरउसकोविषयोविषे
संगहोताहै तिससंगतेइसकोकामहोताहै ।
अरकामतेक्रोधहोताहै क्रोधतेसंमोहहोता
है संमोहतेस्मृतिविभ्रमहोताहै स्मृतिविभ्र॰
मतेबुद्धिनाशहोताहै बुद्धिनाशतेइसकाना॰
शहोताहै अर्थइसका है अरजेन वासदेवियमें
यसभीकीयेहै प्रथमउसमेंप्रमनही तोभीम॰
केचपलताकरकेदोषहोतेहै सोकहतेहै ।

श्री· वाह्यइंद्रियभीसंयमकीयेहै परमनसंयमनही
पं·२· कीयातोउहजो रजोतमोगुणोंकरयुक्तहै मन
१११ सोशब्दादिकविषयोंकोबारंबारचिंतवताहै
तिसचिंतवनकरकेसंगइसकोउपजताहै संग
कहैतोसेमनकोअरपणहोताहै जोइहमेरे
सलकाबं[illegible]णाहै इरसाविचयजानकरका·
मइसकोहो[illegible]हैउपजताहै कामकहैजोइह
मेरेहलिणताथहै इहतृस्नाउपनहोतीहै इस
तृस्नाकाजोकोउहननकातनहाराविषयहो
या तोकोधअग्निजलतास्मकाहृदयअवशरी
रकोतपावनवालाउपजताहै तिसकोधतेस
मोहहोताहै संमोहकहतेहै जोकार्यअकार्य
कार्थकेअविवेकरूपको तिससंमोहतेस्मृति
काअभावहोताहै स्मृतिकाअभावकहैजो
शास्त्रोंकाश्रवणगोपदेसकीयाहै सोभूलजाता
है स्मृतिनाशतेबुद्धिनाशहोतीहै बुद्धिनाश
कहै जोआत्माकारजोमनबुद्धिकीवृत्तिका
होवणाहैतिसका अर्थ इहजोविपर्ययपा
वनातेतिसकीअनर्थउत्पन्नहोतेहै पुरुषार्थेर
पजोअसमत्वकीपकना तिसतेअयोगपहो

ताहै इहध्रुवस्थैर्यहोतेहै मनोराज्यकरतातेह।
नकात्यागाकर नउ भलाजी मनोराज्यकेत्या
गकाकौनउपायहै सोकहो उत्तर मनोराज्य
जीतनेकोसमर्थहोताहै निर्विकल्पसमाधि
कर नउ भलाजी ऐसेनिर्विकल्पसमाधिका·
रहोतेहै किसकरकेसिद्धहोतीहै सोकहो
उत्तर ऐसाही निर्विकल्पसमाधिकरसिद्धहो
तीहै निर्विकल्पसमाधिभी आगेचारप्रकार
कीहै तिनकानामभेदसुव वितर्कविचार·
आनंदअस्मितातिसही प्रकारकेभेदकरकहे
कल्पसंप्रज्ञातकिसकोकहतेहै सोकहु
सम्यककरसमाधिहोतीहै सेप्रज्ञातभलीप्रका
रसेसंशयविपर्ययतेरहितएकार्थकरभावसो
है भावनाकरणेकोयोग्य इष्टदेवतिसको·
जिसकरजानीये सोकहैसंप्रज्ञातसमाधि।
आगेवितर्कजोसमाधिहै सोभीदोप्रकारकी
है एकसवितर्कहै एकनिर्वितर्कहै एकस·
विचारहै एकनिर्विचारहै सोवरहै सासम
नहै भवजोपदार्थहै इष्टदेव जिसविधसमा
धिकीभावनाइप्रकरणीहै सोभवदोप्रका

श्री. रकाहै जडअजडभेदकर जडचेतनविश्रांतिनहींहै
पं.ट. अरअजडचेतनउभयहै तिसकेमध्यविषेतत्व·
११२ महाभूतअरइंद्रियजोस्थूलरूपहै तवइसविषे
अथवावायुजोस्थूलभूतपृथिवीआदिकहैइस
विषे अथवाअपनेस्थूलदेहइंद्रियविषे अथवा
देवताजोहैब्रह्माविष्णुशिवदेवीसूर्यगणेशादि
कजोहै इष्टइश्वरहै इनकोजोस्थूलदेहहै तिन
विषेजोहैदेशअपरकार्यकारणकासाहचर्यहै।
तिसपूर्वकजोउसविषेभावनाध्यानकरणाहै
सोऐसोइहसवितर्कहै इहइसविषेगुणहै इसध्यान
पूर्वकध्यानकरणा सोवितर्कहै अरइसहीआ
लंबनविषेयेजोकार्यकारणगुणकर्मकेसाह
चर्यतेरहितहोकरभावनालगजावे तवनि
र्वितर्कीहोतीहै अरजवतन्मात्रअंतःकरणइ
त्यादिविषेदेशकालधर्मगुणकोलेकरभावना
वरते तवसविचारकहीतेहै अरजवइसही
आलंबनविषेदेशकालधर्मभीमात्रविषेभावना
वरते तवनिर्विचारहोतीहै इहांपर्यंतरहया
ग्रहसमापत्तकहीतीहै अरजवरजतमकेलेश
करअनविधिअंतःकरणज्ञानकीउपजताहै

112

तबसतगुणकेअभ्यासतेचित्तप्रकाशकजोसत्व
प्रकाशमयहै तिसकीछायाकरप्रतिबिंबक
रग्रहजोहोताहै अंतःकरणसतउदयतिस
कीवस्याई सकलताकेसानंदसमाधिहोतीहै
इसहीसमाधिविषेजोबंधयीरयहोवेहै अव
लेशातलजोप्रधानअवगुरुषहै तिनकोजोन·
हीदेखता सोविगतदेह अहंकारतेविदेहश
हकरकहतेहै रहुग्रहणसमापतै अवजव
इसकेपरेरजतमकेलेशतेरहितजोशुद्धसत
है तिसकोजोआलंबनकरकेभावनाप्रवर्त·
तीहै तबउसहीयाहसतकेहइभावतेचितस
ताकेउदेहतेकेवलसत्तामात्रहीपीकेशेषरह
ताहै सोअसमताकहतेहैकारअहंकारअस
मतकीएकतानहींजानती नहांअंतःकरण
अहंइसउल्लेखकरविषयकोग्रहणकरै सोअ
हंकारहै अवजतांअंतरसाउल्लेखपरणामकर
अपनेकारणभावविषेचित्तलीनहोताहै अह
उल्लेखतेरहनकेवलसत्तामात्रहीभासै तबउस
कानामअसमिताहै उहमहतत्वकरकेप्राचा
र्यकहतेहै इसहीसमाधिविषेचितोसंतोष·

श्री. पं. द. ११३ कीयाहै परमपुरुषजोपरमात्माहै तिसकोजो
नहीदेषते तिनकाचित्तअपनेकारणविषेलीन
होयाहै उहप्रकृतिलयकहीतेहै अरजोपुरुष
परमपुरुषकोजाणकरभावनाउसविषेलगा
वतेहै केवलसाक्षीकूटस्थब्रह्मविषेउनकीइ
हविवेकख्यातिग्रहीतसमाप्रकहीहै कहतीहै
इहतोचारप्रकारकीसविकल्पसमाधिकहीहै
अबइनविषेप्रथमरइहूलगताहै तबक्रमकर
उसविषेभीपरस्थितहोणेकोसमर्थहोताहै ।
बिनास्थूलभावनासूक्ष्मविषेलगसकतानही
जैसेस्थूलप्रथमनिसानेकोवेधताहै तबअभ्या
सकरतेसूक्ष्मकोभीवेललवेगा बिनाअभ्यास
स्थूलसूक्ष्मवेधनेकोसमर्थनहीहोता सवि
कल्पकेअभ्यासकरनिर्विकल्पसिद्धहोतीहै
सोनिर्विकल्पभीआगेदोप्रकारकीहै एकभ
वप्रत्ययरूपहै एकउपायप्रत्ययरूपहै सोवि
देहअरप्रकृतिलयोंकोहोतीहै विदेहकौनहै
तिनकोस्थूलमनसाथोअरअंतःकरणविषेजो
निर्विकल्पकोटिकहै समाध्य तिनकरविदेहहो
तेहै सकलब्रह्मांडविषेविचरणकीउनकोस

113

मर्थ्यताहोतीहै सिद्ध भोगोंकोभोगतेहैं दे
हादिकोंकाउनकोनहींस्पर्शकरता
अरजेविदेहतेअसमतादिकविषेसमाधि
कोप्राप्तभयेहैं सोप्रकृतिलयकहतेहैं सो
ईश्वरकोटविषेस्थितहोतीहै तबमायाके
ऐश्वर्यकोप्राप्तहोतेहैं सभक्तुपरउसकोअ
ज्ञावलतीहै अनेककालपर्यंतईश्वरभो
गकोभोगताहै इहदोनोंभवप्रत्ययवाले
हैं भवप्रत्ययकहै भवजोहैसंसारसोइहै
प्रत्ययतियजिनको अर्थ इहजोसंसार स
नप्रत्ययकरफेरउनकोसबभोगकरसं
सारविषेजन्मप्राप्तहोताहै जइहदेवलमूं
र्तोंकेउपासकहैं सोशरीरत्यागकरस्वर्गा
दिकलोककोभोगकरफेरसंसारविषेज
न्मपावतेहैं अरजेइहतत्तन्मात्राअहंकार
रकेउपासकहैं सोभीबडेसबकोभोगक
रजन्मपावतेहैं अरजेइहप्रकृतिलीनहैं
सोभीचिरकाललेसंसारीफेरहोतेहैं जैसे
मेंडकमृत्तकहोया फेरवर्षाकरकेजन्म
पावतेहैं तैसेहीनिर्विकल्पसमाधिवाली

श्री॰ भीजन्मपावतोहै जोतत्वज्ञानविनासंसारकी
पं॰ ट॰ सत्तालेकरनिर्विकल्पहोयाहै अरजोतत्वज्ञा
११४ नपूर्वकनिर्विकल्पसमाधिविषेस्थितहोताहै
श्रद्धाआदिकउपाउपूर्वकसोफेरजन्मनहीले
ता इहनिर्विकल्पसमाधिहै निर्विकल्पसमा॰
धिकिसकोकहतेहै जिसविषेध्याताध्यान॰
ध्येयइहत्रिकटीनारहै केवलाहतितेशून्य॰
चित्तहोजावे ध्येयजोहैएकतत्वसोइपीछेशे
षरूपरहजावे तिसकानामनिर्विकल्पसमा
धिहै इहसविकल्पअरनिर्विकल्पसंक्षेपतेक
हीहै ग्रंथविस्तारकेभयते विस्तारइसकापा
तंजलशास्त्रविषेबहुतकहाहै ननु भलाजी
अष्टांगयोगकरजोयुक्तहोवे तिसकोइहहो
वसिद्ध जोइनतेरहितहै तिनकीकौनगतहै
अर्थ हेरामजोगकेजोअष्टअंगहै यम नेम॰
आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान
ध्येय इहजोअष्टअंगहै तिनकरनिर्विकल्प
समाधिहोतेहै अरनिर्विकल्पसमाधिकर॰
मनोराज्यजीताहै जोइनतेरहितहै तिनको
कौनगतीहोतीहै अर्थ इहजोइनतेरहित॰

काभीमनोराज्यलीनजानाहैकेनही उत्तर
देतादी औरभीउपायहै अष्टांगयोगविना सो
सुतु तत्वजिसजानताहै ऐसाजोपुरुषहै व
द्विदोषोंतेरहित एकांतवासी सोदीर्घप्रण
वकाउच्चारकरै तिसकरमनोराज्यजानार
हताहै अर्थ इहकामादिकोंतेरहितजोपुरु
षहैजानाहैतत्वबोधजिसने तत्वबोधकहै
जोजीवब्रह्मकीएकताजिसजानीहै ऐसाजो
पुरुषहै सोईटीलोकारवकाउच्चारकरै निर
जनस्थानविषेस्थितहोकर सोपुरुषमनो
राज्यकोनेतलेताहै अवइनकामक्रोधादिको
केत्यागकरहीयोगकेअष्टांगभीसंक्षेपकर
आइजातेहै सभसाधनोकाफलदैवीसंपाद
है जिसदैवीसंपदाधारीसोपरमपदकोपाव
नयोगहोताहै नउ भलाजी मनोराज्यजीते
होये काहोवैगा उत्तर सुनु जवमनोराज्य
जीता तवहृत्तितैमनस्वरूपस्थितहोताहै सं
कवत अर्थ जैसेमूकसंपूर्णवाणीकेव्यापा
रतेरहतहोकरस्थितहोताहै जवमनवृत्ति
तेरहितहोताहै तवपरमपुरुषार्थकीसिद्ध

नाशहोतेहै सोईदिखावतेहै श्रीरामजीकोवसिष्ट
जीकहतेहै जबतत्वबोधइसकोहोताहै तबदृ
ष्टकोमिथ्याइहजानताहै जबमनतेसर्ववा
सनानष्टहोई तबपरमनिर्वाणपदकोप्राप्तहो
ताहै जबअद्वैतब्रह्मनेइतरजगतकोमिथ्या
जानाआत्मज्ञानकर तबमनतेदृष्टभावनिर्वा
णकोप्राप्तहोतीहै तबनिरतिशयमोक्षस्व
कोप्राप्तहोताहै हेरामजी वेदांतशास्त्रभली
प्रकारसेविचारेहै अरपरस्परभीविचारेहै ।
परभलीप्रकारवासनाकेत्यागने इसमौनवि
नाउत्तमपदनही उसकाअर्थ हेरामजी अद्वैत
शास्त्रजोब्रह्मविद्याहै तिसकोअत्यंतविचाराहै
परस्परगुरुशिष्यद्वारा चिरपर्यंतविलोकन
कीयाहै जोभलीप्रकारजोवासनकात्यागहै
इहत्यागहीरूपजोमौनहै तिसतेपरेहोरउत्त
मपदकोईनही इहदोश्लोकवसिष्टजीकहते
है तउ भलाजी इसप्रकारनिर्द्वंदकजोचित्त।
है प्रारब्धकर्मोकरकेचित्तकोजोविक्षेपहोया
है तिसकाउपावकहाहै जिसकरविक्षेपदू
रहोवैसोकहो उत्तर कदाचित्तबाहिविक्षेप।

कोप्राप्तहोजावै कर्मोंकरजैसेकर्मजोभोग
केदेवनहारेहैं तिनोकरफेरअभ्यासकेदृढता
तेसमाहितहोजाताहै अर्थ हेशिष्य कदाचि
तजोतुष्टिविक्षेपकोप्राप्तहोजावैकर्मोंकर
कैसेकर्महैं जोसुखदुःखरूपभोगदेवनहा
रेहैं तबदृढअभ्यासकरकेआत्मज्ञानका अर
संसारमिथ्याका अर्थ इहजोअरअभ्यासअ
रवैराग्यकरविक्षेपकाक्षयहोजाताहै विक्षेप
चितकोसंसारकीसत्ताअरविपर्ययज्ञानकर
होताहै तिनकेदूरकरणेकोदोईउपावहैं अ
भ्यासअरवैराग्य अभ्यासकरविपर्ययज्ञान·
दूरहोताहै वैराग्यकरसंसारकीसत्तारम·
णीकताइहदूरहोजातीहै इसकरचितसमा
हितहोजाताहै कदाचितविक्षेपतेरहितजो
एकाग्रहै तिसकोअस्मितताभीऔपचारिक
है मूल जिसकेचितविषैविक्षेपनहीं तिस·
कोजोअस्मितकहतेहैं सोयोगनहीं उहअस
हीरूपहै मुनीश्वरपतंजलीजीयोंइसप्रकारकहा
है अर्थ जिसकोजीवअरब्रह्मकीएकताभा
सेहै साक्षात्कारहोयाहै अरचितकाविक्षे·

श्री॰
पं॰ट॰
११८

118

पजिसकाहरहोयाहै सोब्रह्मवित्नहीजानना
इत्यब्रह्मरूपहीहै वेदांतपारदर्शीयोनेइहनि
र्णयकीयाहै इसउपरभीवसिष्टकावाक्यहै
सोकहतेहै जोकहताहैमैब्रह्मजानताहै तिस॰
कोभीयथायोग्यज्ञाननहीप्राप्तहोइ तिनकेअंत
रभीविक्षेपरहाहै अरजोकहताहै मैब्रह्मन
हीजाना सोभीपावनपदकोप्राप्तनहीहोया
अर्थ इहजोकिसैकहाजोमैब्रह्मजाना तोउस
कोभीद्वैतरूपविक्षेपहोया एकब्रह्मविषे द्वि
तीयजाननवालाकोन द्वितीयजाननवाला
विक्षेपहै अरजिसनेनहीजाना उसकोशांत
कहा उहतोलीनोतापोंकरजलताहै काहे
तेजोपरमानंदतेभिन्नहोया तिसकोसवक
हा तातेइसज्ञानअरअज्ञानइहदोसंकल्पहै
दोप्रकारकाजोमैब्रह्मनहीजाना सोदेहीप्र॰
कारकासंकल्पत्यागकरकेवलब्रह्मचिन्मा
त्रहीरूपहोकरस्थितहोजाताहै सभसंकल्पो
तेरहितसोब्रह्महीरूपहै नउ भलाजी तुम
जोकहतेहो जिसकहामैब्रह्मजाना उहभी
विक्षेपविषेपडाहै सोइहवातकैसेयोगहै ।

सभवेदशास्त्रगणउपनिषदि उनकाउपदे
शरूहीहै जोब्रह्मकोजानताभकहतेहो इहे
विक्षेपहै उत्तर देवाटी प्रथमअवस्थाविषे
इसनेआपकोदेहरूपजानाहै इसकरकेइ
सकोशास्त्रकोंशास्त्रगुरुकहतेहै जोतेदेह
नही तेब्रह्मअखंडहै अखंडरूपहै परवि-
देहनही जवइसदेहतेविलक्षणब्रह्मजाना
तवइहविक्षेपभीइसत्यागनाहै जोब्रह्मको
मैजानाहै ब्रह्मजोहैएकअद्वैतहै सोएकअ
द्वैतब्रह्मआत्मासच्चिदानंदआदिककल्पना
तेरहितहै ब्रह्मआत्माआदिकशब्दविद्याके
है अरुजोजीवआदिकशब्दअविद्याकेहै
इसप्रथमअविद्याशब्दत्यागनेहै अरुविद्या-
केग्रहणकरनेहै जवआपनास्वरूपजाना।
तवदोनोशब्दोंकात्यागकरअफुरस्वरूपहोकं
रस्थितहोवणाहै जोतेकहाहैजोब्रह्मविष
नही उहब्रह्मरूपहीहै अवससफलहैतावि-
चारकोसमाप्तकरतीहै मूल जीवन्मुक्ति-
कीजोपराकाष्टाहै सोजीवद्वैतकेत्यागते
प्राप्तहोतेहै ईश्वरद्वैतनेजोभिन्नकरत्यागीये

श्री.
पं.द.
१९
117

अथ जीवन्मुक्तिकीप्रकाशकौनहै निर्व-
मैजोअवेदसच्चिदानंदहै सर्वविकल्पनेरहि
त तिसकीअभेदतापरतत्त्वनेअनुभवविशेषप्र
काशे सोकहैजीवन्मुक्तता एकअर्थतोइह-
है अरदूजीअर्थइहहै जोतत्वज्ञानमनोनाश
अरवासनानाश इहतीनकाएककालएकठाहो
वणा इसकानामजीवन्मुक्तहै सोइहजीव
न्मुक्तपदजीवदृष्टिकोईश्वरदृष्टितेभिन्नकर
णेगि एतेसिद्धहोतीहै तब भलाजी ईश्वरदृ
ष्टितेभिन्नजीवदृष्टिकरकेइसकात्यागकीये
जीवन्मुक्तकोंकवरणमहोतेहै सोकहो उत्त
र देवादी तबजानाएकईश्वरहै अरएकईश्व
रकीदृष्टिहै एकजीवहै एकजीवकीदृष्टि
है तबइहइसतरां तत्वशास्त्रद्वाराविचार
णेलागा जोईश्वरकौनहै अरजीवकौनहै
अवेदजोसच्चिदानंदब्रह्महै तिसकेआश्रय
त्रिगुणात्मकाअविद्याकल्पितहै सोअवि-
द्यादोप्रकारकीहै एकमायारूपहै अरए-
कअविद्यारूपहै जोसत्वोगुणप्रधानहै सो-
मायासत्वहै जोरजतमोगुणप्रधानहै सो-

अविद्या है तिस माया विषे जो प्रतिबिंब पड़ा है
अखंड ब्रह्म का तिसका नाम ईश्वर है सो सर्वज्ञ
आदिक शक्ति कर युक्त है अरु जो अविद्या विषे प्र-
तिबिंब पड़ा है सो जीव कहता है सो अल्पज्ञ आ
दिक शक्ति कर युक्त है जब इस विचारा जो जीव
ईश्वर विषे भेद औपाधिक है माया अरु अविद्या
द्वारा जब इह दोउ पाधीयां त्यागीया तब अखंड स
च्चिदानंद ब्रह्म का बोध होता है जैसे छोले घट-
का अरु मठ रूप दूर कीया तब महाआकाश ए-
क रूप हो भासता है तैसे ही अविद्या माया उपा
धि के त्यागे ते अखंड ब्रह्म का बोध होता है इस
प्रकार जीव अरु ईश्वर की एकता जानणी इस
का नाम सत्य ज्ञान है अरु ईश्वर रचत जो है त जगत
है तिसका नाम इस कर होना नहीं इसने ईश्व
र स्रिष्टि को मिथ्या जानना है जब इस मिथ्या जा
ने तब इसको वैराग्य होता है जब दृष्टि विषे
वैराग्य होया तब इसकी या वासना नष्ट हो
जाती है अरु जब जीव इस अपनी जीव स्रिष्टि-
मनोराज्य सभी त्यागी तब सर्व संकल्पों ते र-
हित जब मन होया तब मनोराज्य नष्ट होया

श्री· तबइहजीवन्मुक्तहोताहै इसप्रकारतत्त्वज्ञान ।
पं·द· अरुमनोनाश अरुवासनाक्षयकरकेंज्ञानेसर्व·
११८ उपायकरकेंअपनेमनोमयसृष्टिकात्यागक
रै अरुसृष्टिकोमिथ्याजाने अरुजीवउपाधि अ
रईश्वरउपाधि दोनोउपाधीतेरहितअखंडब्र
ह्मअपनाआपरूपजानेना इहोउक्तार्थकर
ण इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभा
रतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिंकरेणश्रीराम
कृष्णाख्यविदुषाविरचितेद्वैतविवेकसप्रयोज
नामेस्पर्णेमत् दोहरा ॥
द्वैतविवेकइहग्रंथकीवाणीकठिनअतिसार
दीनदिवानहरिकृपातेभाषाकरीविचार ।

दोहरा

परब्रह्मरमात्माकहीजोसनविशेष सोईसमस्त
पालनमरूमाकरेअनशेष ॥

ॐश्रीरामकृष्णजोआचार्यटीकाकार सोभारती
तीर्थअरुविद्यारण्यमुनीश्वरहै सोअपनेगुरोंका
नमस्कारकरतेहै नमस्कारकरकेमहावाक्य
विवेककीव्याख्याकरतेहैसमासमतेउपदेजो·

118

जिज्ञासी है साधनचतुष्टयसंपन्न सो जीवात्मा
अरु ब्रह्म की एकता है तिस ब्रह्म की एकता सिद्ध
के निमित्त चार जो महावाक्य हैं तिनका अर्थ क्र
म करके कहते हैं परम कृपाल जो आचार्य हैं
सो आदि विषे जो उपनिषद है तिस विषे कहा
जो है प्रज्ञानब्रह्म तिस महावाक्य का जो अर्थ है
सो कहते हैं मूल जिसकर रूप देखता है जिसक
र सुनता है जिसकर सूंघता है जिसकर शब्द
करता है जिसकर स्वाद अस्वाद जानता है सो प्र
ज्ञान शब्द कर कहते हैं अर्थ तीन प्रकार का चै
तन्य है एक प्रमाता है अरु एक प्रमाण है एक
प्रमेय है अंतःकरण अवच्छिन्न जो चैतन्य है
तिसका नाम प्रमाता चैतन्य है अरु वृत्ति जो है
अंतःकरण की तिसकर जो अवच्छिन्न चैतन्य है
तिसका नाम प्रमाण चैतन्य है अरु विषय अव
च्छिन्न जो चैतन्य है तिसका नाम प्रमेय चैत
न्य है चैतन्य तीनों स्थानों विषे अरु तीनों अव
स्था विषे चैतन्य एक ही है जैसे एक सरोवर हो
ता है तिसते जल एक किदारे विषे आसकर
णा है जो उह जो जल है एक तो ताल विषे होता

श्री॰ है एकनसरविषैहोताहै एककआरेसाध्यनट
पं॰द॰ ऋपजाइहोताहै तैसेहीप्रमाताप्रमाणप्रमेय
११९ इहतीनप्रकारकाहै एकचैतन्यहै जिसचक्ष
इंद्रियद्वारानिकसीजोहै अंतःकरणवृत्तितिस
वृत्तिकरउपहतजोहैचैतन्य जिसचेतन्यकररू
पकोदेषताहै तिसेहीश्रोत्रद्वारानिकसीजोहै
अंतःकरणकीवृत्ति तिसवृत्तिकरउपहतजो॰
हैचेतन्य जिसकरणचैतन्यवरणआत्मक अ
वध्यात्मकशद्बज्ञानकोजानताहै अरतैसे
हीघ्राणद्वारानिकसीहै जोअंतःकरणकीवृ
त्तिहै तिसवृत्तिकरउपहतजोचैतन्यहै जिस॰
करसुगंधिकोग्रहणकरताहै इसहीप्रकार
जिसकरशद्बकरताहै जिसकरस्वादअस्वाद
कोजानताहै इसहीप्रकारहोरभीजोज्ञानइंद्रि
य अरकर्मइंद्रियकोविषयहै जिसकरइहजा
नताहै तिसचैतन्यकानामप्रज्ञानशद्बकर
कहतेहै प्रज्ञानशद्बकाअर्थकहाहै अबब्र॰
ह्मशद्बकाअर्थकहतेहै १ चतुरसलजोब्र॰
ह्माहै अरइंद्रियहै तिनविषे अरदेवतियविषे
अरमनुष्योविषे अरअश्वोविषे गवोविषे

सबनोंविषैचैतन्यएकही सोअसहै सोप्रश्ना
नअसमेरेविषैभीहै अथ उत्तमजोदेवताहै
तिनविषैभी अउत्तमजोमनुष्यहै तिनविषै
अउअथमजोहै अश्वगवादिकतिनोविषैइन
तेलेकरजोदेहधारीप्राणीहै तिनविषैअब्रा
काशादिकभूतोंविषै इनसभनोंविषैजोव्या
पकहै अरइनकाजोनिमित्तकारणहै तिस
कोअसकहतेहै इहजोमहावाक्यकहाहै ।
सोरिगवेदकीसाखाविषैकहाजोयामहावा
क्यसोइहानिरूपणकीयाहै नतु भलाजी ।
तमेकहाजोमहावाक्यसामवेदकातत्वमक
हाहै सोइहनहीबनता अथमतोइहहैजो ।
वाक्यइसकानामहै जोपदोंकासमूहहसोवे
बहुतनपदोंकानामवाक्यहै सोइसविषैपद
तमककहै प्रज्ञानअरब्रह्मइनदोपदोंकानाम
वाक्यकोकरहोया अबद्वितीयवाक्यकाअ
रमहावाक्यकाइहउत्तरकहो उत्तर देवाटी
इसवाक्यविषैभीपदतीनहै एकप्रज्ञानअस
अर्थतोतमदोपदोंका ।
इहतीनपदहै नतु अर्थतोतमदोपदोंका ।
इहवैतोंकरप
[illegible]है अउपदतमतीनकहै

श्री. कन्तारोवेसी उत्तर अर्थनेकीयाहै सोदोनोप॰
पं.र. दोहीविषे तीनपदोकाअर्थकीयाहै प्रज्ञान॰
१र. कानोअर्थज्ञाननवालाकीयाहै सोसब इंद्र
योंकरहाजिसकरशब्दस्पर्शरूपरसगंधज्ञान॰
ताहै तिसकोप्रज्ञानरूपज्ञानइसकानाम्पयंद्र
रहै एकज्ञाननाविशेषहै चक्षुआदिकजोइं
द्रियहै तिनकरजोज्ञाननाहोताहै सोसमान
है नेत्ररूपकोदेखतेहै श्रवणसुनतेहै नेत्ररू
पमात्रहीदेखतेहै श्रवणशब्दमात्रसुनतेहै
अरमनविचारकरताहै इहशुभहै अरइहअ
शुभहै इहज्ञानइंद्रियअरमनकोहोताहै ।
तत्र भलाजी इनतेभिन्नज्ञानहोरकोणहैचेत
न्यका उत्तर इंद्रियकोरूपमात्रज्ञानहोताहै
अरमनशुभअशुभविचारताहै परइनकोअ॰
पणाज्ञाननहीविषेज्ञानहै अरचेतन्यआपको
भीजानताहै अरसाक्षीमनादिकोकोभी॰
जानताहै अरसाक्षीसभकाप्रकाशकहै ।
अरइंद्रियअरमन इहजाग्रतस्वप्नादिकोवि
षेविषयग्रहणकरतेहै अरसुषुप्तिमइको॰
विषेइहलीनहोजातेहै अरचेतन्यसुषुप्ति

सुखोंविषेभीजानजहोताहै अरइंद्रियआदिक
जोहैसोअपनेविषयकोहोनेकोजानतेहै जो
ग्राहहोताहै सोश्रवणइंद्रियजानतेहै अरइं·
द्रियग्राहकोअभावकोनहींजानतेहै ताअप
नेकोजानतेहै तोतेइनकाज्ञानजाननासमा·
नहै विशेषनही अरइहसमानज्ञानभीउ·
नकोहोनानही इहभीआत्माचैतन्यकीचेत
नसत्तापाइकरइनकाआपापहोताहै अपने
विषयकाग्रहणकरना जैसेसूर्यकेप्रकाश
करमनुष्यादिकजीवाकाअपनेआपनाविषे
विचारणाहोताहै तैसेहीप्रज्ञानरूपजोचैतं·
न्यहै तिसकीसत्ताकरसभकाज्ञानहोताहै जा
गतस्वप्नसुषुप्तिकामनोराज्यसर्वोसमाधिका
भावअभावकाप्रमाण अप्रमाणअरसंशय·
ज्ञानकाज्ञानजिसकरहोताहै सोप्रज्ञानरू·
पहै जिसकरअनुभवकीग्राहताजोहैकामा
दिकइहजानीतीहै अरमनजिसविषयसाथ
लगताहै तिसकारूपहोजाताहै घटपटशब्द
रूपादिकोंका अरचैतन्यइहहै उसकोजानता
है जिसकरउसकीउपलब्धहोतीहै सोप्रज्ञा·

श्री॰ नैहै अरुमनजोहै सोगालेहोयेनोवेवतैहै जिस
पं॰ ८॰ सेवेमाथमिला तिसहीकारूपवनजाताहै अरु
१२१ उसकेजाननेवालाचैतन्यहै वाहभीअरुअंतरः
भी वाहतेरेकोस्पष्टनहीभासता तवतेअंतरय
(121 मनदेष जवमनोराज्यकरकेकिसेनगरको॰
तीर्थकोराज्यधानीकोजिसकोदेखताहै उसम
नोराज्यविषेजोपदार्थहै सोतोमनवनाहै अरु॰
उनकेजोजाननहाराहै सोअज्ञानरूपहै अरु॰
कथावेठासुननताहै अरुसुननतेहोयेमनहोरव
लगयातोकहताहैमेरहनहीसुना मेरामनहो
रठौरगयाथातोमनतोइहहै जोसुननताहोआ
होरवलजाइलगा अरुअज्ञानरूपजोचेतनवस
है सोउहहै जिसनेमनकेअभावकोभीजाना॰
अरुशाहकेनसुननकोभीजाना अरुसाथही
जिसवलबलमनजायलगा तिसकेलगनेको
साथहीतिनपदार्थोकाजिसजाना सोअज्ञान
है मनइंद्रियनेविशेषज्ञानरूपप्रकारअर्थवि
शेषहै अरुज्ञानकाअर्थजाननहाराहै अरुअ
सउसकोकहतेहै जोब्रह्मानेलकवीडीविषे॰
जोचैतन्यहै सोइकहीहै सोईमेरेविषेभीहै॰

सोईजगतकानिमित्तकारणहै सोईअसत अ
भ्रांति अअथ्यकरउपादानकारणहै सभकाअ
धिष्ठानरूपहै देशकालवस्तुकेपरिछेदतेरहि
तहै सोईब्रह्मकरकहताहै इहप्रज्ञानब्रह्मका
अर्थहै इहऋगवेदकासाननकामहावाक्यहै
महावाक्यइसवास्तेकहाहै जोहोरजोवाक्यहै
उनकरसेसारसमताहढहोतीहै अरइसकेजाने
ब्रह्मसमताहढहोतीहै अरइहज्ञाननहोगाअक
होताहै अरयजुर्वेदशाखाकाजोवृहदारणउप
निषदहै तिसविषेअहंब्रह्मास्मिइहवाक्यकहाहै
अरइसकाअर्थकहतेहै सोसुत अहंब्रह्मास्मि
इहजोमहावाक्यअर्थहै तिसकेप्रगटकरणे
वास्तेप्रथमअहंशब्दकाअर्थकहतेहै मूल ।
परिपूर्णजोपरमात्माहैइसदेहविषे कैसीदेह
जोविद्याअधिकारी तिसविषेबुद्धिकासाक्षीहो
करजोसफुरताहै अहंरूपहोकरतिसकोअहं
कहतेहै अर्थ परिपूर्णकहे जोसभावकही
जोदेशकालवस्तुकेपरिछेदतेरहितहै असा
तोपरमात्माहै जिसविषेविद्याअधिकारीजो
देहहै विद्याअधिकारीसोमनुष्यहीशरीरहै

श्री॰ पं॰ द॰ १२२

122

अर्थ इहजोशमदमादिकसाधनसंपन्नहै सोविद्या
जोहैब्रह्माकारवृत्ति तिसकेसंपादनकरणेको॰
योग्यहोताहै ऐसाजोश्रवणमनननिदिध्यासन
साधनवानमनुष्यशरीरहै तिसविषेजोलिं
गशरीरहै तिसकाजोसाक्षीहोकरप्रकाशता
है सोनिर्विकारतीनशरीरोंका अरतीनअव॰
स्थाकासाक्षीप्रकाशक सोअहंशब्दकरकही॰
ताहै लक्षणद्वारा नतु मलाजीवत्वमोजोकहा
जोमनुष्यशरीरफेरकहा जोशमदमादिकसं॰
पन्नतिसविषेजोसाक्षीहोकरप्रकाशताहै अ
रअहंशब्दकरकहीताहै सोइहअयोग्यहै जेम
नुष्यविषेसाक्षीहोया अरविद्याअधिकारीविषे
साक्षीहोआ जोअहंशब्दकरकहीताहै सोपरि
च्छिन्नहोआ परिपूर्णअखंडतानाहोआ उत्तर॰
देवारी अहंजोहैसोदोप्रकारकीहै एकआत्मा
रूप अहंहैस्वतारूपहै सभकाअपनाआपहै॰
ब्रह्मातेलेकरतृणपर्यंत तिसअहंकजोसाक्षा
त्कारहोताहै अरउसविषेजोअहंहैप्रत्ययहोता
है हैरकोनहीहोताविनाज्ञान उसअहंकोआ
पनहीजानता उहज्ञानवानहीकोहै अरज्ञान

वानहीउसअहंकोजानताहै अरज्ञानीअहंका
रकोअहंजानताहै तातेउहज्ञानवानकीअहं-
कहीतीहै अरमनुष्यशरीरतेइतरहोरशरीर-
वानकोउअधिकारीहै अरब्रह्मशब्दकाअर्थक
हतेहै स्वतस्वभावकहीजोपरिपूर्णहै देशका
लवस्तुकेपरिछेदतेरहितजोहै सभमायाप्र-
पंचकाअधिष्ठानरूप अरहेतत्तसोब्रह्मशब्द
करकहीताहै अर्थ इहजोअहंशब्दकरजीव।
काबाच्यअर्थलक्षकहै जोविशेषअहंहै सोजी
वकावाच्यहै अरजोज्ञानवानोकाअहंहै सोजी
वकालक्षरूपहै अरजोब्रह्मसभकाअधिष्ठानरू
पकरकहाहै सोईश्वरकावाच्यरूपहै अरअस
मरूपहैजोहै सोजीवईश्वरकीएकतारूपदोनो
काअधिकरणरूपहै जिसकोप्रत्यकचेतन्यअ-
रअद्वैतआनंदकहतेहै जिसकोअखंडसच्चिदा
नंदभेदकल्पनातेरहितकहतेहै जिसकोअवि
द्याअरविद्याउपाधितेरहितकहतेहै सोमैहीं
इहशमदमादिकसाधनसंपन्नकोबोधहोता
है इहअहंब्रह्मास्मिमहावाक्यकाअर्थकहा
है अरछांदोग्यउपनिषदजोसामवेदकीहै ।

श्री. तिसविषेजोतत्वमसिइहजोमहावाक्यहै तिसके
पं.द. अर्थप्रकाशनकेनिमित्ततत्वपदोकाजोलक्ष
१२३ र्थहै सोअबप्रथमकहतेहै मूल एकजोअद्विती
यतत्वहै नामरूपतेरहित सोसृष्टिकेपूर्वभीउही
था अरडुणभीरहीहै अरआगेभीउहेहोवेगा ।
तिसकोतत्वकहतीहै अवरभीश्रुतिविषेकहा
है जोहैसोसइसृष्टिकेपूर्वसत्यहीहोताभया
सोएकअद्वैतब्रह्महै स्वगतादिभेदतेरहितनाम
अरूपतेरहितजोसतवस्तुहै सोब्रह्मसोपूर्वभी
था अरइनभीहै अरसृष्टिकेउत्तरकालविषे
भीउहीरूपहोताहै तिसकोअद्वैतआनंदरूपकह
तेहै इसकरकयाकहाईश्वरकाजोलक्षरूपहै ।
सोकहाहै अबत्वंपदकाजोलक्षअर्थहै तिस
कोनिरूपणकरतेहै मूल श्रोताकीदेहइंद्रिया
दिकतेजोप्रतीतवस्तुहै सोत्वंपदकालक्षहै श्रो
ताकहनेकरइहजानना जोश्रोताहीकोश्रव
णादिद्वाराकरकेवाक्यअर्थकीसिद्धताहोतेहै
नहीतोहैतोसभकालनदेहादिकोतेप्रतीत
श्रोताकीदेहइंद्रियतेजोप्रतीतवस्तुहै सोत्वं
पदकरकेकहतेहै अरअसिपदविषेइसकीए

कताग्रहणकरतीहै तिसपदकताकोअनुभव
करो अर्थ एकजोईश्वरकावाच्यहै अरएक
ईश्वरकालक्षहै एकत्वपदकावाच्यहै ए
कत्वपदकालक्षहै ईश्वरकावाच्यजोहै सो
इहहै जोसर्वज्ञहोवै सर्वेशहोवै सर्वशक्त
होवै जगतकीउत्पत्तिस्थितिसंहारकाकार
णहै सोईश्वरकावाच्यहै अरजोईश्वरकाल
क्षहै सोअद्वैतपरमानंदनामरूपतेरहित
सोईश्वरकालक्षहै अरजीवकावाच्यअंतः
करणसाथमिलाहोया षट्ऊर्मियोंकरयु
क्तहै अल्पज्ञ अल्पशक्ति अल्पदर्शी आपको
देहादिकोसाथमिलाहोयाजानता इहजी
वकावाच्यहै अरस्थूलसूक्ष्मकारणशरीरते
विलक्षण अवस्थातीनकासाक्षीनित्यशुद्ध
बोधपरमानंदप्रत्यकचैतन्यरूपजिसकोक
हतेहै सोजीवकालक्षरूपहै सोप्रत्यकचैत
न्यजिसकोकहतेहै सोइन शमदमादि
साधनसंपन्नजोपुरुषहै जगततेउदविग्न
होयाहै सोसतगुरांपासजायकरवेदांत
शास्त्रकोश्रवणकरताहै जोआत्मास्थूलसू

श्री·
पं·द·
१२४

124

स्मकारणशरीरतेविलक्षणहै अवस्थातीनका
साक्षीहै नित्यहै शुद्धहै परमानंदरूपहै जब
इहस्वना श्रवमननअरनिदिध्यासनकरसा
क्षातकारशुद्धकरतेहै जिसपदकाज्ञान·
कारकरतेहै सोतत्त्व उहअसिपदहै असिप
दकिसकोकहतेहै जोजीवअरईश्वरकाअधि
ष्ठानहै जैसेघटाकाशअरमठाकाशकाअधि
ष्ठानमहाकाशहै जैसेपाषाणकाअरपर्वतका·
अधिष्ठानपृथिवीहै अरकूपकाजलअरनदी
काअधिष्ठानसमुद्रकाजलहै जैसेदीपकीअ·
ग्नि अररसोईअग्नि अर्थ यहजोचकमककी·
अग्निदीपककीरसोईकीअग्निवनकीअग्नि ·
वडवाग्नि तिसकाअधिष्ठानमहाअग्निहै तिस
हीप्रकारजीवकाअरईश्वरकाअधिष्ठानअधि
करणरूपएकअसिपदहै तिसअसिपदकारू
पजोहै सोतत्त्व जीवकालक्षणसत्यचैतन्य अ
रईश्वरकालक्षणअद्वयानंदहै सोईसत्यचैतन
न्यहै जोईसत्यचैतन्यहै सोईअद्वयानंदहै
तिसहीकानामअद्वयानंदहै अविद्याअरवि·
द्याउपाधितेरहितहै अविद्याउपाधिकरजी·

वर्त्तहै इसको अविद्याउपाधिकईश्वरक
हैं चेतन्यको जबविद्याअरअविद्यादोनोंको
त्यागकीया तबशुद्धब्रह्मबोधअखंडसच्चिदानं
दपीछेशेषरहताहै ऐसेएकअद्वैतकाअनु
भवकरतेहै अनुभवज्ञानीनेकरजन्मामीयोऐसेअ
खंडकाअनुभवकरो इहसामवेदकावाक्य
कहाहै अरक्रमकरप्राप्तहोआजोमहावाक्य
है अथर्वणवेदकासोकहतेहै अयमात्माब्र
ह्मइहवाक्यहै प्रथमअयंपदकाअर्थकहते
है अयंइसकोकहतेहैजोप्रत्यक्षहोवे सोआ
त्माप्रत्यक्षहै नतु जोप्रत्यक्षहोयातोदृश्यहो
याद्रूप उतरवेवादीदृश्यरूपनही उहस्वप्र
काशअपरोक्षरूपहै होवजेतेपदार्थहै सोप्र
त्यक्षहै परमात्माप्रत्यक्षनही अपरोक्षरूप
है अर्थ इहजोसाक्षातकाहेतेजोरूपतबदृष्ट
आवताहै जबनेत्रहोतीहै जबइंद्रियहोती
है तबशब्दसुनताहै इसहीप्रकारजेतेपदा
र्थहै शब्दस्पर्शरूपरसगंधादिकहै सोसभइं
द्रियकरप्रत्यक्षहोतीहै अरबिनाइंद्रियशब्दा
दिकग्रहणनहीहोते अर्थ इहजोपदार्थहै

श्री· होर सोसभपरोक्षहै जेइंद्रियआदिकहोवै तो
पं·द· बाह्यपदार्थप्रत्यक्षहोवै मनादिकहोवैतोस्व·
१२५ प्नमनोराज्यहोवै प्रत्यक्षनहींतोनाहोवै अर
125 आत्मासदाप्रत्यक्षहै इनकीअपेक्षानहींकर·
ता तातेअपरोक्षकरकहाहै अरअहंकारतेले
करदेहपर्यंतजोहै तिनकाजोप्रकाशकहै सो
आत्मशब्दकरकहीताहै अर्थ इहजोअहंकार
तेलेकरदेहइंद्रियप्राणमनबुद्धिअर्थ इहजो
स्थूलसूक्ष्मकारणशरीर इनतीनोकाप्रकाश
कजोजाननवालाप्रकाशकअंतर्यामीहै सो
प्रत्यकचैतन्यआत्माकरकहीताहै अहंतेले·
करजोमनप्राणइंद्रियजोसंघातहैस्थूलदेहप
र्यंत अर्थ यहजोअहंकारतेलेकरजोतीनदे
हहै पंचकोशरूपतिनकाजोसाक्षीअधिष्ठान
रूपकरप्रकाशताहै सोप्रत्यक्चैतन्यआत्मा·
शब्दकरकहीताहै अरइहजोदृश्यमानजग·
तहै संपूर्णइसकाजोतत्वहै सोप्रकाशरूप·
आत्मब्रह्मशब्दकरकहीताहै अर्थ इहजोदृ·
श्यमानसभजगतहै आकाशतेलेकरस्थाव
रजंगमरूपभीमिथ्याहै इंद्रजालकीरचनाव

नहै अरु इसकाजोतनुहै अर्थ इहजोइसका
अधिष्ठानाआपहै तिसविषे इहकल्पितहै इ
सजगतकेबाधाहोयेपीछे शेषरूपपरमार्थ
सच्चिदानंदस्वप्रकाशआत्मारहताहै तिसको
ब्रह्मशब्दकरकहीताहै अरुइनचारोमहावा
क्योंकीएकताकरकेकहतेहै सोइनकाता
त्पर्यकाहै सोकहतेहै सिंहावलोकनन्याय
करके सोसुन प्रथमजोऋगवेदविषेकहा
है जोप्रज्ञानरूपब्रह्म तिसकाअर्थइहहै जो
ब्रह्मजीवकीएकताकरीहै ज्ञानजीवजानना
अरुप्रज्ञानशब्दकरविशेषज्ञानवानईश्वरजा
नना अरुइनदोनोकाअधिष्ठानरूपब्रह्मजान
ना सर्वउपाधितेरहित अरुकिसीकिसीस्थान
विषेवाक्यइसप्रकारभीहै जोप्रज्ञानआनंद
ब्रह्म तहांइसप्रकारजानना जोप्रज्ञानशब्द
करजीवकालक्षसभकासाक्षीहै प्रत्यक्चेत
न्यकरकेकहाहै अरुब्रह्मशब्दकरजगतकाई
तभूतईश्वरहै अरुदोनोकेमध्यविषेजोअनु
स्यूतपरमप्रेमास्पदहै सोपरमानंदआस्पदहै
इहऋगवेदकामहावाक्यपूर्णहोया १ ॥

श्री·
पं·द·
१२६

126

अद्वितीययजुर्वेदकीसाखीवृहदारण्यउपनिष
दविषेजोअहंब्रह्मास्मिएककह्याहै अद्वितीय
यजुर्वेदकीसाखीवृहदारण्यतिसविषेभीजीव
ईश्वरकीएकताकरीहै अहंपदकरजीव अ·
ब्रह्मपदकरईश्वर अरु अस्मिपदकरदोनोंउपा
धीतेरहितअखंडसच्चिदानंदअपणाआपजान
ना २ सामवेदकीजोछांदोग्यउपनिषदहै तिसवि
षेजोतत्वमसिइहमहावाक्यहै तिसकीजोएक
ताकरीहै ततपदईश्वर त्वंपदजीव असिपदब्र
ह्मअधिष्ठानरूपहै सोईहाइसप्रकारजाननाक
ह्याहै एकहीअद्वितीयतत्वहै नामरूपादिकोंते
रहित सोईसृष्टिकेप्रथमअरमध्यअरअंतविषे
भीउहीरहिताहै इसकरतत्वपदईश्वरजाणया
अरश्रोत्राकीजोदेहइंद्रियउनेअतीतस्थूलसूक्ष्म
कारणशरीरकासाखीहोकरजोप्रकाशताहै
सोसदरूप सोत्वंपदकावाच्यजाणया अरइन
कीएकताग्रहणहोतीहै जिसप्रकारसोकह
तेहै ऐसाजोअद्वितीयरूपहै सर्वउपाधिते
रहित ऐसाजोब्रह्महै तिसविषेजोअयंआत्मा
ब्रह्माकह्याहै तिसकोइसप्रकारकह्याहै अयं

ग्राहकरप्रत्यकचैतन्यजीव अरुसवेग ता·
ग्राहकरईश्वरकहा अरुसभप्रपंचकाअधि
ष्ठानरूपब्रह्मकहा इसकहनेकरइहज्ञान
ना जोसभवेदोंकातात्पर्यजीवईश्वरकीअ
ह्मकीएकताहीकेप्रतिपादनकाप्रयोजन·
है अरुसभविषयइहहीकहाहै मायाउपा
धिद्वाराउसचैतन्यकानामईश्वरकहाहै ·
सर्वज्ञआदिकसकलोकरयुक्तहोताहै स्थि
तक्रमणपालनसंहारकेकरणभावकोप्रा
प्तहोताहै अरुअविद्याउपाधिद्वाराउहीचैत
न्यअल्पज्ञजीवहोकरस्थितहोताहै जबइ
हजीवशमदमादिकसाधनसंपन्नहोकर
गुरोंतेब्रह्मविद्याकोश्रवणकरताहै तब·
श्रवणमननिदिध्यासनद्वाराअविद्याअ
रमायादोनोउपाधोंकोत्यागताहै तबअ·
खंडसच्चिदानंदजिसकोकहतेहै तिसको
प्राप्तहोताहै कैसाअखंडसच्चिदानंदहै जो
प्रत्यकबोधरूपहै जोअद्वयानंदरूपहै
तातेजिसजिज्ञासीकोइसपदकीइच्छाहो
वै सोदैवीसंपादद्वारामनननिदिध्यासन

श्री॰ पं॰द॰ १२

127 172

कौरे संताकीसंगतअरुसतशास्त्रद्वारा महा
वाक्यरूपग्रंथकीपोथीकहीसुधार गुरदी॰
वानभाषावरननकरीगुरुआज्ञाशिरधार
इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभार॰
तीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्यकिंकरेणश्रीराम
कृष्णाख्यअग्निहोत्रीविरचितायांमहावाक्य॰
विवेकसमाप्तम् ॥

दोहरा

जैरामदासकीविनतीसुनिउकृपाधार ।
अक्षरऊनवेशोधजोपढीउसारविचार ।

अथचित्रदीपकभाषावर्णते ॥ रामकृष्णजो
हैटीकाकारसोअपनेगुरुकोनमस्कारक
रताहै श्रीभारतीतीर्थअरुविद्यारण्यजोहै
मुनीश्वर सोतिनदोनोकोनमस्कारकरकै
रचित्रदीपकजोहैग्रंथतिसकीटीकाजोहै
तात्पर्यज्ञानकरनहारी सोव्याख्यानकर
तेहै अथउत्थानका चतुष्टयसाधनसंप॰
न्नजोहैजिज्ञासी तिसकोउद्धारकरणेकी॰
इच्छाकरकरपरमदयालजोहै आचार्यसो

ग्रंथविघ्नतेरहितसमाप्तिकरणेकेहेतुआदिमेंमंग
लाचारपरमात्मविचारहै परयहजोहैग्रंथ सो
वेदांतप्रकरणहै इसकारणतेआदविषेअनुबं
धचतुष्टयनिरूपणकरतेहै सोचारअनुबंधको
नहै सोभिन्नभिन्नकरकहतेहै एकअधिकारी
दूसरासंबंध तीसराविषय चौथाप्रयोजन अब
अर्थतिनकेभिन्नभिन्नकरकहतेहै चतुष्टयसा
धनसंपन्नजोहैजिज्ञासी सोअधिकारीकहिये ।
सोचतुष्टयसाधनकौनहै सोकहतेहै नित्यअ
नित्यकाविचारसोविवेककहिये अरवैराग्य ।
अरशमदमादिकतीसरी अरमुमुक्षताचौथी
अरइनकेअर्थकहतेहै परमात्माजोहैआधार
भूतवस्तु सोनित्यहै अरदृश्यमानजगतअनि
त्यहै सोविवेककहिये अरब्रह्मातेआदिलेकर
मनुष्यपर्यंतजोहैविषयभोग तिनकोतुच्छजा
नकर तिनकीवासनात्यागकरणी सोवैराग्य
कहिये अरशमदमादिजोहैतीसरीसाधनासो ।
षट्प्रकारककहिये सोषट्प्रकारकौनहै एकश
म दूसरादम तीसरीउपरत चौथीतितिक्षा ।
पंचमीश्रद्धा छठीसमाधान शमकहियेमन

श्री. कोवामनानेरोकणा दमकहिये बाह्यइंद्रियों.
पं.द. कोविषयभोगानेरोकणा उपरतिकहीये अव.
१२८ णादिकोकेविरोधजोहैविषयसोइछाविनाही.
जोआनप्राप्तहोवेतिनकात्यागकरणा तितिक्षा
कहिये शीतउस्णसुखदुखादिकोकासहना श्र
द्धाकहिये गुरअरवेदांतशास्त्रविषयप्रतीतिक
रणी समाधानकहियेमनकीएकाग्रता अरमु
मुक्षताकहिये मोक्षकीइछा इनचतुष्टयसाध
नसंपन्नजोहैपुरुष सोअधिकारीकहीये अरु
संबंधकिआकहिये वेदांतशास्त्रअरब्रह्मकोप्र
तिपादक अरप्रतिपाद्यभाव सोक्याकहीये जो
वेदांतशास्त्रकरब्रह्मनिरूपणकरीताहै अरवि
षयकहिये जीवअरब्रह्मकीएकता अरप्रयोज
नकहिये जोसर्वदुखोकाअभाव अरपरमानंद
कीप्राप्त इहअनुबंधचतुष्टयकहिये इहजोहै
चतुष्टयअनुबंध सोमनविषेराखकरिअध्यारो
प अरअपवादकरकरनिःप्रपंचजोहैब्रह्म सो
निरूपणकरतेहै अध्यारोपकहिये वस्तुविष
य वस्तुकाआरोपण जैसेसेजीवडीविषेसर्प.
आरोपणकरीताहै अरअपवादीकहिये अव.

सतकात्यागकरकरवस्तुकाग्रहणकरना
जैसेसर्पकेत्यागकरजेवडीग्रहणकरीतीहै
इसहीनिधिकोआश्रयकरकरपरमात्मावि·
षेआरोपितजोहैजगत तिसकीस्थितिकाप्र·
कारदृष्टांतसहितनिरूपणकरतेहै अबश्ल
ोकभाषावर्णते जैसेनानाप्रकारकेचित्रहु
करकरसंयुक्तजोहैवस्त्र तिसविषेचारअवस्था
लोकमेप्रसिद्धदेख्याहै तैसेहीपरमात्माविषे
चारअवस्थाजाननीयायोग्यहै सोकौनहैचा
रअवस्थासोकहतेहै प्रथमदृष्टांतविषेचार
अवस्थाकहतेहै जैसेप्रथमवस्त्रकीअवस्था·
धौतहै अरबहुरघटतअरलांछतअररंजत·
यहअवस्थादृष्टांतविषेकहकरदाष्टांतवि·
षेकहतेहै जोप्रथमशुद्धचेतनअरबहुरमा
याभी अरुसूत्रात्माअरविराट् अरदृष्टांतवि
षेजोचारअवस्थातिनकारूपवर्णनकरतेहै
स्वभावहीतेजोशुभ्रहै श्वेतवस्त्रसोधौतक·
हीये अरअन्नकेलेपनकरणतेघटतकही
ये अरनानाप्रकारहूकेआकारहूकारकर
जोपाकरीताहै सोलांछितकहिये अररमेंजो

श्री॰
पं॰ द॰
१२५

129

ठतेआदिलेकरजोरंगकरतेहै सोरजनकहीयै
अवदाष्टांतविषेचारअवस्थाकासवरूपवर्णन
करतेहै स्वभावहीजोहै मायातेरहितब्रह्मशु
द्धचैतन्यकहिये अरमायाकेसंयोगतेमायावी
कहिये अरअंतर्यामीकहिये अरसूक्ष्मलिंग॰
शरीरकेसृष्टिनेसूत्रात्माकहीयै अरस्थूलश
रीरनकेसृष्टिकरविराट्कहीयै इसप्रकार॰
करपरमात्माप्रपंचरूपहोइकरस्थितहोयाहै
वाटीअरु भलाजी परमात्माकेविचरवस्त्रविषे
तेनानाप्रकारकेचित्रहै सोचित्रस्थानीआका
रपरमात्माविषेभीकहणेजोगाहै सिद्धांती॰
देवादी ब्रह्मातेआदिलेकरस्थावरपर्यंतहै
प्राणीसोउत्तमअरमध्यमअरअधमभावकर
परमात्माविषेवर्तेहै देवादिकोकेशरीरउत्त
मकहीयै अरमनुष्यादिकोकेशरीरमध्यम
कहिये अरपश्वादिकोकेशरीरअधमकहि
यै चित्रविचित्रकीन्याई ब्रह्मातेआदिलेकर
जोहैजगत तिसकोचेतनस्वरूपकहनेकेइ
च्छाकरदृष्टांतकरतेहै जैसेचित्रविचित्रवि
धलिवेजोहैमनुष्यादिकआकारतिनोकीव

स्त्रोंकेआकारभिन्नभिन्नदेखीतेहै अबदार्ष्टांतकह
तेहै ऐसेहीपरमात्माविषेकल्पितजोहै देवादि
कोंकेशरीरतिनकोचिदाभासजोहैजीव सो
भिन्नभिन्नकल्पनाकरभासतेहै सोदेवादिको
शरीरकरसंसारविषेबंधायमानहोतेहै अर॰
परमात्माज्योंकात्योंनिर्विकारहै वादी भलाजी
नैयायकतेआदिलेकरजोहैसंपूर्णवादी अरलो
किकजोहैशास्त्रतिनरहितजोसभपरमात्माही॰
कोसंसारकीप्राप्तकहतेहै तिसविषेकाकार
णहै उत्तर देवादी अज्ञानहीकारणहै तिस॰
विषेदृष्टांतश्रवणकर जैसेविचित्रवस्त्रविषे
लिखतेजोहैमनुष्यआदिआकार तिनकेउप
रजोहैवस्त्रोंकेआकारवरण सोआधारभूत
वस्त्रविषेभासतेहै तैसेहीअज्ञानीजोहैपुरुष
सोजीवविषेप्राप्तजोहैसंसार सोचेतन्यविषे
कल्पितहै ज्ञानदीपादिकजोहैजडप्रकार
तिनोंकोचिदाभासकाअभावहै सोदृष्टांतस
हितकहतेहै जैसेचित्रविचित्रविषेस्थितजो
हैपर्वतादिक तिनोवस्त्रोंकेप्रकारलिखतेन
ही तैसेहीसोकहतेहै संसारकोपरमार्थरू॰

श्री·
पं·ट·
१३:

130

पजानकरअपनाआपजोहैसाक्षी तिसविषेअस·
करआरोपतिकरना इसीभ्रमअविद्याकहीये।
अरयहअविद्याविद्याजोहैज्ञान तिसकरनिव·
तेहोताहै सोविद्याक्याहै अरउसकेलाभकाउ
पाउकोनहै इसीप्रश्नविषेविद्याकास्वरूपअर·
तिसकेलाभकाउपायदिखावतेहै चिदाभास·
जोहैजीव सोसंसारतिसहीजीवहीकोहै अर
साक्षीविषेसंसारकाअत्यंताभावहै यहबोध
विद्याकहीये सोइहविद्याविचारतेप्राप्तहोते
है किसकेविचारतेप्राप्तहोतीहै सोकहते।
चतुष्टयसाधनसंपन्नजोहैजिज्ञासु सोजगत
अरजीवअरपरमात्माकासर्वदाहीविचारकरै
वादीप्रश्न भलाजी परमात्मातोविचारकरणे
जोगहै काहेतेजोसोतअवस्थाविषेआनंदस्व
रूपकरस्थितहोताहै परजीवअरजगतका·
विचारकरणाइहप्रयोजननहै सिद्धान्ती रेवादी
जीवअरजगतकोबाधकीयेतेपरमात्माहीशे
षरहितहै वादीप्रश्न भलाजी विचारकरकर
जीवअरजगतकोबाधकीयेते तिसजीवअर
जगतकेअप्रतीतकरकरव्यवहारलोपहूया·

चाहीये सिद्धांती रेवाटी जीवअरजगतका·
जोहैबाध सोअप्रतीतरूपनहीहै सोक्याहै
मिथ्यात्वनिश्चयकरणा जोतत्अन्यथाकहै
तोलक्षमिअरसंस्कारकोविषैविचारविनाही
सर्वजनप्रकतरूपवरहये तोतेविचारकरक
रपरमात्माहीशेषरहताहै अरतिसविषैस·
मत्वनिश्चयकरणाहीज्ञानहै जगतकाविस
रणकरणाज्ञाननही जोतत्अन्यथाकहै तो
जीवमुक्तकाअभावहोयाचाहिये अरविचा
रकीअवधिकहतेहै विचारतेउत्पन्नहोतीजो
हैविद्या सोदोप्रकारकीहै एकपरोक्षहै अरदूस
रीअपरोक्षहै अपरोक्षविद्याकीप्राप्तिविषैवि
चारकीअवधिकहतेहै परोक्षअरअपरोक्ष·
कास्वरूपनिर्णयकरतेहै जोश्रवणमात्रही·
तेनिश्चयकरआस्तिकभावनाब्रह्मविषैकर
तेहै सोपरोक्षकहिये अरसम्यकविचारकर
करअहंब्रह्मसाक्षात्कारहोताहै सोअपरोक्ष·
कहिये अैसेआत्मसाक्षातकासाधारणनिरू·
पणकरकरअवशेषकरकहतेहै आत्मसा·
क्षात्कारकीसिद्धताकेनिमित्तआत्मतत्वविशो

श्री॰ षकरविचारस्वरूपकहतेहैं जिसविचारकेकर
पं॰द॰ णेतेयहजीवसंसारतेतत्कालहीमुक्तहोता
१३। है परमार्थतेआत्मतत्वस्वरूपचेतनएकहैनि
श्चयकरणेकेनिमित्तव्यवहारदशाविषेभास
(3) ताजोहैचेतनभेदसोनिरूपणकरतेहैं चारप्र
कारकाचेतनहै कूटस्थ अरब्रह्म अरजीव अ
रईश्वर एकहीचेतनउपाधिकभेदकरचार।
प्रकारहै जैसेएकहीआकाशघटाकाशअर
महाकाशअरजलाकाशअरअभ्राकाशउपा
धिकभेदकरभासताहै घटाकाशअरमहाका
शजोहैसोप्रसिद्धहै अबजलाकाशनिरूपण
करतेहैं घटावच्छिन्नआकाशविषेजोहैजल
तिसविषेप्रतिबिंबतजोहै मेघनक्षत्रादिक।
सहितआकाशसोजलाकाशकहिये अभ्रा।
काशकोनिरूपणकरतेहैं महाकाशकेम।
ध्यविषेजोमेघमंडलदेषीताहै तिसमेघमंड
लविषेप्रतिबिंबभावकरस्थितजोहैमहाका
शसोअभ्राकाशकहिये वादी भलाजी मे।
घविषेजलतोप्रत्यक्षप्रतीतनहीहोता तिस।
विषेमहाकाशकाप्रतिबिंबहानकैसेहोताहै।

सिद्धांती रेवाटी यद्यपि मेघविषेस्थितजोजल
है सोप्रत्यक्षप्रतीतनहीहोता तोभीवर्षालक्षण
जोहैकार्य तिसकरअनुमानकरीताहै मेघवि॰
षेसूक्ष्मरूपकरस्थितजोहैजल तिसविषेमहा
काशकाप्रतिबिंबअनुमानकरीताहै ऐसेदृष्टां
तविषेआकाशकोचाररूपनिरूपणकरअबदा
र्ष्टांतविषेप्रथमकहाजोहैकूटस्थसोनिरूपण
करतेहै कूटस्थविषेकल्पितजोहैबुद्धि तिसवि
षेप्रतिबिंबतजोहैचेतन्य सोप्राणोंकेधारणते
जीवकहीताहै वादीप्रश्न भलाजी कूटस्थतेभि
न्नजीवकल्पनाकरणीप्रयोजनकैसपहै सिद्धां
ती रेवाटी कूटस्थनिर्विकारहै तिसकोसंसार
काभावअसंभवहै तातेजीवहीकोसंसारकीक
ल्पनाकरणआवतीहै वादीप्रश्न भलाजी जीवते॰
भिन्नजोकूटस्थहै सोप्रत्यक्षकेयानहीपाईता ।
सिद्धांती रेवाटी जलाकाशकरजैसेघटाकाश
सर्वओरतेआवरणकीयाहै तैसेहीजीवकरकू
टस्थआवरणकीयाहै वादीप्रश्न भलाजी यह
आवरणतोनिरूपणकहीनहीकीया सिद्धांती
रेवाटी अन्योन्यअध्याससहकारणशरीरक

श्री· भाष्यविषेनिरूपणकीयाहै सोअन्योन्यअध्यास
पं·द· क्याकहिये अन्यवस्तुविषेअन्यकाआरोपनक
१३२ रणा जैसेस्थानविषेपुरुषभ्रम अरुपुरुषविषे
स्थानभ्रम तैसेहीआत्माविषेअनात्मअभिमान·
132 अरुअनात्माविषेआत्मअभिमान अन्योन्यअध्या
सकहीये वादीप्रश्न भलाजी जबइहअध्यासहै
तबइसकाकारणरूपजोहैअविद्या सोकहनी
योग्यहै सिद्धांती हेवादी जीवअरुकूटस्थकोसं
सारदशाविषेअभेदप्रतीतहोअविद्याहै जबइ
हपुरुषजीवभावकरकरकूटस्थकोजानताहै
अनादीअज्ञानकरकरतबयहीमूलअविद्या·
जाननीयोग्यहै पूर्वकहाजोहैजीवसोअविद्या
करकल्पितहै अबतिसकेप्रगटकरणेकेनि·
मित्तअविद्याकोरूपकहतेहै अविद्यादोप्रकार
कीहै एकआवरणरूपहै अरुदूसरीविक्षेपक·
रीहै विक्षेपकाकारणआवरणहै तातेआव
रणकालक्षणकहतेहै कूटस्थनहीप्रकाशता
अरुनहीहै इहजोहैव्यवहारतिसकाकारण·
आवरणहै वादीप्रश्न भलाजी अविद्याअरुति
सकाकार्यजोहैआवरणतिसकेमतभावविषे

कौनप्रमाणहै उत्तर देवादी लोकोंकाअनुभ
वप्रमाणहै सोअवणकर अज्ञानीकोज्ञानी।
प्रश्नकीआरे अज्ञानीतेंकूटस्थकोजानताहै।
तबअज्ञानीउत्तरदेया कैसेनहीजानता तोसु
विअज्ञानीनहीजानता जोयहनजाननेको।
किसनेजाणाहै इहलौकिकअनुभवकरअ
विद्यासिद्धहूया अरबडुडकहताहै अज्ञानी
कूटस्थनहीइहअर्थनहीप्रकाशता तोयहआ
वरणकाअनुभवहूआ इहलौकिकअनुभव
प्रमानहै वादीप्रश्न भलाजी तुमारेमतविषे
आत्मास्वयंप्रकाशहै तिसविषेतोअविद्याका
संभवहीनही जैसेप्रकाशविषेअंधकारनही
होताहै तैसेआत्माकोअरअविद्याकोसंबंध
नहीहै जोअविद्याहीनहीतोतिसकाकार्य।
आवरनकहांहै अरआवरणकेअभावते।
विक्षेपभीनहीबनता तोज्ञानकिसकोनिव
र्तकहेगा तोज्ञानभीव्यर्थहूया अरतिसके।
निरूपणकरणहाराशास्त्रभीव्यर्थहूया।
सिद्धांती देवादी इहसंपूर्णतेरापूर्वपक्षजो
कहाहै अनुभवतिसहीकरबाधतहै सोअ

श्री. वर्णकर स्वप्रकाश्यविषे अविद्याकह्या है अवश्या
पं.८. वरकह्या है इसतें आदिलेकर जो है तरकजाल
१३३ सो अपने अनुभवही कर गम्यते है वादी प्रश्न ।
भलाजी अनुभवको तो तरकके विरोधकरक
133 ल्पितत्व है तिस अनुभवकरतत्वनिश्चय नही ।
होता सिद्धांती रेवादी जबतत्वको अनुभव ।
विषेही प्रतीत नही तब तरकको भी असंभव
हुआ जब अनुभवहीन होवेगा तब तरकक
रकेके सनिश्चयको प्राप्त होवेगा वादी प्रश्न ।
भलाजी अनुभवकी तत्वनिश्चयवान होवे तो
भी अर्थके प्रतीतकी निमित्तनके भी अंगीकार ।
करणेयोग्य है उत्तर रेवादी जबतुहि विषेनि
श्चयहोनेके निमित्तनके की अपेक्षा करणीजो
ग्य है तो अपने अनुभवके अनुसार करतनेक क
रणीयोग्य है परजनके मतकर प्रश्न सो अनु
भवको न है जिसके अनुसारतनेक करणीयोग्य
है उत्तर रेवादी सो अपना अनुभव अविद्या
अवश्यावरणविषे पूर्वही कह्या है इसकार ।
णते कूटस्थ चैतन्यविषे जो अविरोधीतर्क है
सो करणीयोग्य है सो तर्क जब चैतन्यकी वि

रोधीहै तवअविद्याअरुअवरणकिसकरउ
भवहोतेहै वादीप्रश्न भलाजी अविद्याकावि
रोधीकोनहै सिद्धांती वेदांती अविद्याकावि
रोधीविवेकहै सोविवेकवेदांतकेविचारते
उत्पन्नहोताहै सोविवेकपरमार्थदर्शीविषे
है ऐसेअविद्याअरुआवरणकोनिरूपणकर
अवविक्षेपकोनिरूपणकरतेहै अविद्याअरु
आवरणसहितजोहै कूटस्थ तिसविषेसूक्ष्म
अरुस्थूलशरीरसहितजोहैचिदाभासकल्प
ना सोविक्षेपकहीये इसविक्षेपकोशुक्तिअ
रजतकेदृष्टांतकरसाधतेहै जैसेशुक्तिवि
शेषितजोहैशुक्तियमे सोरजितहोयभास
ताहै ऐसेहेकूटस्थविशेषितजोहैआत्मत्व.
यमे सोचिदाभासकीन्याईभासताहै ऐसेस
मानप्रतीतदिखाइकर विशेषप्रतीतदिखा
वतेहै जैसेनीलपृष्ठत्रिकोणशुक्तिविषे
आवरणकरछपेजातेहै तैसेहीअसंगताअ
रुआनंदतातेआदिलेकरधर्मकूटस्थविषे
भीआवरणकरछपेजातेहै जैसेदृष्टांतकू
टस्थताविषेभीआरोपितकानामरजतक

श्री॰ हतेहै तैसेहीकूटस्थविषेकल्पितजोहै चिदा॰
पं॰ द॰ भासरूपविषेपतिसकोअहंनामकहतेहै ।
१३४ वार्तीप्रश्न भलाजी दृष्टांतशुक्तिविषेजोहै रज
तअभिमानसोतोभिन्नरजतकाअभिमानहै
ऐसेदार्ष्टांतविषेआपनेभिन्नअभिमान भिन्न॰
हीअहंहैअभिमानपाईताहै जैसेशुक्तिविषेआ
पहीनेदेखनाहूया रजतअभिमानकरताहै
तैसेहीआपनेआपहीदेखनाहूया अहंताका
अभिमानकरताहै वार्तीप्रश्न भलाजी स्वयं॰
अर्थहैशब्दकाएकहीअर्थहै शुक्तिअवरज॰
तकाअर्थतोभिन्नहै कैसेअवरदृष्टांतअवरदार्ष्टां
तविषेसमताहै सिद्धांती देवाती जैसेइदंश
ब्दअवरजतशब्दपरस्परभिन्नहै तैसेहीस्वयं
शब्दअवरअहंशब्दभीपरस्परभिन्नहै समान
अरविशेषभीदृष्टांतदार्ष्टांतविषेसमानही
जाणीतेहै अवसमानविशेषकाअर्थकह
तेहै स्वयंशब्दकाअर्थसमानहै सोप्रगटकर
कहतेहै देवदत्तनामाजोपुरुषहै सोस्वयं॰
जाताहै अरतूभीस्वयंदेख अवअहंभीस्वयंस
मर्थनहीहै जैसेलोकविषेस्वयंशब्दसमान

ब्यवहार है वादीप्रश्न भलाजी होवे जैसे होलो
कविषेपरस्वयंशब्दकेअर्थकोकैसेसमानरू
पहै सिद्धांती हेवादी इंद्रशब्दकेअर्थकोल्या
ईजैसेइंद्रस्वरूपहै अरइंद्रवसनरहै सोसप
ऐपदार्थोंविषेइंद्रतासमानताहै तैसेहीस्व
यंनोहैशब्द अरुहंशब्द अरत्वंशब्द अरअस्मि
शब्दविषेसमानहै वादीप्रश्न भलाजी अहं-
शब्दतेस्वयंशब्दभिन्नहोवे जिसतेकूटस्थवि
षेकालाभहै सिद्धांती हेवादी समानरूप-
जोहै स्वयंशब्दकाअर्थ सोईकूटस्थहै यही
लाभहै वादीप्रश्न भलाजी स्वयंशब्दतो अ
न्यअर्थनिवारणकरताहै कूटस्थकोतोबो
धनहीकरता सिद्धांती हेवादी स्वयंशब्दज
वअन्यअर्थकानिवारकहै तोहमाराइष्टहै
काहेतेजोस्वयंशब्दकूटस्थहीकोकहतेहै
अरकूटस्थकोआत्मत्वकरणइष्टहै वा-
दीप्रश्न भलाजी स्वयंशब्द अरआत्मशब्द-
कीतोभिन्नप्रवृत्तिहै जैसेगऊअरअश्वश
ब्दकीभिन्नप्रवृत्तिहै तोतैसेएकअर्थकाअभा
वहै कैसेतुमस्वयंशब्दकूटस्थकोआत्मत

श्री॰ कहतेहै सिद्धांती हेवादी हस्तअरुकरशब्द
पं॰ ट॰ केअर्थकीन्याईएकअर्थहै स्वयंशब्दअरुआत्म
१३५ शब्ददोनोएकहीवस्तुकेपरजाइहै तिसका॰
रणतेलोकविषेभीभिन्नअर्थनहीहोता वादी
प्रश्न भलाजी घटादिकजोहैजडतिनविषेभी॰
तोस्वयंशब्दकाप्रयोगदेखीताहै तोतेस्वयंअ
रुआत्मशब्दोंकाअर्थएकनहीहै सिद्धांती हे॰
वादी जोतूकहैकिघटभीस्वयंनहीजानता
ऐसेहीअचेतनविषेभीस्वयंशब्ददेखीताहै ।
तोभीइष्टहैयाकाहैतेजोआत्मसत्तासर्वत्रस
मान वादीप्रश्न भलाजी घटादिकजोहैजड
तिनविषेभीआत्मसमानहै तोचेतनअरुअचे
तनविभागकरणप्रयोजनतोशून्यहै सिद्धां
ती हेवादी चेतनअरुअचेतनकाविभागजो
हैकूटस्थ आत्माकाकीआहूआनही क्याहै
तोबुद्धिविषेप्रतिबिंबतजोहैचिदाभतिस॰
काकीआहूआहै वादीप्रश्न भलाजी अभ॰
चेतनअरुअचेतनकाविभागचिदाभासकी
सताअरुअसताकाकीआहूआहै तबअचेत
नहविषेआत्मसत्ताकाअंगीकारअर्थहोया

सिद्धांती रेवाटी जैसेचिदाभासकूटस्थविषेअ
मकरकल्पितहै तैसेहीअचेतनघटादिकभी॰
कूटस्थविषेकल्पितहै वादीप्रश्न भलाजी तै॰
सेस्वयंशब्दसर्वत्रसमानहै तैसेहीतताअरइदं
ताकीसर्वत्रअनुगतहै तौतिनहूकोभीआत्म
त्वहूआ सिद्धांती रेवाटी जद्यपितताअरइदं॰
तासर्वत्रसमानहै तौभीतिनकोआत्मत्वनही
होता काहेतेजोआत्मातेअधिकवर्ततीहै सो
आत्मत्वहै यहआत्मत्वहै जैसेआत्मत्वसम्य॰
कहै अरआत्मत्वअसम्यकहै ऐसेआत्मातेअ
धिकवर्ततेहै तातेतिनकोआत्मत्वनहीसंभव
होता ऐसेप्रसंगकोपूर्णकर अवलोकअ॰
सिद्धअर्थप्रगटकरतेहै ततांकाप्रतियोगी
इदंताहै अरस्वयंशब्दकाप्रतियोगीअन्यअ
तिहै अरत्वंशब्दप्रतियोगीअहंताहै प्रतियो
गीकहिये जोद्वैतभावकरलोकविषेप्रसि॰
द्धहै वादीप्रश्न भलाजीहोवो ऐसेहीलोकवि
षेपप्रसंगविषेकालाभहै सिद्धांती रेवाटी
अन्यशब्दकाप्रतियोगीजोहैस्वयंशब्दसोइ॰
कूटस्थहै अरत्वंशब्दकाप्रतियोगीजोहैअहं

श्री॰ पं॰ ट॰ १३१ ता सो आत्मा विषे कल्पित है वाटीमश्र भलाजी
पूर्व कहा जो है प्रकार तिस कर जीव अरु कूटस्थ
का भेद सिद्ध हुआ परमेश्वजनै अभेद को न हीजा
नते सिद्धांती वेवादी जैसे इट शहू को अरु घ
न को प्रगट भेद है तैसे ही अरु है शहू को अरु सर्व
शहू को भेद प्रगट ही है पर अविद्या कर जिन
की बुद्धि आच्छादित होयी है तिनको प्रगट भेद
नहीं भासता वाटीमश्र भलाजी जीव अरु कू
टस्थ की एकता जो है भ्रम तिसका कारण क्या
है सिद्धांती वेवादी तादात्म्य अध्यास भ्रम विषे
कारण है तादात्म्य अध्यास कहिये अन्य धर्म
अन्य विषे भासना जैसे स्फटिक के समीप को
उवेरंग होता है तो सो स्फटिक उही रूप होय भा
सता है तैसे ही अज्ञान कर जीव अरु कूटस्थ
एक होइ भासते हैं जब अज्ञान निवर्त होता
है तिसका कारज जो है तादात्म्य अध्यास सो
भी निवर्त होय जाता है जैसे रंग के दूर की
येते स्फटक शुद्ध होय भासता है वाटीमश्र
भलाजी अविद्या के निवर्त होये ते अध्यास
भी निवर्त होय जाता है सो असिद्ध है काहे

136

तैसो तत्वसाक्षात्कार अवस्था विषे भी अविद्या
कार्य जो है देहादिक तिनकी प्राप्ति देषती है ।
सिद्धांती वेदांती अविद्या कार्य जो है आवरण
अरु नादात्म अध्यास सो ज्ञान कर निवर्त होइ
जाते हैं कर्म सहित अविद्या कर उपजिआ जो
है विक्षेप स्वरूप सो प्रारब्ध कर्म के नाश पर्यंत
स्थित है इस मैं विरोध नहीं है वादी प्रश्न भला
जी प्रारब्ध कर्म का उपादान कारण जो है अवि
द्या तिसके नाश हुये ते कैसे प्रारब्ध कर्म की स्थि
ति है सिद्धांती वेदांती उपादान के नाश हूये
ते भी क्षण कार्य की स्थिति नहीं नैयायक भी
अंगीकार करते हैं तैसे ही हमारे मत विषे भी
क्षण मात्र कार्य स्थिति होती है वादी प्रश्न भ
ला जी नैयायक मत विषे क्षण मात्र ही स्थिति
अंगीकार करी है चिरकाल तो नहीं सिद्धांती
वेदांती तुमने क्षण को दिन की संख्या कर मर्या
दा है ग्रंथ का जो जैसे तंतु के दग्ध हुये ते भी
क्षण मात्र दग्ध ता ते नैयायकों ने क्षण मात्र
अंगीकार कीया है अरु अनादि जो है संस्कार
सो संस्कार के वश कर चक्र के भ्रम की न्याई

श्री: चिरकालस्थितकाविरोध[illegible]है वादीप्रश्न ।
पं.द. भलाजी जैसेनयायकोंनेजगतकाअंगीका
१३२ रकीया तैसेहीतुमभीअंगीकारकरतेहो या
मैतुमारेमतविषेकोनविशेषता है सिद्धांती
137 वेवादी जैसेनैयायकविचारसहितप्रमाण
विनाकेवलजगतकारणमात्रकार्यकी ।
स्थितिकहती हमकोकोनश्रमसमर्थता है ।
स्वयंशब्दकाअर्थजोहैकूटस्थ अरुअहंशब्द
काअर्थजोहैजीव तिनकोदोनोकोअज्ञान ।
भ्रमकरएकतामानतीजोहै उनकेवादीति
नकेसाथहमकोविवादकरणाअवश्यहै ।
वादीप्रश्न भलाजी कूटस्थअरुजीवकीएकता
नरूभ्रमकरसिद्धहै तोसर्वजनतिनकीएक
ताकोभ्रमकोनहीजानते सिद्धांती वेवादी
केतात्पर्यतेस्वरूपहै सर्वजनजोहैलौकिक
अरुमतशास्त्रकेवक्तातेआपकोपंडतमान
ते अरुश्रुतिकाअनादरकरकेवलयुक्तको
आश्रयकरतेहैं वादीप्रश्न भलाजी श्रुति
केवक्ताभीवहुतआत्माकोनहीजानते सिद्धां
ती वेवादी पूर्वअपरस्वरूपकेविचारतेरहितहै

पूर्वअपरका[illegible]हिये आदकेश्रुतिनेब्रह्मक·
हाहै अवअंतभीब्रह्मकहाहै तातेब्रह्मही अ
न्तिकातात्पर्यहै इसविचारतेरहितहै कलि
नवाकरकोआश्रयकरअपनेअपनेपक्षविषे
निलज्जहोइकरस्थितहोयेहै अवमतोंकेभे·
दभिन्नभिन्नकरनिरूपणकरतेहै प्रथमलो
काइतअपणामतोंकेमतोकहतेहै कूटस्थते
आदिलेकरअवशरीरपर्यंतजेतासमस्तहै ।
तिसममोहकोआत्मामानतेहै लोकायत
अपणामरकेवलप्रत्यक्षप्रमाणकोआश्रय·
करकेऐसेमानतेहै वादीप्रश्न भलाजी प्रत्यक्ष
प्रमाणकरसिद्धजोहैदेहादिक तिनकोपर
मार्थकाआत्मत्वकोनहोवे सिद्धांती ऐवा
दी फेरप्रत्यक्षकोआश्रयकरमानतेहै अव
प्रत्यक्षप्रमाणवादीजेहै सोलोकोंकेमोहक
रणेकेनिमित्तअपनेपक्षकोश्रुतिसिद्धकर
कहतेहै श्रुतिसिद्धअन्नमयकोशकोआत्मा
कहतेहै विरोचनब्राह्मणकासिद्धांतक
हाहै तातेदेहहीआत्माहै अवपरलोकाधि
तैसेमानतेहै जीवात्माजबदेहतेनिकस

श्री॰ जानताहै तबदेहकामरणयहांदेखीताहै तोते
पं॰द॰ देहतेभिन्नहीआत्माहै कैसाहैदेहतेभिन्नआ॰
१३८ त्मा असकिसबप्रमाणकरजानीताहै इसअर्थ
विषेकहतेहै प्रत्यक्षप्रमाणकरसिद्धजोहै ।
अहंबुद्धिसोदेहतेभिन्नइंद्रियोकोआत्मत्वज
णावतीहै कैसेजोदेखताहो सोकहताहो इ
सतेआदिलेकरअनुभवद्वारप्रत्यक्षसिद्धहै तोते॰
इंद्रियाहीआत्माहै अन्यवादीअथ भलाजी
इंद्रियातोजडहै तिनकोआत्मत्वकैसेहै अ॰
सिद्धता वेदादी इंद्रियोकोजडताप्रसिद्धहै
काहेतेजोश्रुतिविषेइंद्रियोकोसंवादश्रवण
करीताहै तोतेइंद्रियाचेतनआत्माहै अबऔ
रमतकहतेहै प्राणवादीप्राणहीकोआत्मा
मानतेहै इंद्रियोकेनाशहुयेतेभीप्राणसत्ता
करपुरुषजीवताहै तोतेप्राणहीआत्माहै
प्राणआयतनअरुअव्यत्ररूपश्रुतिविषेभीचेत
न्यहै तोतेप्राणमयकोशहीआत्माहै मनआ॰
त्मवादीकामतकहतेहै उपासनाविषेतत्पर
जोहैजन सोमनहीकोआत्माकहतेहै प्राण॰
जडताकरभोगताहोनकरजोगनही तोतेम

नहीभोक्ताहै मनहीमनुष्योंकेबंधनअरुमोक्ष
काकारणकहलिनेगयाहै कहलिकरसिद्धजो
हैमन सोआत्माहोनेयोग्यहै अरुविज्ञानवादी
जोहैबोध तिनकामतकहतेहै विज्ञानहीआ
त्माहै काहेतेजोमनकाभीमूलविज्ञानहीहै
वादीप्रश्न भलाजो मनअरुविज्ञानतोएकहीहै
कैसेमनकाकारणविज्ञानहै उत्तर रेवादी अ॰
हंवृत्ति अरुइदंवृत्तिकरअंतःकरणदोप्रकारहै
अहंवृत्तिविज्ञानकहीताहै अरुइदंवृत्तिमनक
हीताहै अरुअहंवृत्तिजोहैसोबीजरूपहै अरुइ
दंवृत्तिअंकुरप्रगटहै अपनास्वरूपजोहैविज्ञान
तिसकोजानेविज्ञानमनवाह्यअर्थकेजाननेको
समर्थनहीहै अरुक्षणकवादीमनकहतेहै ।
अहंवृत्तिकोक्षणविषेजन्महोताहै अरुदूसरेक्ष
णविषेनाशहोताहै तिसकारणतेविज्ञानक्ष
णकहै स्वप्रकाशआत्माहै इसविषेआगम॰
काप्रमाणकहतेहै इहविज्ञानमयकोशजी
वहै अरुसर्वसंसारजन्मअरुनाशतेआदिलेक
रइसहीकोहै यहीकर्ताभोक्ताहैशून्यवादीम
तकहतेहै विज्ञानक्षणकआत्माहोणेयोग्य

श्री· नही काहेतेजोक्षणक्षणविषेनाशहोताहै जैसे
पं·८· मेघआकाशविषेजोहैमेघ तिसविषेविजलीका
१३५ चमतकारवनहोयकरनष्टहोयजाताहै इस·
विज्ञाननेअन्यकाअभावहै तातेशून्यहीहै सृ
139 ष्टिकोआगेभीअसतहीथा ऐसेश्रुतिकहाहै
ज्ञानअरज्ञेयरूपजोहैजगत सोभीभ्रमकरक
ल्पितहै तातेशून्यहीहै शून्यवादीकेमतकोदू
षतेहै निःस्वरूपजोहैशून्य सोअधिष्ठानकेयो
ग्यनही अरअधिष्ठानतेरहितभ्रमनहीसिद्धहो
ता तातेजगतकीकल्पनाकाअधिष्ठानजोहै
आत्मसत्ता सोअंगीकारकरणीयोग्यहै अरशू·
न्यवादीकोभीशून्यकीसिद्धताकेनिमित्त शून्य
कासाक्षीजोहैआत्मा सोअंगीकारकरणायो
ग्यहै आत्माकेअन्यअंगीकारतेशून्यभीतेरेमत
विषेनसिद्धहोवेगा कैसाहैतवआत्माइसप्रश्न
विषेकहतेहै विज्ञानकेअंतरजोहैआनंदम·
यकोशसोईआत्माहै श्रुतिसिद्धआनंदमय·
कोशआत्माअंगीकारकरणेयोग्यहै यहवे
दकासिद्धांतहै ऐसेआत्मस्वरूपविषेअनेकवा
दरोलायकरअवआत्माकेविशेषप्रमाणवि·

ऐसे वाद अनेक दिखावते हैं एक आत्मा को अंगुठ-
कहते हैं अंगुठ कहीये सूक्ष्म अरु एक महान क-
हते हैं अरु एक मध्यम कहते हैं श्रुति अरु जग-
तको आश्रय करि बहु प्रकार वाद करते हैं अंगुठ
वादी आत्मा को अंगुठ कहते हैं अंगुठ आत्मा सूक्ष्म-
नाडी विषै विचरता है तिसका जो है सहस्र भा-
ग तिसके तुल्य है इस मैं श्रुति प्रमाण है अंगुठ आ-
त्मा अंगुठ ते भी अंगुठ है अरु सूक्ष्म ते भी सूक्ष्म है स-
हस्र श्रुति आत्मा को अंगुठ प्रमाण कहती है औ-
र श्रुति ऐसे कहती है जो आत्मा केसा है बाल-
का जो है अग्र भाग तिस भाग का जो शत भाग
कहिये तिसका भी शत भाग जो है तिसको तु-
ल्य है आत्मा ऐसे श्रुति कहा है अरु मध्यम प्र-
माण वादी ऐसे कहते हैं आत्मा मध्यम प्रमाण
है पाद ते लेकर मस्तक पर्यंत चेतन व्याप्त है
ऐसे श्रुति करि कहते हैं वादी प्रश्न भला जो म-
ध्यम प्रमाण विषै सूक्ष्म नाडी विषै विचरण नहीं
संभव होता उत्तर ऐ वादी सूक्ष्म नाडी विषै वि-
चरण सूक्ष्म अंग ऊकर होता है जैसे देह के अं-
ग जो है सहस्र तिन्हू के प्रवेश करके बहु वि

श्री· छेदेहकाभीप्रवेशहोताहै वादीप्रश्न भलाजी
पे·ट· आत्माकोतेमकरमध्यमपरमाणसिद्धविषेकर्म
१५· तेवशतेऊनअधिकशरीरप्रवेशनहीसंभव·
होताहै उत्तर तेवादी ऊनअधिकजोहैशरीर
140 तिनविषेप्रवेशभीआत्माकेअंशोकोसंभवहो
ताहै तिसकारणतेमध्यमपरमाणनिश्चयसिद्धहै
अवमध्यमपरमाणकोदूषतेहै जोसावयवव
स्तुकाघटकीन्याईनाशहोताहै तोआत्माको
नाशहूयेतेदोषवड़तेहै क्यादोषहै कीयेहैजो
पुण्यअरुपाप सोभोगोविनाहीनाशहोयेचा
हिये अरकीयेविनापुण्यअरुपापकाफलभो
गणाचाहिये तातेआत्मामध्यमपरमाणनही·
है आत्मानिरंशहै निरंशकहीये जोअंशोते
रहितहै तिसकारणतेआत्मानअणुहै नम·
ध्यमहै आत्मामहानहै आकाशकीन्याईस·
र्वव्यापीहै अरुनिरवयवहै ऐसेआत्माकोप·
रिपूर्णभावसाधकरवड़ेवादीयोकेवादटि
छावतेहै आत्माकोपूर्णभावश्रवणकरवादी
बहुतप्रकारवादकोकरतेभये कोऊअचिन्त्य
रूपकहतेहैं कोऊचिंतअचिंतरूपकहतेहै ·

सथम अचिंत्यरूपवादी दिखावते है प्रभाक
र अर नारक आत्माको अचिंतरूप कहते है
अर कहते है जो आकाशकी न्याई आत्मा हष्ट
है अर जैसे आकाशका गुणशब्द है तैसे आ॰
त्माका गुण चितन्क्वणा है अर तिस आत्मा॰
के विशेष गुण कहते है इछा अर द्वेष अर प्र
यत्न अर धर्म अर अधर्म अर सुख अर दुख
अर संस्कार ए ते गुण चैतन्यकी न्याई आत्माके
है आत्माको संस्कारके वशते मनका संयो
ग होता है अर मनके संयोग होयवेते इह स
भही गुण उत्पत होते है अर संस्कार नाशते इ
भी विषे नष्ट होय जाते है वादी भलाजी आ
त्माको अचिंतरूपके अंगीकार तेचेतनकाभा
वके से है उत्तर वेवादी चैतन्यके संयोगते
आत्मा चैतन्य है अर इछा अर द्वेष अर प्रय॰
त्न अर धर्म अर अधर्म अर कर्ता अर भोक्ता
अर दुःख इनो गुणोंकर संयुक्त है वादी अब
भलाजी आत्माको पूर्णभाव विषे लोकांत॰
र गामन आगमनके से होता है उत्तर वेवादी
जैसे इस लोक विषे कर्मके वशते कदाचित

श्री· स्वर्गादिकप्राप्तहोतेहै तैसेहीपरलोकविषे·
पं·द· भीकरनकरइच्छादिकउत्पनहोतेहै ऐसेस·
१४१ र्वगतआत्माकोभीलोकोंतरगमनआगमन
होतेहै इसविषैकौनप्रमाणहै इसप्रश्नवि·
षेकहतेहै कर्मकांडसंपूर्णइसमैंप्रमाणहै
वादीप्रश्न भलाजी पूर्वतमोकहाकिविज्ञान
मयकेअंतरजोहैआनंदमयकोशसोईआत्मा
है अवइच्छादिकगुणोंकरसंयुक्तकहनेहो
इहपूर्वउत्तरविरोधहूआ उत्तर वेवादीआनं
दमयजोहैकोश सोसुषुप्तिमेशेषरहताहै
अप्रगटचैतन्यजोहैआनंदमयकोश सोप्र·
वकोशमयप्रथमहै अवप्रभाकरवादीको·
कासोआत्माहै इच्छातेआदिलेकरजोहैगुण
सोभीआनंदमयआत्माकेगुणहै अवभाट्टो
कामतजोहैचित्जडआत्मा सोकहतेहै भा
ट्टकहतेहै जोहैआत्माचितजडरूपहै काहे
तेजोसुषुप्तिविषैआत्माचितजडहोताहै ·
सुषुप्तिविषैमैजडहोकरसोयाथा तवसु·
षुप्तितेउठकरजडताकेस्मृतिहोतीहै सोस्मृ
तिसुषुप्तिमयजोहैजडता तिसकीअनुभ

141

वविनानहीहोती इसलिमयचैतन्यकाभी
लोपनहीहोता दृष्टाजोहैसाक्षी तिसकोदृ·
ष्टिकालोपनहीहोता तातेआत्माप्रकाशरू
पप्रकाशरूपकरकरप्रधानकीन्याईप्रका
शरूपहै भाटमतकोहषतेहै सांख्यमतकर
करनिरवयवआत्माकोचितजडदोरूपनही
संभवहोते तिसकारणतेआत्माचैतन्यहीरू
पहै सांख्यकेविवेकीऐसेकहतेहै भाटप्रश्न
भलाजी जडप्रकृतिकौकागतहइ उत्तर रे
वादी जडअंशजोहै सोप्रकृतिकारूपहै सो
प्रकृति सात्विक राजस तामस स्वरूपहै चै·
तन्यकेभोगअरमोक्षकेनिमित्त सोप्रकृतिप्र
वर्तेतीहै वादीप्रश्न भलाजी चैतन्यतोअसंग·
रूपहै प्रकृतिअरचैतन्यपुरुषकोकैसेअरभो
गअरमोक्षहोताहै उत्तर रेवादी असंगचैत·
न्यकोबंधमोक्षभेदकेअग्रहणतेहै बंधमोक्ष
अवस्थाकेनिमित्तचैतन्यभेदसिद्धहै सहत·
पुरुषतेपरमअव्यक्तजोहैप्रकृतिसोभिन्न·
है तातेचैतन्यअसंगहै श्रुतिविषेप्रसिद्धहै
ऐसेजीवविषेसतोंकेभेदरिवायकरअव

श्री॰ ईश्वरविशेष दिखावणे के निमित्त ईश्वर रूप प्रगट
पं॰ द॰ करके कहते हैं चैतन्य के अति समीप रहती जो है प्र॰
१४२ कृति तिस प्रकृति का प्रेरक जो है पुरुष सो ई
श्वर है सो जीवों ते परे है ऐसे पातंजल में कहा
142 है वादी प्रश्न करता जो प्रकृति अरु पुरुष ते भिन्न
ईश्वर कल्पना अप्रमाण है उत्तर वेवादी सो ई
श्वर जीव ते परे है श्रुति में ऐसे कहा है प्रधान॰
जो है गुणों की समवस्था प्रकृति अरु क्षेत्रज्ञ जो
है जीव न तिन दोनों का ईश्वर स्वामी अरु गुणों
का भी ईश्वर है अर्थ क्या जो तिन का प्रेरक है ।
बृहदारण्यक श्रुति में भी अंतर्यामी निरूपण
कीया है इस में भी वादी बहुत वाद करते हैं अ
पने अपनी युक्तों कर अरु जैसी जैसी बुद्धि है ति
सके अनुसार वाका उदाहरण करते हैं अब॰
पातंजल सूत्र का अर्थ कहते हैं पंच क्लेश जो
है अविद्या अरु अस्मिता अरु अभिनिवेश अरु
काम अरु कर्म अविद्या चार प्रकार है अनि
त्य विषे नित्य बुद्धि अरु दूसरी अशुचि विषे शु॰
चि बुद्धि अरु तीसरी अनात्मा विषे आत्म बुद्धि ।
अरु चौथी विषे सुख बुद्धि यह चार प्रकार अवि

याकहीये अरअसमताकहिये सूक्ष्मदेहका
र अरअभिनिवेशकहिये हठकरणा अर॰
कामकहिये तृसना अरकर्मतीनप्रकारभ
ये एकसंचितहै जोअनेकजन्मोंविषेकीये
हूयेस्थितहै अरदूसरेआगामहै जोइसजन्म
विषेकीयेहैकरीतेहै अरप्रारब्धहैजोशरीर
नाशपर्यंतभोगकादाताहै इहपंचक्लेशहै
तिनकेस्पर्शतेजोरहितहै सोईश्वरकहिए
अरतिनकेसंस्कारतेभीअस्पर्शीहै सोपुरुष
विशेषईश्वरकहीअे सोभीजीवकीन्याईअ
संगचेतन्यहै यद्यपि ईश्वरअसंगहै तोभी॰
पुरुषविशेषकीभावतेतिसकोप्रेरकतासि
द्धहै जोईश्वरप्रेरकनहोवे तोबंधअरमोक्ष
अवस्थाभीइसलोकविषेसिद्धनहोवे उत्तर
पवनभीईश्वरभयकरचलताहै इसतेश्रा॰
टिलेकरश्रुतिप्रमाणहै तातेअसंगपरमा
त्माकोप्रेरकभावसिद्धहै काहेतेजोपंचक्ले
शकोस्पर्शतेरहितहै वादीप्रश्न भलाजी
जीवतोअसंगचेतन्यरूपहै अरक्लेशपंच
तेरहितहै तातेईश्वरमेकोनविशेषताहै

श्री·
पं·ट·
१४३

143

उत्तर देवादी जीवोंकोभीअवतेअसंगकेभावते·
पंचक्लेशअभावहै अरस्वरूपकेअज्ञानकरपं
चक्लेशकेवशहोजातेहै अरतार्किककहते
है जोनित्यज्ञानअरप्रयत्नअरइच्छागुणईश्वर
केहै अरअसंगकोअरकरतानहीसंभवहोती
अरउत्कर्षविशेषकाभावभीईश्वरकोगुणोंक
रहैअन्यथानही अरईश्वरकीसंकल्पभीस·
त्यरूपहै श्रुतिकहाहै अरअपत्तकहतेहैनि
त्यहै ज्ञानतेआदिलेकरगुणजिसके ऐसाजो
हैईश्वर तिसतेहृष्टिभीसर्वदाहोतीहै ताते हि
रण्यगर्भजोहैलिंगशरीरोंकीसमष्टिकाअभि
मानी सोईश्वरहै उदरब्रह्मणअध्यायविषे
हिरण्यगर्भकामाहात्म्यविस्तारकरकहा
वादीप्रश्न भलाजी लिंगशरीरकेसंयोगतेजी
वत्वप्रावताहीहै उत्तर देवादी लिंगशरीर·
केसंयोगतेभीतिसकोजीवत्वनहीहै काहे
तेपंचक्लेशकेअसंगते अरअवरमतकहते
है स्थूलशरीरबिनालिंगशरीरकहूंनही
देखा ताते विराटहोईश्वरहोणयोग्यहै अर·
श्रुतिप्रमाणकरभीविराटहीईश्वरहै सह

हैहैशिवजिसके अरसहस्रहीहैनेत्रजिस॰
केइसतेग्रादिलेकरविश्वरूपवर्णनकीया
है श्रुतिकरकरतोतेविराटहीईश्वरहै अ
रउपासकइसमतकोकहतेहै जोसहस्रशि
रकरअरसहस्रपाणिपादकरयुक्तमिग्रादि
भिईश्वरहोयेचाहीहै तोनेचतुर्भुजविजोहै॰
ब्रह्मासोईश्वरहोनेयोग्यहै अरपुत्रादिको
कीइच्छाकरप्रजापतिजोहैब्रह्मा सोउपास
नाकरणेयोग्यहै अरप्रजाकेभीउहीसृष्टि
कर्ताहै ऐसेकहाहै अरभागवतकहतेहै
विष्णकेनाभिकमलतेब्रह्माउपजाहै तोते
विष्णहीईश्वरहोनेयोग्यहै ऐसेलोकमेभा
गवतजनकहतेहै शैवमतकहतेहै शिव
जोहैमहादेव तिसकेचरणकमलोविषेवि
पनसेवदाग्रासक्तहै तोतेमहादेवहीईश्वर
है ऐसेशैवग्रागमीकहतेहै गणपतकह
तेहै त्रिपुरनामदैत्यनाशकरणेकोमहा
देवभीगणपतिपूजाकरतामया तोतेग॰
णपतिहीईश्वरहै ऐसेगणपतिपूजारीक
हतेहै ऐसेउहरभीभैरवअरभैरालेग्रादि॰

श्री. लेकरउपासकआपनेआपनेपक्षोविषेभिन्नभि.
पं.द. न्नहीईश्वरमानतेहै मंत्रअरअर्थवादआदआ
१४४ श्रयकरईश्वरत्वनिश्चयकरतेहै अंतर्यामीते
आदिलेकरस्थावरपर्यंतईश्वरवादीहै वादी
144 प्रश्न भलाजी स्थावरविषेईश्वरवादतोनहीदे
खो उत्तर देवादी पिपलअरअरकतेआदिले
करमलदेवत्वमानकरईश्वरमानतेहै वा
दीप्रश्न भलाजी ऐसेजोमतभेदहै तोकोनग्र
हनयोग्य अरकोनत्यागयोग्यहै उत्तर देवा
दी तत्वनिश्चयकीइच्छाकरकरजोन्यायअर
आगमकाविचारकरतेहै तिनकोएकहीसि
द्धहै सोईहामगटकरतिकरकहतेहै माया
जगतकाउपादानकारणहै अरमायाका
प्रेरकमहेश्वरहै महेश्वरकेअंगाकरइहसे
पूर्णजगतव्याप्तहै इहश्रुतिअउस्वारतिर
णेकीयाजोहै तेसेहीजबनिश्चयभया तब
स्थावरपर्यंतईश्वरवादीसाथ्यविरोधकोऊ.
नही काहेतेजोईश्वरसर्वत्रपूर्णहै वादीप्र.
श्न भलाजी जगतकाउपादानकारजोहैमा
या तिसकाक्यारूपहै उत्तर देवादी इहमा.

यातमोरूपतापनीश्रुतिमेंकहाहै इसमेंअ
नुभवहीप्रमाणहै आपश्रुतिकहाहै बाल॰
कतेआदिलेकरतृणपर्यंतमायाअनंतरूप
है अरुघटादिकोविषेजोजडताहै सोमायाहै
अरुजहांकठोरभावकोवुद्धिप्राप्तहोतीहै सो
मोहमायाहै इहलौकिकदृष्टिकरसंवअनु
भवहोताहै वादीप्रश्न भलाजी ऐसेमायास
र्वेअनुभवकरसिद्धहै घटादिकोकीन्याई न
वज्ञानकरनिवर्तनहोवेगी उत्तर वेदांती ज
गतदृष्टिकरमायाअनिर्वचनीयहै सतअस
तकरकरणेकोयोग्यनहींश्रुतिकहाहै अ
सतकाहेतेनहीजोअत्यन्तभासमानहै अरुस
तकाहेतेनही जोनष्टहोइजातीहै तातेज्ञा
नदृष्टिकरमायातुच्छहै सोनित्यहीनिवृत्त॰
रूपहै ऐसेश्रुतिकहाहै श्रुतिबोधकरत्रय
कालअभावतेतुच्छहै अरुजगतबोधकर॰
अनिर्वचनीयहै अरुलौकिकबोधकरवावी
है इसप्रकारमायातीनप्रकारहै इसजगत
केसतअरुअसतकेभावकोश्रुतिदृष्टांतक
रदिखावतीहै जैसेचित्रवस्त्रपसारणकेवे

श्री. ते नानाप्रकारविचित्रहोयभासतेहै अरसेकोरच-
पं.द. कीयतेचित्ररूपेजातेहै तैसेहीजगतकीभीचे-
१४५ ष्टाहै प्रकाशचैतन्यविनामायाअस्वतंत्रहै ।
अरअसंगआत्माकोनानाप्रकारकरणेतेस्व-
145 तंत्रहै कूटस्थअसंगआत्माकोनानाप्रकार-
केरूपोकरजोहैभासन सोमायाकीचेष्टाहै
अरचिदाभासरूपकरकरजीवअरईश्वरकी
रचनाकरनाकरतभई वादीप्रश्न भलाजी ।
आत्माकोअन्यआकारकरणेतेकूटस्थकीहान
हुईचाहिये उत्तर वेवादी कूटस्थकोआश्रयक-
रकरमायाजगतआदिरचनाकरतीहै याते-
कूटस्थनिर्विकारहै वादीप्रश्न भलाजी कूट-
स्थकोविकारीकीयेविनामायाकोजगतर-
चनाकरणीअसंभवहै उत्तर वेवादी जोअसं-
भवहीकोरचनाकरणहारीहै मायातिसमा-
याविषैक्याआश्चर्यहै काहेतेजोमायाइसी-
कानामहै जोअसंभवकोरचनातीहै जैसेज-
लविषैद्रवताहै अरअग्निविषैउस्नताहै अर
सिलाविषैकठोरताहै तैसेमायाविषैअसंभ-
वरचनाकरणीस्वतासिद्धहै अन्यतेनहीं ।

वादीप्रश्न भलाजी तुमोकहाकिमायाको॰
ऐसेभयरचनाकरणीआश्चर्यनही परलोक
विषेतोमायाकोआश्चर्यदेखीताहै उत्तर वेदा
टी जबलगमायाकेप्रेरककोसाक्षात्कारन
हीजाना तबलगआश्चर्यमनविषेहोताहै
अरसाक्षात्कारजानेतेइहमायामात्रहै ऐसे
जानकरआश्चर्यनहीहोता अरयहप्रपंचजग
तमतमाननेतेजोहै नैयायकतेआदलेतेजोप्र॰
तिकरणेयोग्यहै हमइसजगतकोमाया॰
मात्रजाननेहै तोतेहमारेप्रतियोग्यनही ।
अरजवप्रश्नविषेभीप्रश्नहोवे तोतेप्रश्नवि
षेहमारायप्रश्नहोया तोतेअनवस्थाहोइ तिस
कारणतेप्रश्नविषेउत्तरयोग्यहै तोतेप्रश्नवि
षेवऊतप्रश्ननहीकरणा अरआश्चर्यहीहै
एकस्वरूपजिसका ऐसीजोहैमायाके तिस
केप्रश्नतेबुद्धिवानोकोयत्ननकरउत्तरविचा
रणयोग्यहै वादीप्रश्न भलाजी मायात्वनि॰
श्चयकरणेकेनिमित्तउत्तरविचारणयोग्यहै
परंतोमायात्वहीअजीसिद्धनहीहोआ उत्तर
वेदाटी मायात्वहीनिश्चयकरणेयोग्यहै ।

श्री. तवनिश्चयकरणेनिमित्तलोकप्रसिद्धमाया
पं.ट. लक्षणविचारणेयोग्यहै सोकालक्षणहै सो
१४१ श्रवणकर जोनिरूपणकरणेकोअसमर्थहै
अरुप्रगटभासमानहै सोमायाकहीये सोमा
याइंद्रजालआदिविषेलोकप्रसिद्धहै अरुइह
146 जगतभीप्रगटभासमानहै अरुनिरूपणकर
णेकोअसमर्थहै अरुमायामात्रहै सोदेखने.
कोयोग्यहै जोक्याहै अरुइसजगतकेनिरू
पणकरणेकोमेसगरेपंडितभीआरंभकरत
भये परनिरूपणनहूया काहेतेजोनिर्मूल.
ताहै सोअसमर्थतानिरूपणकरनेहै सोश्र
वणकर देहइंद्रियादिकभाववीर्यकरकेसे
उत्पनहोतेहै अरुतिनोदेहादिकोविषेचेत.
नकैसेहै इसप्रश्नकोयेतेउत्तरनहीहोता .
अरुजोतूकहेकेइहस्वभाववीर्यकाहै तो.
तूकैसेजाना अन्वयव्यतिरेकभीव्यर्थहै
काहेतेजोसोउत्तरअन्वयव्यतिरेककरभी
कहनेकोअसमर्थहै वादीप्रश्न भलाजी मै
नहीजानता जोइहक्याहै तोतेतुमारीश्राव
णहो तुमकृपाकरनिरूपणकरो उत्तर रे

वाटी इसीतेमहतत्वफघइसकोइंद्रजालहै
कहतेहैं इसतेपरेइंद्रजालकाहै सोग्रंथ
मगर्भवासवीर्य अरुरुधिरकेसंयोगतेहो
ताहै अरुवडुडहमन अरुमलकतेआदिले
करनानाप्रकारकेअवयवहोतेहैं अरुवडु
डगर्भतेनिकसकर वालअवस्था अरुयौव
न अरुजरा अरुअनेकरोगोंकरआवरणहो
ताहै अरुवडुडदेषताहै अरुभोजनकरता
है अरुश्रवणकरताहै अरुसूंघताहै अरुग्रह
णकरताहै इहीइंद्रजालहै अरुदेहकोत्या
हवटवीजविषैविचारकरणायोग्यहै क
होवीज अरुकहांवटहुताहै तोतेमायाम
यहै वाटीप्रश्न भलाजी यद्यपि हमकहने
कोअसमर्थहै तोभीउदेनाआचार्योनेतनि
रूपणकीयाहै उत्तर वेवाटी जगतकेनि
रूपणकरणेविषैजोअभिमानकरतेहैं
तार्किकतेआदिलेकरतिनोंकाहषमिथ्या
हिकोकरखंडनकीयाहै शिक्षाकरकर
खंडनवाकानिरूपणकरतेहैं निश्चयक
रजोअचिंत्यपदार्थहै तिनकोतर्कोविषै

श्री. सेवेधनहीहै इहजोजगतहै सोमनकरकर
पं. ट. भीअविंम्पइपरचनाहै वारीप्रश्न भलाजी ।
१४७ जगतअविंम्परचनाइपहोवे परमायाके ।
असंगविषेकालाभहै उत्तर देवाटी अविंत
147 रचनाशक्तिकाजोबीजहै सोमायानिश्चय ।
जान वारीप्रश्न भलाजी इसप्रकारकारण ।
तेमोकहाहैघाहै देवाटी उत्तर सोमायाबीज
एकहीहै सुषुप्तिविषे अनुभवहोताहै जाग्रत
अवस्थजगततिससुषुप्तिविषेलीनहोताहै
जैसेबीजविषेसूक्ष्मभावकररहेघलीनहै ।
तिसकारणतेसंपूर्णजगतवासनामायावि
षेस्थितहै अरजोशुद्धिवासनाहै तिसेविषे
चैतन्यप्रतिबिंबहोताहै वारीप्रश्न भलाजी
जबवासनाविषेचैतन्यप्रतिबिंबहै तबअनु
भवक्योनहीहोता उत्तर देवाटी जैसेमेघ ।
विषेआकाशकाप्रतिबिंबअनुमानकरजा ।
नीताहै तैसेचिदाभासभीअनुमानकरजा
नेयोग्यहै वारीप्रश्न भलाजी मेघविषे ।
तोघटाजलाकाशकेदृष्टांतकरप्रतिबिंबि
तआकाशअनुमानकरीताहै इहाचिदाभा

सनाविषेदृष्टांततोनहीहै कैसेअज्ञमानक
रीताहै उत्तर वेवादी चिदाभाससहितजो॰
है अज्ञान सोबुद्धिरूपपरिणामकरतिसवि
षेचिदाभासप्रतिबिंवहोइभासताहै इसका
रणतेबुद्धिविषेचिदाभासप्रगटभासमान
है अरमायाचिदाभासरूपकरजीवअरई॰
श्वरकोरचनाकरतीहै ऐसेश्रुतिविषेक॰
ह्याहै वादीप्रश्न भलाजी जीवअरईश्वरको
मायिकत्वसमानहूयेते कैसेजीवईश्वरभे॰
दसिद्धहोवैगा उत्तर वेवादी जलाकाशअर
मेघाकाशकीन्याईजीवअरईश्वरकोमाया
अरबुद्धिवासनाविषेप्रतिबिंवभावकरस्थि
तहै मेघकीन्याईवर्तमानजोहैमाया तिस
विषेप्रतिबिंवतजोहैचैतन्य सोईश्वरकही
ऐ अरमेघविषेस्थितजोहैहृद तिनकीन्या
ईबुद्धिवासनाविषेप्रतिबिंवतजोहैचेतन्य
सोजीवकहियै मेघअरहृदाविषेप्रतिबिं॰
वतआकाशकेन्याईमायाविषेप्रतिबिंवत
जोहैचिदाभाससोमाया अरमहेश्वरकही
ये ऐसेश्रुतिकहाहै सोईईश्वरअंतर्यामी

कहीये अरु सर्वज्ञ अरु जगतजोनि कहिये अ
रुसुषुप्तिविषे जो है आनंदमयकोश सो ईश्व
र है इही सर्व ईश्वर है सो वेदांतकै ईश्वर है ।
वादीप्रश्न भलाजी आनंदमयकोशकोशको
सर्वते आदिलेकर धर्मतो विरोध है उत्तर सं॰
र्वज्ञते आदिलेकर आनंदमयको धर्म जो है ।
तिनविषे विवाद नही है अरु श्रुति अर्थ वि॰
षेजतके नही संभव होती है अरु मायाविषे॰
सर्व संभवते भी तिनके नही करणीयोग्य ।
वादीप्रश्न भलाजी जबजगतते रहित श्रु
तिप्रमाण है तब शिलातरणवाक भी प्रमा॰
ण होयेगा कहिये उत्तर वेदवादी इह आनंदम
यजाग्रतते आदिलेकर जगतरचना करंता
है सो अन्यथाकरणेको समर्थ कोई भी न॰
ही है तिसकारणते इही आनंदमय सर्वई
श्वर है अरु तिस सुषुप्ति अवस्थाविषे कार॰
णभूत जो है अज्ञान तिसविषे कार्यभूत जो
है सर्वप्राणीयोंकी बुद्धि तिनकी वासना॰
तहां निवास करती है अरु तिने वासनाक
र संपूर्ण जगत गोचर कीया है सर्वबुद्धि॰

वासनासहितजोहैअज्ञानउपाधिक आत्माति
सकोसर्वज्ञतासेभयहै वादीप्रश्न जबआनंद
मयकोसर्वज्ञताहै तबअनुभवक्योंनहीहोती
परसर्वज्ञताहाननहीहोती अबसंपूर्णबुद्धि
विशिष्टितजोहैसर्वज्ञता सोअनुमानकरजा
नीतीहै ऐसेसर्वज्ञतासाथकरअंतर्यामीभाव
सिद्धकरतेहै विज्ञानमयजोहैआत्माकोश
तिसोविषअरपृथिवीआदिकस्थानविषभी
स्थितहोयकरप्रेरणाकरताहै तिसकारण
ते ईश्वरअंतर्यामीभावकोप्राप्तहोताहै अ
रबुद्धिविशिष्टितहोयकरबुद्धिभीप्रेरणाक
रताहै ऐसेवेदनेकहाहै जैसेपटवीउपादा
नभावकरतेतास्थितहै तैसेहीसर्वविषउपा
दानभावकरतेतास्थितहै तैसेहीसर्वविषउ
पादानभावकरहैअंतर्यामीसर्वत्रस्थितहै
वादीप्रश्न भलाजी उपादानभावकरजबरहै
अंतर्यामीसर्वत्रस्थितहै तबसर्वत्रक्योंनही
अप्रसन्नपाईता उत्तर देवादी जैसेपटकेअंतर
तेतहै अरतत्वकेअंतरअवकाशआकाशस्थि
तहै अरजहांआंतरत्वकीविश्रामहोताहै

श्री॰ तिसीस्थानविषेवस्तुकाअनुमानकरणायो॰
पं॰ ८॰ ग्यहै वादीप्रश्न भलाजी अंतरात्मविषेतत्व॰
१४९ अणकीन्याईअंतर्यामीकोनहींदेखीता उत्त
र देवादी जैसेअंतरात्मकरहतम अरुअनुमान
करतेहै तैसेहीयुक्तिअरश्रुतिकरकरअंतर्या॰
मीनिर्णयकरसिद्धहै अरजैसेपटरूपकरस्थि
तजोहैतंतु तिनोकापटस्वरूपहै तैसेहीसर्व
रूपकरस्थितजोहै अंतर्यामीसर्वतिसकास्व॰
रूपहै जैसेतंतुकेसंकोच अरविस्तारविषेप॰
टभीसंकोच अरविस्तारहोताहै तबविनाव
स्त्रविषेभिन्नचेष्टाकोउनहीहै तैसेहीयहअं
तर्यामीजिसवासनाकरजहांविकारकोप्रा
प्तहोताहै तहांसोविकारअवश्यहोताहै इ
सविषेसंशयनहीहै जहांअैसेश्रुतिकरअंत
र्यामीसिद्धकरअरस्मृतिप्रमाणकरतेहै ।
हेअर्जुन सर्वभूतोकेहृदयविषेईश्वरविरा
जमानहै अरअपणीमायाकरसर्वलोकोदेहोको
भ्रमावताहै कैसेहै सर्वभूतमायाकेयत्रविषेआ
रूढहै अरसर्वभूतजोहै सोविज्ञानमयरू
पकरहृदयकमलविषेस्थितहै तिनोकाउ॰

पादानकारणअंतर्यामीहै सोतहांविकार।
कोप्राप्तहोताहै यंत्रआरूढअभिमानताहै ।
विधिअरनिषेदकीप्रवृत्तिजोहै सोप्रमाणक
हीये विज्ञानमयरूपकरकरजोप्रवृत्ति सो
अपणीसत्ताकरकरअंतर्यामीविकारकोप्रा
प्तहोताहै यहीमायाकरकरप्रमाणकहिये
अंतरस्थितहोयकरसर्वभूतोंकोप्रेरताहै ।
यहीअंतर्यामीकहिये अरपृथिवीआदिक
तत्वोविषेभीस्थितहोयकरप्रेरणाकरताहै
तेतोसर्वप्रवृत्तिईश्वरअधीनहै जैसेस्मृति
कावचनहैजाननही जोमेरेप्रवृत्तिधर्मवि
षेनहीहै अरअधर्मविषेनिवृत्तिनहीहै प।
रकिसीहृदयविषेस्थितदेवकरकरहोअव
अहो जैसेतिसनेप्रेरआहो तैसेहीकरताहो
दुरुयोधनकावचनहै वादीप्रश्न भलाजी
पुरुषप्रवृत्तिईश्वरअधीनहोये तोपुरुषप्र।
यत्नव्यर्थहोया उत्तर देवादी पुरुषप्रयत्न
अर्थकीआकामनकर काहेतेजोईश्वरजी
पुरुषप्रयत्नरूपकरकरप्रवृत्तिहोआहै ।
वादीप्रश्न भलाजी पुरुषप्रयत्नईश्वररूप

होया ऐसें सोजोकह्याथाजोअंतर्यामितहो
यकरअंतर्यामीप्रेरताहै सोकहनाव्यर्थहूया
उत्तर देवाटी ऐसेवोधकरकर आत्मस्वरूपवि
षेअसंगताकाज्ञानउत्पन्नहोताहै वादीपक्ष
भलाजी आत्माकोअसंगताकेज्ञानकरकरकै
नप्रयोजनहै उत्तर देवाटी निसज्ञानकरइह
प्रहषजीवनमुक्तहोताहै ऐसेश्रुतिअरस्मृ॰
तिकहाहै अरश्रुतिस्मृतिमध्येईश्वरकीआ॰
ज्ञाहै ऐसेईश्वरकहाहै अरईश्वरआज्ञाभय॰
काकारणहै जोयनतेआदिलेकरभयकर॰
विचारतेहै ऐसेश्रुतिकहाहै सर्वईश्वरइसी॰
तेकहतेहै जोअंतर्यामीभावकरभिन्नहीवि॰
राजमानहै इसीअर्थईश्वरकीआज्ञाविषम॰
वैहै अरसर्वजनोकोअंतर्यामीहोयकरप्रे
रताहै ऐसेश्रुतिकहाहै अरजगतकीजो॰
नभीईश्वरहै काहेतेजोउत्पन्नअरप्रलयक
रणकोईश्वरहीसमर्थहै जवसर्वकोउदय
करताहै तवउत्पन्नकरदेतेहै अरजवसर्व॰
लीनकरताहै तवप्रलयकरदीतीहै ऐसेसं
कोचकीयाहुया वहुविस्तारकरीताहै ।

तेवनानाप्रकारकेचित्रवस्त्रविषेप्रगटहोते
है तैसेहीआपनेविषेलीनजोहैजगततिस॰
कोईश्वरप्रगटकरताहै प्राणीयोकेकर्मके
वशते अरजैसेसंकोचकीयेतेवस्त्रविषे चि
त्रलुपेजातेहै तैसेहीप्राणीयोंकेकर्मलय
होयेते संपूर्णजगतकोआपविषेईश्वरली
नकरताहै जैसेरात्रअरदिनहै अरजैसेसुषु
प्ति अरजाग्रतहै अरजैसेनेत्रकामीटणा अर
उडनाहै अरजैसेसमाधिअरमनोराज्यहै ॰
तैसेहीजगतकीसृष्टिअरप्रलयहै ताते प्र॰
श्न भलाजी ईश्वरकोजगतयोनिकाभावकैसे
है क्याआरंभककरकरहै अथवा तदाकारप॰
रणामकरकरहै जोआरंभकरकरो तोआ
रंभकहतेहै जोतत्तकारणभिन्न अरकार्य
भिन्न जैसेपटअरतंतहै सोअद्वैतविषेअयो
ग्यहै अरजोपरणामकहो तोपरिणामकं॰
हीहै जोअन्यभावकोप्राप्तहोना जैसेदुग्ध
दधिआकारकोप्राप्तहोताहै तैसेनिरव॰
यकोअसंभवनही उत्तर तेवारी विवर्त
वादिकरसंभवहै विवर्तकहिये जोय॰

श्री॰ पं॰ ट॰ ।५१। ध्यारुलवत्तविशेषअनध्याकारभासना जैसेजे
वडीविशेषसर्पआकारभासनाहै अरउनपनस
लयईश्वरकोशक्तिमत्वहै तोजैसेभवहोती
है औरभअवपरणमकाप्रश्न इहासेभवन
हीहोता वादीप्रश्न भलाजी एकहीईश्वर॰
चेतनअचेतनजगतकाकारणकेसेहै उत्तर
वेवादी अचेतनकाकारणमायाकीअशाक
रईश्वरहै अरचिदाभासअपेक्षाकरईश्वरजी॰
वोकाकारणहै वादीप्रश्न भलाजी मायावी
ईश्वरजगतकाकारणनहीहै काहेतेजोहि
रेश्वराचार्यपरमात्माहीकोकारणभावक
हाहै तमोगुणप्रधानकरशरीरोकेभावको
परमात्माप्राप्तभयाहै अरचितप्रधानकर
जीवोकेभावकोप्राप्तभयाहै संस्कारअर॰
ज्ञानकर्मकरकरपरमात्माहीजगतकार
णवातिककारणोकहाहै उत्तर वेवादी जै
सेअन्योन्यअध्यासकारएकतासिद्धजान॰
करहरेश्वराचार्यनेकहाहै वादीप्रश्न भ॰
लाजी हरेश्वराचार्यनेईश्वरब्रह्मकोअन्यो
न्यअध्यासकरएकताजानकरकहाहै य॰

151

हत्मोकहाते जानाहै उत्तर देवाटी स्फतिकर
जानाहै सतज्ञानअनंतरूपजोहैब्रह्म तिससे
आकाश अरवायु अरअग्नि अरजल अरपृ-
थिवी अरऔषधी अन्नअरदेह उत्पत्तहोते है ।
ऐसे स्फतिकहाहै वाटीप्रश्न मलाजी रचना-
होवेगा ऐसेहीपरअन्योन्यअध्यासकेसेजानीये
उत्तर देवाटी तिसस्फतिविषेनिर्गुणब्रह्मको
जगतकारणत्वमायामेयोगतेहै तातेअन्यो
न्यअध्यासकरसिद्धहै जैसेवस्त्रअन्यलेपन
करघटतभावकोप्राप्तहोताहै तैसेहीअस-
करकरईश्वरब्रह्मकोपकलासिद्धहै जैसेमे
घाकाश अरमहाकाशकोअज्ञानतहीवि
चारतेहै तैसेब्रह्मअरईश्वरकोपकलादेख-
तेहै विचारविना वाटीप्रश्न मलाजी ब्रह्म-
अरईश्वरकाभेदकहातेजानीताहै उत्तर ।
देवाटी उपक्रमआदिलिंगोकरतात्पर्यकेवि
चारकरणेतेब्रह्मकोअसंगजानताहै अरमा
यावीईश्वरजगतसृष्टिकरताजानताहै सं-
तरज्ञानआनेतब्रह्मनिश्चयकरजोवाणी
आभीनिवर्तहोतीहै ऐसेअसंगताकानिर्ण

श्री. गकरणायोग्यहै मायावीजोहैईश्वर सोजगतकी
पं.द. सृष्टिकर्ताहै अरतिसजगतविषेमायाकरजीव
१५२ बंधहै ऐसेश्रुतिकरजगतकासृष्टाईश्वरकहा
है ऐसेआनंदमयईश्वरकोजगतकाकारणक
152 हकरअरतिसआनंदमयकोजगतकीउत्पत
काप्रकारकहतेहै इहजोआनंदमयईश्वरहै
सोसंकल्पकरतभया केएककहींबहुतहोवे ।
संकल्पकेकरणेतेहिरण्यगर्भरूपहोतभया
ऐसेसबमनेसमाहोताहै तातेप्रश्न भलाजी ।
आत्मातेआकाशउत्पनहोया अरआकाशते ।
वायु वायुतेअग्नि अग्नितेजल जलतेपृथिवी
पृथिवीतेअन्नउत्पनहोये ऐसेश्रुतिनेसृष्टिक
मकरकहीहै अरबहुश्रुतिकहाहै केसंक
ल्पकरणेकेहीकरसंपूर्णजगतउपजआवता
है इनोदोनोविधिकोनवाक्यग्रहणयोग्यहै ।
अरकोणत्यागयोग्यहै उत्तर देवाती श्रमकर
अथवापकठीहीसृष्टिज[illegible]नीयोग्यहै जैसेश्रु
तिदोप्रकारकहेहै तैसेहीग्रहणीकरणेयोग्य
है जैसेसमादोप्रकारदेखीताहै हिरण्यगर्भ
कासरूपनिरूपणकरतेहै सूत्रात्माजोहैसत्त

शरीर सर्वसूक्ष्म शरीरोंका अभिमानी है अरु कि
या शक्ति अरु ज्ञान शक्तिका आश्रय है जैसे सा-
नसभाविषे अथवा रात्रिके प्रथम याम विषे -
इह लोकमें स्वप्रकार विषे सम्भासता है तै
सेही हिरण्यगर्भ अरु विषे इह जगत भास-
ता है अरु जैसे स्वप्न सूक्ष्म आकारोंकर लोकि
त होता है तैसेही ईश्वरका वपु सर्व रचना सूक्ष्म
कर लोकित होता है अरु जैसे साधा अथवा साक
सर्वभाव करके अजरको प्रसन्न होता है तैसेही इ-
ह जगत भी सर्वभाव करके अजरको भासन होता है
अरु विराट स्वरूप ईश्वरकी निरूपण करते है
जैसे सूर्यके उदय होये ते लोक भासता है अरु जै-
से रंगकर पूर्ण वस्तु भासता है अरु जैसे माला
फलवान भासती है तैसेही प्रगट जगत रूप-
विराट भासता है विश्वरूप गीताके अध्याय वि
षे अरु सहस्रशीर्षा विषे श्रुतिने कहा है ब्रह्माते
आदि लेकर अरु स्थावर पर्यंत सर्व जगत विरा
ट शरीर है अरु समेत अवयव कर अंतर्यामी
सूत्रात्मा अरु विराट अरु ब्रह्मा अरु विष्णु अरु
रुद्र अरु इंद्र अरु अग्नि अरु गणेश अरु भैरव

श्री॰ अरु वैताल अरु यम अरु यक्ष अरु राक्षस अरु ब्राह्म
पं॰ द॰ ण अरु नारी अरु वैश्रवण अरु शूद्र अरु गोउ अरु अ॰
१५३ श्व अरु मृग अरु पंछी अरु पीपल अरु वट अरु॰
अंब आदि अरु जव अरु चावल अरु तृण आदि
153 अरु जल अरु पाषाण अरु मृत्तिका अरु काष्ठ
अरु तैसा अरु कही आदि ये सर्वे ही ईश्वर हैं अरु
यथा योग्य पूजा कर फलदायक हैं काहे ते जो
सर्व ईश्वर ही हैं अरु जैसे ईश्वर की उपासना कर
ते हैं तैसा फल प्राप्त होता है वादी प्रश्न भला जी
संसार का फल सिद्ध है ऐसे होआ परन्तु कि
स की उपासना ते है उत्तर वेदांती एक ब्रह्मज्ञा
न कर है अन्यथा नहीं प्राप्त होती है जैसे अपने
जागे विना स्वप्न भ्रम नहीं निवृत्त होत तैसे ही ब्र
ह्मज्ञान विना संसार निवर्त नहीं होता वादी प्रश्न
भला जी द्वैत निवृत्ति लक्षण जो है एक सो स्वप्न
दृष्टांत कर सिद्ध नहीं होते काहे ते जो स्वप्न की॰
रचना त्याई तो जगत भ्रम द्वैत नहीं है अर्थ ।
क्या जो स्वप्न ते जाग्रत अथवा विषय नष्ट हो
जाता है अरु जाग्रत तत्त्वज्ञान प्राप्त का सविष
य नाश नहीं होता उत्तर वेदांती तीनो अवस्था

मायामात्रस्वमतकल्पहै ईश्वरअरुजीवतेआ॰
दिलेकरजोहै सर्वजगतचेतन अरुअचेतन
रूप सोसंपूर्णहीअद्वैतब्रह्मतत्वकास्वरूपहै
वादीप्रश्न भलाजी जीअरुईश्वरतोअस्यतोअ
भेदहै कैसेजगतजडजीवरूमवर्णनकीयेहै
उत्तर हेवादी आनंदमयजोहैईश्वर अरुविज्ञा
नमयकोहैजीव सोदोनोमायाकरकल्पित
है अरुतिनोजीवअरुईश्वरकरसर्वजगतक
ल्पितहै सोकल्पतेआदलेकरजीवरूपकरप्र
वेशपर्यंतजगतईश्वरकरकल्पितहै अरुजा
ग्रततेआदलेकरअरुमोक्षपर्यंतजगतजीव
करकल्पितहै वादीप्रश्न भलाजी ब्रह्महीपर
मार्थकरूपहै तोतेजीवअरुईश्वरविषेअन्यथा
दीवादकोकरतेहै उत्तर हेवादी अद्वैतब्रह्म
तत्वहै जोअसंगतिसकोसोवादीनहीजान॰
ते अरुजीवअरुईश्वरजोहै मायक तिनोविषे
हूतकलहूविवादकोप्राप्तभयेहै वादीप्रश्न
भलाजी जीवईश्वरविषेविवादकाकारण॰
ज्ञानहै तोतेतत्वज्ञानकर तिनोवादीयोंप्र
तिनोकाबोधकरणायोग्यहै उत्तर हेवादी

श्री॰ तत्त्वज्ञाननिश्चयजानकरब्रह्मसर्वदाकालविषे
पं॰ द॰ आनंदस्वरूपविषेविराजमानहै अरुतिनोअ॰
१५४ ज्ञानीयोसाथब्रह्मविवादनहीकरते परतिनो
कोदेषोब्रह्मआश्चर्यमानहोतेहै काहेतेजोतृ॰
णतेआदलेकरअंतर्यामीपर्यंतईश्वरविषेअ॰
154 नकोआश्रयकरविवादकरतेहै अरुथकाजो
यथार्थनिश्चयरहितहै अरुदेहाभवादतेआ
दलेकरचैतन्यपर्यंतजीवभ्रमकोआश्रयक
रविवादकरतेहै अरुपरमार्थवस्तुकोनही॰
जानते इहीआश्चर्यहै वादीप्रश्न भलाजी ।
किसकारणतेतिनोवादीयोकेभ्रमकाभावहै
उत्तर हेवादी जवअद्वैतअसतत्वकोनहीजा
नते अरुमिथ्यावादकरतेहै तवसंपूर्णवादी
भ्रांतहोये कोतिनोकाकहाशुकहै अरुइस
लोकविषेभीसत्यकहाहै काहेतेजोअंतप
त्तकेअभिनिवेशतेचित्तविश्रामकाअभाव
हैतिनोको वादीप्रश्न भलाजी तिनोकोब्रह्म
विद्याकरउनमअधमभावदेवीताहै जानेउ॰
त्तमभावकरनोतिनोकोसावहीहै अर्थका
जोस्वर्गादिकसत्यलोककरनोसावीदेवीतेहै ।

उत्तर वेवाटी उत्तमअरमध्यमभावतिनोको
होवेपरतिसकरकाहावेहै जैसेस्वपनवि
षेराज्यअरभिक्ष्याकरस्हावभासताहै परजो
जाग्रतकोप्राप्तभयातिसको तिसराज्यअर
भिक्ष्यासाथस्पर्शनहीहै तिसकारणतेजो॰
मुक्तकीइच्छाकरणहारहै तिनोकोजीव
ईश्वरकोवादविषेउडिप्रवेशनहीकरणी
योग्य अरसर्वदाब्रह्मतत्वविचारकरकर
तिसविषेस्थितहोईयोग्यहै वादीप्रश्न भ॰
लाजी ब्रह्मतत्वनिश्चयकरणेकेनिमित्त॰
जीवईश्वरनिर्णयकर्तव्यहै काहेतेजोई॰
श्वरजीवनिर्णयकीये विनापरमार्थविषे॰
एकताकानिश्चयनहीहोता तातेईश्वर॰
जीवनिर्णयअवश्यकर्तव्यहै उत्तर वेवाटी
जोतत्वनिश्चयकेनिमित्तनिर्णयकरणेयो
ग्यहै तोईश्वापतहै परविवेकतेरहितजो
हैपुरुष तिसकोतिसवादविषेमग्नहोणा
योग्यनही वादीप्रश्न भलाजी सोव्यअर
योगपणाविषेतोजीवईश्वरशुद्धचेतन्य॰
रूपकरनिर्णयकीयाहै तातेतसकोभी

श्री. ऐसीकारककरणेद्वारापहै उत्तर वेवादी तत्वअ
पं.द. रत्वेपदार्थकेअर्थजोहैजीवअरईश्वर प्रति
१५५ नकोअर्थभेदहमारेसिद्धांतविषेनहीहै ।
वादीप्रश्न भलाजी हृदयअरब्रह्मशुद्धकर
155 करततअरत्वेपदकेअर्थतोतुमोभीभिन्नभि
न्नकीयेहै उत्तर वेवादी अद्वैतबोधकरणें
केनिमित्तलोकप्रसिद्धभेदहरकरकरतत
अरत्वेपदकीएकताकहीहै अनादीमाया
करकरभ्रमविषेप्राप्तजोहैपुरुष तेजीवई
श्वरकोभिन्नभिन्नमानतेहै तिसभेदकेदूर
करणेनिमित्त तत्वअरत्वेपदकीशुद्धताके
वलनिर्णयकरीहै अरत्वेपदार्थोंकीशुद्ध
ताकेनिमित्त एवंउकदृष्टांतनिरूपणकर
तेहै इसीकारणतेयथायोगपरवंदृष्टांत.
निरूपणकीयाथा जैसेघटाकाशअरम
हाकाश अरमेघाकाश सोवहुउकहते
है जलाकाश अरमेघाकाशविषेउपाय
जल अरमेघहै सोकल्पितरूपहै अरआ
धारजोहैघटाकाश अरमहाकाशसोनि
र्मलस्वरूपहै ऐसेहीआनंदमयजोहैईश्व

२ अरविज्ञानमयजोहैजीव सोमायाअरअंत :
करणउपाधिकरकल्पितरूपहै तिनहूकेआ
धारभूतजोहैकूटस्थ अरब्रह्मसोनिर्मलस्व·
रूपहै वादीप्रश्न भलाजी पदार्थसोधनवि
षे सांख्यअरयोगमतभीसहायकहै तातेअं
गीकारकरणेयोग्यहै उत्तर वेदांती अतत
क्रमसंनेकीयाहै विचारसहायताकरक
रजोगअरसांख्यअंगीकारकरणेते देहा
त्मवादीयोकामतभीअंगीकारकरणायो
ग्याचाहिये वादीप्रश्न भलाजी सांख्यअर
योगशास्त्रोकोवेदांतसाथविरोधकिसका
रणतेहै उत्तर वेदांती सांख्यअरयोगविषे
नानाप्रकारभेदहीविरोधहै सोश्रवणकर
आत्मभेदअरजगत सतत्व अरईश्वर अने·
त इहतीनप्रकारकावेदांतविरोधन जव
पातंजली अरसांख्यमतीत्यागे तबवेदांत
साथतिससांख्यअरयोगशास्त्रकीसंगत
होवे वादीप्रश्न भलाजी जीवकोअसंग·
ताकोज्ञानकरमुक्तसिद्धहै अद्वैतज्ञानक
रकोनप्रयोजनहै उत्तर वेदांती अद्वैतज्ञा

श्री. नविनाआत्माअसंगताकाज्ञाननहीहोता
पं. द. जीवकोअसंगताकोज्ञानकरजेवन्नकृता
१५६ र्थेवकेहै तवहकजोहैउछमाला अरवे
156 दन अरहीतेआदलेकरभोगोकेनित्यत्व.
मात्रकरकरकृतार्थहूआचाहिये अरथ.
वाजो जैसेचंदनादिविषेभोगोकोनित्यत्व
नहीसंभवहोताहै तैसेहीअद्वैतज्ञानविना
आत्माकोअसंगताकाज्ञानअसंभवहै काहे
तेजोअवश्यप्रकृतिजोहैमाया सोउरवसा
थअसंगताकोपामकरतीहै अरईश्वरकीसा
मनाभीअवश्यहोहै ऐसेजवहूआ तवइस
पुरुषकोकोनमोक्षसिद्धहूआ वादीप्रश्न
भलाजी अविवेककरकरपुरुषकोसंगा.
अरईश्वरकीप्रेरणाहोतीहै जवविवेकहू.
आ तवसंगादिनहीउतपनहोने उत्तर ये.
वादी अद्वैतज्ञानविनामायाअवश्यआन
शमहोतीहै तातेसांख्यकावादव्यर्थहै.
वादीप्रश्न भलाजी अद्वैतज्ञानकरतोबंध
मोक्षविवर्जननहीसिद्धहोती तातेआत्म
ज्ञानतअंगीकारकरणाजोग्यहै काहेते

जोबंधमोक्षअवस्थासिद्धनवहोवे जबआत्मा
अनेकहोवे उत्तर वेवादी एकआत्माविषेभी
बंधमोक्षअवस्थाकरणेकोमायासमर्थहै ।
वेवादी मायाऐसेकहतीहै जोमैउरघटको
भीरचतीहो अर्थकाजोअसंभवकोभीरच
नाकरतीहो यहमायाविशेषकोतनहीहै ।
त्वेता तोतेवास्तवबंधमोक्षनहीहै श्रुतिऐ
सेकहाहै परमार्थतेऐसेश्रुतिकाहैजोनउ
त्पत्तिहीहै अरनाप्रलयहीहै अरनाबंधहै ।
अरनासाधकहै नजिज्ञासीहै नमुक्तहै प॰
कपरमार्थरूपब्रह्महै मायारूपीजोहैकाम
धेनु तिसकेजीवअरईश्वरदोनोवछरेहैं अर
द्वैतरूपीदुधकोपानकरतेहै अरपरमार्थ
तत्वअद्वैतब्रह्महै वादीप्रश्न भलाजी जीवअ
रईश्वरकोमायकत्वहोइते तिनकाभेदभी ।
मिथ्याहै परकूटस्थअरब्रह्मनोपरमार्थरूप
है तोतेतिनकाभेदभीपरमार्थरूपहोआवा
हिये उत्तर वेवादी कूटस्थअरब्रह्मकाभेद
नाममात्रहीहै जैसेघटाकाशअरमहाका॰
शकाभेदनाममात्रतेइतरनहीहै ऐसेहिके

श्री. सर्वप्रकाशतद्रूपअद्वैतनहींश्रुतिनेकहाहै तैसेही
पं.द. है ऐसेभीहै अरश्रुतिविषेभीअद्वैतनहींहै वादी.
१५२ प्रश्न भलाजी सर्वज्ञनोनेभेदकिसकारणतेअं
गीकारकीयाहै उत्तर वेवादी मायाअर्थहीं.
157 सर्वज्ञनोकोप्रमावनीहै काहेतेजोनतत्वज्ञान
तेशून्यहै वादीप्रश्न भलाजी जगतकोमाया
मात्र अरब्रह्मतत्वकोअद्वैतजोजानतेहै तेज्ञा
नीभीपडीभ्रमतेहै तोतेज्ञानकरकेंतप्रयो
जनहै उत्तर वेवादी जैसेज्ञानतेपूर्वतिनोंको
भ्रमहोताथा तैसेज्ञानकीप्राप्तविषेज्ञानीयों
कोभ्रमनहीहैवोता अज्ञानीकानिश्चयश्रव
णकर इसलोकविषेपुत्रकलत्रतेआदिले.
करसंसारअरपरलोकविषेस्वर्गादिकअरु
जोहैसंसार तिसकोअज्ञानीवासनवजान.
तेहै अरअद्वैततत्वविषेनिश्चयकदाचितन
हीहोता ऐसेअज्ञानीयोंकानिश्चयहै अरज्ञा
नीकानिश्चयश्रवणकर ज्ञानीकानिश्चय
अज्ञानीयोतेविपरीतहै अर्थकाजोज्ञानी
सम्यकदर्शीहै अद्वैतजोपरमार्थरूपहै सो
सर्वदातिसकोभासमानहै अरसंसारक.

लिपनभासताहै ज्ञानीकोअपनेअपनेनिश्चयके-
अनुसारतिनकोफलहै ज्ञानीमानताहै जोमै
सर्वदामुक्तहो अरुअज्ञानीमानताहै जोमैबंध
हो वादीप्रश्न भलाजी अद्वैतशास्त्रकरभास-
ताहै परअनुभवकरतोप्रत्यक्षनहीभासताहै
उत्तर वेवादी अद्वैतचैतन्यरूपकरकरभासमान
है अरुजोतूंकहै जोसंपूर्णकरनहीभासता तो
द्वैतभीजोसंपूर्णभासतानहीहै तोतेएकदेश
करकरद्वैतअरुअद्वैतकाभासनासमानहै अ
द्वैतकीन्याईअद्वैततेसिद्धतेवैपक्षविषेकों-
नहोवे वादीप्रश्न भलाजी जबद्वैतनहोवे त
बअद्वैतज्ञानहोताहै तोतेद्वैतकीसत्ताविषे
अद्वैतज्ञाननहोता उत्तर वेवादी अद्वैतकीस
त्ताविषेद्वैतकाभावनहीहोता तोतेविरोध-
द्वैतअद्वैतविषेसमानहै वेवादी ऐसेतूंश्रव
णकर क्याजोद्वैतअत्यंतअसतहै काहेतेजो
मायामात्रहै तिसकारणतेवास्तवभूतजो
है अद्वैत सोसर्वदाभासमानहै अविनाशच
नारूपजोहै संपूर्णजगत सोमायामात्रहै
अर्थक्याजोअनिर्वचनीयहै ऐसेनिश्चयक

श्री. रकरपरमार्थअद्वैतहीसिद्धहूआ वादीप्रश्न भला
पं.द. जी जद्यपिअद्वैतनिश्चयहोताहै तोभीबड़ेद्वै
१५८ तकीसत्ताभासआवतीहै उत्तर देवादी जबअ
द्वैतनिश्चयभीपर्णेबड़ेद्वैतभासताहै तोवार
वारअभ्यासकरकरद्वैतमिथ्यात्वनिश्चयकर
णाजोगहै वादीप्रश्न भलाजी कबलगवारंवा
रअभ्यासकरै उत्तर देवादी अद्वैतब्रह्मकोसा
क्षात्कारपर्यंतअभ्यासकरणाप्रधानहै वारंवा
रअभ्यासतेद्वैतनहीहै काहेतेजोसंपूर्णअनर्थ
कानिवारणहोताहै औरद्वैतअद्वैतविषेहै ।
वादीप्रश्न भलाजी अद्वैतकेसाक्षात्कारकीयेते
ज्ञानीकोभी द्वयात्मघातेआदलेकरअनर्थकी
प्राप्तहोवतीहै उत्तर देवादी सतशास्त्रकाबा
धजोहै अहंकारतेसविषत्वथादिकअनर्थ
होवै इसविषेकोनहानिहै औरजोतत्वदात्म
अध्यासकरवैतनमात्तीविषेआरोपनकरै
तोअध्यासमतनकर औरतत्वविचारकरअस
वेदाकर वादीप्रश्न भलाजी इच्छावासनाके
वशतेअध्यासतानकालहीआनप्राप्तहोता
है तोतेक्याकर्तव्यहै उत्तर देवादी वारंवा

158

दृष्ट विनाशण जोगा है ऐसे अध्यासकी येष·
ध्यासनहीउदयहोता वादीप्रश्न भलाजी वि
चारकरकरद्वैतकोमायामात्रजानेतेजगत
मुक्तहीतेसिद्धहूआपरअनुभवतेतोनहीहै
उत्तर देवादी विवेककरकरद्वैतकोमाया·
मात्रजानेतेकेवलजगततोनहीहै अनुभ·
वजोहैसाक्षीकरसिद्ध सोअत्यन्तअविनश्व
नाहेखीनीहै वादीप्रश्न भलाजी चैतन्यभी
नेअविनश्वरचनारूपहै उत्तर देवादी होवैअ
सेहीपरहमचैतन्यकोअविनश्वरचनाभीतो·
नहीकहतेहै काहेतेजोनित्यकारणरूपहै
अरचैतन्यप्रागभावरूपनहीहै प्रागभावक
हियेजोउत्पत्तितेपूर्वनहोणा जोतकहैजो
चैतन्यकाप्रागभावहै जोतकउचैतन्यका
प्रागभावकिसकरअनुभवहोताहै जोतक
हैजोचैतन्यविनाउरहीअनुभवभावकिस·
करअनुभवहोताहै जोतकहैजोचैतन्य·
विनाजडहोताहै अरजडकोअनुभवकीस
मर्थानहीहै अरजोतकहैजोआत्मचैतन्य
कापागभाव चैतन्यकरग्रहणहोताहै·

श्री· तोआत्माअरुदोषहैइस्का काहेतेजोअपनेअभाव·
पं·द· कोआपहीग्रहणकरणा तोतेचैतन्यनित्यभाव
१५५ रूपहै वादीप्रश्न भलाजी चैतनभीतोनानाप्रका
रहै तिसकाप्रागभावभीतोनहीहै तोतेअचैतनकी
159 न्याईनित्यहोआचाहिये उत्तर देवादी चैतनका·
प्रागभवचैतन्यकरअनुभवहोताहै जैसेसर्वचै
तनकेप्रागभवको सुषुप्तिविषेसाक्षीअनुभवक
रताहै तोतेचैतनमिथ्याहै प्रागभावसेयुक्तजोहै
चैतन सोघटादिकोकीन्याईमायाकरवीताहै
तोभीरचनाअचिंत्यहै तोतेमिथ्याहै जैसेइन्द्रजा
लरचनाअचिंत्यहै अरमिथ्याहै देवादी चैतन·
न्यअल्पराहै अरचैतनसर्वकाअन्यनाभावहै अर
बहुतेकहताहै जोअचैतनअपरोक्षनही है
सतकेव्याघातदोषनहीहै व्याघातकहियेअ·
जोअपनेकहनेविषेदोषहोवै वादीप्रश्न भ
लाजी ऐसेजानकरकरभीवेदांतकेअर्थहू
कोअनेकप्रकारपरतीतनहीकरते उत्तर दे
वादी सम्यग्ज्ञानतेशून्यहै अरतेनहीदेख·
ताजोचारवाकआदिकपुरुषहैंकोदेहात्मा·
प्रतीतहै सोकहकहातेहै वादीप्रश्न भला

जो चारवाककेआदिकोकोनोसमभाविचा
रनहीहै काहेतेजोबुद्धिविषेअनेकदोषहै।
तिनोको उत्तर देवादी तैसेहीबुद्धिकेदोषते
शास्त्रकेग्रंथकोसमभकरनहीविचारते तोजे
अप्रतीतहै वादीप्रश्न भलाजी जबइसजिज्ञा
सीकेमनविषेस्थितजोहैकामना तिनोका।
नाशहोताहै तबइहजिज्ञासीस्वरूपकेसा।
ज्ञात्कारकरशुद्धपदकोप्राप्तहोताहै ऐसेश्र
तिकरश्रवणहीकरीताहै परअनुभवतोप्र
त्यक्षनहीहोता उत्तर देवादी सोप्रत्यक्षअनु।
भवहोताहीहै जिससमाविषेसर्वोहृदय
कीकामनारूपीचिदजडग्रंथनिवर्तहोतीहै
चिदजडग्रंथकाकहिये जोदेहादिकजडोवि
षेआत्मबुद्धिकोग्राध्यकर इहपुरुषप्रवर्त
मानहोताहै जैसेइहबुद्धिनिवर्तहोतीहै ।
तबइहपुरुषपरमात्मपदकोप्राप्तहोताहै
ऐसेश्रुतिनेकहाहै सोज्ञानीकेअनुभववि
षेप्रत्यक्षहै वादीप्रश्न भलाजी लोकविषे।
कामनाइछाकोकहतेहै अबतमोकहाजो
चिदजडग्रंथीहै सोकैसेहै उत्तर देवादी

श्री॰ अहंकार अरु चैतन्य आत्माको एकताजानकर
पं॰ ८॰ करअज्ञानतें दुःखरूपकहताहै जोदुःखको
१६॰ अरुकापदार्थहोवे अरुअरुकाहूखनिवर्तहो
वै ऐसेइच्छाकामशब्दकरकहीतीहै वादी॰
160 प्रश्न भलाजी अध्यासकामूलजोहैकामना
सोत्यागनेयोग्यहै इतरकामनाकरणेविषे॰
तोदोषनहीहै उत्तर वेवादी जवचैतन्यआ॰
त्माकोअहंकारतेभिन्नजानकरदेहदुःखादि
नहोताहै तवइसदुःखकोकोऊकामनान॰
हीवाधकरणेकोसमर्थ काहेतेजोवाधकर
णेहारजोहैविदनउग्रेष्ठ सोनिवर्तहोयजा॰
तीहै वादीप्रश्न भलाजी अध्यासकेअभाव॰
होयेते सर्वकामनाभीतोअभावहोआचाहि
ये उत्तर वेवादी अध्यासकेनाशहोयेतेभीप्रा
रब्धकर्मकीप्रबलताते इच्छाउदयहोतेहै जै
सेतमारेवचनश्रवणकरकरजाननाभीहै॰
परपाप्रारब्धकीप्रबलतातेसंतोषकोनही
नहीप्राप्तहोता जैसेदेहकोरोगोकरकरअ
रजन्म अरुनाशकरकरचैतन्यआत्माकोक
छलेपनहीहै तैसेहीचिदाभासविषेप्राप्त

जोहैइछाआदिक तिनोकरभीचैतन्यसर्वदानि
र्लेपहै अरजोतूंकहेहैचिदजडग्रंथकेनिवर्तनेते
आगेभीआत्मानिर्लेपहीथा हेवादी इहतेबाध
अहंमकोअनुकूलहै अरइसबोधकोविस्मर
णकरकाहेतेजोइही चिदजडग्रंथकानिवर्त
होणाहै जोआत्माकोअसंगनिर्लेपकासम्य॰
कज्ञानहै अरइसीबोधकरतेकृतार्थहोवेगा
जोतूंकहेहैजोमूर्खभी ऐसेतोनहींजानते सोइ॰
चिदजडग्रंथहै औरतोनहीं वादीअरु मला
जो ज्ञानीअरअज्ञानीदोनोकोइछाकाअंगी॰
कारकरणेतेज्ञानी अरअज्ञानीकोभेदक्या॰
होआ उत्तर हेवादी ज्ञानीअरअज्ञानीकोइ॰
हीभेदहै जोज्ञानीस्वरूपविषैविराजमानहै
अरअज्ञानीस्वरूपतेप्रमादीहै अरदेहइंद्रिय
आदिकोकीप्रवृत्तिनिवृत्तिविषै ज्ञानी अज्ञा
नीकोभेदकछूनहीं जैसेसंस्कारहीनब्राह्म॰
ण अरवेदपाठीब्राह्मणकोभेदहै परआहारा
दिकोविषैभेदकछूनहीं तैसेहीज्ञानीअज्ञा
नीकोभीजाननाजोगहै ज्ञानीकीप्रवृत्तिवि
षैगीतावाक्यप्रमाणहै हेअर्जुन ज्ञानीप्र॰

श्री॰ रूपरसादिकोंकीनिवृत्तिविषैइच्छानहींकरता
पं॰ द॰ श्ररुदुःखोंकीप्राप्तिविषैद्वेषनहींकरता श्ररु
१६१ उदासीनकीन्याईवर्तताहै काहेतेजोइच्छाश्ररु
द्वेषकामूलश्रज्ञानतिसकोनिवर्तभयाहै
161 वादीप्रश्न भलाजी गीतावाक्यतोउदासीनवि
धिविषैप्रमाणहै ज्ञानीकामननतौनहींहै ।
उत्तर वेवादी ज्ञानीमननहीकहींहै श्ररुजोत
कहे जोज्ञानीकेदेहादिककार्यकोसमर्थन
हींहैतो सोरोगीहोवैगा ज्ञाननहींहै श्ररुजोत
त्वबोधकोसर्वउपद्रवनाशकरणहारामान
तेहै तिनोंकीबुद्धिश्रतिविसालहै श्ररुतिनो
ज्ञानीयोंकोसर्वसमर्थहै वादीप्रश्न भलाजी
जडभरतनेश्रादिलेकरज्ञानीयोंकोश्रशक्तिका
श्रभावपुराणोंविषैकहाहै उत्तर वेवादी ।
तिन्[illegible]नासमर्थनहींजाना जोश्रशक्तिकहा
है जोज्ञानीभोजनादिव्यवहारकरै श्ररुकि
डाकरै श्ररुहीश्रहंसाभावदानिर्लेपहै श्ररुभ
रतनेश्रादिलेकरज्ञानीश्रादिकव्यवहारत्या
गकर पाषाण श्ररु[illegible]ष्टकीन्याईतोनहींथि
नहोये परकुसंगकेभयकरउदासहोकर

विचारणाकीयाहै उसंगअतहीनिंदहै लोक॰
कजनोसाथसंगकीयेतेपरमदुःखकोप्राप्तहो॰
ताहैविचारवान अरसंगतेरहितपरमसुख॰
कोप्राप्तहोताहै तांतेअज्ञानीयोकासंगत्याग॰
नायोगयहै बादीअरु भलाजी मानसीसंगत्या॰
गनायोगहै परअवहारविषेकोनदोषहै ।
उत्तर हेवादी अज्ञानीकासंगसर्वदात्यागना
जोगहै काहेतेजोमूढशास्त्रकेतात्पर्यकोन॰
हीजानते अरहथावादकरतेहै तांतेमूर्खोंका
निश्चयपरकृअपणेविषे अरहमअपनासिद्धा
नकहतेहै वयराहा अरबोध अरउपरति य॰
हतीनोपरस्परसहायकहै सहतउएपकर
लोतीनोएकत्रहोतेहै अरभेदउएपकरपर॰
स्परवियोगीहोतेहै अरइनोतीनोकेकारण॰
अरस्वरूप अरकार्य भिन्नभिन्ननिरूपणकर
नेहै यथावतशास्त्रकाअर्थविचारकरकहते
है मूलकारणजोहैवैराग्य तिसकाकारण
दोषदृष्टिहै अरवैराग्यकास्वरूपत्यागहै अ
रवैराग्यकाकार्यभो[illegible]विषेअदीनताहै इह
वैराग्यकाकारण अरस्वरूपअरकार्यनिरू

श्री॰
पं॰ द॰
१६२

162

पणआ अरु तत्वबोधका कारणआदितीनदिखा
वते है श्रवण मनन निदिध्यासन यह तीनोत
त्वबोधकाकारणहै अरु तत्वकालक्षस्वरूपनि
श्चयकरणा अरु जगतकोमिथ्यात्वनिश्चयक
रणा इह तत्वबोधकास्वरूपहै अरु बहुडुसंश
यविपर्ययनउदयहोना यह तत्वबोधकास्वरू
पहै अरु बहुडुसंशयविपर्ययनउदयहोना य
ह तत्वबोधकाकार्यहै उपरतिकाकारण स्व
रूपकार्य यह तीन दिखावते है यम अरु नियम
यह उपरतिकाकारणहै यम कहीये जो अ॰
हिंसा अरु ब्रह्मचर्य अरु सत्यवचनबोलना इ॰
सते आदि अरु नियम कहीये जो गुरुसेवा अरु॰
पवित्रपणा इसते आदि लेकर धर्म यह उपरति
काकारणहै अरु चित्तकी वृत्तिएकाग्रतिनक
रणी अरु ध्येयकाजोनिर्विकल्पसमाधिकरणी ।
यह उपरतिकास्वरूपहै अरु व्यवहारकाना॰
श उपरतिकाकार्यहै यह तीनो भिन्नभिन्न ।
निरूपणकीये बातीसब भलाजी यह तीनो
एकसमानहै अथवा किसीकी अधिकताहै
उत्तर देवारी तत्वबोधप्रधानहै काहेतेजो॰

उरकी अपेक्षा विना ही साक्षात मोक्षदायक है अ
रु वैराग्य उपरति यह दोनो बोध के उपकारक
हैं अर्थ क्या जो बोध की उत्पत्ति अरु स्थिति वि·
षे इन दोनो की अपेक्षा होती है जहा अनेक ज
न्मो के पुण्यपुंज होती है तहां इन दोनो पक·
र्ष स्थित होती है अरु जहां प्रतिबंधक कहु होता·
है तहां तीनो विक्षेपक का प्रतिबंध होता है ज
हां वैराग्य अरु उपरति पूर्ण होवै अरु तत्वबोध
का प्रतिबंध होवै तिस पुरुष को मोक्ष नही सि
द्ध होता है वाहीयम्म भलाजो उपरति अरु वैरा
ग्य निःफल होये उत्तर ऐसा ही वैराग्य अरु उ·
परतिवान पुरुष को पुण्य लोकों के प्राप्ति हो
ती है उपरति अरु वैराग्य के बल कर कर ऐसी
भगवान गीता विषे कहा है अरु जहां तत्वबोध
संपूर्ण होता है अरु वैराग्य उपरति का प्रतिबं
ध होता है तिस पुरुष को मोक्ष निश्चय कर सि
द्ध होता है पर जीवन्मुक्ति का अभाव होता है·
अरु वैराग्य पूर्ण तत्वबोध अरु उपरति की अ·
वधि दिखावते है जब इह पुरुष अरु सलोक की
भी तृणवत मानता है तब वैराग्य की अवधि

पूर्णहोतीहै अरुजबदेहात्मकीन्याई परमात्म॰
कीविषयदृढप्रतीतिहोतीहै तबतत्वबोधकीअ
वधिपूर्णहोतीहै अर्थका जोजैसेअज्ञानअव॰
स्थाविषे देहविषे दृढप्रतीतहोतीहै क्याजो॰
मैहों तैसेहीकूटस्थब्रह्मविषेदृढप्रतीतहोते॰
है क्याजोमैकूटस्थब्रह्महों संशयविपर्ययतेर
हित तबतत्वबोधकीअवधिपूर्णहोतीहै अब
जबसुषुप्तिकीन्याईसर्वविश्वकाविस्मरणहो
जातेहै तबउपरतिकीअवधिपूर्णहोतीहै ।
अपनीअपनीबुद्धिकरकरइनतीनोंकोअंत
नरतेरतन अवांतरभेदनिश्चयकरणेयोग्यहै
बादीप्रश्न भलाजो तत्वबोधवानोंकोभी रागा
दिकोंकीप्राप्तितैज्ञानकोभीमोक्षकारणनहु
आचाहीये उत्तर हेवादी रागादिकोंकीप्राप्तिप्रा
रब्धकरहोतीहै पररागादिकोंकीप्राप्तिमुक्ति॰
काप्रतिबंधनहीहै अरुप्रारब्धकर्मनानाप्रका
रहे तिसप्रारब्धकर्मकरज्ञानवानोंकीप्रवृत्ति॰
भीनानाप्रकारहोतीहै परशास्त्रअर्थविषेज्ञा
नीयोंकोंभ्रमनहीकरणा अर्थकाजोतत्वबो
धविषेसंशयनहीकरणा अपनेअपनेकर्मके

अज्ञसार वर्तमान जो है ज्ञानी तिनका निश्च
य एक समान है अरु अज्ञ भी एक समान है।
सर्व शास्त्र का सिद्धांत इही है प्रकरण का ता
त्पर्य कहते हैं जगत रूपी चित्र जो है नाना प्र
कार सो चेतन रूपी वस्त्र विषे स्थित है तातें
तिस जगत को माया मात्र जान कर के चेत
न ब्रह्म विषे दृढ निश्चय करते हैं अथ ग्रंथ
अभ्यास फल कहते हैं इह चित्रदीप नामा।
ग्रंथ है तिस को जो ज्ञानी पुरुष विचारवान
है वारंवार विचार करि हित जगत रूपी चि
त्र के देखते होये भी पूर्व की न्याई मोह को।
प्राप्त न होवेगा अर्थ का जो जैसे अज्ञान अ।
वस्था विषे मोह होता है तैसे तत्वबोध प्राप्ति।
विषे नहीं होता इति श्रीमत्परमहंस परिव्रा
जकाचार्य श्रीभारतीतीर्थ विद्यारण्य मुनी।
श्वर किंकरेण रामकृष्ण विदुषा विरचिता ता
त्पर्य बोधनी नामकं चित्रदीप व्याख्याकस

माप्तम ॥ हरिः ॐ तत्सत

श्री·
पं·ट·
१४
164

ॐ अथ त्रिपतरीप भाषा लिख्यते रामकृष्ण·
जो है टीकाकार सो अपने गुरु को नमस्कार·
करता है गुरु जो है भारती तीर्थ अरु विद्यार·
एय मुनीश्वर तिनो दोनो को नमस्कार करक
र त्रिपतरीप ग्रंथ का व्याख्यान करते है गुरु
की अरु अग्रहर को प्रणाम कर आरंभ करते है
त्रिपतरीप नामा जो है प्रकरण तिसका आ
रंभ करते जो है श्री भारती तीर्थ गुरु सो आर
विषे बृहदारण्यक उपनिषद कर कर जीव
मुक्त पुरुष की त्रिपत व्याख्यान करते है अ
वरु पुरुष साक्षात्कार कर आत्मा को जानता
है कि इह कूटस्थ स्वरूप मै ही तब काइ इच्छा क
रै जो सर्व इच्छा का मूल अविद्या नाश भयी है·
अरु किस कामना के निमित्त इच्छा करै जो सर्व
ही पदार्थ इंद्रजाल तुल्य है अरु शरीरो के ता·
पो कर कर्यो तपै जो शरीरो का स्वभाव होता·
एता है ऐसे ही इस श्रुति का तात्पर्य भली प्रका
र इस त्रिपतरीप ग्रंथ विषे विचारते है तिस
तात्पर्य कर कर जीवन्मुक्त पुरुष भी त्रिपतरु
ति प्रसिद्ध प्रगट करते है अरु व्याख्यान के पंच

लक्षणहै एकपदछेद अर्थकाजो पदभि
न्नभिन्नकरणे अरु समासपदकाअर्थप्रगट
करणा अरु तीसराविग्रहकहीये अर्थको
याजो बहुअर्थपदमैकरणा अरु चौथा
पदकोवाक्याविषेमेलणा अरु पंचमासमा
धानकहीये अर्थकीआजोतात्पर्यसिद्धक
रणा इनांपंचलक्षणोकरकेतिअर्थप्रग
टकरकहतेहै आदविषेसृष्टिउत्पत्तिसंबं
पकरकहतेहै सतचितआनंदरूपजोहेब्र
ह्म तिसकेप्रतिबिंबकरसंयुक्तजोहेप्रकृ
ति सात्विक राजस तामस स्वरूप सोजग
तकाउपादानकारणहै अरु सोप्रकृतिदो
प्रकारकीहै एकसत्वसिद्धहे अर्थकाजो
केवलसत्वगुणस्वरूपहै अरु दूसरीअविशु
द्धसत्वहै अर्थकिआ जोसत्वतामससंयुक्त
है जोसत्वशुद्धहै सोमायाकहिए अरु जो
अविशुद्धसत्वहै सोअविद्याकहिए जोमा
याविषेप्रतिबिंबितचेतन्यहै सोईश्वरक
हिये अरुअविद्याविषेप्रतिबिंबतजोहैचे
तन्य सोजीवकहिये ऐसेजीवईश्वरमा

श्री॰ कारकल्पितकहतेहैं अरजीवईश्वरकर
पं॰ ट॰ संपूर्णजगतकल्पितहै संकल्पतेआदिलेक
१६५ रजीवस्वरूपकरप्रवेशपर्यंतजगतईश्वर॰
165 करकल्पितहै अरजाग्रतअवस्थातेआद॰
लेकर अरमुक्तिपर्यंत जगतजीवकरकल्पि
तहै सोजीवशरीरकोआश्रयकरकरमाया
करमोहितहुआ सर्वव्यवहारकरताहै ।
वस्त्रअन्नपानतेआदलेकरविचित्रभोगोक
र जाग्रतविषेतृप्तहोताहै वहुरअपनीअ॰
विद्याकरकल्पितजोहै स्वप्नअवस्था तिस
विषेसुखदुःखदोकाभोक्ताहोताहै अरव॰
हुरसुषुप्तिकालविषे सर्वव्यवहारलीनहो
येते सुखरूपहोयस्थितहोताहै अरवहुर
प्रारब्धकर्मकीप्रवलतातेसुषुप्तितेजाग्रत
कोप्राप्तहोताहै अरजवइहज्ञानप्राप्तहोता
है तवमुक्तहोताहै सोज्ञानक्याहै जोजाग्र
तअरस्वप्न अरसुषुप्तितेआदलेकरजोहै
प्रपंच तिससाक्षीचेतन्यकरप्रकाशहोता
है सोब्रह्ममेहों ऐसेजानकरसर्ववंधनोते
मुक्तहोताहै अवपूर्वश्लोककाअर्थकहे

तेहै भ्रमकाअधिष्ठानभूतजोहैआत्माकूट-
स्थ सोअसंगचैतन्यरूपहै सोतादात्मअध्या
सकरबुद्धिकोसाथकल्पितसंबंधकर जी
वभावकोप्राप्तहोयकरपुरुषशब्दकरकही
ताहै अर्थकीआ सोबुद्धिआदिकोकाअधि
ष्ठानजोहैकूटस्थचैतन्य सोबुद्धिविषेप्रति
बिंबभावकरस्थितहोआहोआ पुरुषशब्द
करकहीताहै भलाजी श्रुतिविषे पुरुष
शब्दकरकेवलचिदाभासरूपजीवकहना
योग्यहै इसअधिष्ठानभूतकूटस्थचैतन्य-
करकाप्रयोजनसिद्धहै उत्तर येवादी अ-
धिष्ठानकूटस्थसहितजोहैचिदाभास सोई
मोक्षअरस्वर्गादिकोविषेअधिकारीहोता
है केवलचिदाभासअधिकारीनहीहै का
हेतेजोअधिष्ठानतेरहितभ्रमकीसिद्धिक
दाचितनहीहोते तबइहजीवकूटस्थसहि
तजोहैचिदाभास सूक्ष्मस्थूलशरीरसहित
काआत्मत्वकरअंगीकारकरताहै तबइह
अभिमानकरताहै जोमैसंसारीहों अरज-
बइहचिदाभाससहितजोहैदोनोशरीर

श्री॰ तिनोंकोमिथ्यात्वकेज्ञानकरअनादरकरता
पं॰द॰ है अरअधिष्ठानभूतजोहैकूटस्थचैतन्य तिस
१९९ कोस्वरूपकरअंगीकारकरताहै तब अैसेमा
नताहै जोमैंअसंगचैतन्यरूपहों अैसेबोधको
166
प्राप्तहोताहै वादीप्रश्न भलाजी असंगचैत·
न्यकूटस्थविषेअहंप्रतीतकानतोअभावहै त
बकैसेकहताहै जोमैंअसंगकूटस्थहों उत्तर
हेवादी सावधानहोकरश्रवणकर अहंका
रतीनप्रकारकाहै एकमुख्यअहंकारहै अ·
रदोअमुख्यहैं अन्योन्यअध्यासरूपकरकूट·
स्थअरचिदाभासको एकताकरजोअहंता
कोव्यवहारहै सोमुख्यअहंकारकहिये का
हेतेजोकूटस्थअरचिदाभासकेज्ञानतेरहि
तजोहै अज्ञानीलोक तिनोंकरसोअहंकार
व्यवहारविषेजोडीताहै अबअमुख्यअहंका
रदिखावतेहैं जबकूटस्थअरचिदाभासको
ज्ञानकरभिन्नभिन्नव्यवहारविषेजोडीताहै
तबअमुख्यअहंकारकहेहैं काहेतेजोत·
त्ववेत्ताउत्तमहैं सोकूटस्थअरचिदाभासको
वैदिकलौकिकव्यवहारविषेभिन्नभिन्नजो

उताहै अर्थकाजो कूटस्थअरचिदाभासके
ज्ञानतेसून्यजोहैअज्ञानी सोअध्यासअहंकार·
कोजोडतेहै अरयहव्यवहारतत्ववेत्तापुरुष
काहै सोकहतेहै जोज्ञानीपुरुषहै सोकूट·
स्थतेभिन्नचिदाभासकोविचारकरलौकिक
व्यवहारविषेजोडतेहै जोमैजाताहोदेखता
हो इत्यादिकलौकिकव्यवहारविषेकेवल
चिदाभासकोजोडताहै अरवहुज्ञानीपुरु·
षशास्त्रदृष्टिकरकेवलकूटस्थविषेअहंका
रकोजोडताहै जोमैअसंगहो अरचैतन्यआ
त्माहो इत्यादिकव्यवहारशास्त्रदृष्टिकरक
रताहै तातेवैदिकदृष्टिकरअध्यासअहंकार
कूटस्थविषेसंभवहोताहै वादीप्रश्न भलाजी
तमोकहाजोकूटस्थ अरचिदाभासविषेज्ञा
नीपुरुषविचारकर अध्यासअहंकारजोड·
ताहै सोसंभवनहीहोता काहेतेजोज्ञान
अरअज्ञानचिदाभासहीकोहै कूटस्थआत्मा
कोनहीसंभवहोते तातेकैसेचिदाभासज्ञा
नताहै जोमैकूटस्थहो उत्तर हेवादी यहदो
षनहीहै काहेतेजोचिदाभासअरकूटस्थ

श्री॰
पं॰ ट॰
१९७

कोवास्तवतेएकहीस्वभावहै जैसेहैसोविदा॰
भास विचारकरमिथ्याहै तातेशेषकूटस्थही
रहा कोजैसेदर्पणविषैमुखकेप्रतिबिंबभाव
सतवरूपमुखहै वादीप्रश्न जबविदाभासमिथ्या
होआ तबविदाभासकेआश्रयजोहैज्ञान सोभी
मिथ्याहूआचाहिये उत्तर रेवादी इहहमाराइ॰
ष्टहै काहेतेजोकूटस्थतेभिन्नसभहीमिथ्याहै॰
जैसेजेवडीविषैकल्पितसर्पकीजोहैगति सो
वास्तवअंगीकारकरीलीनही वादीप्रश्न भ॰
लाजी जबज्ञानमिथ्याहोआ तबसंसारकीनि
वृत्तिभीनहीयेचाहिये उत्तर रेवादी जैसेस्वप्न॰
विषैदेखेजोहैव्याघ्रसर्पतेआदिलेकर सोनि॰
द्राकेनिवर्तहोयेतेनिवर्तहोजातेहै तैसेही॰
बोधकरभीसंसारनिवर्तहोजाताहै जैसेमाय॰
तहोताहै तैसेतिसकोबलदेइतीहै इहलो॰
कविषैप्रसिद्धहै तातेजैसेसंसारकल्पितहै
तैसेहीबोधकरसोनिवर्तहोताहै तिसकार
णतेविदाभासकानिजस्वरूपकूटस्थहै ता
तेतिसकूटस्थकोविचारकरकरविदाभास
अपनेस्वरूपकूटस्थकोस्वरूपभावकरजान

(167)

नैयोगपहै जैसे लोकविषे प्रसिद्ध देहादिकोवि
षे संशयविपर्ययतेरहितज्ञानहोताहै तैसेही
जबकूटस्थविषे संशयविपर्ययतेरहितबोध
होताहै तबअपरोक्षज्ञानकहीताहै इहबो॰
धमोक्षकासाधनहै इसविषे आचार्यवाकप्र
माणहै देहात्मकीन्याई जबदेहात्मकोबोध
करस्वरूपचैतन्यविषे दृढबोधहोताहै तिस
पुरुषकोसाक्षात्मोक्ष इच्छातेरहितहै तोभी
मुक्तहै काहेतेजो संसारकाकारणअज्ञान ।
तिसकोज्ञानकरनिवर्तभयाहै वादीप्रश्न भला
जी जैसेघटविषे अपरोक्षज्ञानहै तैसेही आत्मा
कूटस्थकाज्ञानभी अपरोक्षहोआ उत्तर देवादी
इहतेरा कहणा हमाराइष्टहै काहेतेजोसाध
नाकी अपेक्षाबिनाही आत्माचैतन्यस्वयंप्रका॰
शहै तोतेतिसविषे अपरोक्षज्ञान अंगीकारक
रणाहमाराइष्टहै वादीप्रश्न भलाजी जबचै॰
तन्यआत्मास्वयंप्रकाशभावकरसर्वदाअपरो
क्षहीहै तबतिसविषे परोक्षज्ञान अरअपरो
क्षज्ञानकाकहनातुमाराव्यर्थहूआ उत्तर ।
देवादी परोक्षजोहै ज्ञान अरअपरोक्षजोहै ।

श्री· विज्ञान सोदोनोहीसदाअपरोक्षरूपआत्माविषे
पं·ट· संभवहोतीहीहै जैसेदशमपुरुषविषेहै सोद
१६८ शमपुरुषदृष्टांतश्रवणकर एकसमाविषेद
168 शपुरुषएकत्रहोकरविदेशकोगमनकरतभ
ये अरमार्गविषेएकनदीकोउलंघकरपारको
प्राप्तभये एकस्थानविषेस्थितहोकरअपनी·
सीताकरतभये जोहमदशहीहै अथवाको
ऊपुरुषबहाहै तबजोगणनहाराहै सोआप
कोनजानतभया अरपरस्परकहणेलागे जो
दशमपुरुषनहीहै गणनहारेपुरुषकोअप
नाअज्ञानहोयतभया अर्थकाजोतिनोनवही
पुरुषोकोदेषताहैआभी आपकोनजानतभ
या जोदशमपुरुषमेहीहै ऐसेदशमपुरुष·
विषेअज्ञानकोदिवायकर अवरणदिषाव·
तेहै तबऐसेदशमपुरुषकहनभया जोदश
मपुरुषनहीहै अरनहीभासता अवयहनजा
नतभया जोदशमपुरुषविषेनाश ननभो
तिकिसनेसिद्धकीयाहै इहअज्ञानकाकार्य
आवरणकहीताहै अवविक्षेपकारूपकह·
तेहै तिसतेउपरंतअज्ञान अरआवरणक

इच्छाकायाजोहैउत्तमपुरुष सोकहतभया।
जोउत्तमपुरुषनदीप्रवाहविषेडूबकरमरतहै
तभया ऐसेकहकरसोउत्तमपुरुषकहतभ
या जोउत्तमपुरुषनदीप्रवाहविषेडूबकर।
अपनेअपनेशरीरकोताडनाकरतभये अर।
नानाप्रकारकेशोकपकरीनाहै अरउत्तम
पुरुषकाअपरोक्षज्ञाननिरूपणकरतेहै।
तिसतेउपरांतजिसस्थानविषेसोरुदनकरते
थे तिसस्थानविषेएकबुद्धिवानपुरुषआय
भया अरतिनकीकथाश्रवणकरकहतभ।
या जोउत्तमपुरुषमृआनहीजावताहीहै।
ऐसेश्रवणकर तिनोकोअपरोक्षज्ञानप्राप्तभ।
या अरजानतेभये तिसपुरुषकोवचनकर
जोउत्तमपुरुषमृआनही जीवताहीहै अपरो
क्षभावकरजानतभये जैसेस्वर्गादिकोकाज्ञा
नपरोक्षहै अरअपरोक्षहै अरअपरोक्षज्ञान
कहतेहै तबउहउत्तमपुरुषप्रश्नकरतभया
कीहेभगवानउत्तमपुरुषकह्याहै तबतिस
नेकहा जोतेजैसेपूर्वसाख्याकरताथा तैसे
बड्डकरकतेअरुबुद्धिवानपुरुषकोवचन।

श्री॰ श्रवणकरगणताभया अरुकहतभया किहेभ॰
पं॰द॰ गवानदशमकहाहै तवतिसनेउत्तरदीया कि
१६९ दशमपुरुषतेंहीहै ऐसेवचनश्रवणकरदेख॰
169 तभया जोदशमपुरुषमैंहीहों अपरोक्षज्ञानक
रजानताभया अरुरुदनकोत्यागकरजानता
भया हर्षमानहोतभया ऐसेदृष्टांतविषेअज्ञा
न अरुआवरण अरुविक्षेप अरुपरोक्षज्ञान
अरुअपरोक्षज्ञान अरुहर्ष अरुशोककोनाश
इहसप्तअवस्थानिरूपणकरकर अवदृष्टांत॰
विषेसप्तअवस्थानिरूपणकरतेहैं प्रथमअ॰
ज्ञानअवस्थाआत्माविषेदिखावतेहैं तवइह॰
चिदाभाससंसारविषे आसक्तहोकरस्वयंप्र॰
काशजोहै अपनास्वरूपकूटस्थ तिसकोन॰
हीजानता तवइहअज्ञानकरकेऐसेमानताहै
जोकूटस्थनहीहै अरुनहीभासता सोआवर
णकहीये अरुजवआवरणकरआत्माकोऐ
सेमानताहै जोमैंकरताहों अरुभोगताहों
तवविक्षेपकहीये अरुजवसतगुरुकेउपदे
शकरऐसेमानताहै जोकूटस्थहै सोइहउ
आसक्तभावनापरोक्षज्ञानकहीये अरुजवस

एकविचारजोहै मनन अरुनिदिध्यासन सोजब
दृढअभ्यासकरसिद्धहोतेहै तबआत्मसाक्षात्का
रकरअपरोक्षज्ञानकहीताहै अरुतबहीकरता
भोगता तेआदलेकरशोकसमूहकोत्यागता
है सोइतसर्वशोकनाशकहीये अरुआपको
शुद्धस्वरूपजानकरकृतकृत्यमानताहै अरुअ
तिआनंदकोप्रापतहोता तबइहहर्षकहीये अ
रुनिरंकुशत्रिपतभीइसीकोकहतेहै अज्ञान
अरुआवरण अरुविक्षेप अरुपरोक्षज्ञान अरुअ
परोक्षज्ञान अरुसर्वशोकनाश अरुनिरंकुश
त्रिपता इहसप्तअवस्थाकहीये निरंकुशत्रिप
तकहीये जोजिसत्रिपतकोप्रापतहोइकरबड़
उकदाचितनाचलायमानहोवे अरुअवरअवस्था
पर्यंतसबहीसांकुशत्रिपतकहीये तोतइहनि
रंकुशत्रिपतकहीये काहेतेजोयातेपरेअवर·
नहीहै वादीप्रश्न भलाजी जबइहसप्तअवस्था
आत्माकोतमोश्रेणीकारकीआ तबकूटस्थवि·
कारवानहोआचाहिये उत्तर वेदादी इहसप्त·
अवस्थाचिदाभासहीकोहै कूटस्थकोनहीहै।
अरुकैसेहैसप्तअवस्था जोबंधमोक्षकाकारण

श्री॰ है तिनोविषेतीनअवस्थाजोहै अज्ञान आवर॰
पं॰ ८॰ ण विक्षेप सोबंधकाकारणहै अरुपरोक्षअप॰
१७॰ रोक्षज्ञान मोक्षकारणहै अरुसर्वशोकनाश॰
अरुनिरंकुशतृप्ति सोमोक्षकास्वरूपहै अ॰
170 ज्ञानतेआदितीनअवस्थाविस्तारकरनिरूपण
करतेहैं आत्मतत्वविचारतेसर्वथासेजोव्यवहा
रहै जोमैनहीजानता इसव्यवहारकाकारण
अज्ञानीकहिये अरुशास्त्रतेविपरीतजोकेव॰
लतर्कविचारकरकहताहै जोकूटस्थनहीहै
अरुनहीभासता इसविपरीतव्यवहारकारण
आवरकहिये शरीरादिकोसहितजोहैचिदाभा
सरूप सोविक्षेपकहिये अरुकर्ताभोक्तातेआ
दलेकर जोलोकसमस्तसंसारहै सोचिदाभा॰
सकोबंधकाकर्ताहै वादीअत्र भलाजी सर्वत्र
सकहाके समस्तअवस्थाचिदाभासकोहै सोआ॰
सिद्धहै काहेतेजोविक्षेपते सर्वअज्ञानअरुआ
वरणसिद्धहै तातेविक्षेपरूपचिदाभासकोक
हरण असिद्धहै उभय देवारी यद्यपि विक्षेप॰
तेसर्वअज्ञानअरुआवरणसिद्धहै तोभीसम॰
अवस्थाअसंगकूटस्थकोवर्ततीनहीहै तोते

विदाभासकोसमअवस्थासिद्धहै वादीप्रश्न भ॰
लाजी अवस्थावान चिदाभासरूपविक्षेपको॰
तोअज्ञान अरुआवरणतेपूर्वअभावथा केसे॰
तिसकोतमसम अवस्थासिद्धकहतेहो उत्तर
देवादी विक्षेपकीउत्पत्तितेपूर्वभीविक्षेपकासं
स्कारकाथाही तातेतिसविषेसमअवस्थाका
विरोधनहीहै वादीप्रश्न भलाजी संस्कारद्वा
रातमविक्षेपविषेसमअवस्थाकहीहै परअ॰
थकरअधिष्ठानविषेसिद्धहोतीहै उत्तर देवा
दी संपूर्णअवस्थाब्रह्मविषेआरोपितहै तातें
ब्रह्मविषेवास्तवतेकोउनहीहै अरुकल्पितभा
वकर तोसर्वहीब्रह्मविषेपाईतीहै वादीप्रश्न
भलाजी यद्यपि ब्रह्मविषेअवस्थासर्वहीआरो
पितहै तोभीवंधअरुमोक्षअवस्थातोजीववि॰
षेसिद्धहैतातें उत्तर अवस्थाविक्षेपतेआदलेक
रजीवविषेहीहै ब्रह्मविषेनहीहै तवअज्ञान
अरुआवरणभीएवंअवस्थाजीवविषेनिश्चय
करसिद्धहै वादीप्रश्न भलाजी तवअज्ञान॰
काआश्रयभूतब्रह्मसर्वआचार्योनेकहाहै ।
उत्तर देवादी अज्ञानकेअभिमानतेजीवको

श्री॰ अज्ञानअवस्थावानकहतेहैं अबअज्ञकाकारण
पं॰ ८॰ जोहै परोक्ष अपरोक्षज्ञानकहतेहैं जबपरोक्ष॰
१२ अपरोक्षज्ञानकरअज्ञानकानाशहोताहै तब॰
171 अज्ञानकाकार्यजोहैआवरणनाशनभानरू
पसोभीनष्टहोयजाताहै परोक्षज्ञानकरआव
रणकाकारणजोहैअज्ञान सोनष्टहोजाताहै
अरअपरोक्षज्ञानकरआवरणभीनष्टहोजाता
है अज्ञानअरआवरणकोनाशहोयेतेजीवत्व
भावभीनष्टहोजाताहै अरकर्ताभोक्तातेआदि
लेकर शोकरूपसंसारभीनिवर्तहोयजाताहै
यहीशोकनाशअवस्थाकहीये अबनिरंकुश
त्रिपतअवस्थाकहतेहैं सर्वसंसारनिवर्तहोये
ते नित्यमुक्तस्वभावआपकोजानताहै अब॰
इडशोकनहीउदयहोना यहीनिरंकुशत्रिप
तकहीये वार्तीप्रश्न भलाजी एवंश्रुतिकाप्र
संगत्यागकरसप्तअवस्थानिरूपणकरणा इ
हप्रसंगविषेआजोगाहै उत्तर वेवार्ती निसप्र॰
वेश्रुतिकातात्पर्यहीकहाहै अपरोक्षज्ञान
अरशोकनिवृत्तिजोहैदोनोअवस्था सोईजी
वविषेश्रुतिकहतीहै वार्तीप्रश्न भलाजी।

अपरोक्षज्ञानविषे आत्माआनिकरतीहै तो
तेपरोक्षज्ञानआत्माविषेहोनेयोग्यनहीहै ।
उत्तर देवादी अपरोक्षस्वरूपजोहैआत्मा ।
सोप्रकाशहै अरुआत्माकोअपनेप्रकाशभा
वविषेइतरकीअपेक्षानहीहै अरुपरोक्षज्ञा
नसमाविषेभीआत्मास्वभावस्वप्रकाशतास
मानहीहै तोतेब्रह्मविषेस्वप्रकाशविरोध
विनाहीसिद्धहै वादीप्रश्न भलाजी कूटस्थ
ब्रह्मविषेपरोक्षज्ञानकहोतेहै उत्तर देवादी
अहंब्रह्म अस्मिज्ञानतेपूर्वजोहैज्ञानसोअ
स्तिहै ऐसेआसक्तभावनाकोपरोक्षज्ञानक
हतेहै अरुजोतूकहैजो यहज्ञानभ्रमरूप
हैतो तूअपनातात्पर्यकहो किसकारण
तेपरोक्षज्ञानकोभ्रमकहताहै क्याबाध
रूपहै जोपरोक्षज्ञानकरपरोक्षकाविषे
बाधहोजाताहै अथवापरोक्षरूपते अथ
वाअपरोक्षग्रहणजोगआत्माविषेपरोक्ष ।
अथवाब्रह्मअंशकाग्रहणहोताहै अरुकू
टस्थनहीग्रहणहोता इनोचतुर्थप्रश्नोविषे
तेकिसकरपरोक्षज्ञानकोभ्रमकहताहै ।

श्री. जोतेकहैजोजोबाधरूपतेतोश्रैसेमतकहो ।
पं.द. काहेतेजोइसकाबाधनहीहोता जबश्रैसेक ।
१७२ हूप्रमाणहोवै जोब्रह्मनहीहै तबइसपरोक्ष
काज्ञानबाधहोवै परवेदांतनेप्रबलप्रमाण
172 इसकहूनहीदेखते तातेपरोक्षज्ञानबाधन
हीहोताहै अरजोपरोक्षस्वरूपतेभ्रमकहै ।
तोतुम्हकोबडादोषहूआ काहेतेजोपरोक्ष ।
ज्ञानकोभ्रमकहै तोस्वर्गभीपरोक्षज्ञानकर
सिद्धहै तातेस्वर्गभीभ्रांतहोआचाहिये ताते ।
स्वर्गज्ञानकीन्याई इहभीज्ञानभ्रमनहीहै ।
अरुजोतेकहैजोअपरोक्षज्ञानग्रहणजोग
आत्माविषेपरोक्षज्ञाननहीसंभवहोता तो
अैसीमतकहो काहेतेजोअपरोक्षग्रहणयो ।
गआत्माविषे परोक्षज्ञानभ्रमनहीहै आस
क्तभावनारूपपरोक्षज्ञानकाब्रह्मविषेसंभव
हीहै अरजोतेकहैजो यद्यपिपरोक्षज्ञानकर
ब्रह्मविषेआसक्तभावनाहोतीहै परकूटस्थ
काग्रहणनहीहोता तातेपरोक्षज्ञानभ्रमहै
घटादिकोकाज्ञानभीभ्रमहोआचाहिये ।
वादीप्रश्न भलाजी घटतोसावयवहै तहां ।

अवयवकीग्रहणकरअवयवकाग्रहणअसे
भवहै पवनस्ततोनिरवयवहै तिसकोअव
यवकाग्रहणकैसेहै उत्तर वेदादी निरवय
वकोभीसावयवकाभावउपाधिकरहोता।
है तातेअसतअंशपरोक्षज्ञानकरनिवर्त।
होजातीहै अरतैसेहीआवरणअंशअपरोक्ष
ज्ञानकरनिवर्तहोतीहै जैसेदशमपुरुष।
दृष्टांतविषेपरोक्षज्ञानकरआसक्तभावना
होतीहै तैसेहीवाक्यज्ञानकरभ्रमतेरहित
परोक्षज्ञानहोताहै वादीप्रश्न भलाजी जो
वमहावाक्यकरपरोक्षज्ञानउदयहोताहै
तबअपरोक्षज्ञानकिसतेउदयहोताहै उत्त
र वेदादी विचारसहितमहावाक्यतेअपरो
क्षउदयहोताहै जैसेश्रुतिकहाहै तैसेही
महावाक्यकोतात्पर्यसहितदृढसम्यकवि
चारकीयेते कूटस्थतेअभेद ब्रह्मसाक्षात्का
रहोताहै जैसेदशमपुरुषतूंहीहै इसवा।
क्यकोश्रवणकर जबदशमपुरुषमेंही।
हौं जबदशमपुरुषकोपरोक्षज्ञानभया।
था तबप्रश्नकरतभया किहेभगवनदश

श्री॰
पं॰ ट॰
१७३
173

मपुरुषकहाहै तबमहापुरुषकेवचनकर ।
आपकोजाना जोदशममैहीहों तबतिसम
हापुरुषनेकहा किदशमपुरुषतूंहीहै ।
जबइसवाक्यतेउदयहोयेजोहैज्ञान सोक
दाचितकिसीकरबाधनहीहोता आदिम
ध्यअंतगणनेकरतिसदशमपुरुषकोआ ।
पविषेसंशयनहीहोता जोमैदशमहों ।
किनही ऐसेकदाचिततिसकोभ्रमनहीहै
यहसपूर्णदार्ष्टांतविषेजोडनेहै हेशिष्य ।
जगतउत्पत्तितेपूर्वएकसतरूपब्रह्महीथा
तबऐसेश्रुतिकोश्रवणकर ब्रह्मविषेआ
स्तिकभावनाकरताहै तबपरोक्षज्ञानउद
यहोताहै अरुजबतत्वमसिवाक्यकर ।
अद्वैतब्रह्मकोआत्मास्वरूपकरसाक्षात्कार ।
करताहै तबअपरोक्षज्ञानउदयहोताहै अर
अन्नमयादिकोकोशोंकोआदिमध्यअंतविचा
रकरअनात्मभावनिश्चयकरअरस्वरूपविषे
कूटस्थब्रह्मकोज्ञानकदाचितचलायमानन
हीहोता ऐसेअपरोक्षज्ञानकीस्थितिहै वादी ।
प्रश्न भलाजी प्रथमकेवलवाक्यकरपरोक्ष

ज्ञानउदयहोताहै अरुविचारसहितवाक्यकर
अपरोक्षउदयहोताहै ऐसेतत्वमाकहोतेनिश्चय
कीयेहै उनर रेवादी तैतिरीश्रुतिकेविचार
करनिश्चयकीयाहै सोश्रवणकर भृगुनामा
जोहैऋषि सोपितातेऐसेश्रवणकरतभया ।
किहेपुत्र जिसतेयहसर्वभूतउत्पत्तिहोतेहै ।
अरुजिसकेआनंदकरयहजीवतेहै अरुजि॰
सविषेसर्वहीलीनहोतेहै तिसब्रह्मकीजज्ञा
साकर ऐसेश्रवणकर तिसकोपरोक्षज्ञान॰
उदयभया हठविचारकरब्रह्मसाक्षात्कार॰
होताभया वादीपक्ष भलाजी इसप्रकरणवि
षेतेब्रह्महै ऐसेतोउपदेशनहीहै काहेतेजो॰
तत्वमसिवाक्योकातिसउपदेशविषेअभावहै
तातेकेसेभृगुकोसाक्षात्कारहोताभयाहै उन
र रेवादी यद्यपि तत्वमसिआदिवाक्योकापिता
वरणभृगुकोउपदेशनकरतभया तोभीअ
न्नमयआदिकोशोकाविचारउपदेशकरतभ
या तातेकोशोकाविचारकरआत्मासाक्षा॰
त्कारभृगुकोहोतभया वादीपक्ष भलाजी
अन्नमयादिकोकोशोविचारकरस्फटिकका

श्री. पं. द. १२४ साक्षात्कारहोवे परब्रह्मकासाक्षात्काररूपजोकै
सेहोतभया उत्तर रेवाटी कूटस्थब्रह्मकोभीहै तो
तेपंचकोशविचारकरआनंदआत्माकोसाक्षात्का
ररूपजोहोताभया सोआत्माहीब्रह्मआख्यानक
रपंचकोशकोअंतरविराजमानहै वादीप्रश्न.
174 भलाजी ब्रह्मलक्षणविषेआत्माकोनहै उत्तर
रेवाटी सत्यअरज्ञान अरअनंतलक्षणब्रह्महै
सोईपंचकोशकेअंतरश्रुतिकरकहाहै ऐसेते
त्तरीयश्रुतिकेविचारकरपरोक्षज्ञानरूपदेत.
विचारसहितवाक्यकरअपरोक्षज्ञानकरइकर.
अवछांदोक्तश्रुतिकरदिखावतेहै इन्द्रब्रह्माके
वचनकरपरोक्षज्ञानकरजानतभया कैसेजो
यहीआत्माअखंडब्रह्महै ऐसेश्रुतिकरजानत
भया तवसाक्षात्कारकेनिमित्तचारवारब्रह्मा
केसमीपजायकरब्रह्मचर्यकरतभया ऐसे.
छांदोक्तश्रुतिकेअष्टमेध्यायविषेश्रवणकरी
तीहै अवतैत्तरीयश्रुतिकरदिखावतेहै इह.
सपूर्णजगतउत्पत्तितेपूर्वआत्माहीथा ऐसेप.
रोक्षब्रह्मलक्षणकहाहै अरज्ञानकासाधन.
जोहैवैराग्य तिसकीउत्पत्तिकेनिमित्तगर्भवा

सतेआदिलेकरदोषदृष्टिकेदिखायकरवहउप
ज्ञानब्रह्मश्रुतिदिखावतभई तांतेअवांतरवाक्
करपरोक्षज्ञानब्रह्महोताहै अवांतरवाक्यकही
ये जोद्वादशमहावाक्यतेभिन्नश्रुतिवाक्यहै अ·
रमहावाक्यतेअपरोक्षज्ञानउदयहोताहै वादी
प्रश्न महावाक्यविचारकरअपरोक्षज्ञानउदय·
होताहै इसमेक्याप्रमाणहै उत्तर वेदादी वा·
क्यवृत्तिग्रंथविषेप्रतिपादनकीआहै ब्रह्मकेअ
परोक्षज्ञानसिद्धकेनिमित्तमहावाक्यवृत्तिविषे
कहाहै इसीतेब्रह्मकेअपरोक्षज्ञानविषेविवा·
दनहीहै वाक्यवृत्तिविषेजोकहाहै सोदिखाव
तेहै अंतःकरणोपाधिकजोहैचैतन्य सोअहं·
ज्ञान अरअहंशब्दक आश्रयभावकरप्रतीत·
होताहै सोत्वंपदकावाच्यअर्थहै अवततपद
कावाच्यअर्थकहतेहै मायाउपाधिकजोहैचै
तन्य जोजगतयोअरसर्वज्ञताआदिधर्मोकर
संपन्नहै अरपरोक्षत्वधर्मकरसंपन्नहै सोततप
दकावाच्यअर्थहै प्रत्यकभावकरअपरोक्षभा
वकरएकताविषेविरोधहै अर्थकाजो त्वंप
दवाच्य अवततपदवाच्यकीएकतानहीसिद्ध

श्री· होती ताते लक्षणावृत्तिआश्रयकरणीयोग्यहै सो
पं·द· कौनहै सोश्रवणकर तत्वंअसिआदिवाकोविषेल·
१७५ क्षणाहै सोभागत्यागलक्षणाहै जैसेसोयंदेवद·
त इसवाकाविषेभागत्यागलक्षणाहै तैसेहीइ
175
हांभीभागत्यागलक्षणावनतीहै ताते जहतल·
क्षण अरअजहतलक्षणानहीवनती जहतल·
क्षणाकहिये जोसर्वअर्थकात्यागकरना जैसेगं
गाविषेग्रामहै ऐसेश्रवनकर जोबुद्धिवानपुरु·
षहोताहै सोऐसेकरताहैविचार जोगंगाप्रवाह
विषेग्रामनहीसंभवहोता ताते प्रवाहकोत्यागा·
करगंगातीरजहतलक्षणाकरलेताहै तैसे·
हीआत्माविषेभवनही काहेतेजो ततअरत्वंप·
दलक्षकीएकतासिद्धहै अरअजहतलक्षणा·
भीआत्माविषेनहीसंभवहोती अजहतलक्षणा
कहीए जोसर्वअर्थकाअंगीकारकरना जैसे·
लालीधावतीहै ऐसेश्रवणकर बुद्धिवानपुरु
षविचारकरताहै जोलालीगुणहै सोकिसीद्र
व्यकेआश्रयहोवेगा सोइसकाजोलालीगुण
युक्तअश्वहीधावताहै तैसेआत्माविषेनहीसंभ
वहोता काहेतेजोततत्वंपदपदार्थकरसंपन्नहै

अरत्वंपदषट्विकारसंपन्नहै तातेइनदोनोंके·
वाच्यपदकीएकतानहीहोती षट्ऐश्वर्यकहि
ए धर्म अरयश अरवैराग्य अरज्ञान अरश्री·
यजोहैलक्ष्मी अरमोक्ष इहषट्ऐश्वर्यहैं अरष
ट्विकारकहीये जन्म अरमरण अरक्षुधा ·
अरतृषा अरहर्ष अरशोक यहषट्विकारहै
इनोषट्ऐश्वर्यो अरषट्विकारोकरसंपन्नजोहै
ईश्वर अरजीव तिनोकीएकता अजहत्लक्ष
णाकरनहीसंभवहोती तातेभागत्यागलक्ष·
णासंभवहै भागत्यागलक्षणाक्याकहिये ·
जोषट्ऐश्वर्यआदिगुणईश्वरकेअरषट्विका
रआदिगुणजीवकेत्यागकरकेचैतन्यकीएक
ताकरनी जैसेदेवदत्तकेपूर्वऐश्वर्यगुणकर·
पाछेकेदारिद्रादिगुणत्यागकर देवदत्तशरी
रमात्रकेएकताहै तैसेहीततत्वंपदकील
क्षकीएकताहै वादीप्रश्न भलाजी गोआनय
इसवाक्यविषेलक्षणाविनाहीगऊकेआनन·
काबोधदेखीताहै तैसेहीलक्षणाविषे इहांभी
बोधसंभवकोनहीहोवे उत्तर देवादी संबंध
अरउपाधिकवाक्यअर्थइहांसंभवनहीहै अ

श्री॰ रहसोअखंडएकरसभावकरवाकाअर्थसहतउ
पं॰ ट॰ सष्टानेअंगीकारकीयाहै अखंडएकरसवाका
१२९ काअर्थकहतेहै जोअद्वैतआनंदरूपपरमात्मा
प्रत्यककूटस्थविषेप्रकाशताहै सोईबुद्धिआदि
176 कोकासाक्षीअद्वैतआनंदपरमात्माविषेप्रका
शताहै तातेकूटस्थहीब्रह्महै अरब्रह्महीकूट
स्थहै यहअखंडएकरसवाकाअर्थकहीयै ।
ऐसेअखंडअर्थबोधविषेकाप्रयोजनहै सोश्रव
णकर जवअखंडअर्थबोधहोताहै तवत्वंपद॰
कोजीवत्वभ्रमनिवर्तहोजाताहै अरततपदकी
ईश्वरपरोक्षतानिवर्तहोजातीहै तिसतेभीका
प्रयोजनहै सोश्रवणकर पूर्णआनंदएकरूप॰
करकूटस्थबोधविषेजीवन्मुक्तहोइविराजमान
ताहै वारीमल भलाजी शाहवलकरतोपरो॰
क्षज्ञानउदयहोताहै कैसेतमकहनेहो वाक
करअपरोक्षज्ञानउदयहोताहै उत्तर रेवारी
सिद्धांतज्ञानकरतेसूत्यहै जोगुरुमुखसहावा॰
कातेपरोक्षज्ञानकीइच्छाकरतेहै तिनेकोशा
ह्निसिद्धांतज्ञानहीशोभता ग्रंथकाजोसोउक
षअतिसाढहै वारीमल भलाजी शास्त्रकासि

होतद्वैसीहीहोवो परयुक्तकरवाक्यतेपरोक्षज्ञान
सिद्धहै जैसेवाक्यकरअपरोक्षज्ञानउदयभयाथा
तैसेहीतत्वंअसिवाक्यकरअपरोक्षज्ञानभीसि-
द्धहै स्वतसिद्धजोहैजीवविषेअपरोक्षता सोभी
महावाक्यकरनष्टहोजातीहै काहेतेजोजीव-
ब्रह्मस्वरूपकीवांछाकरताहै तिसतेरीजगत
तेइच्छायुक्तअतिवडीहै जेतककेहैयहमेराइच्छप-
तीहै तोश्रवणकर रेवादी तफइच्छावानकी-
वडीहइच्छाथीहै काहेतेजोनिरामूलहैजीवत्ववा-
ट सोभीनष्टभया अरतेरेप्रसादकरलौकिकव-
चनभीसिद्धहूआ वादीप्रश्न भलाजी सोपाधि-
कजोहैजीव तिसकोअपरोक्षवर्णती परब्रह्म-
तोनिरउपाधहै तोतेब्रह्मकोअपरोक्षतानहीसं-
भवहोती उत्तर रेवादी जीवकोब्रह्मकाजो-
ज्ञानहै सोपाधिकविषयहै तोतेब्रह्मकोभी
सोपाधिकभावसिद्धहै वादीप्रश्न भलाजी जी
वकोज्ञानकोसोपाधिकताकैसेहै अरब्रह्मते
यकोसोपाधिकताकैसेहै सोउपाधिदोनोकह
नीजोगहै उत्तर रेवादी जैसेजीवविषेअन्तः
करणउपाधिकासंयोगउपाधिहै तैसेहीब्रह्म
विषेअन्तःकरणकावियोगउपाधिहै वादीप्र

श्री· प्र भलाजी अंतःकरणके संबंधीजीवको तोउ-
पं·ट· पाधिवणतीहै अरअंतःकरणतेरहितब्रह्मको
१३३ तोउपाधियोगनहीहै उत्तर देवादी जैसे अंतःक
रणकेसंजोगउपाधिहै तैसेही अंतःकरणवियो
177 गभीउपाधिहै वादीप्रश्न भलाजी तोभीसंयोग
वियोगविषेतोविलक्षणतादेखीतीहै उत्तर ।
देवादी जैसे स्वर्णअरलोहकेजंजीरविषेभेदहै
परबंधनकरणेकोदोनोएकसमानहै तैसेही
अंतःकरणसंयोगअरवियोगविषेभीविलक्ष
णताहै तैतनेकरश्रुतिनिषेधरूपउपदेश ।
कीयाहै अरसर्वब्रह्मवाक्यकरविधिरूपउप-
देशकीयाहै परअर्थतात्पर्यदोनोकाएकसमा
नहै वादीप्रश्न भलाजी निषेधरूपउपदेश ।
करअहंकारकातोश्रुतिनेत्यागकहाहै तब
उरुषअहंब्रह्म असम्यकज्ञानकेसेहोया ।
उत्तर देवादी भागत्यागलक्षणा अरजडअंश
जोहै अहंकारादिक तिनेकोत्यागकरकूट
स्थस्वरूपविषे अहंब्रह्मअस्मिकाज्ञानसिद्धहो
तोहै अर्थक्याजोअंतःकरणकेधर्मतेशोधके ।
तत्स्वरूपरहिता अरतिसचेतनत्वविषेमहा ।
वाक्यकरअहंब्रह्मअस्मिज्ञानहोताहै अरति

सोचैतन्यविषैमहावाक्यकरअहंब्रह्मअस्मिज्ञा
नहोताहै वादीप्रश्न भलाजी केवलकूटस्थ
तोस्वयंप्रकाशहै तिसकोबुद्धिगोचरतान·
हीसंभवहोती उत्तर वेवादी यद्यपि कूटस्थ
स्वयंप्रकाशभीहै तोभीसाक्षीभावकरबुद्धि
वितर्कविषैहोताहै घटादिकोकीन्याई जैसे
बुद्धिवृत्तिघटाकारहोतीहै तैसेहीब्रह्माकार
भीहोतीहै अरचिदाभासकरतोविषयन·
हीहोता जैसेशास्त्रकारऊरूपनेचिदाभास
कोनिवारणकीयाहै बुद्धिविषैस्थितजोहै·
चिदाभास अरबुद्धि इहदोनोघटादिकोको
विषयकरतेहै तिनदोनोकेमध्यविषैबुद्धि
करतोघटादिकोकाअज्ञाननाशहोताहै ·
अरचिदाभासकरघटादिकभासतेहै जडो
कोस्वतेभासणकाअभावहै अरकूटस्थब्र
ह्मविषैतोअज्ञाननाशकेनिमित्तकेवलबु·
द्धिवृत्तिकीअपेक्षाहै अरचिदाभासकेअपे
क्षानहीहै काहेतेजोकूटस्थब्रह्मस्वयंप्रका
शहै. अरस्वयंप्रकाशविषैऔरप्रकाशकी·
अपेक्षानहीहै जैसेअंधकारविषैघटादि·

श्री॰ कोकेदर्शननिमित्तनेत्रअरुदीपकदोनोचाह
पं॰द॰ तेहै अरुदीपकदोनोचाहतेहै अरुदीपकके॰
१२८ दर्शननिमित्ततोकेवलनेत्रहीचाहतेहै वादी
प्रश्न भलाजी वृद्धिवृत्तिचिदाभाससहित जैसे
178 घटादिकोकोप्रकाशतेहै तैसेहीचिदाभाससं
हितब्रह्मविषेभीकोनहोवै उत्तर वेवादी।
यद्यपि ब्रह्माकारवृत्तिविषेस्थितभीहै चिदा
भासतोभीब्रह्मसाक्षात्करूपहोजाताहै जै
सेचिदाभासविशेषकरघटादिकोकोप्रका॰
शताहै तैसेब्रह्मविषेनहीहै जैसेमध्याह्नके
प्रचंडसूर्यकोदीपकनहीप्रकाशकरता अ
रुतिससाक्षात्करूपहोजाताहै तैसेहीचिदा
भासभीब्रह्मप्रकाशनहीकरता अरुब्रह्मसा
क्षात्करूपहोजाताहै वादीप्रश्न भलाजी।
ब्रह्मविषेचिदाभासकीअपेक्षाविनावृद्धि॰
वृत्तिकाहीतोहै इसविषेकोनप्रमाणहै।
उत्तर वेवादी इसमेवेदप्रमाणहै अप्रमेय
तोप्रमाणतेपरेअरु अनादिजोहैब्रह्म सो॰
मनहीकरसाक्षात्कारहोताहै काहेतेजो॰
ब्रह्मनिर्विकल्पहै अरुअनंतहै अरुहेतरह॰

ष्टांतनतेरहतहै ऐसेअनादिअप्रमेयब्रह्मकोज्ञान॰
करउरूपसंसारतेमुक्तहोताहै जबइहरूपब्र
ह्मआत्माकोसाक्षात्कारकरजानताहै संशय॰
विपर्ययतेरहितजोहैज्ञान सोदृढबोधकहिये
वादीप्रश्न भलाजी जबएकहीबारमहावाक्य॰
केविचारतेअपरोक्षज्ञानउदयहोताहै तोइतन॰
आचार्योनेकहा जोहैवारंवारअभ्याससेज्ञानकर
णचाहीये उत्तर रेवादी ज्ञानकीदृढताकेनि
मित्तवारंवारअभ्यासआचार्योनेकहाहै यद्यपि ।
महावाक्यहीकरअपरोक्षज्ञानउदयहोताहै ।
तोभीदृढबोधकेनिमित्तश्रवणादिकवारंवा॰
रअभ्यासकरणेजोगहै तांतेशंकराचार्यनेवा
रंवारअभ्यासकहाहै जबलगअहंब्रह्मअस॰
म्यकबोधदृढहोताहै तबलगशमदमआदि॰
कोसाधनोसहितश्रवणादिकवारंवारअभ्या
सकरणेयोग्यहै वादीप्रश्न भलाजी महावा॰
क्यतेउत्पन्नहोयाजोहैज्ञान तिसविषेदृढता
काकारणकौनहै उत्तर रेवादी ज्ञानकीअदृ
ढताकोकारणकहतेहै प्रथमतोश्रुतिकीअ॰
नेकताहै अरदूसरीअसंभावनाहै अतीस

श्री॰ रीविपरीतभावनाहै सोश्रवणकर नानाप्रकार॰
पं॰द॰ वेदशास्त्रजोहै सोकामनाकेभेदकरनानाप्रका
१७९ रकेकर्मकहतीहै जैसेस्वर्गकामीअग्निहोत्रकरै
अरधनकामीसोमयज्ञकरै इसतेआदिलेकरश्रु
179 तिअनेकताहै इसकारणतेश्रुतियोविषैसंशय
होताहै तांतेश्रवणअरविचारकरणयोग्यहै सो॰
श्रवणक्याहै जोसंपूर्णउपनिषदवाक्यजोहैवेदां
तशास्त्र तिनोवेदांतोकोआदिअरमध्यअरअंतः
करणतात्पर्यब्रह्मअद्वैतविषैहै जबवेदांतवि॰
चारकरकेइहनिश्चयहोताहै तबश्रवणकहीता
है तबश्रुतिअनेकतानिवर्तहोताहै यहश्रव॰
णशारीरकभाष्यकेसमनवेअध्यायजोहैप्रथम
तिसविषैआसमअरशंकवादिकोकरकहाहै ।
अरदूसरीअसंभावनाकहिये अखंडसतचित
आनंदस्वरूपविषैआस्तिकभावनानकरनी जो
मैअखंडब्रह्मकैसेहो काहेतेजोषड्विकारसंप
न्नहो यहअसंभावनाकहतीहै असंभावनाका
निवर्तउपायमननकहतीहै सोमननक्याहै ।
जोबुद्धिवृत्तिकोस्वरूपविषैनिवर्तउपायमनन
करतेहै सोमननक्याहै जोबुद्धिवृत्तिकोस्वरू॰

पविछेदस्थितकेनिमित्तजोहैवेदकीअनुसारयु·
क्ती सोमननकहिए ऐसेशारीरकभाष्यकेहस·
रैअध्यायविषेकहाहै जिसकरसंपूर्णसंशय
नाशहोजातेहै अरबहुजन्मदेहादिकोविषे
आत्मबुद्धिभीउदयहोताहै सोविपरीतभाव
नाकहीऐ सोविपरीतभावनाएकाग्रतबुद्धि
करनिवर्तहोतीहै सोएकाग्रताकिसतेहै ·
सोश्रवणकर तत्वज्ञानकेउपदेशतेपूर्वकाल
विषेसगुणब्रह्मकीउपासनातेएकाग्रताउत्प·
नहोतीहै इहकहोतेनिश्चयकीआहै सोश्रव
णकर सोउपासनाविचारवेदांतशास्त्रविषे·
कीआहै अरजोतूकहै जोउपासनातेरहित·
पुरुषकीकागतिहै सोश्रवणकर जिसपुरु
षनत्वउपदेशतेपूर्वउपासनानहीकरी तिस
कोब्रह्मकेअभ्यासकरएकाग्रताहोतीहै सो
अभ्यासकाहै सोश्रवणकर वारंवारब्रह्म·
कथनकरणा अरपरस्परब्रह्मचर्चाकरणी
अरवारंवारवेदांतशास्त्रअभ्यासकरणा यही
जीवब्रह्मकीएकताविषेजोतत्परता सोईब्र
ह्मअभ्यासमहतपुरुषोंनेनिरूपणकीआहै ·

ब्रह्मचर्जैते आदिलेकरबहुसाधनसंपन्नजोहै।
जिज्ञासी सोपरमात्मब्रह्मकोसंशयविपर्ययतेर
हितज्ञानकरब्रह्माकारबुद्धिहतिकरै अरुअनात्म
शहोनध्यावै अरुनस्मरै अरुनकहै काहेतेजोके
वलवृथावाणीविलापहै सोअर्थगीतामेंकहाहै
किहेअर्जुनजोजनअहंब्रह्मास्मिज्ञानकरगुरुको
उपासनाकरतेहैं तिनोनितब्रह्मविषेएकाग्रअंत:
करणहारअरुचितोकोजोगक्षेमकीप्राप्तिकर
ताहै जोगकहीये अप्राप्तिवस्तुकीप्राप्ति अरु
क्षेमकहीये प्राप्तवस्तुकीपालनाकरणी ये।
मेश्रुति अरुस्मृति आत्मविषेबुद्धिकीएकाग्र
तानिरूपकरतीहै वादीप्रश्न भलाजी देहा।
दिकोविषे आत्मबुद्धि अरुजगतसत्यत्वबु
द्धिकोविपरीतभावनाकेसेहै उत्तर वेवादी।
जोवस्तुजेसेवर्तमानहै तिसकोस्वरूपकोत्या
गकरअन्यबुद्धिकरनी जोविपरीतभावना।
कहीये जेसेशुक्तिकेस्वरूपकोत्यागकररज
तबुद्धिहोतीहै अरुजेसेपिताआदिकोविषेश
त्रुबुद्धिहोतीहै आत्मादेहादिकोतेभिन्नहै अरु
जगतसंपूर्णमिथ्याहै इसबुद्धिकोत्यागकरदे

हादिकोविषे आत्मत्व अरुजगत सत्यत्वबुद्धिक
रनीविपरीतभावनाकही ऐसेविपरीतभावना
तत्वभावनाकरनष्टहोजातीहै सोतत्वभावना॰
क्याहै सोश्रवणकर देहादिकोतेभिन्नआत्माभा
वनाकरणी अरुजगतकोमिथ्यात्वभावनाकर
णी ऐसेनिरंतरअभ्यासकरविपरीतभावनानष्ट
होतीहै तातेआत्मादेहादिकोतेभिन्न रुजग
तमिथ्यात्वभावनासर्वदाकरणीयोग्यहै ।
वादीप्रश्न भलाजी सोतत्वभावनामंत्रकीन्याई
जपतीहै अथवामूर्तिदेवताकेध्यानकीन्याईहै
अथवालौकिकव्यवहारकीन्याईनेमविनाभी॰
करणेकोयोग्यहै उत्तर हेवादी नेमविनाहीक
रणीयोग्यहै काहेतेजोइसकाप्रयोजनप्रत्यत्त
है जैसेभोजनकाप्रयोजनतृषानिवारणप्रत्य
त्तहै वादीप्रश्न भलाजी भोजनविषेतोश्रुति।
स्मृतिनेमकहाहै कैसेजोसायंकाल अरुप्रातः
कालअरुहलीभोजनकरै अरुब्रह्मचारीचतुर्थे॰
यामएकसमानभोजनकरै स्नानतेआदिगार
तनेनेमकहेहैं तातेभोजनकीन्याईकैसेकहा॰
तेहा उत्तर हेवादी जपादिकोकीन्याईभोजन

श्री. विषेनेमनहींहै काहेतेजोनिसाकिसीप्रकारक
पं.द. रत्तथानिवारणकरणीहै कभीभोजनकरत्तथा
१८१ निवारणकरणीहै कवीभोजनत्तथानिवारण
करीतीहै अरकदाचितशयनकर अथवात्न
आआरचेष्टाकर अथवामार्गगमनकरभीका
लवितीतकरीताहै अरजपादिकोविषेभेटहै।
सोश्रवणकर नेमकरजपकरणायोगपहै अ
रनियमविनाविघ्नहोताहै अरअमितजपकर
णेतेअनर्थकाउदयहोताहै तातेजपादिकोकी
न्याईविपरीतभावनाकेनिवारणकरणेविषेनि
यमनहीहै वादीप्रश्न भलाजी त्तथानिवारण
करणेविषेनियमनहीहै वादीप्रश्न भलाजी
त्तथानिवारणकेहेतभोजनविषेनियममत।
होवे काहेतेजोभोजनकाप्रत्यत्तफलहै अवि
परीतभावनाकोनिवर्तकध्याननेतोनियमकर
करणाभोगहै काहेतेजोअदृष्टफलहै उत्तर
देवादी त्तथाकेबाधकीन्याईविपरीतभावना
काबाधकीदृष्टफलहै तोतेनियमविनाहीउ
पाइकरनाशकरणेयोगपहै सोउपायपूर्ववार
वारअभ्यासनेआदलेकरकहाहै वादीप्रश्न।

181

भलाजी जपकीन्याईं नियममतहोवे पर ध्यान
कीन्याईं एकाग्रतनिरोधकरणयोग्यहै उत्तर
वेवादी जीवब्रह्मकेएकताके तत्वपरविषे।
निरोधध्यानकीन्याईं नहीं है अरजोतेकरे।
जोध्यानविषेकानिरोधहै तोश्रवणकर म
ननिदिध्यासनविषेजेसेचित्तवृत्तिकोतदाकारहोताहै ते
सेहीजवनिरोधहोताहै तोध्यानकहीताहै।
तिसध्यानविषेमनकानिरोधकरण अतिअ
तिकरणहै काहेतेजोमनचंचलहै अरक्षोभ
रूपहै अरबलवानहै तिसकानिरोधकरण
हे पवनकीन्याईं कठिनजाननाहो अरवसि
ष्ठभीकहाहै केरामजी समुद्रकेपानकरणे
अरसुमेरकोउत्पाठनकरणेते अरअग्निभ
क्षणकरणेतेचित्तनिग्रहकरणाकठिनहै तो
तेवारंवारअभ्यासविषेध्यानकीन्याईं बंधनन
हीहै अर्थकाजो वारंवारअभ्यासविषेआधि
कआनंदहै संपूर्णवेदांतोकातात्पर्यविचार
ण अरइतिहासजोहैवेदांतविषे पुरातन
ज्ञानीयोकातात्पर्यनिश्चय तिसकरबुद्धिको
रहोताहै जैसेनाटकक्रीडाविषेचित्तकोवि

श्री. नोटहोताहै वादीप्रश्न भलाजी इतिहासोंकोप
पं. द. ठनकरभी तोभीविक्षेपहोतीहै उत्तर देवादी
१८२ इतिहासोंकोपठनकरविक्षेपनहीहोता तिनो
विषेअैसेप्रतिपादनकीआहै जोचेतनरूपहीआत्मा
स्वरूपहै अरजगतअत्यंतमिथ्याहै अैसेआदिते
लेकरअंतपर्यंतब्रह्मतत्वहीप्रतिपादनकीआहै
सोनिदिध्यासनकीदृढताकाकारणहै वादीप्र
श्न भलाजी इतिहासोंकेअंगीकारतेसात्विक
भीकरणीआहीये उत्तर देवादी क्रिसअरवण
ज अरसेकेकरेते अरकाव्यतरकादिकशास्त्र
पठनकरणेतेबुद्धिवृत्तिकोविक्षेपहोताहै तदा
तत्वस्मरणसंभवनहीहोता तातेतिनोकोत्या
गकरणयोग्यहै वादीप्रश्न भलाजी तबक्रि
सआदिकोकोतत्वकेविचारसाथविरोधहै तब
भोजनादिकोकोभीतत्वस्मरणकेविरोधकर
त्यागकरणाचाहीये उत्तर देवादी भोजना
दिकोकीप्रवृत्तिविषेतत्वस्मरणहोताहै अरत
त्वविपर्ययकाअभावहै अरजोतूकहैहैकिवि
स्मरणकरविपर्ययहोताहीहै तोविपर्ययभो
जनादिकोविषेकदाचितनहीहोता वादीप्रश्न

भलाजी जैसेभोजनादिकोविषेतत्वस्मरणहो
ताहै तैसेहीतर्कशास्त्रादिकोकेअभ्यासविषेभी
तत्वस्मरणकोनहोवै उत्तर रेवादी तर्कशास्त्रा
दिकोकेअभ्यासकालविषेतत्वस्मरणकाअवस
रनहीहोता काहेतेजोउलटीतत्वस्मरणकेवि
घ्नकरताहै तांतेजिज्ञासीअनर्थतर्कादिकोका
कदाचितअभ्यासनकरै इसीतेश्रुतिकहाहै।
जोअनात्मशास्त्रोकाअभ्यासकेवलदुःखरूपहै।
तिसीपकरब्रह्महीकोविशेषकरजान अवअन्य
वाणीकेत्यागकरयहश्रुतिआज्ञाहै वादीप्रश्न
जैसेभोजनादिकअंगीकारकीयेहै तैसेहीइतर
शास्त्रकीभीअभ्यासकरतव्यहै उत्तर रेवादी।
आहारादिकोकेत्यागकर तोशरीरनहीरहता
अरइतरशास्त्रोकेत्यागकरकातुश्रुतनहोजा
वहगा तांतेजैसेश्रुतिनोविषेहठकोंकरताहै
वादीप्रश्न भलाजी जनकतेआदिलेकरतत्व।
वेत्तोकोराज्यादिकोविषैकैसेप्रवृत्तिहोईहै उत्त
र रेवादी दृढअपरोक्षज्ञानकरजनकादिको
कीराज्यप्रवृत्तिविषेविचारणाहूआ तैसेहीदृ
ढबोधजवतककोभीहै तवतलतर्कपठनक

श्री॰ र अथवाक्रियादिककरनेकोभीविक्षेपनही॰
पं॰ द॰ है वादीप्रश्न भलाजी तत्ववेत्तातोसंसारकोअसा
१८२ रदुःखरूपजानतेहै सोकैसेसंसारविषेप्रवर्त्ततेहै
183 उत्तर रेवादी हठबोधकेवलकरतेसंसारकोअ॰
सतअसत्यजानतेहै परप्रारब्धकर्मकेनाशपर्यं
तक्लेशतेरहितअपनेअपनेकर्मोंकेअनुसारव
र्त्ततेहै वादीप्रश्न भलाजी तवअनाचारविषे
भीप्रवृत्तहोयेचाहिये उत्तर रेवादी अतिप्रसं॰
गाकीशंकामतकर काहेतेजोप्रारब्धअनुसार
तिनकीप्रवृत्तिहै अरजोतैंकहैहै किप्रारब्धकेव॰
शतेअतिप्रसंगभीहोवो जोतैंकहाकिसवास॰
कवकरकर्मकानिवारणकरैगा वादीप्रश्न ।
भलाजी ज्ञानीअज्ञानीकोप्रारब्धअवश्यभोक्त॰
व्यते समानताचाहिये उत्तर रेवादी ज्ञानीअ
ज्ञानीकोप्रारब्धकर्मसमानहै परज्ञानीकोक
लेशनहीहै काहेतेजोधीर्यवानहै अरधैर्य॰
तेरहितजोहैअज्ञानी तिसकोअतिक्लेशहै ।
जैसेमार्गगामीजोहैदोपुरुष मार्गविषेखेदवा
नहोतेहै परजोहैधैर्यवानहै सोमार्गविषेसु॰
खिसाजाताहै अरदूसराजोहैसर्वं सोदीनक्ले

शमानकरजाताहै अरसमयकज्ञानीजोहैउ
क्त सो संशयविपर्यतेरहितस्वरूपविषेस्थि
तहोइकरकदाइछाकरै अरकिसकामनाके
निमित्तशरीरकेतापकरतेपै काहेतेजोज·
गतकोअसंतअसत्यजानकरकामकरणे ·
योग्यपदार्थकोग्रहणनहीआवता तातेका·
मनाकरै अरुकामनाकेअभावहोयतेसं
सारकातापभीशांतहोयजाताहै अरजैसेतै
लतेरहितदीपकशांतहोयजाताहै तैसेगं
धर्वनगरविषेइंद्रजालकररचेजोहैपदार्थ
तिनोविषेविद्वानपुरुषइछानहीकरता
अरमायामात्रजानकरमन्ताहै अरत्यागदे·
ताहै तैसेहीआपातरमणीयजोहै स्त्रीचंदना
दिकभोग सोतिनोविषेज्ञानवानप्रीतिनही
करता अरदोषदृष्टिकरतिनोकोत्यागनेकी
इछाकरताहै सोदोषदृष्टिकाहै प्रथमप·
दार्थोंकेपावणेविषेक्लेशहै तैसेहीपालना·
करणेविषेक्लेशहै अरनाशविषेभीअतिदुः
खहै तीनोकालदुःखजोहैपदार्थ सोधिका
रजोगाहै अरक्लेशकाकारणहै अरस्त्रीवीर्य·

श्री॰ तिसलीनदृष्टिकरणीयोग्यहै काहेतेजोमांस॰
पं॰ ८॰ कीपुतलीहै अरयंत्रकीन्याईचंचलहै अरअ॰
१८४ स्थिनाडीरुधिरतेआदिलेकरअतिविकारमयी
184 है ताँतेतिसविष्टमूत्रकेपात्रविषैकौनशोभा
है चर्मअरमांस अररक्त अरजलरूपजोहै ।
तिसकेनेत्र तिनोंकोज्ञानीदेखकरविष्ठमूत्र॰
केगर्तविषैतेआदिलेकरदोषशास्त्रविषैनिरू
पणकीयेहै सोविचारवानऐसीदोषदृष्टिक
रताहै सोतिनोंविषैअज्ञानीयोंकीन्याईडूबता
नहीहै जोतृषाकरपीडतजोहैपुरुष सोवि
षभोजनकीइच्छानहीकरता अरजोमिष्टान्न
करअघायाहै सोविषभोजनकीइच्छाकैसेकरै
वाटीप्रश्न भलाजी प्रारब्धकर्मकीप्रबलता ।
तेज्ञानीकोभीइच्छातोहोतीहै उत्तर हेवाटी
प्रारब्धकेवशतेजबज्ञानीकोभोगोविषैइच्छा
होतीहै तोभीज्ञानीतिनोंकोक्लेशरूपजानक
रबिगारीकीन्याईभोगताहै जैसेअज्ञानीश्रद्धा
करभोगोकोभोगतेहै तैसेज्ञानीकोभोगोवि॰
षश्रद्धानहीहै अरऐसेकहताहै ज्ञानीजोअ
वीभीकर्मकानाशनहीभया ऐसेभोगोकेक्ले

शरूपजानताहै वादीप्रश्न भलाजी तत्ववेत्ताके
तोसंसारकातापअसंभवहै काहेतेजोज्ञानीभी
अर्थहूआचाहिये तुमकैसेकहतेहो जोभोगो
कोक्लेशरूपजानकरज्ञानीभोगताहै यहीक्लेश
तापरूपकहीये उत्तर हेवादी अबीभीकर्मका
नाशनहीभया यहजोमानताहै ज्ञानीशोक
इहक्लेशनहीहै संसारकोतापरूपजानना वि
रक्तताकाकारणहै अरसंसारकेतापकाका।
रणभ्रमज्ञानहै सोभ्रमज्ञानीकोनष्टभयाहै
वादीप्रश्न भलाजी इहकेसेजानीये जोइहक्ले
शविषकीकाहै अरयहअविवेकीकाहै ,
उत्तर हेवादी विवेककरज्ञानीपुरुषभोगो।
कोक्लेशरूपजानताहै अरअल्पभोगकरसं।
तुष्टहोताहै अरअज्ञानीअविवेककरअनत
भोगोकरभीकदाचितसंतुष्टनहीहोताहै ,
वादीप्रश्न बलाजी जबअविवेकीकोन्याईवि
वेककोभीभोगोकरतृप्तिहोयी तोविवेकवि
षेकोनअधिकताहै उत्तर हेवादी कामना।
रूपीजोहैभोग सोभोगनेकरकदाचितनही
शांतहोते जैसेअग्निघृतकरशांतनहीहोती।

श्री॰ परअधिकमलिनहोतीहै तातेविवेककरअ॰
पं॰ट॰ ल्पभोगकरभीतृप्तिहोतीहै वशीष्ठ भलाजी
१८५ तृष्णारूपीजोहैभोग सोविवेकमात्रकरकेसंतु
ष्टदायकहै उत्तर देवाटी मैत्रीकरउहभीअप
नेस्वभावकोत्यागताहै जैसेचोरमित्रभीचोर
भावकोत्यागकरमैत्रीकरताहै तैसेहीविवेक
मित्रकरभोगभीतृष्णाकोत्यागकरसंतुष्टदाय
कहै वशीष्ठ भलाजी कामनाकेवशजोहै
मन सोकैसेअल्पभोगकरतृप्तिहोताहै उत्तर
देवाटी ब्रह्मअभ्यासकरवशवर्तीजोमन सोअ
ल्पभोगकोभीक्लेशरूपजानकर अतिविला
रमानताहै जैसेजंजीरबंधनतेमुक्तहोआजोहै
राजा सोग्राममात्रकरसंतुष्टहोताहै जबलग
शत्रुकेबंधनविषेनहीथामभया तबअधि॰
कदेशकोभीनहीमानता वशीष्ठ भलाजी
भोगोविषेदोषदृष्टिरूपजोहैविवेक तिसकेहो
तेप्रारब्धकर्मकैसेइच्छाकोउपजावताहै उत्तर
देवाटी इहदोषनहीहै काहेतेजोप्रारब्धअने
कप्रकारहै सोश्रवणकर एकइच्छारूपहै
अरुदूसरीअनिच्छारूपहै तीसरीपरेच्छारूपहै

अरु इच्छारूप प्रारब्ध श्रवणकर रोगी जो है अप
थ्यसेवी अरु चोर अरु राजपत्नीगामी यद्यपि
आपको अनर्थ जानते भी है पर प्रारब्ध कर्म के
वशते इच्छा करते है प्रारब्ध कर्म के निवारण·
के ईश्वर भी समर्थ नहीं है सो ईश्वर आप ही गी
ताविषे अर्जुन प्रति कहा है हे अर्जुन ज्ञानवा·
न पुरुष भी अपने पूर्व संस्कार के अनुसार ही चेष्टा
करता है तांते हे अर्जुन प्रकृति निग्रह विषे निरो
धकरणे को कोऊ समर्थ नहीं है अरु वाका भी
प्रारब्ध की प्रबलता विषे प्रमाण है अरु स्वप्रार
ब्धकर जो दुःख होने है तिनोके निवारणकर
णेका जो यत्न होता तो नलराजा अरु श्रीराम
अरु युधि इह दुःखको क्यों प्राप्त होते वादी अ
भला जो जब प्रारब्ध कर्म ईश्वर कर हरन नहीं हो
ता तब ईश्वर को अनीश्वर प्रसंग होआ वादी श्रे
उत्तर देवादी इसकर ईका ईश्वरत्व नहीं हानि
होता काहेते जो प्रारब्ध कर्म विषे अवश्यभोक्त
व्यता भी ईश्वर ही रची है अरु अनिच्छा प्रारब्ध·
विषे गीतावाक्य अर्जुन अरु श्रीकृष्ण का संवा·
द दिखावते है अर्जुन प्रश्न करत भया कि हे

श्री॰ भगवान इहपुरुष किसका प्रेरिया होया पाप-
पं॰ २॰ का आचरण करता है ऐसे जानीता है जो किसी
ए॰ बलवान का प्रेरिया होआ अनिच्छत भी करता है
तब श्रीकृष्ण भगवान जी उत्तर कहत भया हे अ-
186 र्जुन इस पुरुष का प्रवर्तक काम है सोई काम
परणाम रूप होकर क्रोध रूप होता है सोई पर-
णाम रूप होता है सो कैसा है जो रजगुण ते उ-
त्पन्न होआ है अरु महत भोगों कर भी तृप्त नहीं
होता है अरु महत पापों का कारण है सो काम
क्या कहीए जो नाना प्रकार के कामना की क-
रणहारे संकल्प है तिस क्रोध रूप काम को तू
मोक्षमार्ग विषे अरु शास्त्रज्ञान का है ते जो मोक्ष
क प्रतिबंधक है वैरी जान भलाजी इस वाक-
विषे तो काम क्रोध दोकों प्रेरक देखीता है अनि-
च्छा प्रारब्ध प्रेरक तो नहीं है उत्तर देवादी भग-
वान अर्जुन प्रति कहा है हे अर्जुन अपने प्रार-
ब्धकर्म का बांधा होआ जो तें शुद्ध करणे को-
अविवेक कर इच्छा न करैगा तो भी अवश्य प-
करैगा ताते अनिच्छा प्रारब्ध भी प्रबल है अव
परीक्ष प्रारब्ध श्रवण कर इच्छा अर अनिच्छा

तेरहितजोकिसकेसंतुष्टिकेनिमित्तहोवेदुःखो
दिकोकोभोगताहै सोइहपरीक्षाप्रारब्धकर्ही
थे इसीतेदोषदृष्टिरूपविवेककेहोतेहीप्रारब्ध
कर्मकेनिवारणकरणेकोउसमर्थनहीहै ।
वादीप्रश्न भलाजी तमोकहाजोहैज्ञानिका।
तात्पर्यजोज्ञानीकाइच्छाकरै अबकिसकाम
नाकेनिमित्तशरीरकेतापकरतेपै इसकर।
तेइच्छाकोनिषेधहोताहै तोकैसेज्ञानीको।
इच्छाकरअंगीकारकरतेहै उत्तर वेवादी ।
तिसज्ञानिविषेइच्छाकाअभावनहीकहा ।
परइच्छाकाविवेककरबाधकहाहै भरज
नबीजकीन्याई भरजनकहीअग्निकरक
रभुनाहुआ जैसेअग्निकरभरजनाजोहैथा
सबीज सोअंकुरआदिकार्यकाउत्पन्नकर
तानहीहै तैसेहीज्ञानीकीइच्छाभीतत्वबोध
करदग्धहोई भोगोविषेव्यसनआदिकका
र्यकरणेकोसमर्थनहीहै वादीप्रश्न भला।
जी तबज्ञानीकोइच्छाअंगीकारनचाहीये
काहेतेजोव्यसनआदिफलकाअभावहै उत्त
र वेवादी जैसेभरजनबीजबीजनेकोयोग्य

श्री· पं·द· १८७ नहींहै परभक्षणतोकरीताहै जैसेहीज्ञानीइ
च्छाअल्पभोगकोकरतीहै परबहुतव्यसनको
भीउपजावै उत्तर देवादी प्रारब्धकर्मभोगमा
त्रहीकरनष्टहोजाताहै अरअज्ञानकरभोगो
कीसत्ताभासतीहै तातेअज्ञानीकोव्यसनभीउ
त्पतहोताहै सोश्रवणकर यहभोगमननष्ट
होवै अरबारंबारदृष्टिकोप्राप्तहोवै अरविघ्न
भीमतप्रतिबंधकरो अरइसभोगतेमैकृतार्थहो
ऐसेअज्ञानीकोभोगोविषेव्यसनउत्पतहोताहै
अरबोधकरयहव्यसननष्टहोयजाताहै सोश्र
वणकर सोनहीकदाचितहोगा सोनहीहो
ता अरजोअवश्यहोणाहै सोअवश्यहीहोवेगा
यबोधबिनाइपीविषकानाशकरणहाराए·
वेभ्रमकानिवर्तकहै वादीप्रश्न भलाजी ज्ञा·
नीअज्ञानीकोभोगोकीसमताविषे एकको·
व्यसन अरदूसरेकोनहीहै इहकैसेजानीये
उत्तर देवादी यद्यपि दोनोकोभोगसमानहै
परअरअज्ञानीव्यसनकोप्राप्तहोताहै उत्तर
देवादी यद्यपि दोनोकोभोगसमानकाअभा
वहै अरजोतनकहैजोअज्ञानीकोव्यसनकैसे

187

है तोश्रवणकर अज्ञानीकोअसमर्थपदार्थ।
केसंकल्पतेव्यसनबहुतहोताहै अरुज्ञानीमा
यामात्रभोगोकोजानकर तिसकीवासनात्या
गकरताहै भोगकरताभी ज्ञानीसंकल्पनही
करताहै तातेव्यसनकहाहै वादीअभलाजी
यद्यपि भोगमायामात्रहै तोभीभोगसमाविषे
सुखकाकारणहै तोकेसेज्ञानीपुरुषकोभो।
गोविषेवासनाकाअभावहै उत्तर हेवादी स्वप्न
अरुइंद्रजालतुल्यजोहैअचिंत्यरूपरचनामाया
रूपजगत तिसकोज्ञानीपुरुषमायामात्रजान
कर तिसविषेकैसेप्रीतिकरै अरुजोतूकहेके
ऐसाबोधकहांतेउत्पन्नहोताहै तोश्रवणकर
जोद्रष्टापुरुषहै सोअपनेस्वबोधकहांतेउत्पन्न
होताहै तोश्रवणकर जोद्रष्टापुरुषहै सोअ।
पनेस्वप्नकोप्रत्यक्षदेखकर अरुअपनीजाग्रत
कोभीदेखकरदोनोकोसम्यकविचारकरै जो
इकदोनोएकसमानहै जबदोनोविषेसमता।
काज्ञानभया तबजाग्रतजगतविषेभीस्वप्न।
कीन्याईसतबुद्धिकोत्यागकरजाग्रतपदार्थो
विषेअज्ञानीकालकीन्याईसतबुद्धिकोत्यागक

श्री· रजाग्रतपदार्थोंविषेअज्ञानीकालकीन्याईज्ञानी·
पं·२· पुरुषकोवासनानहीउत्पतहोतीहै वादीप्रश्न ·
१८८ भलाजी भोक्तासिद्धहोताहै जबभोगविषेसत
प्रतीतहोतीहै भोगकोमिथ्याज्ञानकरकेसेसिद्ध
है उत्तर हेवादी जबयहबोधभया केइहजगतप्र
तिंम्बवनारूपइंद्रजालवतमिथ्याहै तबप्रारब्ध
विषेकोनहानिहै भोगोकेनाशज्ञानकातात्पर्य
नहीहै ज्ञानकातात्पर्यजगतकोइंद्रजालवतनि
श्चयकरणाहै अरप्रारब्धकोसुखदुःखभोगदेने
विषेतात्पर्यहै परजगतकेसत्यत्वभावविषेता·
त्पर्यनहीहै तातेज्ञानअरप्रारब्धकोपरस्परवि·
रोधनहीहै काहेतेजोदोनोकाविषेभिन्नहै जैसे
इंद्रजालकीक्रीडाकोदेखतेभीहै परतिसविषे·
सत्यत्वबुद्धिनहीउदयहोतीहै तैसेमिथ्यात्वप्र·
तीतिकरप्रारब्धसाथज्ञानकोविरोधनहीहै
जबप्रारब्धभोगजगतकीसताउपजावै तबज्ञा
नकाविरोधहोवै अर्थकाजोप्रारब्धकर्मकेव·
लभोगमात्रकोदेताहै जगतसताकोनहीउप
जावता जैसेस्वप्नकल्पितभोगअतत्वभीभो
गकेदायकहै तैसेहीजाग्रतभोगभीअतत्व

भोगकेदाइकहै अरुजबज्ञानभोगकीस्वरूपका
नाशकरै तबप्रारब्धकाविरोधहोवै परभोगके
स्वरूपकोनाशनहीकरना केवलमिथ्याप्रती
तिकाकरताहै जैसेइंद्रजालकेपदार्थदृष्टआव
तिकाकरताहै जैसेइं
तेभीहै परलमिथ्याप्रतीतिकाकरताहै जैसेइं
द्रजालकीपदार्थदृष्टआवतेभीहै परमिथ्याप्र
तीतितोहोतीहै जैसेहीयहपदार्थदृष्टआवतेहै
परज्ञानकरमिथ्याभासतेहै वादीप्रश्न भला
जी जिसज्ञानकीअवस्थाविषे ज्ञानीकोसर्वात्मा
हीहोआ तबकौनद्रष्टा किसइंद्रियकरकिस
रूपकोदेखै अरुकिसकरकौनसुगंधलेवै इस
तेप्रारब्धिकरकृतिकहाहै तातेइनकोनाश
करकरहीज्ञानउदयहोताहै अन्यथानही॰
होता जबऐसेहोआ तबज्ञानीकोभोगोका॰
नाशहोआचाहीये उत्तर वेवादी यहश्रुति
भूमिकातात्पर्यकहतीहै श्रुतिकातात्पर्यन
हीकहती तऊकोसुभूमिअरुश्रुतिकाज्ञान
नहीहै जोतूंअन्यथाकहै तोयाहतवल्कप्रा॰
दिकोप्रारब्धत्वनहुआचाहिये जबयाज्ञव॰
ल्क्यआदिदेवकोदेखतेथे तबप्रारब्धत्वतिन

श्री. कोनहूआवाहिये काहेतेजोअद्वैतज्ञानतेशून्य
पं.ट. है अरुजोद्वैतकोनहींदेखतेऐसे तत्वशिष्यकोबा·
१८९ धकरणेकेअभावतेआचार्यत्वनहींसंभवहोता
189 तबज्ञानसंप्रदायकाभावहूयाचाहिये तौतेअ
हतेयाप्रश्नअसंभवहै वादीप्रश्न भलाजी याज्ञ
वल्कआदिकोकोआचार्यत्वदशाविषेज्ञानतो·
थाही परपरोक्षज्ञानत्वथा अरुजबनिर्विकल्प
समाधिविषेस्थितहोतेथे तबअपरोक्षज्ञानहो
ताथा तौतेनिर्विकल्पसमाधिहीअपरोक्षज्ञा·
नहै उत्तर देवादी तौसुषुप्तिभीअपरोक्षज्ञान
होयचाहिये अरुजोकहैकिसुषुप्तिविषेआत्म
तत्वकोनहींजानता तबआत्मज्ञानहीअपरो
क्षविद्याहै ऐसेकहो द्वैतविस्मरणमतकहो
वादीप्रश्न भलाजी द्वैतविस्मरणअरुआत्मज्ञा
नजबदोनोमिलतेहैं तबअपरोक्षज्ञानहोताहै
उत्तर देवादी घटादिकभीअरुअपरोक्षज्ञा·
नीहोय काहेतेजोतिनोकोसंपूर्णद्वैतविस्मर
णहै तौनिर्विकल्पसमाधिवानोकोअरुघावि
याभीनहोईचाहिये काहेतेजोमच्छर अरुशा
हू अरुशब्दकाकरतिनोकोविक्षेपकीअधि·

कताहै जैसेघटादिकोकोनिर्विकल्पता जैसेत
रूसमाधिवानकोनहीहै तातेघटादिकभीत·
रूतेअधिकविशेषहूयेको वादीप्रश्न भलाजी
तोआत्मज्ञानहीअपरोक्षविद्याहूयी उत्तर देवा
री तबतेसुखीहोइ प्रारब्धप्रतिसिद्धहोआ·
वादीप्रश्न भलाजी आत्माज्ञानहीविद्याहोवे पर
सोविद्याउत्पत्तिचित्तविषेनहीसंभवहोती तातेवि·
क्षेदोषहरकरकेनिमित्तचित्तवृत्तिनिरोधकर
णायोग्यहै उत्तर देवादी तबसुखेनहीविक्षे
लिकानिरोधकरतव्यहै अर्थक्याजोवारंवारअ
भ्यअभ्यासकरचलतेबैठते सुखेनहीयत्नविना
हीचित्तवृत्तिकाएकाग्रकरतव्यहै यहहमारा
भीइष्टापत्तिहै काहेतेजोचित्तदोषजबनष्टहो
तैहै तबअद्वैतज्ञानकेअभ्यासयोगहोतेहै ताते·
ज्ञानीयद्यपिइच्छाकरताभीहै परज्ञानीकोन्या
ईनहीकरता रागविरूद्धअज्ञानकीहै सोराग·
अज्ञानीविषेहोवे तातेसफलशास्त्रहूआ का·
हैतेजोज्ञानीविषेरागकाअत्यंतभावहै अज्ञा
नकाविरूद्धजोहैराग सोचित्तरूपीभूमविषेस्थि
तैहै जिसचित्तरूपीभूमिविषेज्ञानरूपीअग्निउ

श्री॰ पजीहै तिसविनरूपीअग्नीविषेअज्ञानरूपीवी॰
पं॰द॰ जकोभस्मकरतीहै तातेवीजनाशहोयेतेराग
१९॰ आदिअंकुरभीनष्टहोजातेहै जबज्ञानीप्रकृष्ठज
गतकोमायामात्रजानताहै अरुआत्माकोअसं
१९० गजानताहै तबतिसभोगतांकेनिमित्तकामना
करै अर्थक्याजोवास्तवतेभोगताकोऊनहीहै
पतिजाआतेआदिसबहीआत्मअर्थप्रियाहै अ
रतिनकीप्रीतिभीआत्मअर्थहै अेसेश्रुतिबहुत
प्रकारकहाहै अरुजोतूकहैजोभोक्ताश्रुतिक
हीसिद्धहै सोकोभोक्ताकूटस्थहै अथवाचि॰
दाभासहै अथवादोनोमिलकरभोक्ताहै जो
तूकहरहिकूटस्थहै तौकूटस्थअसंगहै तिसको
भोक्तृत्वनहीहै सुखदुःखकाअभिमानजोहै
सोभोगकहीये अरुकूटस्थनिर्विकारहै तिस
कोभोक्तृत्वविकारकहै तौकैसेसतककोआचा
तदोषनहोवे वादीप्रश्न भलाजी तबविकारी
चिदाभासहीकोभोक्तृत्वहोवो उत्तर येवादी चि
दाभासबुद्धिकेअधीनहै तातेसोकल्पितहै अ
रअधिष्ठानतेरहितकेवलभ्रमकीकदाचित॰
स्थितनहीहोती तातेचिदाभासभोक्तानहीहै

इसीकारणतेदोनोमिलकरलोकअवस्थावि
षेभोक्ताकहीताहै वादीप्रश्न भलाजी तादोनो
कोभोक्तृत्वपरमार्थककोनहो उत्तर वेवादी
चिदाभासकोकल्पितत्वनिश्चयकीयेतेकूटस्थ
हीशेषरहताहै तातेभोक्तृत्वकल्पितहै इह।
दारण्यकश्रुतिविषे राजाजनकयाज्ञवल्कप्र
तिप्रश्नकरतभया किहेभगवन् पंचकोशके
मध्यविषेआत्माकोनहै तबयाज्ञवल्ककहत।
भया केहेराजन् इहपंचकोशकासाक्षीजोहै।
कूटस्थ असंगसोआत्माहै ऐसेहीअन्यश्रुतिवि
षेकहाहै किहेभगवन् कौनआत्माहै जिस
कीहमउपासनाकरे तबपंचकोविचारकर।
कूटस्थहीकोआत्मत्वनिश्चयकर श्रुतिकरउ।
त्तरकहतभया तातेविचारकरभोक्तृत्वमिथ्या
है वादीप्रश्न भलाजी श्रुतिकरभोक्तृत्वमि।
थ्याकहाहै तातेप्राणीयोंकोभोक्तृत्वबुद्धिके
सेहै उत्तर वेवादी अविवेककरअज्ञानीपुरु
षकूटस्थविषेवास्तवभोक्तृत्वमानतेहै अर।
कदाचितभोक्तृत्वबुद्धिकोत्यागनहीकरते।
भोक्तास्वात्मभोगकेनिमित्तजायातेआदिको

श्री. कोइछाकरतीहै इहलोकिकव्यवहारश्रुतिकर
पं.ट. विचारकरीताहै भोक्ताविषेप्रेमकेनिमित्तपति
१९२ जायातेआदिलेकरभोगोकोआत्माकाअर्थहै ।
तातेभोगोविषेप्रीतिकोत्यागकरभोक्ताविषेप्री
191 तिकर्तव्यहै सोईस्मृतिविषेकहाहै किहेगोवि
द जोप्रीतअविवेकीयोंकेविषेभोगोंविषेहै स
देवाअतिशयहोतीहै अरुसदेवातिनोभोगोवि
षेसावधानहै जोप्रीतिअतिशयरूपकोतुमारे
स्मरणविषेहोवे अरुमेराचित्ततुमारेस्मरणवि
षेकदाचितनचलायमानहोवे तातेश्रुतिका
तात्पर्यहीहै जोसर्वभोगोकीप्रीतिकोत्यागकर
शुद्धचिन्मात्रविषेअतिशयप्रेमकर्तव्यहै जिज्ञा
सुपुरुषकोसर्वदाकालचैतन्यविषेप्रेमकर्त
व्यहै जैसेपामरभोगीजनशोकअरुखेदन अरु
सुवर्णवस्त्रविषेप्रेमकोकरतेहै तैसेहीजिज्ञा
सीपुरुषपरमात्मास्वरूपविषेअतिशयप्रेमक
रे अरुसर्वदासावधानहोवे अरुजैसेजीतणेके
इछाकरअज्ञानीपुरुष कावअरुनाटक अरुत
र्कशास्त्रतेआदिलेकरअभ्यासकरतेहै तैसेही
जिज्ञासुपुरुषआत्माकाविचारकरे अरुजैसे

अज्ञानी स्वर्गादिकों के इच्छा कर जप यज्ञ उपास-
ना ते आदि ले कर श्रद्धा कर करते है तैसे ही जिज्ञा-
सु स्वरूप विषे श्रद्धा करे अरु जैसे अज्ञानी अ-
णिमा महिमा ते आदि ले कर सिद्धी के निमित्त
महा यत्न कर चित्त की एकाग्रता को साधते है
तैसे जिज्ञासु शुद्ध स्वात्म स्वरूप विषे दृढ अभ्या-
स करे तैसे इनो सद्गुणों को दृढ अभ्यास कर व-
तवता उत्पत्ति होती है तैसे ही दृढ विवेक अभ्या-
स ते जिज्ञासी को स्वरूप साक्षात्कार होता है ऐ-
से ही विचार कर असंग आत्मा को जाग्रत आदि-
अवस्था विषे अन्वय व्यतिरेक कर साक्षी निश्च-
य करना है जाग्रत अरु स्वप्न अरु सुषुप्ति विषे
जो कछु दृष्टा कर देखीता है सो तिनो अवस्था
विषे ही है एक अवस्था के पदार्थ दूसरी विषे न
ही होते पर दृष्टा साक्षी चैतन्य एक ही है यह अ-
नुभव कर सिद्ध है अरु श्रुति का तात्पर्य कह-
ते है सो आत्मा तिस जाग्रतादिक अवस्था विषे
जो कछु पदार्थ देखता है सो तिनो साथ कछु
आत्मा को स्पर्श नही है यद्यपि पुण्य अरु पाप-
को साक्षी देखता है तो भी स्पर्श ते रहित है ।

श्री॰ ऐसेश्रुतिकहतीहै जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिमेंआत्मप्र
पं॰ ट॰ वकोजोप्रकाशताहै सोब्रह्ममयहीहै ऐसेजा
१९२ नकरजिज्ञासीपुरुषसर्वबंधनतेमुक्तहोताहै।
एकहीआत्माजाग्रतस्वप्नसुषुप्तिविषेविराजमा
नहै अरवास्तवतेअवस्थातीनतेअतीतहै ऐ
साज्ञानकरजिज्ञासीपुरुषमुक्तहोताहै तीनो
अवस्थाविषेजोपदार्थअरभोगअरभोक्ताहै।
तिनोतीनोतेआत्माविलक्षणहै सोसाक्षीचिन्मा
त्रसदाशिवमयहै ऐसेज्ञानकरमुक्तहोताहै
ऐसेविवेककरसाक्षीकूटस्थकोस्वरूपलकर
सिद्धकीये तेचिदाभासविकारीकोभोक्तत्वशे
षरहिताहै वादीप्रश्न भलाजी चिदाभासको
भोक्तत्वअंगीकारकीयेतेव्याघातदोषआवता
है काहेतेजो पूर्वतोचिदाभासकोभोक्तत्व
निषेधकीयाथा उत्तर वेवादी हमोवास्तव
भोक्तत्वचिदाभासनिषेधकीयाथा सोश्रवण
कर श्रुतिअरअनुभवकरयहचिदाभासमा
यिकहै अर्थयाजोमिथ्यारूपहै काहेतेजो
इंद्रजालरूपजोजगतहै तिसकीमध्यवर्तीचि
दाभासभीइंद्रजालरूपहै अरसुषुप्तिआदिक

अवस्थाविषेलीनहोजाताहै इहअनुभवसाक्षीक
रहोताहै जबकूटस्थतेभिन्नविचारकाचिदाभास
मायिकसिद्धहोया तबचिदाभासअपनेस्वभाव·
कोमिथ्यावारंवारविचारकरअपनानाशनिश्च·
यकीयेते बहुड़भोगकीवांछानहीकरता जैसे
किसेपुरुषकोमरणेकेसमाविषेविवाहकीवां·
छानहीहोते तैसेहीपूर्वमेभोक्ताथा इसव्यवहा
रकरणेकोभीलज्जायमानहोताहै अरइहवाक·
रभीमेभोक्ताहो ऐसेव्यवहारकरणेकोलज्जाय·
मानहोताहै जैसेक्लिन्नासापुरुषलज्जायमान
होताहै तैसेहीतत्वसाक्षात्कारसमाविषेमेभोक्ता
हो इसव्यवहारकरणेकोलज्जायमानहोताहै
अवकेसुतकन्याईकरस्नानप्राप्तसमाविषेसा·
क्षीकोभोक्तृत्वकाअभावकहतेहै जबचिदाभा
सअपकोभीभोक्तृत्वमानणेकेलज्जायमानहो
ताहो तबसाक्षीचेतन्यविषेकेसेआरोपणकरै
इसीतात्पर्यकोलेकरश्रुतिनेभोगकीनिषेधकी
याहै जोज्ञानीपुरुषकिसभोक्ताकेनिमित्त कि
सभोगकेकामनाकरै इसीतेशरीरकेतापकर
ज्ञानीनहीसंतापकोप्राप्तहोता सोतापशरीरों·

श्री. विषे कहते हैं स्थूल सूक्ष्म कारण यह तीन शरीर हैं
पं. ट. तिस शरीर विषे उचित जो है जेवर सो भी अरूप है ।
१९३ स्थूल शरीर के जेवर कहते हैं वात पित्त कफ ते उ-
त्पत होते जो है रोग सो कोढ़ ही स्थूल शरीर विषे है
दुर्गंध अरु कुरूप अरु रहते आदि लेकर नाना प्रका-
र है अरु सूक्ष्म शरीर विषे काम क्रोध ने आदि अरु
मान ते आदि लेकर दो प्रकार के जेवर है सो कामा-
दिक शांत आदिक के से जेवर है सो अवगुण कर ।
जो कामादिक है सो अपनी प्राप्ति कर सूक्ष्म को त-
पावते है अरु जो शांत आदिक है सो अयामकर
सूक्ष्म शरीर को तपावते है अरु कारण शरीर
विषे अज्ञान जेवर है सो क्या है जो आपको अरु पर
को नहीं जानता अभिव्यक्त दुःखों का कारण है ।
सो इह राजा ने अपने गुरु वसिष्ठ पास निरूपण कीया
है ताते यह जेवर तीनो शरीरों विषे स्वाभाविक है
अरु जेवरों के वियोग ते शरीर नाम मात्र भी नहीं र-
हते इसी ते स्वाभाविक है जैसे तंतु ते वस्त्र अरु ऊ-
र्णी ते कंबल अरु मृत्तिका ते घट वियोग कीये ते
नाम मात्र भी नहीं रहते तैसे ही जेवरों के वियोग
कीये ते शरीर भी नाम मात्र ही नहीं रहते अरु कहु

दृष्यविषेकैसुकन्याईकरजवरकाअभावकर
तेहै चिदाभासविषेभीस्वतेजवरकोउनहीहै
ऐसेश्रुतिकहाहै काहेतेजोचेतन्यस्वभावक
ही तिसविषेभीदेखीताहै अवरस्वभावतिस·
कानहीहै अरजवचिदाभासविषेभीजवरोका
अभावहै तवसाक्षीविषेक्याकहना अर्थक्या
जोसाक्षीविषेजवरोकाअत्यंताभावहै वादीप्रश्न
भलाजी मैजवरीहोइसअनुभवकोक्यागतिहै
ई उत्तर देवादी जवअविद्याकरचिदाभासज·
वरोसाक्षीपेकतामानताहै तवसाक्षीविषेजव
रोकीकल्पनाकरताहै तातेअज्ञानकालविषे
शरीरोविषेस्थितजोहैजवर तिनोसाक्षीपेकता
मानकरमैजवरीहो इहनिश्चयकरताहै तैसे
अज्ञानीपुरुषादिकोकेतपनेकरआपकोहृथात·
पावताहै तैसेहीशरीरोकेतपनेकरचिदाभास
भीअभिमानकरतपताहै जवविवेककरआप
नेकूटस्थस्वरूपको अरशरीरोकेभिन्नजानताहै
तवसाक्षीचेतन्यविषेस्थितहोइकरशरीरोके
तपनेकरकेतापै जैसेभ्रमकरसर्पकोकल्प
करभागताहै अरवडउनेवडीकेज्ञानकरभ्र·

श्री. मनाशहोये जैसेहीवृथाहीभयमानहोआया ।
पं.ट. थैसेमानताहै जैसेलोकविषेकिसीउत्कृष्टपरमि
१९४ थ्याद्रावाकरेपाछेत्समाकरवावतेहै जैसेहीवि
दाभासभीभोक्तृत्वादिकधर्ममिथ्यासाक्षी कूट.
स्थविषेकल्पकरकरज्ञानआत्मसमाविषेसाक्षी.
कोशरणकोप्राप्तहोताहै जैसेउत्कृष्टपापके
नाशनिमित्तप्रायश्चित्तआचरणकरताहै जैसे
हीसंसाररूपीपापकेनाशनिमित्तविदाभासस
र्वदासाक्षीकेध्यानविषेतत्परहोताहै जैसेउपस्थ
हृष्टनीजोवेश्याविलासकरणेविषेलज्जायमा
नहोतीहै जैसेहीविदाभासअपनेगुणोंकेव्यव
हारविषेलज्जायमानहोताहै जैसेश्रेष्ठोकेसमा
गमकरब्राह्मणप्रायश्चित्तआचरणकरताहै ।
अरप्रायश्चित्तकरकेदुष्टश्रेष्ठोंसाथसमागमन
हीकरता जैसेहीविदाभासशरीररूपीश्रेष्ठों.
केसमागमकरविवेकसमा विवेकसमावि.
षेवारंवारअभ्यासरूपीप्रायश्चित्तकोकरताहै
अरज्ञानसमाविषेदुष्टशरीरोसाथ ममत्वरू
पीसमागमनहीकरता सिंहावलोकनन्याय
करकहतेहै जैसेराजपुत्रजोवराजविषेस्थित

होयकरमहतराज्यकीवांछाकरराजाकेअनु-
सारहीप्रजापालनकरताहै तैसेहीचिदाभास
स्वाराज्यविषेस्थितहोकरसाक्षीकेअनुसारहीचे-
ष्टाकरताहै वादीप्रश्न भलाजीराजपुत्रकोते
राजाकेअनुसारचेष्टाकरणेतेराजकीप्राप्तिफ-
लदेखीताहै चिदाभासकोतोसाक्षीकेअनुसा-
रकरकोऊफलनहीदेखीता उत्तर हेवादीजोपु-
रुषब्रह्मकोसम्यकजानताहै सोब्रह्महीहै ऐसे
श्रुतिवाक्यश्रवणकर चिदाभासएकाग्रचित-
होयकरब्रह्मकेजाननेविषेअतिश्रद्धाकरयत्न-
करताहै तातेसाक्षीकेअनुसारहीआपहीसाक्षी
रूपहोताहै वादीप्रश्न भलाजी चिदाभासब्रह्म
ज्ञानकरब्रह्मभावकोप्राप्तहोताहै परआपतो-
नष्टहोजाताहै तातेअपनेनाशकेनिमित्तकैसे
यत्नकरताहै उत्तर हेवादी जैसेपुरुषदेवत्वका
मनाकेनिमित्तअग्निअरुप्रयागअरु गंगादिवि
षेप्रवाहलेताहै तैसीहै ब्रह्मस्वरूपप्राप्तिकेनि-
मित्तचिदाभासभीअपनेनाशकोवांछाकरब्रह्म
ज्ञानविषेपरिवर्तताहै वादीप्रश्न भलाजीब्रह्म-
ज्ञानकरतोजीवत्वनष्टहोइजाताहै तोकैसेतत्व

श्री वेत्योकोजीवत्वव्यवहारहोताहै उत्तर रेवादी
पं.द. प्रारब्धकेनाशपर्यंतजीवत्वव्यवहारविषेबाध-
१९५ नहीहै जैसेअग्निआदिविषेप्रवेशकरणहारे पु
रुषकोजबलगदेहदग्धहोता तबलगनरआ-
195 कारकोनहीत्यागहोता तैसेहीदेहनाशपर्यंतप्रा
रब्धकर्मकरजीवत्वव्यवहारहोताहै वादीप्रश्न
भलाजीअज्ञानकेनाशहूयते भोक्तृत्वादिकभ्र-
मभीतोनाशहोताहै कैसेभोगकालविषेमनुष्य
त्वबुद्धि उदयहोतीहै उत्तर रेवादीजैसेजेवडीके-
ज्ञानहूयेभीकंपादिक शनैःशनैः शांतहोताहै
अरुबहुर अंधकारविषेवहीजेवडीसर्पहोभास
तीहै ऐसेहीप्रारब्धकर्मभीशनैःशनैः शांतहो
ताहै अरुभोगकालविषेकदाचितमनुष्यबुद्धिभी
उदयहोतीहै वादीप्रश्न भलाजी जबमनुष्यबु-
द्धिबहुरउदयहूयी तोतत्वज्ञानबाधहूआचाही-
ये उत्तर रेवादी ऐतावन्मात्रकर्नेत्वज्ञानबाधन
हीहोता काहेते जोजीवन्मुक्तपुरुषकायहनि
यमनहीहै जोमनुष्यबुद्धिकाउदयहोणा अरु-
सर्वदापरमात्मविषेविराजमानहै तांतेतत्वज्ञा
नकरमनुष्यबुद्धिनष्टहोजातीहै वादीप्रश्न भला

जीजेवडीविषेसर्वभ्रमकनाशहूयेतेकंपादिक
शेषरहतेहै परप्रसंगविषेजोदशमपुरुषकादृष्टा
न्तमोकहाथा तहांतोदशमपुरुषकेज्ञानक
रभ्रमकेनाशहूयेतेशेषतोभ्रमकार्यनहीरहता
तोनेदृष्टांतदार्ष्टांतकोसमताकाअभावहै उत्तर
देवादी यद्यपिवाक्यकरदशमपुरुषकोअपना
ज्ञानआपरजो अज्ञानकालविषेसिरकोताडना
कीअध्यासतोमासकरशांतहोवेगा तिसीका
लविषेतोशांतनहीहोता वादीप्रश्न भलाजी त
त्वज्ञानप्राप्तिसमाविषेभीजबजीवनवजाग्यवहा॰
रहोताहै तबमुक्तसोकापुरुषार्थताहै उत्तर दे॰
वादी जैसेदशमपुरुषकोअपनेलाभकर आनं
दउपजाथा अरुसिरविषेजोताडनाकरपीडाभ
यीथी तिसकास्वभावआनंदकरढपाजाताहै
तैसेहीमुक्तलाभकरप्रारब्धकर्मकेदुःखभीदबा॰
येजातेहै अरुजोकिसीकालविषेबहुडअध्यासउ
दयहोवे तोवारंवारअभ्यासकरतिसकीशांतिक
र्तव्यहै जैसेरससेवीपुरुषक्षुधाकेशांतिकरणे॰
केनिमित्तदिनविषेबहुडभोजनकरताहै तैसेही
अध्यासकेनिवृत्तिकरणेकेनिमित्तवारंवारअभ्या

श्रीं सकर्तव्यहै वादीप्रश्न भलाजी जबज्ञानकरप्रा
पं.द. रब्धकर्मनिवृत्तिनहींहोता तबकिसकरनिवृत्त
१९९ होवैगा उत्तर रेवादी जैसेदशमपुरुषऔषधक
190 रपीडाकोशांतिकरतभयाथा तैसेहीभोगकर
प्रारब्धकर्मभीशांतहोजाताहै ऐसेश्रुतिकेता॰
त्पर्यकरअज्ञानआवरणविषेपपदोलज्ञानअपरो॰
लज्ञानसोकनाशनिरंकुशतृप्तिनिरूपणकरक
रअबअपरोलज्ञानतेउदयहूयीजोहै सप्तमीअ
वस्थानिरंकुशतृप्तिसोव्याख्यानकरतेहै विष॰
यभोगोकरजोतृप्तिहोतीहै सोतारतम्यताकर॰
सांकुशाकहीतीहै अरुआत्मस्वरूपलाभतेउ
दयहूयीजोहै तृप्तिसोनिरंकुशाकहीयैसोप्रग
टकरदिखावतेहै ज्ञानप्राप्तिसमाविषेकृतकृत्य
अरुप्राप्तप्रापकरज्ञानीआपकोतृप्तमानताहै
काहेते जोज्ञानीकोतत्वज्ञानतेपूर्वकालविषे
बहुडहीकर्तव्यथासोक्या जोइसलोककीसिद्ध
केनिमित्तअरुसोलकेनिमित्तअनेककर्तव्यथा
अरुज्ञानप्राप्तिसमाविषेसर्वकर्तव्यकीसमाप्ति
होतीहै तातेकृतकृत्यज्ञानपूर्वकआपकोमा॰
नताहै अर्थक्याजोनित्यतृप्तिपदविषेप्राप्तभया

है अबज्ञानीकोअनुभवप्रगटकरतेहै पुत्रादिको
कीकामनाकरदुःखीजोहै अज्ञानीलोकहैसोवारं
वारसंसारकोप्राप्तहोवै अरुपरमानंदकरपूर्णजो
मैहो सोकिसइछाकरसंसारकोप्राप्तहोवै अरु·
परलोकप्राप्तहोणेकी जिसकोइछाहै सोकर्मी
कोकरै सर्वलोककाआत्माजोहोमैसोकर्मीको·
कैसेकरो अरुजोअधिकारीपुरुषहै सोशास्त्रअ
रुवेदोकाअध्ययनकरै अरुमैअक्रियहोमुझको
अधिकारनहीहै वादीप्रश्न भलाजी देहकोनिर्वा
हकरणेकोनिमित्तभिक्षाआदिकअरुस्वर्गकेनि·
मित्तस्नानादिक क्रियातुमभीतोप्रत्यक्षकरतेही
हो कैसेआपकोअक्रियमानतेहो उत्तर रेवादी
अपनीदृष्टिकरहमसर्वदाअक्रियहोसोश्रवणकर
निद्राअरुभिक्षास्नानशौचते आदिकर्मीकोन·
हमइछाकरतेहै अरुनकछुकरतेहै अरुजबअ·
ज्ञानीहमविषेकल्पनाकरै तोतिनकीकल्पनाक
रहमारीकोणहानिहै जैसेगुंजापुंजकोअग्निज्ञा·
णकरवानरतपतेहै परसोअग्निजाननेवालेको·
नहीभासती तैसेहीअज्ञानीयोकरआरोपितजो
है संसारधर्मसोहमतिनोधर्मीकोनहीसोवते वा

श्री पं॰द॰ १९१

197

दीप्रश्न भलाजीअन्यफलकीइछाकरकर्ममत॰
करोपरतत्वसाक्षात्कारकेनिमित्तश्रवणादिक
तोकर्तव्यहै उत्तर रेवादी जिनोकेतत्वकाअज्ञा
नहै सोश्रवणकरै अरुमैतत्वज्ञानीहो कैसेश्रव
णकरे अरुजोसंशयवानहै सोमननकरैमैतत्व
ज्ञानीहोकेसेश्रवणकरो वादीप्रश्न भलाजीश्रव
णमननमतकरोपरविपर्ययकोनाशनिमित्तनि
ध्यासनतोकर्तव्यहै उत्तर रेवादी जोविपर्ययवा॰
नहै सोनिदिध्यासनकरो अरुदेहात्मप्रतीतिविप
र्ययतेरहितजोहोमै सोकेसेनिदिध्यासनकरो ॥
वादीप्रश्न भलाजीजबविपर्ययतेतुमरहतहोत
बयहंमनुष्यव्यवहारकेसेसंभवहै उत्तर रेवादी
विपर्ययबिनाहीअनादिकालवासनाकेवशतेअ
हंमनुष्यव्यवहारहोताहै वादीप्रश्न भलाजी त
बइसव्यवहारकीनिवृत्तिनिमित्तध्यानतुमको॰
कर्तव्यहै उत्तर रेवादी प्रारब्धकर्मकेनाशहूये
व्यवहारनिवर्तहोजावैगा अरुप्रारब्धकर्मकेना
शविनातोसहस्रध्यानकरभीनिवर्तनहीहोता
अरुजोतूंकहैअल्पव्यवहारकेनिमित्तध्यानकर॰
णारष्टनफकोकर्तव्यहै अरुहमतोव्यवहारको

अवाधकदेखतेहैकेसेध्यानकरे वादीप्रश्न भला
जी विक्षेपकेनाशनिमित्तसमाधितोकर्तव्यहै उत्त
र देवादी जिसतेमुक्तकोविक्षेपनहीहै तिसतेमु॰
क्तकोसमाधभीनहीहै समाधिअरविक्षेपमनवि
कारीकोहोवो अरुनित्यअनुभवरूपजोहोमे सोम
क्ततेभिन्नकछुनहीहै जोकछुकृत्यथासोकीआ
अरुजोकछुपावणाथासोपायाहै अरुप्रारब्धक
अरुजोकछुपावणाथासोपायाहै
मेकरलौकिकव्यवहारजोहै भिक्षादिकअरुशा॰
स्त्रीव्यवहारजोहैजपसमाधिआदिकअरुअन्यथा
व्यवहारजोहै सिंहादिकसोहोवोपरहोमसदानिर्लेप
हो अथवालोकोकीअनुग्रहकीइच्छाकरयद्यपिहो
कृतकृत्यभीपरशास्त्रीव्यवहारमार्गकरप्रवृत्तहो
वोतोहमारीकोणहानिहै वादीप्रश्न भलाजीशा
स्त्रीव्यवहारकेअंगीकारकीयेतेअभिमानभीहू॰
आचाहीये उत्तर देवादी देवार्चनस्नानशौचअरुभि॰
भिक्षादिकोविषेशरीरवर्तोअरुवाणीओंअंकारज
पो अथवावेदांतशास्त्रकाअध्ययनकरो अरुबु॰
द्धिविष्णुकाध्यानकरो अथवाब्रह्मानंदविषेली॰
नहोवोपरहोअद्वैतहैनकछुकरताहोनकरवाव
ताहो ऐसेमुक्तअद्वैतकोवादकिससाध्यहोवे स

श्री
पं॰द॰
१९८

198

मुद्रकेपारअरुउरारकीन्याई जैसेकोऊपुरुषस॰
मुद्रकेउरारहोवै अरुदूसरापुरुषपारहोवे तोति
नदोनोकावादअसंभवहै तैसेहीहोअज्ञानसमुद्र
केपारहो अरुअज्ञानीअज्ञानरूपीसमुद्रविषेमग्नहै
तोतिनसाथयहमारावादकैसेहोवै शरीरअरुवानी
अरुबुद्धिकोकर्मविषेसंबंधहै अरुसाक्षीविषेक॰
र्मसंबंधनहीहै काहेतेजोसदानिर्लेपहै ऐसेपर॰
स्परज्ञाननेरहितमूर्खवादकरतेहै सोबुद्धिवानो॰
करहसनेयोग्यहै जिससाक्षीचैतन्यकोकर्मीपुरु॰
षनहीजानता तिसकोतत्ववेताब्रह्मजानताहै त
हाकर्मीकीक्याहानिहै अरुदेहवाणीबुद्धिकोक
ल्पितजानताहै जोतत्ववेतातहाकर्मीपुरुषपरस्वर
तमानताहै तोज्ञानीकीकोणहानिहै अरुजोतूं
कहैज्ञानीकोपरविरतमार्गनहीबणतातोनिवृ॰
त्तिभीनहीबनता अरुजोतूंकहैकेनिवृत्तिबोधका
कारणहै तोजज्ञासाविषेप्रवृत्तिभीकारणहै अ॰
रुजोतूंकहैजोज्ञानीपुरुषकोजिज्ञासकाअभाव॰
है तोवडूडबोधविषेअन्यबोधकाभीअभावहै वा
दीपक्ष भलाजी एकवारउत्पनहूआजोहै बोध
काभीअभावहै वादीपक्ष भलाजीएकवारउत्प

तहूआजोहै बोधतिसकीस्थिरकेनिमित्तनिवृ
त्तकीअपेक्षानोहैही उत्तर रेवादी महावाक्यप्र
माणतेउत्पत्तहूआजोहै बोधसोअबाधरूपहै
अर्थक्याजोकिसीप्रमाणकरबाधनहीहोता तो
नेतिसबोधकोनिवृत्तिकीअपेक्षानहीहै वादीप्र
श्न भलाजी प्रमाणांतरकरबाधमतहोपरअ
विद्याअथवातिसकाकार्यजोहै कर्तृत्वअध्यास
तिसकर्तृत्वबोधकाबाधहूआचाहीये उत्तर रे
वादी अविद्याअरुतिसकार्यबोधकाबाधकरणे
कोसमर्थनहीहै काहेतेजोपूर्वहीतत्वबोधकर
दोनोबाधहूयेहै वादीप्रश्न भलाजी अविद्याक
रबाधमतहोबोपरतिसकार्यतोप्रत्यक्षप्रतीतहो
ताहै तिसकरजोबोधबाधहूआचाहीये उत्तर
रेवादी इष्यमाननोबाधरूपहैतिसकरतोबोध
काबाधनहीहोता जैसेजीवतत्वमूषकजबमार्जा
रकोनहीघातकरताजोमृतकमूषकक्याकर
णकोसमर्थहै जैसेमहादेवकेशस्त्रकरभीवज्रो
बोधनहीहोततोतृणकरवेधकैसेहोवे प्रथम
जबअविद्याकालविषअविद्याकाविचित्रकार्य
जोहै कर्ताभोक्ताप्रमाताताने आदिलेकरतिससहि

श्री
पं॰ द॰
१९९

199

तवर्तमानजोहै अविद्यातिससाथसंग्रामकरज॰
वबोधकीजीतभयी तवअविद्याकार्यसहितना
शकोप्राप्तभयीक्याकरणेकोसमर्थहै तोतिस॰
नाशअविद्याकरबोधकीक्याहानि अरुअज्ञान॰
जबबोधकरमृतकभया तवसबकीन्याईतर्कके
मितहोवो तिसअनरूपीसवकरबोधरूपीचक्रवर्ती
कीक्याहानिहै जोपुरुषअैसेबोधरूपी सूरमेकर॰
कदाचितभिन्ननहीहोना अर्थक्याजोसर्वताअद्वैत
बोधविषेविराजमानहै तिसपुरुषदेहकीप्रवृति
करअरुनिवृतिकरक्याहानिहै अरुजोबोधतेरहि
तहै तिसकोप्रवृतिमार्गविषेस्थितहोणायोग्यहै
अरुतिसकोस्वर्गादिकमोक्षकेनिमितयत्नकरणा
योग्यहै अरुज्ञानीपरकभीपुरुषोकेमध्यविषेज
बस्थितहोवै तबतिनोकेअनुसारमनअरुबाणी
अरुशरीरकरसंपूर्णक्रियाकर्तव्यहै अरुजबज्ञा
नीजिज्ञासीपुरुषोकेमध्यविषेस्थितहोवै तोतिनो
केबोधउत्पतनिमितसंपूर्णक्रियाकोदूषणदेकर
तिनकोभीत्यागकरवावै अरुआपभीत्यागकरै
ज्ञानीसर्वपरयालहै तोतेअज्ञानीयोकीकल्या॰
णनिमिततिनकेअनुसारहीचेष्टाकरैजेसे अति

वालककेअनुसारपितावेष्टाकरताहै जोवालक
पिताकाअनादरकरताहै अथवाताडनाकरताहै
जोपिताकलेशभीनहीकरता अरुक्रोधभीनही।
करता उलटातिसवालककोलडावताहै तैसेही
ज्ञानीपुरुषकाअज्ञानीनियाकरै अथवात्तनाक
रै तोभीज्ञानीपुरुषक्लेशवांनहोवे अरुजैसेतिन
कोवोधहोवे तैसेहीअपनीचेष्टाकरै जिसज्ञानी
केआवरणकरअज्ञानीकोवोधहोवे सोआवरण
ज्ञानीकरै काहेतेजोज्ञानीकोकर्तव्यकछुनहीहै
तातेजैसेतिनकोवोधहोवैतैसहीचेष्टाकरै इसीअ
कारकरअपणेआनंदकरमग्नजोहै ज्ञानीपुरुषसो
कृतकृत्यभावकरअरुप्राप्तप्रभावकरसदामन
करआपकोधन्यमानताहै अबज्ञानीआपको।
न्यधन्यमानताहै सोप्रगटकरकहतेहै मैधन्यहो
वहुडभीमैधन्यहो काहेतेजोनिरंतरअपनेमित्र
पकोजानताहोमैधन्यहो काहेतेजोब्रह्मानंदस्वरू
कोप्रगटभासताहै मैधन्यहोवहुडभीमैधन्यहो
काहेते जोसंसारदुःखकोहीदेखताइसीतेकृता।
र्थहोमैधन्यहो वहुडभीमैधन्यहो काहेतेअज्ञान
अरुसंसारकोनहीजानताजोकहागयाहै मैधन्य।

श्री पं॰द॰ ११॰ हो वडडभीमैंधन्यहो काहेतेजोगुरुकोकर्तव्य
कछुनहीधन्यहो मैंवडडभीमैंधन्यहो काहेते
जोसर्वप्राप्तकरिसेसमर्थहो अहमैधन्यहोवडडभीध
न्यहोवडडभीधन्यहोसर्वप्रकारधन्यहो अतेक
तार्थहोअरुसंपूर्णसगुनोकेसमूहकाफलउदय
हुआहे इसगुणकीसंपदातेहमधन्यहे वडडभी
धन्यहे शास्त्रधन्यहे अरुशास्त्रकाउपदेशकर
णहारागुरुभीधन्यहे वडडभीधन्यहे धन्यज्ञान
हे अरुज्ञानतेउत्पन्नहुआजोपरमसुखसोभीधन्य
हे इसीप्रकारअपनाअनुभवज्ञानीप्रगटकरतभ
या इसतृप्तिदीपनामाग्रंथकोजोनिरंतरअभ्यास
करोगे सोब्रह्मानंदविषेमग्नहोयकरनिरंतरतृप्ति
कोप्राप्तहोवेगे अरुअज्ञानतेअतीतअरुसुद्धबुद्ध
मुक्तस्वभावसाक्षीअजरअमरअखंडअजआदि
यपदविषेप्राप्तहोवेगे तातेसर्वकामनाकोत्याग
करब्रह्मअभ्यासकरतव्यहे इतिश्रीपरमहंसपरि
व्राजकाचार्यश्रीभारतीतीर्थविद्यारण्यमुनिवर्य
किंकरेणरामकृष्णाख्यविदुषाविरचितायांतृप्ति
दीपव्याख्यासमाप्तम् ॥

५१

१२९१